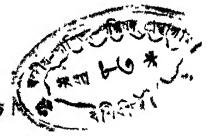


# ভূতীয় সংখ্যা।

সংবাদ প্রভাকর সম্পাদক শ্রীবামচক্র গুরুপুর দারা

সংগৃহীত হইয়া

কলিকা**তা** প্রভাকর যতে দিতীয় বার মুক্তিক



- मन ३२१४ मान ।

যুক্ত। • চারি আনা নাত্র।

# ৰপক শীতঋতু বৰ্ণন। . ত্ৰেপদীক্ষঃ।

হিম খাড় মহীপতি, হিমালয় নিরমতি, সংপ্রতি ছাড়িল রাজধানী। শাসম করিছে রাজ্য আসিভেছে জনিবার্থ্য তার সজে সেনানী ছিমানী ॥ উত্তরীয় বাযু ভার, ভাশ অতি চনৎকার, ভাহাতে করিয়া আরোহণ! खिमण्डा नामाश्रान, हर्सन कि रन्यांग, **उत्य कष्णमान लागिग ॥** काछ। क्लाछा इड़ हता, देखानि (मनात वर्षा, উড़ाইमा कुष्णामात्र भाषा। জনতের অনিবার্যা, শাসিতে জাপন রাজ্য, সাজিলেন শীত মহারাজা গ সালিলেন বালা শীভ, ত্রিভুবন সশব্দিভ, নাজানি কাছার কিবা হয়। চটিল শীতল বায়, টুটিল বৃক্ষের আয়ু, युवदकत कोवन जरमग्र व শরদ পাইয়া জাস, यत्न गानि यानशाम, বনবাস করিবারে যায়। खोरांत्र हरकत् कन, পভিভেছে ভাবিরল, হিম বৃষ্টি কে বলে উহায়॥ হইডেছে হিম বৃষ্টি, একি সৃষ্টি ছাড়া সৃষ্টি, মহারিষ্টি নাশে দুটি পথ। মৃতবৎ চকোর জীবত। তেজব্বির যত গর্ক, সকলি করিল থক मी ७ थ उ वर्षात इच्छेत्र।

ধরতব, ভাত্মান, শীভ ভবে কম্পবান, अशिकारन मिरमम आखेत । मिन मिन मीन पिन. (यमन अछान्त मीन. (मधि मिन পতित मीनका। निमा नरह निनाहती, आत करत दित धति, मत्म कति छात्र खेवीनछा । এমত শীতের ভয়, পরাজ্বত ধনঞ্চন, তাঁহারে না মানে কোন कत। नर्वना दृश्यत्र चत्त्र, मुकारत्र बादकने छ (त. जीर्न वस माता काक्हामन ॥ কিছ ভাঁর ভভাদুই, **बहै मांज इत्र मुखे,** गुवडी ब्रमनी या सन। चर्च कृर्य रहें हे मूर्य, जिशिनच। त्रस्य दूर्व नर्वाक कविष्ट जानिक्रन । प्रिचित्र विश्वात श्लोति, क्यूपिनी अखिगानी. অভিমানে লুকাইল নীরে। चुित मधूत्र जाम. जगरबंद गर्सनाथा, अक्रनीरव जात्म मात **जी**रत ॥ দলহীন ভক্তবর, खाकमण मदर्शावत्र, श्वविक्य कन्नद्रमकुन । শব র মহারীগণ, নিভা নৃত্য বিশাবন, रहेश मडा ममाकुल **।** িষ্ম হিমের ভরে, কোকিল ব্যাকৃল হবে, ছথে ভাকে গোপনে কাননে। मीटि करव छेरु २, लास्क बरण बरण कुछ, এ কুগ্ৰু বুবিবে কি আনে । करमत्र छेट्रेट्ड माँछ, कांत्र जान्य त्मा शंक, ভাঁকে কৰে কেটে লগ বাপ্। কালের অভাব দোষ, ভাক ছাতে কোঁদং, क न नश की या काल मान ॥

ভুক্তাক্রে কিলে ভয়, মজে তার বিষক্ষয়, যত ভয় যেতে হয় জলে | যুৰ্ভীয স্তন্ত্র, তাহে কৈত লোভ হয়; यक लांख खनस सन्ता পাঠাত্রের পুজনাভে, কভ প্রথ মনে ভাবে, যত হুখ রবির কির্পে। কুটুম্বেৰ কটু বাণী, ভাহে ক্লেশ নাহি পানি, যত ক্লেশ শীত সমীরণে। वन्यान वज् वज्, সবে হয় যড শড. र्थंहिट (र्थं १६ हे (था प्र नाइ। भीट्य कैंद्रि कत कत्र, मन् कद्त थर् थत्, কম্পিত কদলী বেন ঝডে। নিশির না যায় রিষ্টি, শিশির সভত বৃষ্টি, ঋষির ভাষতে ভাঙ্গে ধ্যান। বিষয় প্রবল হিম, যে জন সাক্ষাং ভীম, স্পর্মাত্তে হরে ভার জ্ঞান॥ जना भी त्यांश्ख यह, यांदर्र घाटी मंड मंड, মুহুনী গাঞ্জার দম নিয়া। পোড़ে थाक बुदक हा छ निगा ॥ (यह कन कांशाधन, श्रामी পांक। शांक। घन, मना मद्भ खत्र छत्र अभिने। আহার ভাহার মত, বিহাব বিবিধ মত, তাহারে জীবন সুক্ত গণি॥ গরিবৈর পক্ষে নাল, थनित मंत्रीरत भान, करल मस्त करि तथ। **द्वरनंत्र प्रेंद्रेलि হোয়ে,** खारा थारक मीड मारिक উম্বিনা খুন নাছি হয়। हित्र जीवि (इ क्) काँचा, गर्तकान नुक्त गाँ।था, अक्क्न डात नाहि शिष्टा

भगरनत पत काँडा, ভाর दश आदि वाँडा, कांफ जात निरक्त, शंदक शंदक । भकारल थाहेरल हांत्र. चार्याकरन (बना यांध्र সন্ত্রাকালে খায় ভাত্তে ভাত। শীতের কেমন খড়ি, উড়ায় অঞ্চের খড়ি, का है। य नवांत अम श्रेष्ठ ! সারিতে পারের ফাটা, মহার্ঘ আমের আটা. ফাটাফাটি করিলেক ভাই। বিষ্ণুতেল কন্ত মাখি, ঘৃতে যদি ডুবে থাকি, भवीदारा छव छए छ। है। পাকিতে ভুঘড়ি বেলা.ছেলে ছাড়ে ছেলে খেলা বেলাবেলি খায় গিগা ভাত। লেপে করে মুখ রুজু, পাছে ধরে শীত জুজু, खर्मनारक। ना शल अखाउ। বারু সব হর্ষিত, শাতে মন বিক্সিত, বাত্রি দিন আহারের থোঁ। বারুজীব প্রাণ চায়, গর্ম গর্ম চাথ, মনোমত খাদ্য রোজ রোজ ॥ ছুহি ভক্ষে লোম চাকে, সম্বন মুখে হ'াকে খিলা,খেতে আলবোলা, মহাথোর বোল োলা, দার ঢাকা ক্যামিনের গুণে। বায় ভাগা মনোডরে, ঘরে না প্রবেশ করে, শীত ভীত প্রদার গুণে॥ ঘরে বোসি করে স্বর্গ ভে:গ। ञ्चनष्त थाना मन, र्रुन्रेन् वीना तर, তাতে কি ভিমের হয় যোগ ॥ ভাষা হেন ভাগ্য পে:ডা, চুংখ লাগা ভাগা (भाषा, भीटि मंत्र एवर नटर् वमा ুচন্চন্হাত খাজিন ভরসামুছিৰ চাজি, भाग माळ (थल्टर य यम ।

व्यक्तिमानी बांतू यात्रा. ब्याटन मात्रा इंग जाता, माल विना माम नाहि तरह। णुक्ति मृत्येत काहे, हेब्रात्तत्र नाहि त्याहे, मदमद्र अखित रुषु मर्छ। खेजांनी हानत घड, এখন আদর হত, ভাগে যাহে অভিমান রোভো। শীত তুই বেশ বেশ, দেখিয়া শীতের বৈশ, আনিলাম কে বাবু কে কোতে।। हेशादित शाम शाम, (कह शीका (कह गाम, (क्र व) हत्राम पिशा है। न। काट्ड (त्रदर्य अवनाय, मिट्य हा हि जवनाय, মনের আনন্দে ছাড়ে গান॥ কেবা বুবো হুর বোল, কেবল ভেড়ার গোল, রাগে রাগে স্থর উঠে চডি। অপৰূপ গলা সাধা, বলে বুঝি ভাকে গাখা, ধোৰা ছোটে হাতে নিয়ে দড়ি॥ সাহেবে রাখিয়া ৰাজি, লয়ে তাজি তাজিৰাজী দমবাজি কারসাজি কত। সোয়ার হ**াকা**র চোটে, যোডা পায় যোড়া ছোটে, वाकी बल वाकि वल इ**छ**॥ रिव्रश्नि नाती गठ, इह मिर्न छे पहरू, একেতো প্রবলতর শীত। দ্বিতীয় বিরহ জ্বর, ক্লান্ত করে নিরন্তর, কলেবর সতত ক ম্পিত। হ্রদয়ে বিরহাত্ত্ব, ं ५क करत्र श्रेनः श्रुन, বাহিরে শীতের পরাক্রম। हुई मिर्ल हुई खाना, क्यान महिर्द वाला, निक खाय इत्त्र निक खम। ज्ञभक्तभ धांक जातः गकरलदि एहा ह मातः তাওনে গ্রীতের হয় নালন

এ শীতে বিরহান্তন, পুরু করে চতুপুরি, किता थन दिद्यम क्षेकांभा। অন্তর বিরহানলে, नित्रसत्र धन प्रात्न, বাহিরে শীতের মহারণ। (कौन मछ स्य नम्, জ্বালাতন অভিশয়, ्वित्रश्ति कीवदन गत्रने।। সংযোগী প্রনয়ী যারা, উল্লাসে উদান্ত ভারা, পরস্পর প্রফুল হাদর। প্রেয়ানন্দ রাত্রি দিবা, শীতে তার করে কিবা वाद्या माग वमञ्ज छन्य ॥ কান্তাগণ দই কান্ত, করে ক্রীড়া অবিপ্রান্ত, রতিকান্ত হারাইল দিখা। শীত ভাহে অন্তর্ম, ক্ষণ নহে ভাল ভঙ্গ, अनक धारक माक निमा।। তথা শীত সশঙ্কিত, যথা দোঁহে অশঙ্কিত, এক অঙ্গ যুৱক যুৱতী। একেলা অভাপা যারা, ভাছারা জীয়ন্তে মরা, শীতে সারা হইল সংপ্রতি 1 विधवा विवर्श (यह, स्ट्रंप फूट्य मग (मह) व्यक्तित यमन खोगतन । মনেতে হইয়া ধর্ব্যা, সমুদ্রে করেছে শ্ব্যা, শিশিরে কি করে জ্বলাতন ৷ এक घटत तूज तूजी, खरत थांदक छाड़ि छाड़ि, क त्लवत्र थुत्र थेत्र की तथा। माराज भाराज अक रहारा, आहा छल रहारा রোয়ে, বুড়ার ঘাড়েতে বুড়ী চাপে ॥ विरंतभी श्रुक्तम यक, त्थान करत्र अवित्रक, পোড়া শীতে পড়ে থাকি ছখে। अगिनी विभिन्नी हैय, अगिनी यहालि हैय, **उदर्दछ यामिनी या**न खुद्य ।

# ইংরাজী ভূতন বর্ষ।

### পরার।

हाँ म हिल यांव थाँत, मीखि शिल छात्र। विनिमादत इत छथा, शटकत ज्ञानात । এই অবনীর করি, কছ হিডাহিত। একান একালে ছিল, সৰার সহিত ॥ নিরম বায়য় দেব, ধরিয়া বিক্রম। বিলাভীয় শকে জাসি, করিল আশ্রম 🛭 थोचैमटक नववर्ष, অতি মনোহর। প্রেমানন্দে পরিপূর্ণ, যভ মেড নর।। চারু পরিচ্ছদযুক্ত, 'রম্য কলেবর। নানা দ্ৰব্যে হুশোভিড, অটালিকা ঘর॥ गानगरन विवि भव, इहेरलन् रक्षु म কেদরের ফোলোরিস্, ফুটিকাটা ড্রেস্॥ ষেত পদে শিলিপর, শোভা ভায় মাখা। निविक निर्माप बस्त्र, शनसम् एको ॥ চিক্তন\_ চিক্তনি চাক্ত, চিক্তের জালে। ফুলের ফোহারা আসি, পড়িভেছে গালে॥ विजानांकि विश्रुयी, सूर्य शक् हुट्छे। আহা ভার রোজ রোজ, কভ রোজ কুটে। স্থাকাশ্য কিবা আস্যা, মৃত্ত্বাস্য ভরা। অধরে, ভায়ত স্থধা, প্রেমক্ষুধা হরা ম लानारवत्र मरम विवि. शिक्षिति हिक्। ু অনঙ্গ ভাষররূপে, সাগে তথা ভিক্। মনোলোভা কিবা শোভা, আহা মরি মরি ৷ বিবিণ উভিছে কত, ফর ফর করি। हन हम हम हम, वाका खाद (धादा। वितिष्ठांन प्रत्य यान, वादव्यान कादत् !!

थना थना कुछ कीता थना छूरे माहि। তোর মত গুটি ছুই, পাখা পেলে বাঁচি ॥ ভাহে আর রবেনাকো, ছবিবার কথান ইচ্ছাধীন উড়ে গিয়া, বসি যথা ভথা 🛭 স্থথে ভাগি গুজকান্তি, দম্পন্ধী হৈ বিষয়।। ভন্ভন্তাক ছাড়ি, বদন খেরিয়া॥ উড়ে গিয়া ফুঁড়ে বলি বলির উপরে ৷ मञ्ज मञ्जू कृष्टि शहे, शिविकांत चरत ॥ ধানার টেবিলে বলি, করি খুব্ড্ল : व दिवित्रं मित्रित्र, भिनाटम पिरे छ्न ॥ কখনো গাউনে ৰসি, কজু বৃষ্টি মুখে। মাজে মাজে ভিজে মায়, পাখা নাড়ী স্থথে । नवर्व महाइर्स, हेरब्राष्ट्र होगांश। (मट्य क्रांमि ওরে यन, आंग्र आंग्र आंग्र ॥ শিবের কৈলাসধাম, আছে কভ দুর। কোথায় ভামরাবভী, কোথা স্বর্গপুর। সাহেবের ঘরে ঘরে কারিগুরি নানা। ধরিয়াছে টেবিলেভে, অপরূপ থানা। বেরিবেউ, সেরিটেউ, মেরিরেউ থাতে। আগে ভাগে দেন গিয়া জীনতীর হাতে। कहे कहे कहाकहे, हैक हेक हैक। र्युरमा ठूटमा ठून ्युन, एक एक एक एक हुत्र हुन हुन हुन, हुन हुन हुन हुन यु पु पू यू भू मृ ल , म ल , म ल , म ल , म ल , म ल , म ल , म ल , म ल , म ल , म ल , म ल , म ल , म ल , म ल , म ल , ठेकान ठकान ठेक कन कन कन कन । कत्कत् हेन् हेन्, चन् चन् चन्। हिश हिल (हारत हारत छाटक लाम क्रांग **ভিয়ার ग্যাভাগ, ইটা, টেক দিল গ্লাম ॥** ऋष्यंत मध्यंत्र साना, (इंटिन ममाधान। ভাগা রারা রারা রারা, মুমধুর গান 🎚

.

থড় প্ৰদ্ৰ খৰ খন, লাকে লাফে ভাল। **डाजा इति। इर्डा जांचा, आंशा जांगा गांग ॥** जाय ब्लाज हम बारे, दहारिंद्रमय मार्श । धर्मन दर्शबाक भार्च, कछ मका हार्श । গড়াৰতি ছড়াছড়ি, কত শত কে।। যত পার কোলে খাও, টেক টেক টেক টেক। সেরি চেরি বীর ব্রান্তি, এই দেখ ভরা। वकविन्म, त्माक शास्त्र, यहा स्मर्थ महा । করি ডিম জালুফিস, ভিসপোরা কাছে ৷ পেট পূরে খাও লোভ, যত সাদ আছে॥ গোরার দঙ্গলে নিয়া। কথা কহ হেসে। र्छम (मद्र वरमा शिया), विशिद्धत (चौँरम ॥ আর কি বিলম্ব আছে, এ ভব ভরিতে। গোউন করিছ কেন, গোউন ধরিতে ৷ ब्राष्ट्रामुथ मिट्य यांबा, टिट्य लेख ह्यांम । ভোক্ত ক্যার হিন্দু য়ানী, জ্যাম জ্যাম জাম ॥ পিঁড় পেতে ঝুরোল,সে, মিছে ধরি নেম। মিসে নাহি মিশ খায়, কিসে হবে ফেম ॥ माड़ी भन्ना এলোচুল, आभारतत स्मा। (बलांक निष्ठित लिखि, स्मिम स्मिम ॥ সিন্দ্<sub>ের</sub> বিন্দু সহ. কপালেতে উল্কি। नगी. कनी, (कमी, वामी, बाभी, भामी, शक्क चरत् (थरक हित्रकाम, भाग महाछ्य। कथाना (मध्य ना भेद्र श्रुक्तित मुन । ব্যভিচার অভ্যাচার, নাহি কোন দোষ। কেবল স্বভাবে করে, পতি পরিভোষ ! এই রূপে হিন্দুরাশা, শুদ্ধাচার রেখে। না পায় ভূখের মালো, অন্তকারে থেকে। কোখায় নেটিৰ লেডি, বলি শুন সবে। পশুর স্বভাবে জার, কও কাল স্থার ব 🌡

धकरांत्र कर्नान, त्रादिलांच थाक। विनाछि विवित्र छोत, उद्यू यो७ (मृद्ध । কেমন স্বত্যাভাব, কেমন সভাব। कानिक नाहि हरू, किहुत्र अंशि । षादात विद्रांद्र नाहे, मदनत विकात। नदल श्रवेश छात्, मकल चौकांद्र ॥ कि कब कृषीदा येगि, वांक्रांशिव सिद्य । थानांत्र टिविन शाम, दमय छहे कट्य ॥ ভাৰাভাকি ঢাকাঢাকি, প্ৰথমতঃ এসে। शाकाशकि माथायावि, श्रीकाश्रीकि त्यरह II বিদ্যাৰলৈ অবিদ্যার, অপত্রপ ক্রিয়া। কত মিস করে পিস, বেচিলয় নিয়া 🎚 কাড়াকাড়ি ছাড়াছাড়ি, প্রতি ঘরে ঘরে। कथात्र कथात्र कछ, छाहेवम कदत्र ॥ গড়াগড়ি পড়াপড়ি, প্রেমগণ্ডি খেরে। চড়াচড়ী হেরে যায়, চড়াচড়ি ছেরে॥ थनादा (बांडनवानि, धना नान कन । थना थना विलाट्ड त, मछाडात बल ॥ मिनि कृषः मानित्नका, अधिकृषः छ।। মেরিদাতা মেরিস্কত, বেরিশুভ বয়। केलत भारत एक्ष्म, न्म्राम केट्र बादक। धर्माधर्म (छम्। एक, क्वांन नाहि थाटक॥ या पादक कशारम छाहे, हिविदलटक थावा ভূৰিয়া ভবের টবে, চ্যাপেলেভে যাব। काँछ। ছুরি काँच मारे, कেটে যাবে বাবা। ছই হাতে পেট ভোৱে, খাব থাৰা থাৰা 🛊 পাতরে খাবনা ভাত, গোটুহেন কালে।। र्शिटिन छिटिन नाम, त्मु बद्रव खाटना। পুরিবে সকল আশা, তেখোনারে লোভা क्थिन जारहर जिल्ला, त्रांचियना क्लांख ॥ श्रीनात्नाकी देवर'रवन्ता।

# পৌৰ পাৰ্বণ। ৰূপক। পয়ার।

অংশর শিশির কাল, ছবে পূর্ণ ধরা। এত ভঙ্গ বঙ্গদেশ, তরু রঞ্গ ভরা 🛭 **খ্যুর তমুর শেষ, মকরের যোগ**় সঞ্জিক্ষাণ তিন দিন, মহাসুধ ভোগ। যকর সংক্রান্তি স্নানে, জন্মে মহাফল। মকর মিতিন সই চল্চল্চল্ৰ मांबानिण काशिशिष्टि, (मण भव वामि। গকাজতে গজাজল, অঙ্গ খুয়ে জাসি॥ তাতি ভোরে ফুল নিয়ে, গিয়াছেন যাসী। बका आग्रि आगिताहि मध्य नहत्र मागी। এসেছি বাপের কাছে, ছেলে মেয়ে ফেলে। রাধী বাড়; হবে সব, আনি নেয়ে এলে ॥ ঘোর জাঁক বাজে শাঁ , যত সব রামা। কুটিছে তণ্ডুল স্থবে, করি গাসা ধামা॥ বাউনি আউনি ঝাড়া, গোড়া আখন আর। মেয়েদের নব শাস্ত্র, অশেষ প্রকার॥ তুক্ ভাক, মন্ত্ৰন্ত, কভৰাপ খ্যাল্ भी पारिष यूनिटि गाल भागम् गाल्या খোলায় পিটুলি দেন, হোয়ে অভি শুচিন क्ष्रीक क्ष्रीक अक् रश, ठाका दान पूठि । উনুনে ছাউনি করি বাউনি বাঁধিয়া। চাউনি কর্ত্তার পানে, কাছুনি কাদিয়া a চেয়ে দেখ সংসারেতে, কভতালি ছেলে! वल दमिश कि इंडेरन, नम्न द्रिय (एट्ल ॥ भूनकूँ ए। धँ फ़ा कति, कूछिनांच छिति। क्ष्मद्य हालाई नात्र प्राप्त । एकि ।

আড় করি পার্দিতে, সিকি গেল গড়ে। লেখা করি নাহি হয়, আদুপোয়া গড়ে। हैं हि क्लाद्व ब्राधिनांश, अर्फ्कांश (क्ट्रें) शांद्र शंद्र भाग विम, जिल जिल (बर्हे ॥ বোলাগুড় ভোলা ছিল, সিকের উপরে। ভোলা ভোলা থেডে দিয়া, ফুরাইল ঘরে। পোয়া কাঁচচা কি করিবে, নহে এক মন। वाणीत त्लाटकत्र छोट्स, नर्द धक मनः। এक मन्त्र थांत्र यमि, जाम मन्त्र मात्रि। कक मत्न ना थाहरल, प्रम मत्न हाति। ভাক্ষামনে পুরোমন, মন যুদি খোলে। श्रुद्रा गढ्न क रुवेटन, जाकामन रहाटल ॥ ভূমি ভাব ঘরে আছে, কত মনভোলা। জাননা কি, খরে আছে, কত মনভোলা॥ कारत वा कहित ज्यात (वाता हरला माता। थुटन मिला, मन किट्ट, जुटन द्वाया गाता नियम फुब्रस्ट छो।, भाष्माद्यांत्र नाहै।। कानगढ एकनादका, ह्यांजा वर्ष है। हो। मः मित्न धमक् म्यः, फुट्टे हस्यु द्वर्टकः। ঘটি ৰাটি হাঁড়ে কুঁড়ি, সৰ ফ্যালে ভেঙ্গে 🖟 পুলি সৰ উঠে মেল, কিছু নাই ছাই। নারিকেল ভেল গুড়, ফের সব চাই॥ अमुद्रयेत्र (माय भव, भिट्ह (महे शालि। हर्स (व छेठिया शिम, शार्स (वंत्र हानि I जानि नहे (भाष्ट्री हान, मदः (हतन (हतन । বু:বাতে না পারি তুমি, চল কোন্ চেলে। ও বাজীর মেয়েদের, বলিয়াছি খেতে। মুঙন জামাই আজ, আসিবেন রেতে। ভোমার कि ऋ পাनে, किছু नाई होन। श्वाराज्य शास्त्र यात्र, जञातीद्र खान् ॥

কি বলিব বাপ**ুমায় কেন** কিলেবিয়ো क्र मिन सूध नारे, घत्रक्र नित्य । कीन मिन्न ना कड़िएन, जरमादात किएन। मिटविमिन क्टां **अपू. (जैरिश (उन मिर्**श) गरव माळ छुरे भाषा, थांजू किल शहक। ভাহাও পিয়াছি বাঁধা, মেয়েটির ভাতে 🏾 मुद्म ऋदम (बद्ध शिम, (क क्ट्र थोनाम्। वीं किवांत्र मान नाहे, मलाहे बालाम । রাজিদিন থেটে মরি, এক সন্ধ্যা থেছে। এত বালা সহা করি, আমি যাই মেরে॥ এই রূপ প্রতি ঘরে, দুশ্য মনোহর। গিলির কাঁড়ুনী হয়, কর্ত্তার উপর। মাগীদের নাহি আর, তিন মাত্রি ঘুন। গড়াগড়ি ছড়াছড়ি, রন্ধনের ধুম। गांवकाण नारे गांज, अत्लाह्ल वादधाः ডাল, বোল, মাচ ভাত, রাশি রাশি রাখি কত ভার কাঁচা থাকে, কত যায় পুড়ে। भारित वौर्ध श्रवमात्त्र, मल्यामव अर्ष् ॥ বধুর রন্ধনে যদি, যায় ভাহা এঁকে। সাশুড়ী ননদ কত, কথা কয় বেঁকে। र्गात्म वर्षे, कि कविलि, प्रत्य मन हरते। **এই রামা শিখে**ছিস্ মায়ের নিকটে। সাতজন্ম ভাত বিনা, যদি মরি চুথে। তথাত এমন রারা, নাহি দিই মুখে॥ বধুর মধুব খনি, মুখ শতদল। সলিলে ভাসিয়া যায়, চকু ছল ছল । আহা তার হাহাকার, বুঝিবার নয়। ফুটিতে না পারে কিছু মনে মনে রয়। ভাগাकल बाबा नर, डाल इय याँव। ঠাকারেতে, মাটিতে পা, নাহি পড়ে ভারে ট হাসি হাসি মুখ থানি অপ্ৰপ্তাভা (वंदक (वंदक यान शिमी मिद्य मधनाजा। र्गाशा विमी এই माक श्रीध्यादि खाछ। गाथा थाछ मछित्रम जान मार्शास्त्रहा मिकिमिन् क्वा बान, (इन क्या कारम। याँ । याँ । दर्ग भाक, सम्बद्धा (शहर म शुक्रीयक्ष छान गव, बिन्मारह (भरत्न) ভাল রালারে ধেছিল খনা তৃতি মেয়ে॥ :: এই क्रे भूमधाम खांच चद्र चद्र। नाना गठ अञ्चेत, बाहादात उद्य । তাকা তাকা ভাকাপুলি ভেকে ভেজে ভোলে गाति गाति शौष्टि २ काँछि कदा काल । किइ या भिन्ने नि मार्थ किह कार्ड शास्त्र । ভার আশা নাহি কক্ষে আক্ষে যার ফোলে ম আলু ভিল গুড় ক্ষীর, নারিকেল আর। গাড়ভেছে পিটে পূলি অশেষ প্রকার # विष्णे २ मियञ्जन, कृष्ट्रेस्ट्र (भना। হায়২ দেশটোর ধনা তোর থেলা। कामिनी यामिनी व्यादेश, भग्नदेनते घरते । স্বাসির থাবার দ্রাসা আয়োক্তন করে। ञानत्त्र था अग्राद्य नव, मत्न नाम आहि। (धैरम २ वटम शिया आमानत को दहा। माथा थां अ थां अ विल, भारक (मय भिएते। ना थारेटल वाकामूटथ शिट्टे (मयु शिट्टे।। আকুলি বিকুলি কত চুক্লির লাগি। চুকুলি মড়িয়া হন্চুকুলির ভাগা।। প্রাণে আর নাহি সয় ননদের জালা। वियमाया भाका बाटन कान इटला काला ॥ माजा वर्षे मन्त्र नयुः, स्मेटे शिद्धि शिष्ठ কুমারের লোকে যেন, পোড়ে পোড়ে পোড়ে

गत्नाकृत्व क्षांक काब कृष्टिनां रे वाक । धार्या अरहर काई काले त्वा (ठाउ । यां करों वालामा द्वारम है। है किन है। ज़ि। চুপি চু<del>পি পাঠালেন কন্যাটির বা</del>ড়ী । ठे।कृष्टित्र दश्य करणा बाह्य रहेरम (हेरम) व्यानात (शांशांन (यम व्यागितारक व्याग মরি মরি ষাট্ ষাট্কেঁদেছিল রেডে। वाहा भाव (भाव धर वाह भाव (थर ।। अभा अभा कछ कर लाम नडला (बर्ग । বাৰা বাৰা দেখোনাকো তৃষি বাৰা হোৱে ৷ मक्ति एकि शतायन इन यह नद्र। **७५नि अगर कांक्रा (७८४ (मन घत्र ॥** खेलारकम् <u>अवा</u> मव श्रीक्षाट्य (हर्ता। मेना इत क्षे (यस (१) है। हुई (ब्रह्म ह পরস্পর অমুরাধে খোলা আছে জ্বেন। ভাবাপুল খেতে দেয় হাবা পতি পেলে। কামিনী কুছকে পড়ি খায় যেই ভাৰা। নিজে সেই হাবা নম হাবা ভার ৰাখা ! বুকে পিটে গুড়পিটে গুড় পিটে গড়ে। र्श्वित दमनजा नम की है जात परज ॥ ভিতরে পুরিয়া ছাঁই আলু দেয় ঢাকা। সে যে **আলু আলু** নয় দোষ তাহে মা**থা**। लाख नाहि (बंदन बांदक बाहे छाहे हारहै। शिए श्रीन त्थर एवं एवं कि एक एक एक एक एक ্ পারেল পিট্লি দিয়া তরিয়াহৈ চুসি। গুহিণীর অন্থরাগে ওছ তাই চুবি। ्रुविन (भएत श्रूमि तुर्फ़ा **मक्ति नां**हे भात। वृक्षकारण (काभा कुणी (छ'स:इसि मात्र॥ शुर्वा अव शुर्वाखीय थुरवी नाहि नए। क्षांटक (बाटन थीय काटन हाटन माहि भएए ॥

धना धना शली औम, बना मन त्यांका कार्रन्त्र विमादवेदक काश्रास्त्रव स्थावि । প্রবাসী পুরুষ বড় পোষ্ডার রবেন कृषि निश्च कृषेक्षि वाष्ट्री अरम मदद ।। महरतत्र (कर्ना स्ट्रिक्स स्वरूप योत्र कीका वाकी बाकी निषंत्रक भारतक अन्त । কর্তাদের যালগণ্প গুড়ুক্ টানিরা! कैंग्डिटियात्र केंजि व्याय च कि धनाहेशा । ছই পার্ষে পরিজন মধ্যে বুড়া বোসে। विटि **अफ़ इटिंड निरंश** शिट्डे बान (कारम । কভমত রঙ্গরশ হাত দিয়া ভাতে।। **उर्ह** डेर्ल् भाक (मुख कांगारणत शांर्छ। ব্যামায়ের রসিকতা পাড়াগেঁয়ে গাল। হাঁ২ হাঁথ কর্বাটির পাতে দেও ভাল। মশুর কশুর নাই করে কভ ছল। कामार कामारे नारे भामारे नकन।॥ ভরুণী রুষণী যত একত্র হইয়া। ভাষানা করিছে সুবে কামাই লইয়া।। আহারের দ্রব্য লয়ে কৌশল কৌভুক। মাজে মাজে হাস্যরে মুখের যৌতুক # খেজুরের রসে হয় ভাপরাপ ওড়। क वृक्षित्व छोत्र मात्य मन्त्र अख शृह ॥ नागती कतिः इ म्याचा नाभनीत (काटना नांशती नांशत ভाবে প্রেমান ना पाला। নাগরী করিয়া কোলে নাগর দোলায়। नांश्री हलिए यन माश्र मालाम।। ধন্যরে নাগারী ভুই ধন্য ভোর বোল। माणि इरह शिल पूरे मांगतीत काल।। होका यांत्र किए यांत्र, यनि यांत्र किटहे। ভৰু আমি ভোৱে মেখে খাব আৰু পিটে॥

त्थारिन यमि मदत याहे, (शहे मूच कुटन । নাগরীতে হাত পুরে, গুড় লব তুলে। মাখামাখি কাষ নাই, চাকাচাকি নিয়া। कांटक थ्यटक व्यव श्वांत, कांटक हांड निया। ভাতরদী মাতরদী, কেবা জানে সার। कर्म्बत स्रुगांत्र चांट्स, त्मरे माज नात । কি সার অসার সার, যদি পাই মাং। নাৎ হোয়ে মেতে উঠে, বাব্দি করি মাও। কৰি কহে আছে। বাপ ্যত থাকে ভোড়। (कारम (कारम बां अ आरक, खरन खरन (कां प সারে নাহি সাব বোধ, অসারেতে সার। ইচ্চ'য় মাতের ঘরে, যেওনারে **আ**র । এ গুড় চটার গুড়, এ মাতে কি মাতে। ভাই বলি ওরে বাপ, থাক সারে মাতে॥ অহং পিটে পাগ্লা পেটুক্।

ভয়ানক শীত।

ৰূপক। ত্রিপদী।

পাইয়া यर्गद कन, (श्रमान म्म हन हन, কৰে শীভ প্রভাব প্রচার। ध्रित्रा औरनत वल, आहेल हिरमद मल ভয়ে की वित्रमंत्र खाकात ॥ माक्न माध्यत काछ, विशिष्ट वाट्यत राष्ट्र, নাহি ভার রাগের ব্যাপার। नाहि (ब्रांक देवस्थ्य स्माठांत्र॥ গঙ্গাসাগরীয় শীত, হইয়াছে বিক্ষিড, কামিনী হানছোপর,

इव्हिक मध्याधी मक्स मझ दम्ब किया कछ। সঙ্গদের ঘাত্রী যতঃ অবিরত কাঁপিছে কেবল 🕽 👢 **एव हिन्ना गर्छ नात्री**। मक्राय भी क्रम वांत्रि, ভীরে উঠি ওছ টল টল। भक् कति चन चन् উত্তরীয় সমীরণ, ' क्रिट्डिस् ख्राक्त, हक्ता रजन ना बादक बुदक, देखें ज़िल्ड मिकन सूर्य, (ह° हे मूदच हादन अक हांता । চালে মাত্র হাভখানি, প্রাকৃতির টানাটানি, সম্ম কি রকা হয় ডাভে 1 ভাহার অঞ্চল হরি। कद्वद्व हक्ष म कवि, अक्ल नाहिया (नय हुछ। চুই হাতে ছুই থাপা, ক চ দিলে দিৰে চাপা, कि (बदक बोटन बार के हैं है व किश् अात्रिटक यांग्र, आत्र किटन चटले कांत्र উপায় ना পाय किछ शाय। शंका लांक भाष भाष, युक काद भाषर. হাতে পদে বিপদ ঘটায় 8 চম্বিত পরস্পর, হৃদ্য চর্ণ কর, তক্ত ভাগ ধকুর আকার। ধনারে সক্ষম ভীর, क जिल्ला नारना भीक श्रुक्त्यदत्र कति छ छात्र । বাডালে উড়িছে বাস, দেখা যায় স্থাকান্ট এ আভাপ সুলবোধে লও। मूना र्य खन्म, তাহা নয় তাহা নয়, বুঝ ভাৰ ভাবুক বে হও ! प्रतिग'रक्षाक (काक, काक (काक है।क (काक काक वी मागद मह, किल कि कहि कहि कहि है। করিতেছে সভীত বিনাশ। कुष्क्रण पति रहा,

कर्त्र छोडे खरकाल अकान ॥ सुर्थ माहि नद्ध कथा, अस्योश स्ट्यस् यथा, इन्हा इस याद्दे ख्या छ छ। শিৰ দৃষ্টি শিৰ ভাৰেজ কারাজুলি বেল পাতে श्रमा विदेश जानि गांशा चै एए। गकत्र गरकाम शाहता, असे किन करे (सार्थ, ज्ञाचे छात्र बाह्य बसूत्रांश। खोशंत्र भूरंगाङ्ग खाँचा, जोशंत मञ्चरम खामा, নাগর জুটিরে ভার ভাগ।। कारिक मूटन धक दशरा, विकास मान्य त्यारश, क्षी बात नाहि खुल राहे। ভক্ষ্য ভেক ধরিবার, ফোঁস্ফোঁদ্ করিবার, मार्भव बार्भव माध्य माहे ॥ क्ष नज इंडेन क्षत्र, नाहि छात्र किছू रहा, बिनिद्र अवन क्योजन। बद्धारक बोकूक जान, त्कवा करत्र क्रमशान, कत नम्र में कि कारे। कला निगारमाना, मुश्चिकाया, उपाकारम मदा कामा, যভ সব গোঁলার গোঁলাই। সান করি জাঁতে আঁতে, লেগে যায় দাঁতেং, रांटि रांटि क्न करन छारे। करणवत् नव नवः **७** छोधत थेत्र थेत्र, खब शांठे कथा कड छटन। धू-धू-मी-मी, भ-भ-ध-भ-भरदा ॥ **बरे नीरड नांत्र खारड, बारनांशन क्ला** छारड, वक मन्त्रा (शक्ति (केत्र वार्ता । বিশ্বাভার কিলি বোগা, একবোর ভোগাভোগা, भूम बाज कात्र हिन छोता। সাঞ্চাৎ অনলময়, कार्च नम् निवाहरः

छत् (क्म क्रिट्रिम क्रांका हिम जीम कि जिंग, सिक्स कल म्यूनरा, मञ्ह्य श्रुविश्वा करण। महरण हरेल छित्र, कि कतिरख भारत नीत्र, यक मन्द्र। अशिमन्द्र। यन। শীতের শীতল বারি, নাছি মানে কোন নারী, श्रीर्फ (नर्ह विंद्ध आदम (कन ! ) > रुद्रज्दिकी माल, प्रुद्रजदिक्ती काल, स्थ हल, अख्य महीत। সভাবে সমুদ্র কায়, লাবণ্য ভ্রঙ্গ ভাষ্ কি করিবে ভরঙ্গিণী নীর। न द्रमन मध्य कदा, नयरन जांधन जता, ञ्जनम भिश्व भरश्चित्र। कार्थात्र भी देखत वल, अक दीरे खाता कल, ক্রবে স্থিক ক্রে। क्यांनांत्र पृष्णि (३१४) विश्विक् नाहि (वाध) সমরূপ সন্ধ্যা আর ভোর। তুকিয়া গৃহির পুরি**। চোরে নাহি করে চুরি**. যত ব্যাটা চোর, যেন চোর॥ দম্পতীর মহাস্থা, দুরে গেল সব ছুখ, त्रांखि मिन इरग्रह अर्थान। শরীরে শরীর ভুক্ত, মেধে শীভ জাসযুক্ত, त्तराह ज्ञान शाह ज्ञान । ক্ৰমাত মাধি বুম, নিয়ত ক্ষের ধূম, উম বিয়াজিত সেই ছালে। नाना उपहांत भरत, ज्यामग्र व्यवत करत, श्रुकांकदेत (स्थ श्रम्भ वाद्य ॥ १८ শীত সহহোতে বৰ্ষা, বিছোপির বুকে বৰ্ষা, मात्रिम मातिम अद्करादत ।

অনিবার হাহাকার, এখন কে আছে আর, এবিপানে বাঁচাইতে পারে॥ ২৬

#### 490 I

শীতকালের প্রভাতে মানিনী নায়ি কার মানভঙ্গ। পদ্য।

অংশর শিশির কালে, নিশির প্রভাগে। ইয়ৎ আরম্ভ ছবি, রবির প্রভাতে গ্র দেহ হোভে পরিহরি, ডিমির বসম। खर राम नय रहा, केंद्रिश शांक्र**ा** ভারাপতি ভারা সহ, গুলু করে হর। यश क्रम कार्कारमंद्र, (मांका मरनाइते । नाशत नाशही दर्शाटक, (बादन कुक्क नदन । पूल् पूल, कृष्टि अ<sup>श्</sup>षि, निमि काशहरन ॥ সুশীতল স্মীরণ, প্রশে কাঁপিছা। कामिनी कहिएक कथा, तसन कांशिया क्रांत यास कार निव तिरम कार भार वाध इत (यन कछ, बाह्याहि मन । वज्ञत्य ठाकिश (पर, छे फिल्महत्र काहि। উত্ উছ প্ৰাৰ যাক, শীভ গেলে বাঁচি ৷ চাসিয়া নাগন কৰে, খোল প্ৰাণ মুখ। भी उची छ (इर्फ 45, छा र रक्त हुन ॥ हत्र शकु मध्या भीष, करत उन रिख। হিতকর দোষী হয়, একি বিপরীত এ श्वित्रा त्रमती कटर, श्वाक हटक (हटता বিলে শীত হিতকারী, সকলের চেয়ে। যে শীত বিক্রম কবি, কাটায় শরীর। যে শীভ আশারে এত, করেছে অন্থর গ

यांत खरत शक शक शिवा, नां स्ट वंदित ।
यांत खरत शक शिवा, नां स्ट हुँ में ने ते ।
करमयत शक्त खारह, या नीरवर्त खरते ।
भवात्र वं वं कां नां कां नां करते ।
यांत्र वं वं कां नां कां नां कां नां वंदत है
यांत्र यांत्र खाँग कांत्र, श्रांकां कां मान ।
यांत्र नां कांट्र वं केशा, कांत्र कांग्र वं मान ।
यांत्र नां कांट्र वं केशा, कांत्र कांग्र वं ।
यांत्र नां कांत्र थांना एपर , प्रणिक नं गंग्र वं ।
यांत्र वं कां कांत्र थां , वर्ड मांत्र वं ।
यांत्र वं कांत्र थांना ।
विराम स्थार भा हं जां , कर्ड क्र क्र वं ।
यांत्र खांत्र थांत्र ।, मर्था खांत्र वं वं वांत्र वांत्र वं वांत्र वा

নায়ক নারিকা প্রতি, কছিতেছে শেষ ।
কিলে লীত হিউকারী, শুন সবিলেষ ।
রূপগুণ হাব ভাব, ভোগার বে আছে ।
যারা ভার অফুরূপ, চুরি করিয়াছে ।
সেই সর চোর ধরি, লীত মহারাজা।
একে একে সকলের, দিউতেহেন সাজা ।

কুন্তলের নিভা ছবি, বিভাবরী নিশা।
শীতের শেহষতে ভাই, হইভেছে কুশা।
হেমন্ত করিল ভীর, অহছার কয়।
দণ্ড দণ্ড, দণ্ড পেরে, দণ্ড নাশ হয়।
কু-আশা জানিয়া ভার, কুয়াশার জালে।
একেবারে ঘেরিয়াছে, আকাশ পাভালে।
রজনী শাসন হেতু, ঘোর তর ধুমু,।
জল খাঁডে, হুল জুড়ে, গুনো উঠে ধুম।

আর বদশ্য স্থরপাস, বিনোদিনী ধনি।
বেনীর বিনোদ ভাব, হরেছিল কণি ॥
কোরে পাপ, পেরে ডাপা, ভয় বড় মনে।
বিরলে লুকালো রাপ, পাঁড আগমনে॥
নিয়েছিল মীর্ষর, কেশের আডার।
বর্ষা শর্দে বড়, জাঁক ছিল ডার॥
ভীম সম ভীম হিম্, দিলে প্রভিক্ষা।
এখন পগনে ডাই, নাহি পায় হল।
পড়িয়াছে ছাই সব, শত্রুদের মুখে।
বেশ করি বেশ কর, কেশ বাঁখো হথে॥

ভোদার মুখের ছবি, রবি ছরিয়াছে।
দেখ ভার কি প্রকার, দশা ঘটিরাছে।
সমুচিত প্রতিকল, পেরে হাতে হাতে।
জর জর দিবকিয়, বৃশ্চিকের দাঁতে।
ভেবে ছিল তূলা করি, পাপা যাবে ভার।
জানেনা যে আছে শেব, ধর্মের বিচার দ শীতের শাসন জোর, থণ্ডিবার নয়।
ভয় পেয়ে নিলে বিয়ে, অগ্রির আশ্রয়।
ভরু ভার প্রভা নাই, ত্রঃখ পায় জতি।
ভেবে জেবে দিন দিন দীন দিনপতি।

আর দেব চাদমুখি, গগনের চাদ।
অবিকল হবিহাছে, তব মুখু ছাদ্দ।
লুটিলে পরের ধন, না হয় হসার।
বত তার অহকার, হোরেছে তুবার দ
একপ বিপদ যুক্ত, দেখি বিজয়াজে।
ভারা দারা যারা ভারা, লুকাইল লাজে।
দিনির হরিল ভার, নিশির সম্পদ।
ভুতুষারে মারকর, হারাইল পদ।

আর দেও সরোধরে, নলিনী স্থলরী।
হরিয়াছে ভোষার, ও সুথের নাধুরী।
চুরি করি ভাল ভার, কল ভোগ হোলো।
অল নাঝে দল সহ, ভথাইয়া নোলো॥
চোরের হইল সালা, যৌন কেন রও।
একবার মুখ তুলে, হেসে কথা কও ।

নয়নের চঞ্চলভা, ছেরিয়ে খঞ্চন। (शांद्रिक्त मक्र**णत, श**पत्र त्रक्षन । হেমন্ত করিল ভার, জকুটি ভঞ্জন। থঞ্জন রঞ্জন নয়, এখন গঞ্জন ॥ পাখা নাড়া, চোখ নাড়া, মুখ নাড়া ভার। ঘুচিয়াছে সমুদয়, কিছু নাহি আর ॥ আর দেখ কুরঙ্গ, কুরঞ্চ করি কত। र्तियादक् सम्रामन, व्यवस्य या ॥ সেইৰূপ শাস্তি তার, করিয়াছে শীড। তুণপত্র আহারেতে, হয়েছে বঞ্চিত। क्षांत्र (मर्थ हेन्सी इत्, कारल एक थ। किस्रो। নয়নের শোভা যভ, লোয়েছে হরিয়া # শীত ঋতু হরি তার, পতির প্রভাস। कीवरन क्रिन छात्र, कीवन विनाम ॥ हक्कुटहात यात्रा छात्रा, मात्रा श्वम खात्। চারু চাক্ত চাও প্রিয়ে, প্রেমাধীন পানে। ভোমার হাসির ছটা, হরিয়া দামিনী। वत्रवाय रूरशहिल, जूवन जानिशी। দীত ভার সমুচিত, দও করিয়াছে। আকালে চাহিয়া (तथ आंत्र कि (म आंद्र । शिम होत्र, कीमि शिन, इछ श्रीगृथी। প্রকাশ করিয়া আস্যা, কর প্রাণ স্থা।

হাস্য তড়িতের ঘটা, করি একবার। দুরু কর মধের সকল অক্সকার !

তিত ফুল ছরি তব, নাগার গঠন।
শিশির রাজার করে, হইল পড়ন।
আর কেন নাকে ছাড়, দেও ভূমি প্রাণ।
প্রকটিড প্রেম-পুল্প, লছ ডার আণ।

ভুকর জক্টী ভঙ্কি, হেরি রাম ধছ।
ভাষাত প্রাবণে ধরে, মনোহর ভছ।
বর্ণ তার পীত হয়, মনে ভাবি এটা।
পীত নয়, পাপ ভোগ, পাগুরোগ সেটা॥
নারী ভুকু চোর বলি, সাঁপ দেন শীভে।
এই হেতু রামধন্ত, মরিয়াছে শীভে॥
হারাধন পুনরায়, পাইয়াছে প্রাণ।
ক্রিভুবনে নাই আর, উপমার স্থান।
ক্রেধ্বর ভাবি বাণ, করিয়া সন্থান।
একবার বিধুমুখী, বধ মম প্রাণ।

ঘোটেছিল কি প্রমাদ, বসস্ত সময়।
চারিদিগে শানু সব, ভরুলভা চয়।
অধ্যের রাগ ভাগ করিয়া হরণ।
মনোহর নবপত্র, করিল হারণ ।
অধ্যের রাগ চুরি. একি প্রাণে সয়।
আমার সর্বান্থ ধন চোরে কেড়ে লয়।
হিমাগমে প্রভিকল পাইয়াছে ভার।
সকলেরি নেড়ামান্তা, পাভা নাই আর ।
মনোহুৰে এডদিন আছি শন প্রায়।
অধ্য অমৃত দিয়া, বাঁচাও আমায়।

দশনের দীপ্তি চৌর, মুইভার হার।
শীতে ভার ভোগা হোলো, কৌ টা কারাগার ট
দীতভাকা দীত চোর, হরেছে এখন।
হির হয়ে স্থাধ কর, দশন ব্যণ ট
মদনের মান প্রিয়ে, রাধ একবার।
বদনে প্রিত্র কর, বদন আমার ট

গালের মৌরব চুরি, করিয়া গোলাল।
শীতকালে শীর্ণ হয়ে, করিছে বিলাগ।
গিরেছে সৌরভ তার, কাঁটা হোলো গাছে।
পাগ কোরে, ভেবে ভেবে, কাট হইরাছে।
দেখিলে স্বরূপ নব, দেখিলে স্বরূপ।
কি রূপ চোরের রূপ, হরেছে বিদ্ধুপ ।
দুর্জনের দণ্ড করি, হরে দণ্ডধর।
গওদেশে স্থিত কর, আমার অধর।

ভালিম হরিল তব, পরোধর ভাব।
সেই হেতু শীতে ভার, বিপরীত লাভ ॥
ভয়েতে শিহরে সলা, কাঁটা কলেবরে।
আপনি আপন পাপে, বুক্ কেটে মরে॥
আর দেখ পক্ষকলি, জলি মনোলোভা।
হোরেছিল প্রাণ ভব, ক্চকলি শোভা।
নীহার করিলু ভারে, অশেব আঘাত।
ফুটিবে কি, উঠিবে কি, সদলে নিপাভ ॥
পাছে কের ঘটে কের, মরি মনো ছবে। 
কুচকলি লুকাইয়া, রাধ মম বুকে॥
প্রণারনী প্রাণ ভব, কর কোমলভা।
চুরি করি লোম্বেছিল, কমলের লভা॥

শীতের শাসনে অগ্নি, মতা তার জ্বলে।
সেই হেতু একেবারে, লুকাইল ফ্রলে।
নিতে আর পারিনেন। তক্ষর নিদয়।
তুলপাশ দিয়া বাঁধো, আমার হালয়।

গতির পরিমা চুরি, করিরাছে হাঁস।
শীতে ডাই, নাই ডার, ফলের বিলাস ।
শিশির ডাহার পক্ষে, হয়েছে শমন।
মরাল কটাল ভরে, না করে সমন ।
লোভ চেতু মাহি খনে, লোকের বারণ।
গমবের গুণ চুরি, কোরেছে বারণ!
চুরি করি ঘটে পাপ, নাহি ফানে মুঢ়।
থর থব কাঁপিভেছে, গুড়াইরা ভঁড় ॥
জর জর কলেবর, খোরতর রোগা।
ভূগিডেছে হন্তী মুর্য, স্বকর্মের ভোগ ॥
গতি চোর সকলের, হইল চুর্মতি।
আমার হুদের প্রেণ, কর প্রাণ গতি ॥

কটির ক্ষীণ্ডা হরি, হরি হরি বন।
হিম ডয়ে বিবর্গেডে, করিবা শরন।
করি অরি, তব অরি, হরি নাম যার।
এখন হরেছে তার, হরিনাম যার।
এ সময়ে কোন প্রাণ, মান কর আর।
ছলাইয়া ক্ষীণ কটি হাঁটো একবার।
কোপা হরি, কোপা করী, হংস্কোপা রবে।
মতি হেরে রতিপতি, পদান্ত হবে॥

তৰ উক্ল শুক্ত ভাৰ, হোঁর রপ্তা ভক্ত। শিশিরেতে শীণকাঁয়, পালে হয় সক্ত। কেমন কর্মের ভোগা, নাহি যার বলা। শুকাইল লুকাইল, ফল পেয়ে কলা। शन कात शहन माहे, महिन विश्वदाः। त्थामण्याः, त्थामण्याः, त्राहका त्थान शहन ॥

চাঁপা ফুল কোরেছিল, অঙ্গুলেন নেথা।
কোধা নে এখন ভার, নাছি আরু দেখা।
কোধা ভার কটু মন্ধ কোথা ভার রল।
শীতাগনে ভর পেরে, পঞাইল খল।
চম্পক বরণী ধনি, মারা গেল চাঁপা।
করাসুলি চাঁপা কলি, বুকে দেও চাপা।

কপ চুরি করি ছেম, প্রেম নাছি পায়। হিমে ডারে ছিম বলি, নাছি ডোলে গায়। বন্দিরতে বন্ধ হয়ে, আছে কায়াগায়ে। আমারে ভূষিত কর, প্রেম হেম হারেঃ

পিকনর, মধুকর, স্বরচোর চুটো।
গাঁডের নিকটে আছে দাঁতে করি কুটো।
তার নাই কোকিলের, মনোহর রব!
বৃহু ভুলে উছ বলে, হয়েছে নীরব॥
নিয়ত নয়নে তার, বহে নীরধারা।
কুহূর আকার পেলে, হোয়ে কুছ হারা॥
দেখ আর ভ্রমরার, ঘটেছে কি দায়া
হেরিয়া তাহার প্রথ, বুক ফেটে যায়॥
সরোবরে বিকসিতা, নহে ভার বধু।
মনে ভাবে, কোবা যাবে, জোবা পাবে মধু॥
ভ্রমে পড়ে ভ্রমে গিয়া, সরোবর জীরে।
কোভ পেয়ে স্বধু মুবে, জালে রোক্ষ ফিরে॥
কেতকী কাঁটায় পোড়ে, ছিজিয়াহে পাখা।
সকল শহীর তার, ছোলো রুক্ষ মাখা।

ত্তন তাৰ ক্ষয়ে জলি, শুনিতেই খনি। শুন শুন গুণ নয়, বোলনের খানি । সকলে পাইল লাজা, চোর ছিল যত। ধনি তৰ ক্ষমি ক্ষার হোজো ধানি ইত॥

মৃত্ দৃদ্ধ হালা করি, মধুর বচলে। একবার কথা কহু, প্রেক্স্লুর নদনে॥ অধা ক্লবে দেহাপ্রাণ, প্রেমপ্তৰ পেয়ে। পলাইবে অবিচয়, পরিচয় পেয়ে॥

কামিকার উক্তি।
শুনিয়া এসব কথা, মান পরিছরি।
নাগরের করে ধরি, কচিছে নাগরী ।
রসিকের রসাভাস বুঝিবার তবে।
ছলেতে ছিলাম প্রাণ, অভিমান ভরে।
কতু কি ডোমার প্রতি, থাকি আমি মানে।
পরিমাণে করি মান, ছরি মান মানে।
গেল মান, পেলে মান, হিডকারী শীত।
রাথহ তাহার মান, যে হয় বিহিত।

গ্ৰীমবৰ্ণন। ৰূপক। ক্প্ৰকৃতিকৃতিকুদ্দ।

আরতো বাঁচিনে প্রাণে বাপ্রাপ্রাপ্।
বাপ্রাপ্রাপ্ একি গুনটের দাপ্॥
বিষয়ীৰ হোলে গোল বিষধর সাপ্।
তেক্ তার বুকে মুখে মারিতেছে লাফ ।
বলিতে মুখের কথা বুকে লাগে হাঁপ্।
বার বার কত আর জলে দিব ঝাঁপ্।
প্রাণে আরে নাহি সয় তপনের তাপ্।
শুন্য হতে পড়ে যেন অনলের চাপ্।

विकल रहाँ एउट जय नहीं देह है केल।
रम कर्ना कर्मा करा कर्मा कर्मा

কি করে করুণ, আড়ি রবি মহাশর।
তারণ ত নয় একো আরুণতেন য়।
কিন্তণ দেখিরা কোকে নিজ তারে কর।
মিত্র যদি মিত্র, তবে শরু কোখা রয়।।
এই ছবি এই রমি শব অভিশয়।
নলিনী কি ভান দেখে; বিক্ষিত হয়॥
পিতৃত্ব পুজে হয় এইড নিশ্চয়।
পিতা হোয়ে রবি ব্যাটা পুজেণ লয়।।
ভার ভার করিকেতে হরিত্তেছে বল্।
দে কল্ দে কল্বাবা দে কল্দে কল্॥
কলনে কাল্দে বাবা কল্দেরে বল্।
দে জল্দে কল্বাবা দে কল্দে জল্॥

ভার ধার হইতেছে অধিল সংসার।
ঘার রিটি যায় স্টি বৃটি নাই আর।।
কিবা ধনী কিবা দীন কেছ্ নাই সুখে।
সবাকার শবাকার হাহাকার মুখে।।
ক্লণমাত্র কেছ্ আর নাহি হয় ছির।
কার সাধ্য দিনে হয় ঘরের বাহির।।
শমনভাতের ভাতে বালি ভাতে ভাই।
ভাতে যদি পড়ে পদ রক্ষা আর নাই।।
ভখন অচল হোয়ে পড়ে জুমিড্ল।
দে জল্ দে জল্বাবা দে জল্দে জল্।
দে জল্ দে জল্বাবা দে জল্দে জল্॥
দে জল্দে বাবা জলদেরে বল্।
দে জল্দে জল্বাবা দে জল্দে জল্॥

क्ल दिना क्रमांगत प्रत्य क्लाइत ।
क्रियान वाहित्व वल क्लावानि नत ॥
शक्ष शकी आणि-कृति क्रूइत (थहत ।
क्रियात व्यक्ति प्रत्य क्राव्य ॥
भी क्ला रहेरव रशिला यणि याहे वरन ।
वर्त्य वित्र ह क्षा क्र्य नाहि प्रत्य ॥
क्रिक्टल काश्र (प्रय प्रात्राक्षणा होगा।
क्रिश्त क्रम्य वर्ष नी ह कांत्र क्षांग्रा ॥
हावा रहारत हुछ वावा रण क्षांग्रा ॥
हावा रहारत हुछ वावा रण क्षांग्रा ।
क्षांग क्ष्मांग क्षांग ।
क्षांग क्ष्मांग क्षांग ।
क्षांग क्ष्मांग क्षांग ।
क्षांग क्ष्मांग क्षांग ।
क्षांग क्ष्मांग वावा क्ष्मांग (प्रक्मांग क्षांग)।

वाच रहान द्वांश हर् जांश नाहे जांत।

भिकांत श्रीकांत नाहे भिकारत विकास ॥

जांव प्रत्थ रवांथ हर्य हहें सार्र्ड मृति।

जांत कार्ड एर्य व्यार्ड मृत्र व्यांत मृत्री ॥

वित्र कार्ड एर्य व्यार्ड मृत्र व्यांत मृत्री ॥

वित्र कार्य जांद राम वांत ॥

विक्र हें ब्रह्मार्ड ब्राम्म वांन ॥

विक्र हें ब्रह्मार्ड ब्राम्म वांन ॥

विक्र हें ब्रह्मार्ड ब्राम्म वांन ॥

प्रत्य व्याप्त नाहे चम्म वांत ॥

एंड एंड चन्डा (वांश यंड म्व चन् ।

प्रमान प्रमान वांचा प्रमान (प्रमान ॥

प्रमान प्रमान वांचा प्रमान (प्रमान ॥

प्रमान प्रमान वांचा प्रमान ।

হায় হায় কি করিব রাম্রাম্রাম্। কভ বা মুচিব আর শরীরের থাম্। টস টস্করে রস্করে অবিশ্রাম। দারুণ তুর্গন্ধায় পোচে যায় চাম্। ঘামাতি ঘানের ছেলে উঠে দেছ ছেরে।
পুবের বালাল চাচা যত রাবু তেনে ।
নথাঘাতে হরে যার সকলে কর্পালা।
নাকাং পরেশনাপ বর্বম স্কোলা।
একেবারে বদ্ধ হোল মূল আর মল।
দে জল দে জল বাবা দে জল দে জল।
দে জল দে জল বাবা দে জল দে জল।
দে জল দে জল বাবা দে জল দে জল।

আকাশে না শুন আর সলিলের নাম।
বিরস হইল গাছে রসময় জাম ॥
শুখায়ে সকল লাখা বাড়ে হৈল ভালা।
কালরূপ খুচে ভার হইয়াছে রাজা॥
নারিকেল শুখাইল হোমে জল হারা।
বেভাল হইরা ভাল লাসে যার মারা॥
কোবেভে ধরেছে দোষ জল না পাইয়া।
কাটাল হইল জেঠা এঁ চড়ে পাকিয়া॥
জল বিনা মধুহীন হলো মধুকল।
দে জল দে জল বাবা দে জল দে জল্॥
জলদে জলদে বাবা জলদেরে বল্।
দে জল দে জল বাবা দে জল দে জল্॥

হইলে মধ্যাই কাল কি প্রামাদ ঘটে।
জীবন শুখান্তে থাকে কলেবর ঘটে॥
ছট ্ফট লুটালুটি এপাল ওপাল।
আই ঢাই করে খাই পাখার বাডাস ॥
পাখার পবনে প্রাণ কড যায় রাখা।
বোধ হর সে বাডাদে স্ভালন মাখা।।
নিদারণ নিদাখেতে নাহি পরিকাণ।
জগভের প্রাণ নালে জগতের প্রাণ।।

किन्छ कि विक् क्षित्र क्षित्र क्षेत्र क्षेत्र । एम क्षेत्र क्षेत्र क्षेत्र विक् विक् विक् विक् विक् क्षेत्र क्षेत्र क्षेत्र क्षेत्र क्षेत्र क्षेत्र विक् विक क्षेत्र विक क्षेत्र क्षेत्र विक क्षेत्र

উপরে চাহিয়া দেখ, পাখী কি প্রকার!

শাখার উপরে করে, পাখার প্রহার ।

কাতর হইয়া কত, কাঁদিতেছে হুখে।

অবিরত, হা জল যো জল, বলে মুখে ।

কণ মাত্র নীচ পানে, নাহি চায় কিরে!

উদ্ধানুখে ডেকে ডেকে, গলা গেল চিরে।

ওবু ঘন নাহি হয়, সদয় জদয়।

খেয়েছে কালের মাথা, নীরদ নিদয়॥

পিপাসায় মারা যায় চাতকের দল।

দে জলু দে জলু বাবা দে জলু দে জলু॥

জলদে জলদে বাবা, জলদেরে বলু।

দে জলু দে জলু বাবা, দে জলু দেজা।

আহার প্রহার সম, নাহি রোচে কিছু।
দাঁতে কেটে, থু করে কেলিয়া দিই নিচু ॥
পাত পেতে, ভাত খেতে, বিষ বাধ হয়।
ডাল ঝোল যাহা মাথি, কিছু ভাল নয়॥
সুধু মাত্র, বেছে খাই, অভলের মছে।
নিকটে না আনি আর, কছলের\* গাছ॥
কেবল অছল রস, সম্বল করিয়া।
পেটের ধ্যল পাড়ি, ট্রল ধ্রিয়া॥
তবু পোড়া দেহ মম, না হয় শীতল।
দে জল দে জল বাবা, দে জল দে জল।

# (७७) ও यहेनामि।

जनादम जनादम स्थितः जनादमध्यापन् । दम कान्यादम कान्यायाः , दम कान्यादम कान्या

श्रीष करत विश्वनांता, मृत्या जग्नस्त ।

गृष्ठि आत नाहि हत मृष्टित (गांहर ॥

गां थी शरत खाँ सि मूर्ति, आद्य शांधी नव । ।

हत आत नाहि हत्त, नाहि कनत्व ॥

रवांकिन कांछत हर्ति, नाहि कनत्व ॥

रवांकिन कांछत हर्ति, नाहि कनत्व ॥

रवांकिन कांछत हर्ति, नाहि कांति ॥

रवित विशिन याद्या, नात कित गांछ।

धार्मिक हहेगा वक, नाहि ह्यांत्र मांछ॥

ज्ञन के जिमा छाश, शांधा निकन्।

रा सन् प्रमा कांपा, रा सन् ए सन् ॥

सन् प्रमा सन् वावा, सन् सन् ए सन् ॥

रा सन प्रमा वावा, सन् सन् ए सन् ॥

रा सन प्रमा वावा, सन् सन ए सन् ॥

ভাবি মনে श्रिक्ष हर, সরোবরে নেয়ে।
পুক্রে ফুকুরে কাদি, জল নাহি পেয়ে।
সেলল অনল অলে, পুড়ে হই খাক।
ডুব দিয়ে ভূত সাজি, গায়ে মেখে পাঁক।
কত জল খাই ভার, নাহি পরিমান।
ডাগর হইল পেট, সাগর সমান।
বোতলের ছিপি খুলে, বদি খাই সোদা।
তার ভার বোদী লাগে, মুখ হয় জোদা।
উদরে খেলিয়া চেউ, করে কল্ কল্।
দে জল্ দে জল্ বাবা, দে জল্ দে জল্।
দে জল্দে জল্বাবা, দে জল্দে জল্।
দে জল্দে জল্বাবা, দে জল্দে জল্।

उभवत्म जिन्दालं, हेक्की मवाकातः।
किन्द इस जिन्दालं, जिन्हांम नीतः।
जूनिया श्रम् कृत्म, नित्न जातं वाम।
जनत्म श्राची श्रम, नित्न जातं वाम।
जिन्दा श्री श्रम, नित्न करतं वाम।
विश्विष् भी जन इस, रक्तन नित्न वाम।
जन श्रम, श्रम जूनि, जार्क जन्मकारतः।
ज्ञान श्राच हक, क्रम निवादः।
इस्म श्री एक क्रम, क्रम मिनवादः।
इस्म श्री एक क्रम, वावा (म क्रम, प क्रम, प क्रम, वावा, क्रम, वावा, प क्रम, प क्रम, प

নাঠ আছে কাঠ হয়ে, ফুটি কাটা নাটা।
কোণা জল, কোথা হল, কোথা ভার পাটি।
হোয়ে চাসা, আশা হারা, হার হার বলে।
কাঁদিয়া ভিজায় মাটা, নয়নের জলে।
শস্য চোর গ্রীষা-বাটা, দস্য অভিশয়।
ক্ষির কল্যাণ কথা, কভু নাহি কয়॥
কপালে আঘাত করে, নীলকর যারা।
রবি করে লারা হোরে, মারা গেল চারা।
আকাশ চাহিয়া আছে, কাছে রেখে হল্।
দে জল দে জল্ বাবা, দে জল্ দে জল্।
জলদে জলদে বাবা, জলদেরে বল্।
দে জল দে জল্ বাবা, দে জল্ দে জল্।

নগরের দক্ষিবেছে, যত খেত নর। ঘাটায়ে খদের টাটি, মড়িনগদ ঘর॥ ভাহাতে চালের क्या, চালে নিরস্তর।
ভথাত শীজন আহি, হয় কলেবর।
এ গাড় ও গাড় বলি, ইবেডে উলিয়া।
মনোহর হাসা কুর্ডি, কামিক খুলিয়া।
আভি-জল খায় ভবু, ঠাপ্তি নাহি করে।
কেবল চাইস\* ভরা, আইসেরা পরে।
ভখায়েছে বিবিদের, মুখ শভদল।
দে জল দে জল বাবা, দে জল দে জল্॥
জলদে জলদে বাবা, দে জল দে জল্॥
দে জল দে জল বাবা, দে জল দে জল্॥

मलेलिया मिंध होयो, होना मन ये ।
किया पत्र शिना जना, करण करण दे ।
किया पत्र शिना जना, करण करण दे ।
किया कामरन बर्म, मज योग जूरन ।
क्षांत जामरन बर्म, मज योग जूरन ॥
किरवरत होनार कना, कना जार्या होग्र ।
क्षांत ज्रांत कर्मा, कना जार्या होग्र ।
क्षांत क्रांत कर्मा, निक रणे भारत ।
क्षां परत हक हक, कन हार्य भारत ।
का हुँ दे क्षांत, मिंक स्मार कर्मा ।
का क्षांत क्षांत वार्या, क्षार हा क्षांत ॥
कारम क्षांत वार्या, क्षार हा क्षांत ॥
कारम क्षांत वार्या, क्षार हा क्षांत ॥
कारम क्षांत वार्या, क्षार हा वार्या ।
का स्मार वार्या, क्षार हा वार्या ।
का स्मार हो वार्या, हम्मा वार्या, हम्मा वार्या क्षांत ।

একেবারে মারা যায়, যত চাঁপদেড়ে। হাঁস ফাঁস করে যত, প্যাশ খেগো নেড়ে॥

<sup>\*</sup> इच्छा।

<sup>†</sup> बद्रक ।

विष्मचन्द्रः भोको शांकि, भिष्ठ देवो छे कु छ । होज विश्वा भारते छोटक, श्लंको भावा के छू छ । काकार कालाः वित्रा स्थानाः में कि भावा के छि । काकार जाः, रकावाकां ज्ञा, वर्षा काला मित ॥ काकार जाः, रकावाकां ज्ञा, वर्षा स्वरूपः। वृक्ति का भावा भावा, वृक्ति वाह्य रक्ष्म ॥ वन्द्र कि का भावा । काल का का वाह्य । काल का का वाह्य । काल का का वाह्य । का का प्रकार वाह्य ।

वावूशन कांतू इन, (कर नेन सूची।
वाका रहा श्वाका छाउ, विवि जव थुकी।
मिलना मिजद श्वादा, या है है मुश्री।
घाए जाद्र नाहि लग्न, महत्नद्र द्रूँ कि॥
वाग हाल जाद्र नाहि, नाहे लु कांत्र नाहि ।
जामल कूनल नाहे, स्पूर् के कि यूँ कि॥
पित्र श्वित हांत्र मिन, मृत्य छिठे कि।
छश्तिहें हांफाहांफि शाव मिना स्र कि॥
विवाद सूव श्वाम जल, शाक शान् ।
वाम जल पर जल वावा, पर जल पर जल।
वाम जल पर जल वावा, पर जल पर जल।
वाम जल पर जल वावा, पर जल पर जल।

হায় হায় কার কাছে, করি বল বেদ। যায় ধর্মা একি কর্মা, গ্র মর্ম্ম ভেদ। জী পুরুষ উভয়ের ষটেছে বিচ্ছেদ। নিদায নাত্তিক ব্যাটা, লুপ্ত করে বেদ। मध्यां व्हेल (यन, विश्वांत व्यांत्र व्यांत्र ।

क्रिक्ट व्यांत्र व्यक्तवात्र, 'यांकि ग्रीटर्स भीत्र ।

महारे क्ष्मल यन, यक्त थूटल वांटर्स ।

हेक्स करत व्यक्तलर्देत्र, व्यक्टल मांद्रोटर्स ।

व्यारश खारंश थूट्स रक्ष्मल, बांना व्यांत्र यम् ।

क्रिलंट्स क्रमण्ड वांचा, क्रिकट्स तम् ।

क्रिकट्स क्रमण्ड वांचा, क्रिकट्स तम् ।

क्रिकट्स क्रमण्ड वांचा, क्रिकट्स तम् ।

(काशाय बद्धन, शय, काशाय बद्धन ।
वद्धन कद्धन (शाय, जागाव छद्धन ।
वद्धन कद्धन (शाय, जागाव छद्धन ।
व्धनि निषय शीया, मद्धन, मद्धन ।
व्यन्त प्रत प्रत हद्धन ।
व्यन्त प्रत प्रत हद्धन ।
व्यन्ति विषय व्यक्षन ।
व्यक्षन ।
व्यक्षन विषय व्यक्षन ।
व्यक्षन व्यक्षन ।

কোণায় কর্মনাময়, জগতের পতি।
তব ভব নাশ হয়, কি হইবে গভি।।
করুণা কটাক্ষ নাথ, কর এক বার।
পড়ুক আকাশ হোডে, স্থার স্থধবি।
চেয়ে দেখ চরাচরে, কারো নাহি বল্।
কিরুপ হোয়েছে সব, জচল সচল।।

-

चात्र नाहि मञ्च हत्र, श्राचित्र कत्।
बात्रायात्र छत्र माम, श्राचित्र कत्।
कास्ट्रत (जांशात्र छातिः चौरि छल् हल्।
एम सल् (म स्वल त्राची, एम सल् (म स्वल्॥
एम सल् (म सल् त्राची, सल्यल (म सल् ॥
एम सल् (म सल् त्राची, प्रमादि चल्।

## বিশ্বযাতা।

প্রেকৃতির সহিত প্রকৃতিপতির বিশ্বযাত্রা অতি চমৎকার! এ যাত্রা সে যাত্রার নিমন্ত্রন করিতেছে,— এই সূত্রধারকে প্রাকৃতিক বিশ্ব প্রকৃত নাটকের দুশ্য হইতেছে, তথাচ ভ্ৰান্তি নশতঃ আমরা প্রকৃতির প্রকৃত ব্যাপার কিছুই वुबिट्ड भारत ना, किहुरे क्वानिट्ड भारत ना, এবং চিত্তের অন্তিরতা জন্য স্থির হইয়া কিছুই স্থির করিতে পারি না ৷—বেমন উভয় বধিরে কথোপকথন হইলে পরস্পর পরস্প রের বাকোর ভাব গ্রহণ ও মন্মাভ্ধাবনে जमर्थ इत्र ना, खराह शत्रण्यत्र निक निक কম্পিড ভাবের অভিপ্রায়ামুযায়ী এক এক क्रभ अनिक्रिनीय मंत्रीत्र ३ श्रुक्त वाभ-नांभन खरुश्करत् वक श्रक्ष मरम्भूना হইয়া অনিশিচ্ত বিষয় নিশিচ্ছ বোধে গোলবোগে কার্য্য সাধন করে, সেই প্রকার भूक्तकामार्वाध । भर्ताष्ठ এই छाननीनामि मानव मां जाइ अवस्थात नकटल क्र शाजीय यांवछीय वााभादि द्वतन नानाक्रभ উल्लय

করিয়া আবিডেছেন, কিন্তু ক আৰচনা! পরস্পারের উজির সহিত পারস্পারের উক্তির প্রায় ব্যতিক্রম দেখিতেছি। ইহাতে त्नान् डेंकि मुक्तिनन, छोहा किसाल খির হইতে পারে, যাঁছার বুদ্ধির যেরূপ তাৎপৰ্যা ও বড়দুর পৰান্ত সীমা, ডিনি (महे भर्या बहे निवेश कतिए भारतन, अपू-ভাবের অহভুতি বভদুর, ভতদুর অবধিই বুদ্ধিবৃত্তির স্কৃতি ইইতে পারে, ভাহার অতিরিক্ত কি প্রকারে সম্ভব হইতে পারে, অভএব এডক্রপ সংশয়সংঘটিত সন্দেহ-শীল হইয়া সংসারসিন্ধুর ভটে নিরস্তর मक्षत्र करा मधीवन फुःटब्र नाभाव मरह। धरे मर्भग्र शाम (छम करिया कि छे भारत मान्यस्मा इहेत ? डाहात्र छिन পাওয়া অভিশয় চুম্বর হইয়াছে। যাহা হউক, আমরা ঐশীক বিষয়ের অধিকভর व्यारमाठना कर्राण अखिलाय करि ना, कार्रन ভাবনা-দারা তাহার কিছুই নিশ্চয় করা यात्र नी, नगमगानि छन-विभिन्छे श्रुताजन ভপস্থিগৰ বৈষ্ট্ৰিক কোন বিষয়েই প্ৰায়ুত্ত हरमन नारे, नमीत कन, वृत्कत कन, धनः গলিভ পত্রাদি আহার করত যারজ্জীবন হন্ধ শুদ্ধচিত্তে অচিন্তা চিন্তাময়ের ভত্তি-ন্তায় নিযুক্ত ছিলেন, তথাচ তভন্মহাজানি মহাগুরু মহাত্মা মহাশুরো সেই অনস্ত গুণাস্থিত অনস্ত পুরুষের অনন্ত লীলার অন্ত করিতে জ'ন্ত হইয়াছিলেন, ইহাতে আমি কুত্ৰ এক ভাওছিত পিপীলিকাবং হইয়া ধুহৰ স্বাপ্ত বিস্কৃতকের প্রকাপ্ত কাণ্ডের क्या कि छेह्न कहिता। अमृतिशिक्ष कि दे आर्कृष्टिक कर्जुन्न वर्षार्च वर्षान्त रहेटल পারেন নাই। ভেতিক বিষয়ে যিনি যাহ। উল্লেখ করিয়াছেন, সে সকলি ভৌডিকবং. यश्चन आंगता जागांना महेन्छिनिरशत ना हेक बाब १ के स्टब्स किकामर शत र सकाल विमाय আশ্চর্মা জ্ঞানে ভাহার সকল অমুস্ঞানে क्षमक इहे, उथन यिन भेटे क्र भेटक ले हेक স্থরূপ করত আপনি অদুশা হইয়া শুনো म्ता नाना अकात कीषा स्वाहित्वहन, আমরা সেই নিখিল নট নাটের গুরুর অভ্যা শ্চর্য্য অমুপ্রমানাটের বিষয় কি বুঝিতে পারিব ? চন্দ্র ও ভূষ্য তাঁহার নাট্যশা-লার আলোক হইয়াছে। স্বভাব স্ত্রধার হইয়া য তার সকল হতে সঞ্চার করিতেছে। हुए कड़ किलीकिल अर्थाए लाएउ अवल হইয়। কত প্রকার কৌতুক করিতেছে । জল-ধব জাঁহার বাদ্যকর হট্যা জল্মতন্ত্র বাদ্য করিতেছে। পরন গায়ক হইয়া কখনো উচ্চ কখনো মৃদ্ধারে সঙ্গীত করিতেছে। সামান্য নটেরা রাজি ভিন্ন কেলি করিছে পারেনা, কিন্তু এই নাটকের বিজ্ঞান দেখিতে পাই ना। गामाना याजात अधिकातीश्रा अत-কের আগ্রাও সাহায্য বাতীত কার্যা করিতে পারে না, এই বিশ্বদানার অধিকারী काराद्या आछ्कुत्सात अत्शक्ता कददन ना, च्यार मञ्जूनम् मणात्र कत्रिद्रष्ट्रक । माम'ना যাত্রার ভাষ সকল ভাবনীয়, সংশার যাত্রার

ভাৰ অভান্ত অভাবনীয়া সামান্য যাত্ৰার वानरकता हेक्का श्रुक्तक जा जानिका शास्त्र, নিশ্বতার হালকের সর্বদী শ্রমিকায় সপ্ত'না জিলেছে: কথাৎ আমরা উক্ত মাত্রার অধিকারির অধীনত বালক হইয়াছি, আমা দিনের কখনই সঙ্জ সাজিতে ইচ্ছা নাই কিন্তু প্রকৃতি আমাদিমের অবস্থার বিকৃতি कविश्र श्रेमश्र्यक्षेत्र अष्ठ गाळाहेटछछ्न, हेर जागता (एकिशान एकिशान) জানিছাও জানিতে পারি না, বরং ভারাতে আহ্লাদ প্রকাশ করিয়াই থাকি ৷ আমাদি-গোর বাল্যকালের অবস্থা একৰপ, অভি কোষল, অভি ভদুশা, এক কালীন ভাৰনা-শ্না, (यम সাক্ষাৎ সদানক্ষ্যা । পারে যৌরন कारमत अवस्थ आत अक श्रकात, मधा दू काटलत मृद्धित नाग मिन मिन नाग्रागत উজ্জ্বলতা, দেহের প্রবলতা ওবলের আধিকা হয়। ইম্রিয় সূধ সম্ভোগে সভত সংযুক্ত, कथाना विमा ७ कानां नाइनां नियुक्त. এবং কখনো পরিবার প্রাক্তিপালনার্থ অর্থ ও অন্তিন্তার চঞ্চাচিত্ত। পরিশেষে वृक्षकान यउ निक्रें हत, एक्ट्रे संबीदित जार विकृषे इहेट थांटक। निवमार मिनम-कांट्यतः टेननामश्रात नाम मिन २ त्वर कीन रहेश यात्र रहा, भन्न, हक्कु, कर्ग, अञ्च इंखिय मकन क्रांम मिलन्य इरेड शांक, मछावनितां किए या सूथ्य अन, मुका-মাঞ্জ সরকত মুকুরের ন্যায় শোভা করিত, পরে লে শোভা আর কিছুই থাকে

না, যে দন্ত আঘাত ছারা প্রস্তর লৌহাদি চূৰ্ণ করিত, পৰে দেই দস্ত আবার কীটের मर्छ हुर्न श्रेषा भाषा। या करमत्त्र कृषाकृष्ठि ত্ৰ-পুরিত উদ্যালের নাগি লোভিভ হইয়া ছिन, श्रूमर्कात मारे करणव्य धवनां हरला नाशि मृत्रायान २३ एउ बीटक। (इ म्यूग्रा! তুমি বিশ্বনাটকের বছরপী কৌতুকী ইইয়া কেবল ক্রেডুক দেখাইডেছ, কিন্তু আপনি কিচুই কৌতুক দেখিতে পাও না, অভএৰ ইহার অপেকা আর অধিক কৌতুক কি আছে ? योखांक्द्रमिरशद योखा नकल कांत्रष्ठ इच्छा किस्पिर भरंबर (अय रुग्न, किस शका-যাত্রা তির এই সংসার্থাতার শেষ যাত্রা क्य ना, ग्रूड्यार य याखात याखी क्रेंग्रा যাত্রা করিছে আসিয়াছ, যদৰ্ধি সে যাত্রা भियं मा इयु जन्मि अधिकातीत गरमात-ঞ্জন করিরা ভাঁহার প্রিয় হইতে চেটা 1 56

তুমি মানবনামধারি ঐক্রজালিকদিনার কর্ম দেখিয়া বিশিত হইরাছ,তাহারা নোটা কত পণ্ডপক্ষি লইরা ক্রীড়া করিতেছে, জগদৈক্রজালিক জগদীশর পাঁচটা ভূত লইরা যে শমস্ত ব্যাপার করিতেছেন, তুমি ভাহার কি দেবিভেছ ? এক বুরিভেছ ? ভূমি কুতির কাঁও কিছু কি বুরিভে পার ? যেমন বাজীকরেরা যে শকল ক্রব্য লইরা বাজী করে, সেই শকল ক্রব্য, সেই শকল ক্রিড়াকগদের ক্রীড়ার বিষয় জানিতে পারেনা, সেইক্রপ জামরা বিশ্বক্রীড়াকারকের

হারাবাজীর প্রতুপ কইবা জাঁহার মায়াবাজীর মর্ম কিছুই বুঝিতে পারি দা। একটা
ভূতের নাম জনিলেই আমরা সকলে ভরে
ভটিহ হই জিনি অহরহ পাঁচটা তুও
লইয়া ভূতের মেলা এবং ভূতের থেশা
করিতেহেন, অতএব হে মন্থা! ভূমি এই
পঞ্চভূতের অধিপতি ভূতনাথের অন্তুড
ভৌতিক খ্যাপার কি বুঝিতে পারিবে?
ভূতের কার্যা দেখিতেছ, দেখা, কিছু আপা
নার এই শরীরকে ভৌতিক জানিয়া অনিভা
ভ্যান করত নিয়ত তদমুক্রপ কার্যা সাধ্যে
অস্তরাগী হও।

তুমি জগতের মেলার জাসিয়াছ, মেলা দেখা কিন্ত মেলা দেখিও না।

#### भगा।

নিশ্বরূপ নাট্যশালা, দুখ্য মনোহর।
শোভিত ইচারু আলো, সূর্য্য শশধর॥
সভাব স্থভাবে লোয়ে, সম্পাদন ভার।
করিছে সকল সূত্র, হোয়ে সূত্রধার॥
কলধর বাদাকর, বাদ্য করে কত।
সমীরণ সকীত করিছে জবিরত॥
ছয় কালে ছয়কাল, হয় ছয় রূপ।
রক্ষ ভূমে রক্ষ করে, ভাত্রের স্বরূপ॥
অধিকারী এক মাত্র অখিল পালক।
আমরা সকলে ভারে, মাত্রার খালক।
প্রকৃতি প্রদত্ত সাক্ষা শগীরেতে লোগে।
বছরুপ সঙ্গ সাক্ষি, বছরুপী হোমে।

**णिक्रांत धक्रि**श गर्द्य गढ़ला खन्म क्रश्रूर्त छाउ, खरन कठन ॥ স্বেশ্যল কলেবর, অতি স্থললিত। নৰ নৰনীত সম, লাবিণা গলিত ॥ कृति, क्रल, अनलाए, कि छू नाहे छत्र। नाहि जादन छोल गया, महानम्बरा ॥ आहेर्न (योवन कान, आंद्र এक्क्रेंग। यूवक खूर्याद्र जम, मीक्ष रुप्त ज्ञान ॥ भिन मिन वृद्धि है। भाशीविक वल। নানাৰপ চিন্তা হেতু, মানস চঞ্চল। ইব্রিয়ের স্থা হেতৃ, কভ প্রকরণ। বছবিধ অমুষ্ঠান, অর্থের কারণ॥ পরিশেষ বৃদ্ধ কাল, কালেব অধীন। কৃষ্ণ পক্ষে শশী প্রায়, দিন দিন ক্ষীব। আছে চন্দু কিন্তু ভায়, দেখা নাহি যায়। আছে कर्न किन्छ जाय, भक्त नाहि भाग्र ॥ আছে কর, কিন্তু তাহা, না হয় বিস্তার। আছে পদ, কিন্তু নাই, পতি শক্তি তার॥ পলিত কুন্তল জাল, গলিত দশন। ললিত গাতের মাংস, স্থালিত বচন ॥ ছিল আগে এই দেহ, সবল সচল। এখন ধরিল গিরি, স্বভাবে অচল।। ওহে জীৰ ভাল তুমি, রঙ করিয়াছ। ভিন কালে ভিন রূপ, সঙ্গাফিয়ার। কেবল কুহকে ভুলে, কৌতুক দেখাও। আপনি কৌতুক কিছু, দেখিতে না পাও ৷ ভাল কোরে যাত্রা কর, বুঝে অভিপ্রায়। কৰ ভাই অধিকারী, ভুষ্ট হন যায়। यांका द्वारत जूबि यादव, आबि याव csice! এ যাত্রার শেষ হবে, পঞ্চা যাত্রা হোলে ।

স্থির ভাবে এক খেলা, খেল ভিরকাল। ভাল ভাল ভাল बाकी, कशनिक्याता। काशावाको, माशावाको, कड वांकी (कांत्र। ভাবিলে ভবের বাজী, বাজী হয় ভোর । হার একি অপরূপ, ক্যারের খেলা। এক ভূতে রক্ষা নাই পাঁচ ভূতে মেলা। ভৃত্তে ভতে যোগাযোগ, ভূতে করে রব। দেখিয়া ভূতের কাগু, অভিভূত সব। ति चनाम थ जूरकत, मत्मारत तर । কৰে ভূত ছিল ভূত, আবিভূতি কৰে। श्वनतात्र बहे कृत, करन कृष्ठ इरन li **ज्ट**कत बामाग्र बाटका. (म्रद्यांनांटका ८५८ग्र । দিবা নিশি ভোমারেহে, ভূতে আছে পেয়ে 🛚 ভতের সহিত সদা, করিছ বিহার। অথচ কাৰনা কিছু, ভূতের ন্যাপার॥ কথনো নিত্ৰাং করে, কভু করে দয়া। गाहि मारन ताम नाम, नाहि बादन श्रेया । এই ভূড করিয়াছে, রামের গঠন। এই ভুক্ত করিয়াছে, গ্রার **স্ঞ্**ন 🛊 এই ভূতে রহিয়াছে, বি**শ জড়ী**ভূত। হলিগোই ছাড়া নন্, এই পাঁচ ভূত। ভুতনথি ভগবান, ভূতের আধার। সর্বভূতে সমভাবে, জাবির্ডাব যাঁর। ज्ञ श्रव **कालवन्न,** ज्ञुराजन मनन । অতএৰ ভুতনাথে, সদা ভাৰ মন 🎚

আদিয়াছ क्याटब्र, समा দ्यमःन । দেখ দেখ দেখ कीन, यक्त माथ मरन ॥

কিন্তু এক উপদেশ, কর ভাবধান।
ঠাটের হাটের মাঝে, হও সাবধান।
দেখো যেন মনে কন্তু, নাহি হয় ভূল।
কোরোনা কাঁচের সহু, কনকের তুল॥
ভাঁরে দেখা একবার যার এই মেলা।
মেলার জামেদিদে মেডে দেখোনকে মেলা॥

ছে মন্ত্ৰা ! ভুমি সাং নারিক তাবদ্বাপার
দর্শন করিভেছ । সকলি অনিত্য জানিয়াছ,
অভএব এই অনিতা সুখসস্তোগে অতি
শয আসক্ত হইয়া তত্তপথ বিস্মৃত হইও
না। যে কার্য্য করিবে, তাহাতে কামনাশুন্য
হও, ভুমি পরমার্থপক্জপুঞ্জের স্থমিষ্ট
উত্তম মধু পরিহার প্র্কাক কেন কামনাক্রপ কন্টকাবৃত বসহীন কেতকীকাননে
ভ্রমণ করিতেছ ? ঈশরের প্রতি মনের
সহিত ভক্তি কর, ঈশর ভোমাকে জননীর
জঠরানল মধ্যে স্থাপিত করিয়াও অতি
কোমল কলেবন্ধ প্রদান করিয়াছেন,
ভাহার নিকট কৃতত্ত হও।

জগদীশ্বরের সাধনা করিতে যদি
বিপদ হয়, তবে সেই বিপদকে সম্পদ
জ্ঞান করিবে । ভগবানের ভজনা ভিন্ন যে
সম্পদ, সে সম্পদ তোমার পকে বিপদ
, হইরাছে। ঈশ্বর ভোমার নিকটেই আছেন,
তুমি ঠাহাকে দেখিতে না পাইয়া আস্তি
বশতঃ কোধায় ভ্রমণ করিতেছ। যদি
সেই এক অদ্বিতীয় নিড্য বস্তুতে তোমার
বিশাস না হয়, তবে ইম্রান্থ প্রাপ্ত হইলে

তুঃখ ভোগ করিবে, সুখ কখনই ভোনার নিকটস্থ হইবেক না, আর ভূমি যদি ভাহার প্রতি যথ।র্থ প্রীতি কর, তবে বিনাধনে ধনেশ্বর কুবের অপেক্ষা অধিক সন্তোষ প্রাপ্ত হইবে।

পরমেশরের প্রতি যদি তোমার যথার্থ শ্রন্ধা থাকে, তবে তুমি শাস্তের উপর কেন নির্ভর কর : তিনি .শাস্তের গম্য নহেন, তাহার শাস্ত সকল শাস্ত ছাড়া, তাহাকে জানিবার জন্য ভক্তিই মূল শাস্ত হইয়াছে।

অতএব যাঁহা হইতে দেহ পাইরাছ,
মন পাইযাছ, বুদ্ধি পাইরাছ, সুদ্ধ তার
প্রতি ভক্তিরাথ, বিশাস রাথ, ভগবান্
বিদ্যার অধান নহেন, ভগবান ধনের
অধীন নহেন, ভগবান কেবল ভক্তেব
অধীন হইরাছেন। তুমি তাহার ভক্ত,
তিনি তোমার প্রভু, এই জ্ঞান করিবে,
এবং তিনি যখন যে অবস্থার রাখিবেন,
তখন তাহাতেই সস্তোমিত হইবে এবং
যধার্থ প্রেমার্দ্রচিত্ত হইরা তাহার গুন গান
করিবে।

#### কাল।

গণনবিহারী ধ্বাস্তহারী সরোজ বিকচ কারী দিবসবান্ধর আদ্য চতুর্বিংশতি পক্ষ পরিমিত ঘাদশ রাশি পরিক্রম পুর্বাক পুন-

বার এক অজ্ঞাত নৃত্য বংসরের অধাক হইয়া এই মাত্র প্রথম গণিত রাশিচক্রে अकत ममी भन कतिरान । এই পরিপূর্ণ এক वरमत श्रविवीञ्च ममस्य धानी सूर्यापरश मित्रम oaर मर्गा**ट्स** त्रांजि निक्र भाग भूकिक স্বস্থাবে স্থাবজাত দুখ সম্ভোগ পুরঃ দর জীবনযাত্রা যাপন করিবে । অধুন। देनवाधीरन जायता कर्माधीरन य जकन ঘটনা হইবেক, এই ফুতন অন্দের দিনের অধীনে সেই সকল ঘটনার গণনা হইবে। ভাদ্য বন্ধমণ্ডিত যে স্থানে অবস্থান করি তেছি এই অন্য চিরকালই অন্য আছে, এবং অদ্যই থাকিবে, কেবল জীবিত কালের সংখ্যাও তদ্ঘটিত আর আর ব্যাপারের স্থিরতা রাখিবার নিমিত্ত এই অদ্যকে অদ্যু, কল্যু, পরশ্ব ইত্যাদি উপাধি প্রদান করিতেছি। দিবদ রজনী গণনা-क्राय वरे वक अमरे मुखार स्टेर्डिइ, वक अमुरे याम इरेट छ , वक अमुरे अयम रहेर्डिह, अक जाराहे वरमंत्र रहे-ভেছে, এবং এই এক ভাদাই যুগ হইভেছে। কি জাদ্য, কি কলা, কি পরশ্ব কি সপ্তাহ कि शक्त, कि मान, कि स्राप्त, कि खरान, कि বর্ষ, ও কি যুগ, ইহাদিগের প্রত্যেককেই অদ্য অদ্য বলিয়া ক্ষয় করিতে হইবে, মৃতরাং অদ্য কিম্বা সমূরর শ্রেণীবদ্ধ ভারী কলা অদ্য নামে বাচ্য মাহইয়া আমার मिटगत **औरनटक** भिष कतिरव ना।

এই মারামণ্ডিত মহীমশুলে অতি অপ্পেকালের নিমিত্ত স্থিত হইয়া ১ড

প্রকার চমৎকার দর্শন করিতেছি, শীভ, বদন্ত, গ্রীম্বা, বর্গা, শরৎ ও হিম, সভাবের রখের অশ্ব স্বরূপ হট্যা জনৰ-রতই শুন্যে শুনো কালের চক্র চালনা করিতেছে, এই কাল, সেই কাল, এই সেই, সেই এই, ক্রমশঃই এইৰূপ উক্তি করা যাইতেছে। আহা! এই অনিকাচ নীয় সৃষ্টিতে কি প্রকারে প্রজা রুদ্ধি হইয়া পরস্পরের মধ্যে পরস্পরের মনে ভাব ব্যক্ত ও ঐশিক কার্য্যকৌশল হইতে লাগিল ভাহা বিবেচনা করিতে হইলে কেবল সেই অথিলেশরের প্রতিই প্রতায়ের স্থিরতা হইতে থাকে। আমরা পরমেশ্বপ্রদন্ত বৃদ্ধির প্রভাবে এক শব্দ হইতে ভিন্ন ভিন্নৰূপে ভিন্ন ডিন্ন ভাবে ও ভিন্ন ভিন্ন অর্থে কতকত ভিন্ন ভিন্ন শক্ত রচনা করিয়া শ্রেনীবন্ধরূপে স্থাপিত করি তেছি, আবার ঐ শব্দের প্রতিমূর্ত্তি স্বরূপ অক্ষরের সৃষ্টি করিয়া স্মরণকে মনের ভিভর বরণ করিতেছি। এইৰূপে লিপি ধন্ধ হওয়াতে কোন শক্ষর আর সারণের ভাতীত হইতে পারে না, খন্ধ শন্ধ ও বর্ণ সহযোগে আমরা অপরিমিত ও অপরি চিত কালকে কম্পিতৰূপে প্ৰিমিত ও পবিচিত করিতেছি,। এই কালের সংখা কোন মতেই হইতে পারে না, সংসার্যাত্রা নির্বাহ নিমিত্ত কল্প, যুগ, বৎসর, জয়ন, ঋড়ু, মাস, পক্ষ, ভিথি, প্রহর, দণ্ড, পল, ও অমুপল প্রভৃতির কম্পনায় জীবের জীনিতকাল

করনের কাল গণনা হইতেছে. সভরাং কথরামুগৃহীত পুলাতন জ্ঞানী পুরুমেরা জপরিমিত দীমা রহিতঃ কালকে যেকপে বিভক্তীকৃত করিয়া দীমা নির্ণয় পূর্বক খণ্ড খণ্ড কপে রচনা করিয়াছেন, জামা দিগকে ঐ রচনার মধ্যে থাকিয়াই গণনা দারা নানা যাপারে পরমায়ু ক্ষয় করিছে হইবেক, জীবিত কালের সংখ্যা রাখিবার প্রেধান উপায় বর্ষ, জাগরা এই ক্রক নৃতন বর্ষকে স্পার্শ করিলাম।

কাল পক্ষিত্বৰূপ পক্ষ ধরিয়া প্রনা পেক্ষা জতি কেনে গমন করিভেছে। গত বৎসর এই সময়ে এই সভায় এই প্রভাকরের বেহকারী কল্যানকারী বন্ধু বর্ণের সমাগম হইয়াছিল, এই ক্ষণে ভাহা বেন প্রকৃত স্থান্থৰ বোর হইভেছে, কারণ'গ্রীত্ম, বর্ঘা, শরৎ, শিশির, শীভ ও বসস্ত এই চয় ঋতু বর্ষকে রাশিচক্র দ্বানা একপে সঞ্চালিত করিল, যেন আমরা এইক্ষণে নিদ্রা হইতে গাংক্রা থোন পূর্ব্বক পুনর্বার সভা মধ্যে উপবিষ্ট হইয়াছি।

ত্রিপদী।

ভাপৰপ এক পক্ষী, জীবের না হয় পক্ষী, তুই পক্ষ তুই পক্ষ যার। জন্ম লাভ প্রতিপদে, পায় পদ প্রতি পদে, লোকে বলে পদ নাই ভার॥

এক সক্ষ, এই পক্ষ, সে কেবল এক পক্ষ, ধনুর ধরিয়া ছিলে, মকর ফেলিবে গিলে,

এক পক্ষে করিতেছে গতি। আর পক্ষ আর পক্ষ, অন্ধকার যার পক্ষ, জ্যোতিহর ভয়স্কর অতি॥ তুই পক্ষ যার পক্ষ, সে কি কারো হয় পক্ষ, পক্ষ বোলে মিছে লক্ষ্য করি। বিপক্ষ কখনো নয়, অথচ বিপক্ষ হয়, এ পঞ্চির পক্ষ কিলে ধরি॥ বহুৰাখী বিহস্তম, ক্ষণে ক্ষণে নানা ক্ৰম, বিনা অঞ্চে ধরে অবয়হ। এলো এই, গেল এই, সেই এই, এই সেই, এই এই নেই নেই রব ॥ শুনো শুনো উড়ে যায় শুনো শুনো চোরে খার, শুন্যে শুন্যে জায়ু করে গেয়া দেখা যায়, ওই যায়, আর নাহি ফিরে চায়, ছিল মীন, এই হোলো মেব॥ এই ভেড়া হোয়ে ষাঁড়, বুকে চড়ে নেড়ে ঘাড় ঘাস খেয়ে করিবে চরণ। মিথুৰ যবন প্রায়, বিনাশ করিতে তায়, ভানায়াসে করিবে ভিক্ষণ॥ দেখে তার মন্দ মত, দস্তাঘাতে দশর্থ, একেবারে করিবে নিধন। করী অরি নাম ধরি, দশরথে করে করি, উদরেতে করিছে গ্রহণ॥ পরে এক গুণ যুতা, সভাবে প্রসক্তা হতা, সিংহ প্রাণ করিল হরণ। এক জন দম্য আসি, মারিয়া তুলার রাশি, विधितक कमान की बन् ॥ ভার দর্গ হবে মিছা, দংশন করিবে বিছা, বিছা যাবে ধনুকের হাতে।

মকর মরিবে কুন্তাঘাতে॥ कुछ जन जरन नीन, शतिरनरम अहे भीन, · धरे मिन इटव श्रनर्कात । সভাবের এই শোভা, এইৰূপ মনোলোভা, এই ভাবে হইবে সঞ্চার॥ প্রকৃতির কার্য্য যত, কভু নয় অন্যমভ, এই ভাব এইৰূপ স্ব ॥ এই রবে এই ভূমি, এই আমি এই ভূমি, রব কিম্বা রবে এক রব ॥ তাই বলি অদ্য নিশা, তোমারে দেখিয়া কুশা अस्ति ३८५८६ मग मन्। এ মুখ কি হবে আর, এ প্রকার সবাকার, আর কি পাইব দর্শন ? বন্ধুর বিচেছেদ হৰে, ভূমি নাহি আর রবে, রবি সহ এলে পরে অহ। অতএব বলি তাই, এই এক ভিক্ষা চাই, স্থির ভাবে রহ রহ <u>রহ</u>॥

হে জীব! এই কালের প্রতি বিশ্বাস
করা কোন মতেই কর্ত্তবা হয় না, যে
কাল গত হইয়াছে, তাহা আর প্রনরায়
প্রাপ্ত হইবার নহে। যে কাল আগমন
করিতেছে, তাহাও চঞ্চলা অপেকা চঞ্চল
হইয়া প্রস্থান করিবেক। নিশ্বাসের সঙ্গে
সঙ্গেই ক্ষর ছইতেছে, যেমন কাল সকল
গত হইবে ভাহার নির্ণয় কিছুই নাই,
অতএব অধুনা কেবল বর্ত্তমান কালকেই
সমাদর কর। এই বর্ত্তমানের জ্বিরতা
নাই, চক্ষ্র পলকে পলকেই শেষ হইতৈছে। এই জায়না সমাতেক বুখায়

বিনষ্ট করা কোন মতেই কব্রীবা হয় মা 🔭 মুতরাং এই সময়ে যাহা করিবার তাহাই কর, যত হিতসাধন করিতে পার ভাহাই করিয়া সামবজনা সফল কর। এই তুর্লভ নরদেহ প্রাপ্ত হইয়া যে ব্যক্তি সৎকার্ষ্যের দারা সময়ের স্বার্থকতা না করিলে তাহার জনাই বুথা। যেমন কলসীর জল গড়াডে° গড়াতেই শেষ হয়, তক্ষপ দেহের আয়ু ক্ষণে ক্ষণেই শেষ হইতেছে, মৃত্যু কখন হইনে ভাৰা কে বলিভে পারে। এই गृङ्। भगरश्रत जारभका करत्र ना, यत्रावत निकारे वानक, वृक्ष, यूवा नकिन नमान, इन्द्र इहें इंड क्रिक्ट मूक मरहा কেহবা গভেই মৃত হইয়া ভুমিষ্ঠ হইতেছে, কেহবা ভুমিষ্ঠ হইয়া মরিতেছে, কেহবা কৈশোর কালে, কেছবা বৌবন কালে জীবনযাত্র। সাঞ্চ করিতেছে। উর্দ্ধ সং**খ্যা** কেছ কেছ শত বৰ্ষ সজীব থাকিতেছে। यिनगां९ श्रयाशु भठ वर्षरे रहेल, जदब সেই শত বৰ্ষকে কত বৰ্ষ বলিয়া গণনা করিব ? কেননা রজনী তাহার অদ্ধভাগ হরণ করে, নিম্নায় অর্দ্ধেক কাল শেষ হইলে কত থাকে, পঞ্চাশ বৎসরে অধিক নহে !-ঐ পঞ্চাশের অর্দ্ধ ভাগ বাল্য, রোগ জরা, তু:খ, ইন্ডাদিতেই নিস্ফলৌনিংশেষ হইয়া যায়, ডিবে কত রহিল, পঁচিশ বৎ সর। এই পাঁচিশ বৎসরের তার্দ্ধেক কাল (कर्वन कन्द्र धरः मन्भर्धी सूर्यहे माक হইল, ভবে আর কিরহিল? কিছুই ভে नश, मनव इक माट्ड बाटता वड्मव

गार्फ गारता वरगत काल जरबात मिवन ইইতে মৃত্যুর দিবস পর্যান্ত ধরিতে হইবে। এইৰূপে কাল গণনা করিলে আয়ুর অভি মান কথনই সম্ভবপর হইতে পারেনা। ছে মতুষা! স্থকর্মা যাহা করিবে ভাহা এখনি কর, রজনীর কার্য্য দিবসেই সাঞ্চ क्ता कला याश कतिएक इटेरन काश অদ্যই কর। কালের অপেক্ষা করিয়া গুভ कर्म नांधरम आलमा कता बिरधत इत नी, কেমনা প্রতিক্ষণেই মরণের সম্ভাবনা আছে। আপনাকে অজর ও জমর ভারিয়া জগতের মঞ্জ সাধন করহ এবং এখনি মরিব এইৰূপ জোন করিয়া অহিতকর অসৎকর্ম করণে বিরত হও। আতাকে প্রসন্ন করিয়া আলপ্রসাদ ভোগকর ৷— পরম ঐতিচিত্তে পরমপ্তা পরম পুরু-यदक न्यासन करा । — यदनत जमहाव नकल रतन कत्र, माधु कार्त्या मगग्रदक नतन कत्, আনন্দ মনে আনন্দ্রনে চরণ কর!

### भमा ।

# রাগিণী ললিত।

বিকলে সময়,
অসময় কিবা হবে রে।
নিজ-বোধহীন, হোহেয় জ্ঞমাধীন
কড দিন আর রবে রে।
শরীর রতন, নহে চির খন,
এড জ্ঞম কেন তবে রে।
নাহি জান জীব, জাপনার শিব

কত দিন আর স্তামার স্তামার অভিমান ভার ববে রে। আর কভ কাল বিরম বিযাল রিপ্র ষড়জাল সবে রে॥ এখনো চেতন, হলোনা চেতন, চেত্ৰ পাইবে কৰে রে। পরিহরি সব, হরি হরি রব, া মুখে আর কবে কবে রে॥ আর ক্তক্ষণে লবে রে। ক্ররে স্থিন, পাইবে স্থধন. निधन इटेरन घरन छ। করিতে ভাবনা, কিসের ভাবনা, কেনবে ভাগনা ভাবে রে। ভাবি ভাবময়, তাহারে সদয়, ভাবেতে যেজন ভাবে রে॥ ভাব না বুঝিয়ে, ভাবনা করিয়ে, কেমনে ভাবনা যাবে রে। ভাবের বিষয়, হোলে ভাবে। দয়, ভানাদে সে ধনে পাবে রে॥ वारित शाकिया, वाहित प्रथिया, মিছে কেন কাল হর রে। ভনবলি সার, জাগ একবার, ঘুমে কেন আর মর রে॥ ঘরের ভিতর আছে এক ঘর, সে ঘরে প্রেবেশ কর রে। মুঁহা মুল ধন, রোয়েছে গোপন, • সেই ধন গিয়া ধর রে॥ पित्रम **थां**किएज, श्राष्ट्रेत एपथिएज, জাতিশয় মৰোহর রে।

এলে পরে নিশা, হারাইবে দিশা, আঁখার হইবে ঘর রে॥ কাল আর নাই, मित्न मित्न खाहे, কর ভূমি ভাই কর রে। নিয়ে সার ধন, স্থবে তুমি মন, আশা পাশ হোতে তর রে॥ করিয়া অমল, কৰ্ণা ক্মল, অলি হোয়ে তায় চর রে। পাপ অন্ধকার, কেন রাখ ভার, প্রভাকর প্রভাকর রে ।। কাল করিয়া এইক্লণে ভাষরা কাল করিতেছি সেই থে কালের প্রভীকা কাল ক্ষণকালের নিমিত্র আযারদিমের গুভাগুড বিষয়েয় প্রতি প্রতীকা মাত্রই করে না, প্রতিক্ষণেই কেবল আয়ুর প্রতীকা করিতেছে। অভএব কালের কুটিল গতি বিবেচনা করিয়া কার্যা করাই কর্ত্তবা হই (তটে ।

কাল কন্যার সহিত বর্ষ-বরের বিবাহ।

-010 K

## পদ্য ।

কাল হতা সর্বনাশী, সংহারিনী যেই।
বর্ষ বরে বরমাল্য, দান করে সেই॥
ভগ্ন কালে, লগ্ন স্থির, মগ্ন হুখভোগে।
শুভক্ষণে, শুভকর্মা, মগুলোল থোগে॥
কিছু মাত্র লঘুনয়, সমুদ্ধ গুরু।
পুরোহিত নিশাকর, দিবাকর গুরু॥

এবরের নাপিত হইবে কোন জম। আপনি আপন মুণ্ড, করেন মুণ্ডন।। স্থচারু শিবিকা দিবা, রাত্রি ভার চাল। তাহাতে চডিল বর, বারোচক্রপাল।। প্রকৃতি মালিনী কৃত, দেখিতে স্থন্দর। ধুমকেডু, হোয়েছিল, মাথার টোপর॥ অধন্টর্ন্ন জাঁতি কিধা, মাথে তার ফাঁক। ' সেই ফাঁকে চেপে কাটে, সংসরি গুবাক॥ অপৰপে অগ্নিবাজী, করে গ্রীমারাজ। চমকিত সব লোক, দেখে তার **কাঞ্চ**॥ এমন জাঁকের বিষে, আর নাহি হয়। বর্ষা সয়েছে জল, ত্রিভুব্ন ময়॥ কাদস্থিনী রামাগণ, নানা ভাব ধরে। ধরিয়া বরণ ডালা, স্তীআচার করে॥ কত জাঁক বাজে শাঁক, উলু উলু মুখে। কত সাজ সাজায়েছে, বাজায়েছে স্বথে। স্থৰপদী সোদামিনী, বাসরে আসিয়া। করেছে কৌতৃক কত, হাসিয়া হাসিয়া॥ রীতি মত সাতবার, পিঁড়ি হাতে নিয়া ৷ ঘ্রিয়াছে সাডবার, সাত পাক দিয়া॥ ভারা, তিথি আদি করি, শালা, শালী যারা। কাণ্ ধোরে কান্নটি, দিয়েছে কভ ভারা ॥ হায় একি অপৰূপ, যাই বলি হারি। শরদ গারদ বস্ত্র, বরসজ্জা ভারি॥ কুয়াসার মছল**লে, বর দেন বার।** শীত ঋতু পরাইল, নীহারের হার॥ বসস্ত কুলঞ্চী শেষ করিয়া প্রচার। ঘটক বিদায় নিলে, শোভার ভাঙার ॥ কুটুপ, অয়ন, পক্, নিমন্ত্রণ লোয়ে। এসেছিল বিয়ে দিতে বর যাত্র হোরে।।

রাশিগন ভাষাপিক, ব্রাহ্মন পণ্ডিত।
সকলেই সমাগত, হোয়ে নিমন্ত্রিত॥
আমাদের পরমায়ু, কোরে জলপনে।
একে একে সকলেই, করিল প্রস্থান॥
ওলাউঠা বিকার, বসস্ত আর জ্বর।
আর আর ভয়ন্ধর, কার্যা বহুতর॥
বিরা সব, রবাহুত, কত পালে পালে।
হোয়েছিল রেয়ো ভাট, বিবাহের কালে।
ভাবতেই উপযুক্ত, বিদায় লইয়া।
আশীবাদ কোরে গেল সত্যোধ হইয়া॥
বিবাহ হইল শেষ, ওকে বর্ম বর।
মাচ্ নিয়া ঘরে গিয়া, বউভাত কর॥
একা তুমি এসেছিলে, চোলে যাও একা।
দেখো যেন ববে বরে, নাহি হয় দেখা॥

## বল। পদা।

জ্ঞানহীন মূর্থ যেই, মৌন, বল তার।
তক্ষরের যল প্রধু, মিথা। ব্যবহার॥
তুপতি তাহার বল, অবল যে জন।
বালকের বল হয়, কেবল বোদন।।
তক্ষ জার যুদ্ধ হয়, ক্ষজিয়ের বল।
ভিক্ষকের ভিক্ষাবল, দেহের সম্বল॥
ব্যাপার তাহার বল, বৈনা পেই জন।
গৃদ্ধের কেবল বল, ব্রাহ্মণ সেবন॥
বিদ্যা-বলে ধরে বল, পপ্তিত সকল।
বল বল বনিকের, নানিজাই বল॥
হিংঅকের হিংসা বল, জন্য কিছু নয়।
বিদ্যাই তাহার বল, বিদ্যুক্ত যে হয়॥

কেশ আর বেশ হয়, বেশ্যাদের বল ! বর্থানা তাদের রল, যারা হয় খল ॥ যুবতী নারীর বল, যৌবন রভন। বাচালের বল হুধু, মুখের বচন॥ भीन, भभा, मभुटाउत कल रुस् तल। ভরুদের বল স্থা, দুল আর ফল॥ শশী তারি তপনের বল হয় কর। দেবভার বল স্বধু শাঁপ আর বর॥ গুহস্তের ধর্মা বল, স্তাবকের স্তব। গুচির অখাণ বল, ধনির বিভব ॥ যিনি হন ব্রহ্মচারী, ব্রহ্ম বল ভার। यिक्टिपत वल इय मना मनाहात ॥ গুণ আর ঐক্যভাব গুণিদের বস্তু॥ খানির কৃটিল কথা ছুভো আর ছল। পুণাবল ভারা ধরে, পুণাবান যভ। পাপ হয় তার বল, প'পে যেই রড॥ মত্য-বল বল তার সৎ যেই হয়। অসভাই বল ভার, সং যেই ময়॥ অনুমানী ভানুতর, যে হইবে ভাই। আমুগত্য, বিনা তার, অন্যবল নাই॥ ফুকর্দ্মশালির বল, ধীরতা সাহস। মানির কেবল বল, মান ভারি যশ।। সন্নাসির নাস বল, যোগিদের যোগ 1 ভূতোর ভূপতি দেবা, ভোগিদের ভোগ। সতীবল পতিসেবা প্রজাবল ভূপ। শিষ্য-বল, গুরুসেবা, ভেক বল কুপ॥ নিবেক তা হার বল, শাস্ত যেই জন। সঞ্চয় তাহার বল, অপসা যার ধন।। শাস্তিবল, বিপ্রের, ত্রান্সের উপাসনা । শ্বিকের বল হয়, কেবল সাধন। ॥

রাজার, প্রতাপ বলা বলের প্রধান।
যাহার জভাবে যায়, রাজ্য আর মান।।
সেই রাজা, শাস্তি বলে, বলী যদি হয়।
ভার কাছে কোন বলা, বলবান নয়॥
শক্তি-বল শাক্তের, শৈবের শিব নাম।
বৈশ্বের বল স্তুর্, হরে হরে রাম॥
ভক্তিবল ভক্তের, অন্যথা নাহি ভায়।
ভক্তাধীন ভাগবান, ভক্তের সহায়॥
ক্রীব্রে যে স্পিয়াছে, দেহ প্রোণ মন।
কত বল, ধরে সেই, নাহি নিরূপণ॥

কবিরঞ্জন ৺রামপ্রসাদ সেন। রামপ্রসাদ সেন প্রথমাবস্থায় কলিকা ভাস্থ বা ভন্নিকটস্থ কোন বিখ্যাভ ধনীর গৃহে ধনরক্ষকের অধীনে এক कर्म्म नियुक्त हिल्लन, किन्छ विषय वामना বিহীনতা জন্য তৎকর্মো ভাঁহার মনের অভিনিবেশ মাত্র ছিল না, একারণ তিনি ভহবিলদারের প্রিয় হইতে পারেন নাই, সর্বাদাই উভয়ের মধ্যে বাগ্রুলহ ও বিবাদ হইত, সেন কবির চাকরি করা কিছু উদ্দেশ্য ও অভিপ্রেত ছিল না, তিনি মানসিক সংকপ্প পূর্ব্বক যে পরম প্রেভুর দাসত্ব স্থীকার করিয়াছিলেন, শুদ্ধ উাহারি কার্য্য করিডেন, মানব প্রভু বিরক্ত হইলে উপস্থিত পদে বিপদ হইবে, সে দিকে দুক্ পাতও করিতেন না, প্রান্থি দিবস নিয়মিত কালে কার্যোর আসনে উপবিষ্ট হইয়া খাতার পাতা খুলিয়া আগাগোড়া গুদ্ধ ''ঞ্জীতুর্গা ,, জীতুর্গা ,, এই নাম লিখিডেন, l এই প্রকারে যখন খাতার সমুদন্ন পাতা কেবল " ছুর্গা নামে, পরিপুর্ন হইল, তখন সর্বাশেষে এই একটি গান লিখিয়া বসিলেন।

यथा।

্" আমাধ দেও মা তবিল্ দারী।
আমি নিমক্ ধারাম্নই শক্ষরী॥
পদরত্বভাগুরি সবাই লুটে, ইহা
আমি সইতে নারি।ঃ—

ভাঁড়ার জিন্মা আছে যার, সে যে ভোলা ত্রিপুরারি।ঃ—

শিব আগুতোষ স্বভাবদাতা, ভবু জিন্মা রাখো তাঁৱি॥১

অর্দ্ধ অঙ্গ জায় গৈর, তবু শিবের মাইনে ভারি।

আমি বিনা মাইনায়্ চাকর কেবল চরণ ধূলার অধিকারী॥ ২

যদি ভোমার বাপের ধারা ধর, তবে বটে আমি হারি।

যদি অ'মার বাপের ধারা ধর, ডবে তোমা পেতে পারি॥৩

প্রসাদৰলে এমন্পদের বালাই লয়ে। জামি মরি।

গু পদের মন্ত, পদ পাইতো, সে পদ লয়ে বিপদ সারি॥ ৪

খাতার শেষ পত্তে এই কবিতা লিখিত হইলে তহবিলদার সেই খাতা দৃষ্ট করত অভ্যস্ত ক্রুদ্ধ ও ব্যগ্র হইলা আপনার প্রভাব নিকট কহিলেন ''মংগণ্য একটা পাগল ও মাতালকে বিশাসপুর্বক কর্মা

দিয়া কি সর্বনাশ া করিয়াছেন! দেখুন এমন হব্দর পাকা খাডাখানা একেবারে নষ্ট করিয়াছে,, ইহাতে অঙ্কপাত মাত্র নাই, কেবল পাগলামি করিয়াছে ,, ইডাদি। উক্ত প্রভু তচ্ছেবনে খাতার আগা গোড়া সকল পাড়া বিলক্ষণ কপে বিলোকন ও " আমায় দাও মা তবিল্দারি ,, এই পদটি **সমুদ**য় ভিন চারিবার পাঠ করত অতাস্ত চমৎকৃত হইয়া প্রেনাক্র বর্ষণ লাগিলেন এবং খাজাঞ্চিকে কহিলেন, "ত্মি পাগলও মাতাল বলিয়া কাহার উপর অভিযোগ করিতেছ ? এ ব্যক্তি তো কাঁচা কর্ম্ম করিয়া পাকা খাতা নষ্ট করে নাই, পাকা খাতায় পাকা কর্দাই করিয়াছে, তুমি কথার ইঙ্গিতে ও ভাবের ভঙ্গিতে এই সঙ্গীতের মর্দ্ম গ্রহণ করিতে পার নাই, আর তুমি বিষয়-মদে মন্ততা ঘন্য ইহাঁকে চিনিতে পার নাই, রামপ্রসাদ সেন সামান্য মহুষ্য নহেন, সাক্ষাৎ দেবী-পুল্র, অতি সাধু ব্যক্তি।,, পরে অতি প্রিয় বাক্যে সম্বোধন পুৰ্ব্বক কবিরঞ্জনকে কহি লেন "রামপ্রসাদ! তুমি যে পদে পদার্পন করিয়াছ, ভাহাতে এ পদে বন্ধ রাখায় কেৰল ভোমারি বিপদ করা হইতেছে, তুমি যাবজ্জীবন এই সংসার কাননে বিচ-রণ করিবে, আমি ভাবৎকাল ভোমাকে ত্রিশ মুদ্রা মাসিক বৃত্তি প্রদাস করিব, তোমার আর ক্ষণকাল এখানে থাকিবার আবশ্যক करत ना, यो ७ ज्ञा वशन आंभनात धृत् रिश्वा कर्कार्या गांधन करा,,

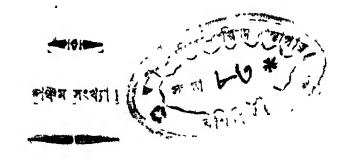
রামপ্রসাদ সেব ৩০ টাকা বুক্তির উপর নির্ভর করত বাটীতে আসিয়া সানন্দ চিত্তে কাল যাপন করিতে লাগি লেন, কিন্তু পরিবার ভাধিক হওয়াতে ঐ অম্প বৃত্তি দারা কোন প্রকারেই স্থপ্র তুল ৰূপে সংসার নিৰ্মাহ হইত না, এক'র ব্রীপুত্র প্রভৃতি পরিষ্ণনেরা সর্বর নাই উপার্জ্জনের নিমিত্র **ऐट इक्ष**ना করিত, কিন্তু সে পক্ষে তিনি ভ্রাক্ষেপও করিতেন না, স্থন্ধ শক্তিভক্তিইসার করিয়া সঞ্চীভানন্দাৰ্গবে নিম্য হইতেন। ভাঁহার পরিবারে কোনো অপ্রত্ব ছিলনা, নানা স্থান হইতে সংকীৰ্ত্তনাদি নানা নানা ব্যক্তি যাহারা বিষয়ক গীত লইতে আসিত, তাহারা কালীর ও কবির প্রানাী স্বরূপ অনেক অর্থ ও বহু প্রেকার দ্রব্যাদি অর্পন করিত। তিনি নিজে অতিশয় দাতা এবং দয়ালু ছিলেন, যেহপাত্র, অনুগত এবং দীন দরিদ্র যাহাকে সন্মুখে দেখিতেন, ভাহা কেই তৎক্ষণাৎ তৎ সমুদয় দান করিয়া বসিতেন, এ দিকে আপনার ঘরে হাঁড়ি পরিবারগণ চড়ে না, আহার অভাবে হাহাকার করিতেছে, তিনি প্রকৃত মুক্ত-হস্ত-পুরুষ ছিলেন, এজনাই তাঁহার দীন তার ক্ষীণতা হইত না । কন্যা পুত্র, স্ত্রী কিম্বা অপর কেহ নিভাস্ত বিরক্ত করিলে करानीश्वत स्मत्रन-श्वतंक मरनत ভारत এक এক পরি এক একটা গান করিতেন।

# কবিতাবলী।

## ---

মহাক্ৰি

মহাত্রা ঈশারচন্দ্র গুপ্ত মহাশারের বিরচিত কবিতার সার সংগ্রহ।



ক**লিকাতা।** প্রভাকর খন্তে মুক্তিত।

मन ১२৮० मान।

মুলা চারি আনা মাতা।

# শরীর অনিড্য। চঞ্চাবলীচ্চনা।

জীবন জীবন বিশ্ব হারী কড়ু নর। নিশাসে বিশাস নাই কখন কি হয়॥ (১) পাতিয়া বিশ্বয় জাল, বৃধা মুখে হর কাল, শরীর পেয়েছ ভাল, ব্যাহির আলর। জনিতা দেহের আশা, কেবল ভুতের বাসা, যে আশার ভবে আসা, ভাহে হও লয়॥

জীবন জীবন বিশ্ব ছায়ী কজু নয়। নিখাসে বিখাস নাই কখন কি ছয় ॥ (২)
দেহ গেছ নবদার, তিন স্থান শূন্য ভার, যাহে কর অধিকার, পুরস্কার নয়।
বুবিয়া নিপূঢ় মর্মা, নীতিমত কর কর্মা, পরে আছে ধর্মাধর্ম, পরীক্ষার ভয়॥

জীবন জীবন িম্ব স্থায়ী কভু নয়। নিশাসে বিশাস নাই কখন কি হয় ॥ (৩)
আমি আমি অহকার, ফলিতার্থ আমি কার, কছ দেখি আপনার, সভ্য পরিচয়।
মুদিলে যুগল আঁথি, সকল হইবে ফাকি, ভুমি আমি এই বাক্য, কেবা আর কয়।

জীবন জীবন বিষ স্থায়ী ক্তু নয়। নিখাসে বিশাস নাই কখন কি হয়॥ (৪)
তোমাব যে কলেবর, কেবল কলের ষর, দৃশ্য বটে মনোহর, পঞ্চভূত ময়।
যখন টুটিবে কল, ছুটিবে সকল বল, শুখদল, হতব্ল, তুংখের উদয়॥

জীবন জীবন বিশ্ব স্থায়ী কন্তু নয়। নিশাসে বিশাস নাই কথন কি হয়॥ (৫)
নিয়ত তোমার ঘরে, গোপনেতে বাস করে, বিষম বিক্রম ধরে, পাপ রিপ্ত ছয়।
ভাম নিদ্রা পরিহর, জ্ঞান জন্তু করে ধব, রিপুদলে বশ কর, মন মহাশয়॥

জীবন জীবন বিম্ব স্থায়ী কতু নয়। নিশাসে বিশাস নাই কখন কি হয়॥ ( । । অনিত্য ভৌতিক দেহ, কার প্র ত কর শ্বেহ, এক ভিন্ন আর কেহ, আপনার নয়। বদবধি থাকে কায়া, জ্ঞাননেত্রে দেখ যায়া, ড্যজিয়া ভাহার ছায়া, ছাড় ভ্রমচম্ম॥

জীবন জীবন বিশ্ব স্থারী কন্তু নয়। নিশাসে বিশাস নাই কপ্পম কি হয়॥ (৭)
আমি মুখে আমি কই, ফলিতার্থ আমি কই, জার্মি যদি আমি নই, মিথা সমুদর।
দারা পুত্র পরিবার, বল তবে কেবা কার, মোহযুক্ত এসংসার ফফ্লিকার মন্ত্র॥

জীবন জীবন বিশ্ব স্থায়ী কভু নয়। নিশাসে বিশ্বাস নাই কুখন কি হয়॥(৮) দ্বেষ হিংসা পরিহর, বিবেকের সঙ্গ ধর, সকলের প্রতি কর, সরল প্রন্য। রসনারে কর বশ, বিভূগুণামূত রস, পান করি লভো যশ, হবে কাল জয়॥

জীবন জীবন বিশ্ব স্থায়ী কজু নয়। নিখাসে বিশ্বাস নাই কথন কি হয়॥ (३)
পয়া ধর্ম উপকার, কর নিজ অলঙ্কার, গলে পর চারু হার, বিশেষ বিনয়।
মিছা ধন উপার্জ্জন, ভবে ভাব নিতা ধন, স্মরণ করন্ত্রন, মরণ নিশ্চর॥

জীবন জীবন বিশ্ব স্থায়ী কভু নয়। নিখালে বিশ্বাস নাই কথন কি হয় ॥ (১০) এক ভিন্ন নাহি আরু, তিনি লং সাবের সার, আতাক্তপে সবাকার, হৃদরে উদয়। অনিত্য বিষয় বিস্তু, নিত্যক্তপে ভাব নিত্য, ভক্তি ভবে ভল চিত্ত, নিত্য নিরাময়॥ জীবন জীবন বিশ্ব স্থায়ী কভু নয়। শিখালে বিশ্বাস নাই কথন কি হয়॥ (১১)

পঞ্চতুত ময় এই প্রপঞ্চ শরীর। কখন পতন হবে নাহি তার ছির॥
তথাপি মানবচয়, মিশ্যা ছবে মত হয়, ভাবে কাল সদা রয়, আমার অধীন।
লয়ে ছত পরিবার, সদা করে অংকার, নাহি ভাবে কি প্রকার, দেহ হবে লীন॥
মোহ জালে বন্ধ রয়, আমার আমার কয়, কলে ছখ ছুখোদয়, ভাবিয়া অন্থির।
শোক শেল বিন্ধ বুকে, কভু থাকে অধােমুখে, কভু কাঁদে মনো ছুখে, চক্ষে বহে নীর॥
এইত সংসার ছখ, দেখি সমুনয়। তথাচ মন্থা কেন তাহে মুগ্ম হয়॥
মহামায়া মোহ মদে, মত্ত জীব পদে পদে, অহিক ছুখের মদে, ভাবে ছুখোদয়।
করিয়া অপুর্বি বাড়ী, চড়িয়া ছুদ্শা য়াড়ী, প্রতি বাক্যে পেট নাড়ি, দেন পরিচয়॥
পিতৃধনে ধনা হই, মানা মানে বিশ্বজন্তী, আমার সমান কই, দুশ্য নাহি হয়।
ছুদে পুন অব ক্রির কার্য করি কসাক্রিম, ছুদ্শা ভবনে ব্লি, দেখি সমুদয়॥

সহল পুন অব ক্রির কার্য করি কসাক্রিম, ছুদ্শা ভবনে ব্লি, দেখি সমুদয়॥

সহল পুন অব ক্রির কার্য করি কসাক্রিম, ছুদ্শা ভবনে ব্লি, দেখি সমুদয়॥

সহল আলিরা ক্রিরে সংহার।
স্থিত আলির ক্রিরে সংহার।
স্থিত অবির ক্রেম্ব ক্রির ক্রার্য করি ক্রার্য করি ক্রির ক্রার হে স্ক্রেম্ব ক্রেম্ব ক্রার হ

শ্ব. আলিরা কাল করিবে সংহার। তখন স্থাদের ফুদ কে কাদিবে আর ! কল্ট কেতে দিগদশ, ক্রমেতে হুইল বশ, ধর্ম কাষ্যে অপ্যশ, হয় পদে পদে! দীনত নে দয়া দান, দিতে নাছি পারে প্রান, তবু মনে অভিমান, থাকি উচ্চ পদে॥ যদি কিছু বয় হয়. বেশ্যা ধারাস্থনালয়, তাহে মহা স্থেখাদয়, আফ্রাদে অস্থির। হইল অনেক মজা, উড়িল যশের খলো, ভাবে মনে আমি রাজা, এই পৃথিবীর॥

জ্বান লয়ে হ্বকার্ব্যেতে মতি নাই যার। নরাধম সেই জন অতি চুরাচার॥

হকার্য্যে কুপণ অতি, কুকার্ব্যে স্বচ্চ্ছল গতি, না ভাবে দেহের গতি, পলকে প্রলয়।

রক্ষীবি ভাবি দেহ, সদা তারে করে স্বেচ্চ, কিন্তু তার নর গেহ, ভূতের আলয়॥

ং ড়ি কাত হলে পর, গৃহ ধূন সহোদর, সকল হইবে পর, জানিবে নিশ্চিত।

সর্বাত্ত কলম্ব রটে, সদা অপয়শ ঘটে, স্ব্যুদ্ধি প্রকাশু ঘটে, নাহিক কিঞ্চিত॥

এমন রাজার ভাই মন্ত্রিদল যারা। বিদ্যাহীন পরাধীন অপ্রবীণ তারা॥

বব নব নব মন্ত্রী, তারা সব ষড়যন্ত্রি, দেখিয়া সেপাই শান্ত্রী, পুলকিত হয়।

ব ফ্টে যাহা বলে, সেই পদে পদে চলে, পৃথিবীরে ক্রোধ বলে, অতি ক্লুদ্রময়॥

পঞ্চ ভূতময় ছেলে, ষড়ভুত উপদেশে, লথে যায় ছেবে ছেবে, করে কাগুময়।

অমৃতে হবে জরুচি, বিষপানে সদা রুটি, বিষ্ঠা মেথে হন প্রচি, দেখে হয় ভর ।
নিছে মদে মন্ত হয়ে, অনিত্য রুখ আশারে, আশাব জরক্ষায়ে, কেন মার ভূব ।
ধন মদে কেন ছার, অহকার বার বার, জানিয়াছি তুমি আর, বাহাঁচুর খুব ॥
দ্যা ধর্ম আছা ভক্তি স্ববৃদ্ধি উত্তম বৃদ্ধি, বল্পযোগে তুমি শাভি, করহ স্থাপন।
হইবে তোমাব মুক্তি, এইত শিবের উক্তি, ব ললাম তব বৃদ্ধি, পর্য নির্বাপন ॥
জ্ঞান বৃদ্ধি হরে হত, পাপ কার্য্যে সদা রত, মিধ্যা স্থাপে অবিরত, কর্মহ ভাষণ।
ভবসার ভর কর, অভিমান পরিহর, তবে পাবে পরাৎপর, নিভা নিরঞ্জন ॥

# সংবাদ পত্তের করেদী সম্পাদক। পদ্য।

এ সহরে কেনা কবে এডিটরি চাস। এ প্রকারে কেবা করে করিগারে বাস॥ हेश्लिमगादित कर्डी भागांशील लिए । ধর্ম্মের বিচারে শেষে ঠেকিলেন শিখে।। হইল হাজার তিন প্রতিফল ভায়। সেই দত্তে দণ্ড দিয়া এড়ালেন দায়॥ বোধ ছিল হবে ভাই টাকা দিব ফেলে। বিধাতা বিমুখ হয়ে পাঠালেন ছেলে ॥ সার্জ্জন ধরিয়া হাত দাঁড়াইয়া পালে। চারি নিকে শক্রলোক খিল খিল হাসে॥ কটু বাক্যে কোলাহল দ্বিদ্দল নিয়া। গালগোলি দেয় সবে করতালি দিয়া॥ নিপক্ষের জয় রবে হইলাম কোঁডা। একেবারে থোঁতা মুখ চয়ে গেল ভেঁতা॥ বিষাদে মলিন মুখ বাক্য নাহি সরে। হিজিলি হইতে যেন কিরে আসি ঘরে। দ্রংখেব শ্যায় পড়ে ওয়ে থাকি একা। লজ্জার লোকের সঙ্গে নাহি করি দেখা॥ তখ্য কহিব সৰ মন করে শাদা।

यम। शि खारमन किरत क्रिकेत सोमा॥ বাঁকানল গুড়গুড়ি ডাকে ভাক ছেড়ে। ভুড় ভুড়ি ধুড় ধুড়ি সব দিলে নেড়ে॥ কট্ জল তিক্ত ভার নল হলো পঢ়া। হাতে হাতে প্রতিকল গালাগালি রচা 🏻 কে জানে ইশের মূল আছে ভাই পিছে। ফেঁ'স ফাঁস ফগা ৰৱা সব হলো মিছে 🗗 जब उन्ना नटर जाना पृथे हकू (तटह । দিয়েছে বিচার অত্তে বিষদস্ত ভেড্ডে 🏾 নকলে জানিত আগে অজগর বোড়া। এখন জানিল সবে বিষহার ১টোড়া II পৃথিৰী কম্পিত আছে লেখনীর চোটে। জারি জুরি ভারি ভুরি সব মেল কোটে 🏾 পড়িল এখন সেই কলম খসিয়া। জপুন শ্রীহরি নাম শ্রীষরে বলিয়া॥ মনে ছিল অভিমান হয়ে নীচ গামী ] বাঙ্গালী বকিংছাম ছইলাম আমি॥ ত্রীনাথে প্রহার করি জাঁচুলের রাজা। কোটের বিচাবে পান সমূচিত সাঞ্চা॥ এক রাজা হলো বধ ভয় কারে জার। ক্রমে ক্রমে বৰ রাজা করিব সংখ্রি ॥ 🖁

मत्नीहरू जमतीन तथ कारबाहरन। \* **এই** ভেবে गरांबीत माखिदलय तुर्व । লেখনী ধহুকে যুজি কটু বাক্যবাণ। नगर नगरक करत विवय ज्ञान । অহকারে অন্ধ হয়ে আক্ষালন বাতে। মৃপতি নিপাত হেতু নিদ্দা শর ছাতে। অমুষ্ট অমুষ্ট লেখা থোরতর পাপ। জুলন্ত জনলে আসি মারিকেন ঝাঁপ॥ ছইল শরীর দথা করি মন্দ ক্রিয়া। পতক যেৰূপ মরে দীপে ঝাঁপ দিয়া॥ ্ছার হায় হাসি পায় ভাল দেখি সক। বাস্কী করিছে বধ ইচ্ছা করে বক 🏾 চাকিয়া চন্দ্রের প্রভা জন্ধর কুপে। ভূবন করিরে আলো জোনাকীর রূপে॥ এবড় হাসির কথা কৰ ভার কাকে। क्लिला मिष्टे अन रेक्ट्रा करत कारक॥ ব্লাজ সহাসমজোট ভাল দেখি সাদ। বামন হইয়া ধবে আকাশের চাঁদ 🛭 জাপন প্রভাপে ধরা দেখিতেন সরা। এতদ্বিনে কেঁলো বাখ পতিকেন ধরা॥ ক্সন্ধ বাদ্ধ কেজ ৰাড়া সৰ গেল ঘুরে। রাখিল শার্দ্ধ্য শর্মে পিঁজরায় পুরে॥ বাই বাহ বনে যাও পশু যথা আছে। করোনা বিক্রম **আর মানুখের কাছে**।

হবল রাজরে জয়, ক্রিকে কিত কয়, সম্পাদক মহাশয়, জরু দেখে, সরোনা। মেমন কর্ম্মের কল, ্রিসেই ক্রপ ফলে ফল, ক্রেবিশ্ল বিপক্ষ দল, ক্রোভ ক্রেকে চরোনা।

অভিমানে দ্বেষ ভরে, বসিয়া সিংহের ঘরে, বিষ্ম লোভের স্থানে, আর ভূমি জুরোনা 🎗 প্রতিফল হলো তার, যে প্রকার ব্যবহার, কলক কুতুম হার, গলে আর পরো না॥ আপনার কর্ম্ম দোষে সভাবের পরিভোষে, পড়িয়া রাজার রোধে, শেষে যেন মরোনা। শিষ্ট হয়ে ঘরে রও, মূলনের যুক্তি লও, জগতের মিত্র ছঙ, শক্ত বৃদ্ধি করোমা। क्तिरव माञ्चल काल, গত হয় ইছ কাল, পাতিয়া পাপের জাল, পরকাল হরোনা। কেহ নহে আপনার, ভরসা নাকর কার. অতএব মিছে আরু, বিষদাত ধরোনা॥

> জীবের প্রতি জিজাসা এবং জীবের উন্তর।

প্রং। কোন ধর্ম অনুসারে লহ উপদেশ। কিবা জাতি কিবা কর্ম কহ সবিশেষ॥

উং। জাপন স্বৰূপ জানি জাপন স্বৰূপ। জাতি ধৰ্ম কিছু নাই নিজ বোধ ৰূপ ॥

প্রং। কি তোমার নাম কছ কি তোমার নাম। কোথার বিশ্রাম কর কোন্ দেশে ধাম ?

উং। স্বভাবে বিশ্রাম করি দেহ গুছে ধাম। আত্মার স্বাত্মীর আমি আত্মারাম নাম।

প্রং। কার ভাবে ভার সয়ে ভাব প্রতিকাণ। কার সঙ্গে কোন্ রঙ্গে করিছ অমণ :

- छर। अम्बद्धित छानिया छात छान हानि मृदत नद्धिदित नद निर्देश नेतानम् श्रुदत ॥
- প্রেং। যে খনে ভোমার বাদ ছার ভার কর। কোধার ছাপিত আহে ভনি মমুদর।
- छैर। पर शिर नवसंत्र भूना जिन ठीरे। यदा चार्चा छवा श्रेर निवासिस नारे॥
- প্রং। কহ বিবরণ সব কছ বিবরণ। দারা পুত্র স্থতা জ্ঞান্ডা কভ পরিজন ?
- উং। দয়া দারা সভ্য স্বন্ত সংঘদর মন। ক্ষান্তি ভগ্নী বিৰেকাধি নিজ পরিজন ॥
- প্রাং। পরিজন ময়ের করে কে ভোমার হিত।
  কুট্রিভা;কর জুমি, কাহার সহিত ?
- উং। নিজ ভতে নিজ হিড, এই মাত্র ধারা। কুট্ৰ ইন্দ্রিয় পঞ্চ, হিডকারী ভারা॥
- প্রং। নিগুড় বছন এক, কানে কাবে বলি। কার বলে বল জুমি, কার বলে বলী :
- छे:। कांत्र बटन बनि आभि, कांत्र बटन बनी। वन बन आंख बन, आंखावटन वनी॥
- প্রং। সঞ্জিশহ দিলে ডুরি, নিক্স পরিচয়। এখন ডোনার বল, কিলে হবে খর ?

- छै। कीरान्त्र विश्व स्था, कीरान्त्रे सह । कार्बाटक रहकान कानि, कानिस्त निकास
- প্রং। কুটিজের স্বেধ বদ, আলো কেবা করে, কিবলেন্ডে ধাক ভূমি, অন্ধকার মরে ?
- छैर। अञ्चर्कात नदर छथा, शक्ति त्वेरे कृत्ये हे बीटमत छैमदत सीम छाटर सीम खुटमह
- প্রং। ঘরের ভিডরে নদা, কর ভূমি বাসা। বাহিতে কিবলে হয়, মরন প্রকাশ ই
- উং। পরম প্রানয় পথা, নিভা ছ্থময়। ভাব চিন্তা ছুই নেত্রে, দুষ্টি সন হয় গ
- প্রং। তুমি ও কহিলে সর, নিজ পরিচয়। আনি কেন আমি বলি, কহ মুহাশয়।
- উং। প্রদার সমুদ্র এক, সদা শোক্তা পার দ তুনি আনি আমি তুনি,জলবিশ্ব প্রার র
- প্রং। আরি ভূমি ভূমি আমি, এই যদি হবে। ভূমি আমি ভিনি উনি, ভেম কেন ভবে ই
- উং। এক আত্মা ভিন্ন ঘট, ভেন নাত্র কারা। দলিলে যেমন লোভে, ভাষারের হারা ‡
- ध्येः । युक्ति प्रस्तान सम्बद्धाः स्वानिक प्राह्मः। वस खोरे छत्त्र कोटतः व्यविशास स्वति है

উং]। বমোনিমঃ পরমাত্মা, চিদানন্দ ধান। আমায় আমার আমি, প্রধান প্রধান।

ঠাকুরপুজের বিবাহ। ফকির ফিকিরে ভাল, করিলেন ছাপা। উচিত উত্তর দিলে, হইবেন খাপা॥ কি ছেড় ফকির রাজ, উঠিলেন কেপে। ছাপার ইক্সিড কখা, নিরাছেন ছেপে॥ विवारङ्क ञ्चारन वृत्ति, कॅंद्रिट्स औरन्य। বেশমত বেশ দান, পেরেছেন শেষ॥ সিফাই মেরেছে বুঝি, বন্দুকের হুড়ো। সেই হেডু রেগেছেন, দাড়ি রাম খুড়ো ।। চীদ মুৰে চাঁপ দাড়ি, মাল ভরা গোঁপ। আশাবাড়ী আষা হাতে, ফটিকের খোপ। দরবেশে। দরবার, নাহি পার শোভা। দ্বই ওক্ত দ্বপ প্রভু, রহলালা তোবা ॥ বিশেষ বিষয়ে তেজ, তারে বলি তাজি। কাছে যার মন থাকে, সেই হয় কাজি॥ ভাদার ব্যাপারী ভূমি, কাঁবে বোলে বাল। ভোমার বদনে কেন, জাহাজের বুলি? ক্খন এৰপ নহে, ফকিরের টাচা। অমুভাবে বুঝিডেছি, চাটগেয়ে চাচা। किकार के प्रेम पूर्व, यांक यथा ज्या। কাগজেতে কেন ছাপ, বিবাহঁহর কথা ? আবের হারাও কেন, আঁখর লিখিয়া। मॅनिटम समाम शकु टहलाम ठेकिया। প্রসর প্রসর প্রতি প্রতি প্রকার্থ। কোন কৰ্মে কোন কপে, নাহি তাঁর চুক।। জিতুল প্ৰত্ৰ স্ঞা, মান থাকে মানে।

প্রতিলোক পরিতৃষ্ট, পরিমিত দানে ।

বভাবত গুণ বৃদ্ধ, মহা বলবান।

ধর্মের সলিলে নিজে, অতি ফলবার্কী ।

ছিদ্রহীন মনোহর, কীর্ত্তি কুল কুটে।

হুগজ্ব নিম্মন্ত যাল, দল দিগ্রে ছুটে ॥

সতের হুকার্বা দেখে, বৃদ্ধি হয় হুব।
প্রশংসা প্রসব করে, হুজনের মুখ ॥

হিংসার উদয় মনে, শৈল কুটে বুকে।
কেবল কুরব রটে, নিন্দুকের মুপে ॥
গুনহে ফ্ কির ভাই সেলাম আমার।
গুনাপ কুকথা তুমি, লিখনাকো আর ॥
আটাক্ষীর পাটালী, সন্দেশ চিনি নিয়া।
কাঁচা পাকা শিন্ধী দিব, দরগায় গিয়া॥

বিদায় করিব ভাল, বাবুরে বলিরা।

অনায়ানে যাবে তুমি, মকাতে চলিরা॥

## বর্ষার বিক্রম বিস্তার।

ধর'ধামে স্বভাবের ভাব বিপরীত।
বরষার খোর মুদ্ধ গ্রীখোর সহিত ।
বরষা পেরেছে বিশ্ব দুশ্য সুখ নানা।
কোন মতে কোন ছথ, নাহি যাঁয় জানা॥
হাশীল করিল ধরা কীর্জি অপরুপ।
সংযোগী সস্তোগ ভোন, করে বহু রূপ॥
পরাজন পেরে গ্রীমা, গিয়াছিল ভেগে।
মধ্যে মধ্যে বুদ্ধি দোষে, উঠে ফের চেগে॥
দেখিয়া বর্ষার খনে উপজিল কোধ।
গ্রাক্ষেবারে দিলে ভার, কুকর্মের শোধ॥
বিশাধারে জলধার, প্রীমা বধিবারে।

করিলেন বারি বৃষ্টি, মুমলের বারে । ঘর ঘার পথ ঘটি, মহা সিস্কুম্য ! नीतीकादवं सीक्षकांत्र, मुन्य जब रह ॥ धृरुष्ट्रत्न कामाराणि, तामा चरत बदन। গ্রিয় ভাতের হাড়ী, জলে বায় ভেলে। জোড়া পার ঘোড়া নাচে,চাকা ডুবে কলে। কলের জাহাজ বেন গাড়ী সৰ চলে। বালকে পুলক পায় ভাষাইয়া ভালা। किनि किनि भीन यक, भट्टथ करत अनुना॥ शशिदकत्र मणा (मर्थ, (नर्द्ध कल वाद्ता। উঠিছে পাম্বের জুতা, মাথার উপরে॥ বিশেষভঃ রমণীর, তাব চমৎকার। চলিতে চরণ বাধে, বস্ত্র রাখা ভারে॥ 🕽 यत्ना शृंदर लडकारमती, आविज् का नित्न । রাস্তার রঙ্গিল জলে, স্ব যার ভিজে॥ ক্ষেত্রের নির্মাল শোভা, দেখে পূর্ণ আশা। शिल धन्त, यहांनम्त, हांत्र करत हाता॥ विगटक त्रशिक गइ, छाद्व श्रम श्रम। ख्रा करह कर मांद्र, नत्यां व शह ॥ প্রেমরসে মত্ত দোঁহে, প্রেমানন্দ ঘোরে। হায় রে বরুষা ঋতু, বলিছারি ভোরে।

# वर्षात्र धूमशाम ।

নিদাবের সমুদার অধিকার লোটে।
ধনকে চমকে লোক, চপলার চোটে।
চপ্চপ্টপ্টপ, কলরব উঠে।
কন্কন্বন্বন্ ক্তৃকার চুটে।
অমধুর কত ভ্রু, ভেকে গীভ গায়।
বাম্বাম্বাম বাম, কলৰ বাজার।

कष् कष् मष् मष्ट्र बार्श बान बार्छ। २५ गड़ रूक एक. विक्रमाती खाँटाखा ধীরি ধীরি ক্ষাতে মিরি, সভাবের সাজে। ७७, ७५ अस् अस् अस्, नरवर वाटन । থরতর দিউক্তর, শ্রুকাইল তালে। थत थत भन्न श्रीतः त्विष्ट्रवनकाटन ॥ एए दूए इए फूड़, चन यन शासा वात कात्र कत्र कत्र, मभीतन छोटक ॥ च्य <u>च्य क्य क्या, स्थरकंत्र श्रा</u>मि । কত ৰূপ দৰিক্ষণ, অগৰূপ য়ণি। শশধর জর জর, ঋলধর র বে। তারা যারা পর্ভি হারা, কাঁদে তারা সবে।। हरकातिनी क्लानिनी, होशं वर सूर्य । क्यूमिनी विवासिनी, लुकारेल छूटथा। বরবার অধিকার, হইল গাগনে। हाना मुथ महा ऋब, जः योशीत गत्न ॥ च्न करल मन खुरल, वाकिल मन्द्रता वट्ड नीत वित्रहीतं, नग्नम युश्टल ॥

## विश्वी।

অসহ ভ্রের তাপে, নারণ গ্রীক্ষের নারণ।
শোভা নাই প্রায় পৃথিবীর।
জল শুন্য জানের শারীর।
বল শুন্য জীবের শারীর।
হেরিয়া স্ক্রির গতি, সদলে বৃষ্টির পতি,
বরাভলে আসিরা উবিত।
জল চর বন চর,
ভ্রের প্রাকিড়।

ভয়কর অল্বর, ক্লেবর গর গর, विद्रस्त शहरण सम्हत्। मीलि शेन मिवाक्य, आण न म, भागवत, ভারা হারা হইল গগনে ॥ वित्रही मदमब छोत्र, आहर्त नीशि शास. নিবিড় নীরদ আল সাড়ে। স্থার স্থার মত, স্থানার অবিরত, প্ৰভৱে মনের স্থপ বাড়ে॥ श्वादनत केल्राम्बः, द्रोदेशक केल्यम (तन, পরিধান নাহি করে আরে। বুবে তার দন্ত দীজি, সম্পূ কি ৰাড়ায় প্রীতি, ব্রবার প্রীতি চনৎকার। ভয়কর মেমার্কার পরিবেক অতঃপর, ভালি উত্তা ত্রী বের কিরণ। সোণার দামিনী হার, বালায় ছলিছে তার, পরিহার তারার তুষণ া-वस्त्रोत किशे छाय, क्यांटात मिर्मान छात, नाहि वात कर्लम नर्भटन। क्टन जन करन करा, (क्रांन कटन प्राप्त प्रमा, তলাচল প্রথম বর্ষমে र्वित्री सदमद वन, आनत्म मीरनत मन, क्षा बार वार करत (वर्षा) সমূহ শাৰ্কসঞ্জে, ইতন্ততো মহা রঙ্গে, खरम खर्म करन महि भ्रमा । প্রচণ্ড মারুভ বীয়, ালহে স্থির মেন ভীর, दुरुक्त असीत करत हुने। পর্যতের **অন্ন নাড়:মন্ত্রানিকা ভৌক** পড়ে, निक् कर्त च ना रह वर्ष সলাগলি ভরুগৰ, গাঁমিয়া গছন বন,

शवदनद्व तार एउटक मारिक । चन घन भिरत्राश्रद्ध, मखेबाक मुक्का करतः ভকর জনত উদ্ধাৰীতে । नांक्या जीवन नांदक, बद्दमी वंशन गांद्य, ্বিরাজ করেন ছাড়ংশর। गार्य मार्य एक कार्क, बर्क्द बाक्ना बार्क, বিরহীর বুকে বালে শর। সম্ভাপ সলিল তারা, ক্রমে হয় আশা হারা, বাসা হারাপতির কারণ। তুরস্ত বর্ষায় ভাস্ত, অশাস্ত হইল স্বাস্ত, বিনে প্রাণকান্ত দর্শন। मन शरल (अमर्वाम, छाई बद्ध लेका मानी, গ্রেট্রের সজে বসে আছে! আশার আহার হাতে, লোক ভয় বুঁক্তি সাতে, जमा ज्ञार देशी काटक काटक । এতেক প্রহরী হতে, পলাইতে কোন মতে, নাহি পারে নাই মনো মত। ব্দুত্তএৰ সামা ভাবে, বুৰুষাৰ আধিভাবে, এক ভাবে এক ভাবে রত ! গ্রীব্যের প্রতাপনলে, প্রির্বেছিল ধরাতলে, ু কুলা নদী বালিকার প্রায়। নাছিল রবের রক্ষ্য ুখার ধ্বর অক, व्यवस्थित व्यवस्थित प्राप्त রাজ্য হলে বরুষার, জীবনে থৌবন ভার, পর্যাধর প্রভাবে সঞ্চার॥ হেলে হেলেডলে যায়, বিপুল সংগ্রাম তায়, সলিলে স্থাপর নাহি পার। প্রেম আলিকর আলে, অক্তয় তীর আশে, किन गरंग हो खेरकत गरम ।

न मौत रवीवन श्रूर्व, बुद्यन बामना जूर्व, हम पूर्व हां ताब धानत्व ॥ বরষার আবির্ভাবে, দিবা নিশি সম ভাবে, হরিবে বরিষে বৃষ্টিধার। षानत्म अवनी ভালে, यভार मस्याद शास्त्र, ভ্যোতিরাশি নাশে অহাকার॥ সভত শকার সঙ্গে, অক্সকার মহারকে, সমূহ প্রতিভা করে গ্রাস। দিক দশ অপ্রকাশ, পরিয়া কালীর বাস, করে কাল দৃষ্টির বিনাশ। তমো মাধা নিশি প্রায়,দৃষ্টিপথে দীপ্তি পায়, অৰ্দ্ধৰূপী শরীর সকল। নির্ণয় করিয়া ৰূপ, উখলে সংশয় কূপ, मगरमञ् अमनि को भन ॥ चन काँदिन चन हाँदिन, मदा वाँदिन पूर् काँदिन, (थर कौर हरकांत नकल। আদিছে তরঙ্গ জল, ভাসিছে ভেকের দল, হাসিছে চাতক খল খল ॥ বসি গুরুজন মাঝে, গুরুতর গুরুলাবে, অন্তরে হেরিয়া কান্ত মুধ। केव९ शंजिश हरन, यमन कीनन करन, করে রামা গোপনে কৌতৃক। সেইৰূপ দিবাকর, करत पत्र जनशत्, মাঝে মাঝে করে কর হাসি। ৰুঝিয়া ভূৰ্য্যের ছল, अमनि (मर्पत्र मन, তপনে গোপন করে আসি॥ निभि हरत इथाजाज, श्रुर्विगज निन्नांथ, নবীন প্রভাপে মহে বুক্ত। বিষম বিক্রম তাঁর, कत्य रश अश्राह्म,

বর্ষার বিক্রম প্রাযুক্ত II প্রভাতের প্রিয় মুখ, ছেরে দূরে যার চুখ, ভाবী ख्य ভাবি কৃষিকার্যো। व्यय्यत भग्नार हर्षा, भरमात कसूनी नर्गुः, **চলে চাসা आभा**त्र ख्वारका॥ म्हीट हिन एइ ज्ञान, वगरत क्षिन सीन, গ্রীব্যের প্রভাবে প্রনাজর। হায় রে বরবা কাল, কাটিয়া অঞ্জান লাল, নানা ফলে পুর্ণ করে ধরা॥ মধুকর মনোলোভা, ক হ্ম কদম্ব শোভা, কানন আনন শৌভা করে। প্রক্টিত নানা ফল, আমোদিত অলিকুল, वित्रही कूरलात कूल रुद्धा। সময়ের গুড়যোগে, সংযোগী সম্ভোগ ভোগে. হাসিছে ভাসিছে প্রেমনীরে। जरक (मर्थ शुक्र शक्त, शक्त वरह मन्त मन्त्र, वहिट्छ महिट्छ विद्यांशीद्र ॥ ভোণীবন্ধ জলধর, দৃশ্য অতি মনোহর. नित्रस्त्र करत् नीत्र मान। ঘনদত্ত জল পেয়ে, घन घन छन शिट्य. कांगिनी कारमत त्रांट्य मान । বরষার ভাল ফাঁন, অবিখ্যাত ভারাচাদ, निरमनीत निमाञ्च गाहै। আনন্দের কর্মচয়, বলা কিছু ভাল নয়,. विनव ममन् यपि शाहे॥

कीवन।

পরিপূর্ণ আছে সব সমৃদ্রেব জল। প্রবন্ধ প্রবাহ তাহে করে টল মল॥ ক্ষণমাত্র বিশ্ব তাহে হইলে উদয়। প্রদর্কার নিরাকার সেই জলে সয়।

আহা ! পিঞ্জর শূন্য করিয়া পক্ষী কো থায় উড়িয়া গোল, একটা শুদ্ধ পলে ছুটি নীলপত্ম নীরস হইয়া স্থির রহিয়াছে। নীরস কমল মূখে স্থির ছুটি অাথি। স্থের পিঞ্জর ছেড়ে উড়ে গোল পাখী॥ একেবারে পলাইল ছেড়ে এই ধরা। ধর ধর করি ভারে কিসে যাবে ধরা॥

আহা ! সরোবর সলিলে যে মৎস্য শোভা করিয়া নৃত্য করিতেছিল; এই ক্ষণে সেই মৎস্য ধীবরকর্তৃক জালে বদ্ধ হইয়াছে।

সংসার উদ্যান সম সদা শোভা পায়। কলেবর মনোছর সরোবর ভায়॥ নির্দ্দিয় নির্ভুর সেই কালবূপ জেলে। হবিলজীবন মীন মৃত্যু জাল ফেলে॥

বিরহ।

বাস্পকচ্চন।

কোপ। ছে আছু রমণী রমণ।

কটাকে হরি রমণীর মন॥

নয়নে নয়ন মাবিয়া ভীর।

নয়নে নয়ন করিলে নীর ॥ বাসনা খনহে প্রেমের পাবি। তোমার ওৰূপে শোভিছে আঁবি॥ অথবা সেহেতে ছানিয়া রাখি। श्रुपट्यु हम्मन कतिश गांथि॥ ভোমারে দেখি হে চিত্র পুডলি। অস্থির হইল নেত্রে পুডলি॥ পুরুষ পরশ পরশ তমু। নতুবা দাহন করে অতমু॥ ত্ব প্রশেতে কনক হব। অনুষ্ঠ অনলে গলিয়া রব॥ তাহাতে নিখাদ অধিনী হবে। পুরুষ প্রশে ত্রব রবে॥ ত্মি হে পরশ পরেশ বট। **डाइ विन जनि २७ना नहें ॥** জগতে স্থাগতে করয়ে টা**ন।** কে করে সেপরে পরাণ দান ॥ চতুর হওনা অতুর জনে। বঁধু হে বিভর মিলন ধনে॥ গুমান করনা অবলা কাছে। প্ৰমান হয়ে হে হেন কে আছে॥ निनी मिनी करत ना जिल। অলিনী ত্যাজিয়ে ভলয়ে কলি॥ তहि विन प्रश्री (एउ तमग्री) কোখা হে আছ এমুখ সময় ॥

হৈমন্তিক প্রভাত।

বস্থকণ বিরাজিয়ে বিভাবরী শেষ। প্রাচীন প্রভাত আসি প্রাচীতে প্রবেশ।

জাসিয়া জরুণ ছার করিল মোচন। উদিত ভপন দেব লোহিত লোচন ৷৷ বৌধ হয় ছায়া সহ জাগিয়া যামিনী। नयुन छट्यट्ड द्राक्रा, जिनिया नामिनी॥ • চন্দ্র তকুখানি, ঘুস ঘোর ভরে। তামুল সিন্দুর রাগে ভাল শোভা করে॥ হেরিয়া ভাতার ভাব অত্ত দিকেশ। লজ্জার লুকার মুখ, না হয় নির্দেশ ॥ সরমে মরমে মরি, যত তারাগণ। মেঘের ঘোম্টা মুখে, করিল ক্ষেপণ॥ শোভিল আকাশ অঞ্চে, অরুণ কিরণ। নীলচক্ষাভপে যেন লোহিত কিরণ॥ হেরিয়া অরুণ মুখ বিহঙ্গের দল। খুড়া পেয়ে,হুড়াহুড়ি করে কোলাহল। একে অন্ধ সন্ধ্যাবধি ছিল অনিবার। প্রহরে প্রহার ভায়, করেছে নীহার॥ প্রভপ্ত তপন তাপে, তপ্ত হলো তমু। নয়ন নীরজে শোভে, পুলকাশ্রু অহু॥ শিশিরের বিম্বে করে, বিম্ব স্থগোভন। রমণীর বিস্বাধরে পীযুষ যেমন॥ শুক সহ যুক্ত হয়ে, যত সব শারি। সারি সারি দারি দিয়া স্থথে গায় সারি॥ অপৰপ শেভাধরে, নিকৃঞ্জ কানন। কলে কলে প্রজাপতি, করিছে ভ্রমণ॥ কুক,টের প্রত্তর হুষ্প্তি পলায়। জাগৃহি জাগৃহি গৃহী এই রব গায়॥ সংসার চিন্তায় হলো, গৃহস্থ চিন্তিত। হায় রে ভবের মায়া একি ভোর রীত॥ একে শীতে জড়সড়, শ্যার ভিতর।

ভাহাতে ভোমার বিষে, অঞ্চ জর জর॥ अनरमत सूथ वार्ड कहे करा मान। বহুকা**ল** বালিসের সহ অধিবাস ॥ প্রমের বিরুদ্ধে কত করয়ে নালিস। লেপ ভায়া হন ভাহে মধ্যস্থ নালিন ॥ কৃষিকুল পুল্কিত ছেরিয়া প্রভাত। পরিবার সঙ্গে লয়ে খায় পাস্তা ভাত 🛭 গায়েতে গোধুড়ি কাঁথা, মাথায় পামছি। স্থার হাঁড়ীতে হাত নাড়ে ঘড়ি ঘড়ি॥ নাহিক অন্তরে মল, স্বভাব সরল। मूर्पटि तर्म्य मना, रामा थल थल ॥ পাইয়া নীহার ঋতু, দ্বান করে কিভি। শিশিরের ধারা দেয়, যুবতী প্রকৃতি॥ হাসা মুখী প্রকৃতির কড ভাব ভঙ্গী। হেরিয়া মাতিল যভ কবি নবরঙ্গী॥ শক্তিক্রমে শব্দ শ্রেনী করিয়া স্কুচনা। সভাবের বলে করে, সভাব রচনা ॥ ধন্য ধন্য দৈবশক্তি, শক্তি কত ভার । অভাবে স্বভাবে কত ভাবের সঞ্চার॥

## वसूष् ।

অনিয়া ছানিরা বুঝি, রসময় বিধি।
নিরমিল অপরপ, প্রেমরূপ নিধি॥
সেই নিবি নিলুমে, খেলদে এক মীন।
অপাক্ষ ভক্ষিম ভরে, রহে রাজি দিন॥
বন্ধুত্ব নামেডে যাহে, কহে কবিগা।
অথও আনন্দ যাহে, লভে ত্রিভ্বন॥
গ্রমন অ্থের রস, আর বুঝি নাই।
মধুর বন্ধুত্ব গুণো, বলিহারি যাই॥ ১

অসার সংসার সার, বন্ধুর প্রাণয়।
বাহাতে সরল করে, পাষাণা হাদর॥
পাশুর চরিত্র ফেরে, মিত্রভার বশে।
রস ভরা নানা কার্যা, এই প্রেম রসে॥
স্থগ্রীবে বলিয়া মিতা, রাম রম্বর।
দশ্গীবে বধিলেন, ধরি ধন্ংশর।
হরষিত জানকী, কানকী লতা পাই॥
মধুর বন্ধুত্ব গুনে, বলিহারি যাই। ২

ভারতে এ রস কিবা, রচে দ্বৈপায়ণ।
মধুর বন্ধুত্ব গুণে, সিক্ত নারায়ণ।
পাইয়া করুণারূপ, কীরদের কীর।
পৃথিবীরে জয় করে, ধনঞ্জর বীর॥
করিতে বন্ধুর তুষ্টি, সেই ভগবান।
সহোদরা স্থভদ্রায়, করিলেন দান॥
ভারত হুরত হুধা, স্মরহ সমাই।
মধুর বন্ধুত্ব গুণে, বলিহারি যাই॥ ৩

ভাগবত ভাগে ভাগে, এরস রচনা।
গোকুলে গোপাল কুল, সহিত স্কচনা॥
প্রেমানন্দে চলাচল, রাখাল সাক্ষিয়া।
স্থরতী সহস্র সহ, বাঁশী বাকাইয়া॥
বিপদে বাঁচার ব্রক্ত, ধরি গোবর্জন।
কালিন্দীর কালীদহে, কালীর দুমন॥
কতবার গোপকুল, বাঁচায় কানাই।
মধুর বন্ধুত্ব শুনে, বলিহারি যাই॥
৪

্ এই রসে পরিপূর্ণ, নানা ইভিহাস। পুরাণ পুরাণ শান্তে, সদা স্থঞকাশ॥ তভদিন বন্ধুদের, রাজ্য নিরূপণ।

যত দিন বন্ধুভাবে, ছিল রাজ্যান ॥
পরস্পার দ্বোদ্বেষ, নষ্ট করে দেশ।

জয়চন্দ্রে পৃথুরাজে, মজায় বিশেষ ॥
শাত্রবতা মুখে দিই, কালী চূণ ছাই।

মধুর বন্ধুত্ব গুণে, বলিহারি যাই॥ ৫

তুর্লত নাহিক কিছু, ভুবন ভিতর।
অতি হীন দীন হয়, রাজ্যের ঈশ্বর ॥
নবাব নাজীম হয়, বাদীর নদ্দন।
পাত্র পুত্র প্রাপ্ত হয়, রাজসিংহাসন ॥
ভাট কভু মহামান্য, পত্র সম্পাদনে।
সকলি হলভ হয়, মহ্য্য সাধনে ॥
সব মিলে কিন্ত সে, বন্ধুত্ব কোবা পাই।
মধুর বন্ধুত্ব গুণে বলিহারি যাই॥ ৬

ধনেতে না মিলে বন্ধু, এমন কি আছে।
দশানন আনে মতে গ্ৰ, পারিকাত গাছে॥
ধনেতে তাজের রোজা, হইল স্কান।
ধনে হিন্দু কন্যা প্রাপ্ত, হইল যবন॥
ধন লোভে ধর্মত্যক্ত, হিন্দুর সন্তান।
ধনে শৃদ্র হয় ক্ষত্রী, পণ্ডিত বিধান॥
কিন্তু ধনে বন্ধুরন্ধ, নাহি মিলেভাই।
মধুর বন্ধুত্ব গুণে, বলিহারি যাই॥ ৭

বাহুবলে পরাক্রান্ত, হর কত জন। রণজিত রণজয়ী আছে নিদর্শন॥ চন্দ্র গুপ্ত ক্ষোরি হলো, মগধ দখর। বিক্রমে বিক্রমাদিত্য, হলো নরবর ॥
এইবংপে বাস্ত্রলৈ, কত শত জন।
অনায়াসে লব্ধ করে, মানসের পণ॥
কিন্তু নাহি মিলে বন্ধু, মনে ভাবি তাই।
মধুর বন্ধু, স্থুণে, বলিহারি যাই॥৮

তপবলে দশানন, শাসিল ভুবন।
তপবলে বিশ্বামিত্র, হইল ব্রাহ্মণ॥
হরিশ্চন্দ্র নামে ছিল, এক নৃপবর।
তপবলে হইল সে, অজ্বর অমর॥
কিন্তু বল তপবলে, কোন্ মহাশর।
পাইলেন প্রিয়তম, বন্ধু সদাশয়॥
বিনা বন্ধু সব পাই, তপস্যার ঠাই।
মধুর বন্ধুত্বনে, বলিহারি যাই॥ ১

পেয়েছি বাদ্ধাৰ এক, অমূল্য অতুল্য।
কৈবল্যের স্থখ পাই, ভার আকুক্ল্য॥
চমৎকার ভাৰ ভার, কটুতা অভাব।
সে ক্লেনেছে ভাৰ তার, যে করেছে ভাব॥
সরল স্বভাবে ভার, হুদর গঠন।
শুভক্ষণে তার সহ, হুইল ঘটন॥
ভাহারে পাইলে আর, কিছুই না চাই।
মধুর বন্ধু শুগুণে, বলিহারি যাই॥ ১•

থেরিকে ভাষার মুখ, ছুখ পরিহরি।
শুনিকে ভাষার নাম, আনক্ষে শিহরি॥
প্রেম অকুরাগী নাম, বিখ্যাত নগরে।
সভত সাঁভার দের, সজ্জন সাগরে॥
নয়ন নীরক্ষে ডার, মাধুর্ব্যের বাসা।

মানস সে রস পানে, সদা করে আশা।।
না ভালে পিপাসা তার, সদা বলে খাই।
মধুর বন্ধু ত্বগুনে, বলিহারি যাই। ১১

যাহার অন্তর শাদা, জিনিরা জীবন।
সকলে সমান ভাব, সদা শুজ মন॥
হৃদক্রে শোভরে যার, দয়া হেম হার।
পর চুখে অঞ্চ মুক্ত, চক্ষে অনিবার॥
পরের স্থেতে যার, স্থাই হয় মন।
ভাহারে মিলরে এই বান্ধব রজন॥
অন্তরে আনন্দ থেন, নন্দের বাধাই।
মধুর বন্ধ কৃত্তনে, বলিহারি যাই॥১২

## नर्स्यांन ।

গত নিশি পূর্ণমাসী, শশী স্থাকাণ।
বিমল বিধুর করে, উজ্জ্বল আকাশ।।
চল চল টল টল, তত্ত্ব শোভা ভাল।
মনোহর করে করে, ত্রিভুবন আলো।
কুমুদ প্রমোদে ভালে, সরোবর মাঝে।
কেশরে জলির বাদ্য, গুল গুল বাজে।
স্চারু শরীরে সব, অজ্কার হরে।
চকোর চকোরী স্থাপ, স্থাপান করে।
মৃত্ মৃত্ত করে কর, যুবতীর স্তানে।
জলের প্রবাহ যেয়, দক্ষিণ পবনে।
বসনে চাদের আভা, শোভা ভার কত।
বদনে মদন নাচে, হয়ে জ্ঞান হত্ত।
স্থাংগুর প্রতিভায়, যুবতীর ভাব।
সেই জানে যার মনে, প্রেমের প্রভাব।
সংযোগী সম্বোষ পার, অনক্ষের তুলে।

মরি মরি বলিহারি, শশী ভোর গুণে॥ চারিদিকে তারা তারা, থেকে থেকে জুলে। मलित्व माना (यन, न्किंडिकंत शंदन ॥ দেখিতে স্থন্দর নয়, মুখ যার কালো। চাঁদের কিরনে তবু, তারে দেখি ভালো॥ কবিতে প্রকাশ করে, জনঙ্গের যাগ। পতির আদরে বাড়ে, সতীর সোহাগা যুক্ত যারা, হ্রখে তারা, থাকে মথে মুখে। প্রবেশে কন্টক বান, বিয়োগীর বুকে॥ এৰপ হুখের শশী, গগনে উদয়। বিলোকনে পুলকিত, সবার হৃদয় । এমন সময়ে জাসি, প্রসারিয়া বাস্ত। চাঁদেরে করিল গ্রাস, তুষ্ট কাল রাভ্ ॥ করিয়া করাল গ্রাস, প্রথমে প্রকাশ। ক্রমে ক্রমে করিল, সকল ক্রম নাশ॥ খাঁটি ছিল একণে, সে ভাগান্তর দেখি। পূর্ণচন্দ্র হয়ে গেল, একেবারে মেকি॥ উদয়ের গুণ তার, নষ্ট হলো সব। চারিদিকে পড়েগেল, হরিবোল রব॥ রাভ্মুথে শশধর, হলো সর্ব্যাসী। আকাশ আচ্চন্ন করে, অন্ধকার আসি॥ একেকালে ফিরে গেল, নিশির সভাব। কি ভাবে এভাব কেহ, নাহি পায় ভাব॥ मिवा नय तां**जि नय, मिट्थ हय खम।** কেই করে অনুমান, কুঝ্টিকা সম।। উপবাস করি কেহ, রক্ষা করে নাম। অন্নদান বস্ত্ৰদান, স্থাপে স্থান॥ ভিকারী ভিক্ষার হেতু, করে তাড়াতাড়ি। শাক ঘন্টা বাজে যত, গৃহত্ত্বের বাড়ী॥

দশু নয় দৃশ্য নয় বিশ্ব হাহাকার।
অভাব হইল ভাবে, স্বভাব স্বার॥
যান যজ্ঞ জপ তপ, ব্রাহ্মণ ঘিরিয়া।
মুক্তি স্থান করে শেষ, উদয় হেরিয়া॥
উদয়ের প্রতি কারো অবিশ্বাস নাই।
এঁটো পুর্ণচক্র দেখে, প্রফুল্ল স্বাই॥

কাবুলের যুদ্ধ। সন১২৪৮ গাল। ভরজিণী ত্রিপদী।

চেগেছে বিষম যুদ্ধ, তেগেছে কাবেল স্থন্ধ, দেগেছে কামান শত শত। ভেগেছে গোরার দল, মেগেছে আশ্রয় বল, রেগেছে ইংরাজলোক যত। করেছে আসর জারি, হরেছে বিলাতী নারী, তরেছে সমরে খুব তারা। পরেছে করাল বস্ত্র, धरतरह मकल जास, মরেছে প্রধান যোজা যারা ॥ **२८४८** ह मस्यान्हे, मरम्बद्ध जारमस कष्टे, বংগছে তুখের ভার বুকে। রয়েছে করেদী যারা, লয়েছে শরণ তারা, করেছে কুবাক্য কত মুখে॥ ঘেরেছে সমর স্থান, মেরেছে অনল বাণ, হেরেছে ত্রিটিস সৈন্যগণে। চেতেছে এবারে ভাল, মেডেছে নেড়ের পাল পেড়েছে কামান কড রণে॥ জুড়েছে বন্দুকে গুলি,উড়েছে মাথার খুলি, পুড়েছে কপাল নানা মতে।

(वर्ष्ण्ड यवन मम, (हर्ष्ण्ड मकल वल, প্শতেছে সে পাহাড়ের পথে । সমর করিয়া পণ্ড, সেনা সব লগুভগু, অন্তাখাতে খণ্ড খণ্ড দেহ। জীবন পেয়েছে যারা, আহার বিরহে ভারা, কোন ৰূপে স্থির নছে কেহ॥ ষেতক।স্থি সবাকার, চারিদিকে শ্বাকার, অনিবার হাছাকার রব। শৃগাল কুক্ষুর কত, পৃধিন্যাদি শত শত, মহানদে খার সব শব॥ হিংস জন্ত আরো সব, শবাহারে পরাভব, কত শব সংখ্যা নাই তার। সব শব করি দুষ্টি, বোধ হয় অনাস্ঞ্ৰী, শব বৃষ্টি হরেছে এবার॥ নেরে বন্দুকের হুড়া, পাহাড় করিল গুঁড়া, ভাঙ্গিল মাথার চূড়া ভায়। শোণিতের নদী বহে, ভরঙ্গ ভরল নহে, তৃণ আদি কড ভেসে যায়॥ বড় বড় দাড়ি গোঁপ, কেড়ে নিল গোলাভোপ, বুদ্ধি লোপ হোপ সৰ হরে। इत्ल इत्ल की म (केंद्रम, जञ्चरन मञ्चल (वेंद्रभ, মোকল মঞ্জ বাদ্য করে॥ कांत्थिन कर्णन कड, विभारक श्रेन इड, স্বৰ্গগত ভবলিউ এম। রাজদুত বাঁরে কয়, কোখা সেই এনবয়, কোথায় রহিল জার মেম॥ তুর্জ্জর ঘ্রন নষ্ট, করিলেক মান ভ্রষ্ট, গেল সব ব্রিটিসের কেম। क्टि निर्म डाँबू छिनी, इन्ड वम (ब्रिक्टिंगनी,

হার হায় কারে কব সেম !! অবশিষ্ট যত সৈন্য, আহার অভাবে দৈন্য, কাঁচা মাংস ছিঁড়ে ছিঁড়ে খায় ! ওকাইল রাডাম্থ, ইংরাজের এত তুখ, ফাটে বুক হায় হায় হায়॥ চারিদিরক গুলিগোলা,কোথা পাবে দানাছোলা অৰ্থ কাঁদে সেনা মূখ চেমে। থেকে ২ লাফ পাড়ে, চিঁহি চিঁহি ডাক ছাড়ে, वाँ दि स्थू पड़ी शाँव थरता। পাহাড়ে সেমার বাস, সেখানে যে আছে ঘাস, চরে থেতে সোরে পড়ে পদ। নিশির শিশির ছুই, দিবসে তপন ৰুষ্ট্ৰ, বিধিমতে বিষম বিপদ। करल किছू नटक् अना, निक्षा मतन खना, উঠিয়াছে পিঁপিড়ার ভেনা। যবনের যত বংশ, একেবারে হবে ধ্বংস, সাজিয়াছে কোম্পানির সেনা॥ চুটিবে যথন গুলি, উচিবে আকাশে ধূলি, কুটিবে বিপক্ষ বুকে শূল। লুটিবে ঘোড়ার পায়, কুটিবে শরীর ভার, प्रेिटिव नकन (मण्ड कुन। ज्युत्मह्य भवर्गत क्यांट्य, विनद्ध विषय (बाट्य, ছলেছে সামুজা ছল করে। यत्न कामना यन, हिन्द रामात पन, **छेलिए श्थिवी शक्छात ॥** এইবার বাঁচা ভার, যে-প্রকার ছোরছার, জের জার শোর সার ভার: क्षांत वन शांतां मच, एन एन हैन हैन, ধরাতল রসাতল বার।

পিলিলির লোক যত, সকলি করিয়া হত, সেফাই সুকিবে হুখে তাল। গক্ত জরু লবে কেড়ে, চাপ দেড়ে যত নেড়ে, এই বেলা সামাল সামাল॥

ৰাবু ছারকানাথ ঠাকুরের মৃত্যু। যক্ষ দক্ষ নাগ রক্ষ, সকলি ভোমার ভক্ষ্য-এত খেয়ে নাহি মেঠে খাই। শুনিলেই হয় মৃত্যু, ভয়ানক নাম মৃত্যু, হারে মৃত্যু তোর মৃত্যু নাই॥ অথচ না হও দুশা, নাশিতেছ এই বিশ্ব, অদৃশ্য শরীর ভয়কর। মুক্ত কেৰা ভব হাতে, যুক্ত সদা ভীক্ষ দাঁতে, মুরহর ধাতা স্মরহর॥ কিছুই অখাদ্য নয়, গৰু গাভী উষ্টু হয়, সমুদয় করিতেছ গ্রাস। নাহি দেখ একটুক, দরার দর্পণে মুখ্য थर्मा र दि वर्मा कर्म नाम ॥ লম্বেদির রত্নাকর, পরতর বেগধর, নিরম্ভর ছরঙ্গ গভীর। ভগ্ন করি চুই পাড়, খেয়ে তার মাংস হাড়, **७४ कर ममू**नर नीत् ॥ গগন করিছে স্পর্শ, मुना माज रुख इर्र, ধরাধর বহু ছখদাতা। তুমি তারে ভাব তৃচ্ছ, ছই কর কর উচ্চ, ভেক্তে খাও পাহাড়ের মাতা॥ ক্ষণমাত্তে কর হত, গ্ৰহন কানন যড়, দাবানল প্রজ্ঞলিত করে। উদারায় স্বাহা সব, নাহি রাখ অবয়ব,

ব্যাপ্রতাদি জন্ত খাও খেরে। যভ সব পঞ্চীকৃত, তব গ্রানে আছে বৃত, মৃত হয় স্থিত নহে কেহ। তঞ্চ করি পঞ্চভুতে, তুনি যেন পাও ভুতে, ষাড়ে চেপে যাড় নাড়া দেহ। অগোচর বস্তু যারা, ভোমার গোচর ভারা, বিকট বদন ছাড়া নয়। গরার করিয়া বাস, স্তুত প্রেড কর নাশ. কিছুতেই অরুচি না হয়॥ নাম শুনে জুর জুর, ভীমতর নিশাচর, থর থর কাঁপে নরগণ। সে রাক্ষস তব আবেগ, রেণু তুল্য কোথা লাগে, রাক্সের রাক্স মরণ ॥ রাক্ষসের অধিপতি, বিক্রমে বিশাল অতি, কুজি হস্ত দশ মুগু যার। তুমি তার সব বংশ, ত্রেভায়ুমে করি ধংস, একেবারে করিলে আহার॥ রক্তবীজ যুদ্ধ কালে, কত রক্ত দিলে গালে, কত খেলে নাহি তার লেখা। তবেতো জানিতে পারি, উদর কেমন ভারি, (व क थाक यमि भारे मधा। কুরুক্ষেত্রে মুক্ত মুখে, ভক্ষণ করিলে হংখে, কুরুকুল পাও কুল যত। মুষলের বেশ ধরি, কুশলের শেষ করি, ষত্কুল করিয়াছ হত॥ সংগ্রামে করিয়া বল, মুক্তবের অমুক্ত, माँषां हेब्रा शिकिनीत्र भए छ। ঘর বাড়ী পরিজন, ভুলে ফেলে মেওয়া বন,

মাটা ভব্দ প্রিরাছ পেটে।

कारशंदर नमत करन, भारा कारना फुरे मरन, ् सि मिर्निट के तिशा निधन। টু পি কুৰ্দ্তি গোলা ভোপ,ৰড় বড় দাড়ি গোঁপ, সমুদর করেছ ভক্ষণ॥ বড় বড় হৈতা দানা, আর আর জন্ত নানা, কত খেলে সংখ্যা নাহি তার। কেবল খাবার খ্য, ক্ষণমাত্র নাহি সুম, মৃত্যু ভোর পায়ে নমস্কার॥ শীভ গ্রীষা বর্ষা জার, স্বড় ঋতু পরিবার, नगुरुष (भटि (मे भुर्व ॥ আলো আর অন্ধকার, স্বাধীনতা আছে কার, সবে বন্ধ কাল ভব পুরে। শুক্র আদি পুথ রক্ত, সকল আহারে শক্ত খেতে নাহি মাথা কর হেঁট। স্বর্গ মত্য রসাতল, অনায়াসে পায় স্থল, ধন্য ধন্য ধন্য তোর পেট॥ ছাই ভন্ম যাহা পাও, সকলি শুষিয়া খাও, प्तरथ एक हाता हहे नित्न। मिर्वानिनि हरन पूर्य, खास्ति नारे धकरिक, এত থেয়ে পাক পায় কিসে॥ কন্যাপুত্ৰ বন্ধ ভাতা,জ্ঞাতি আদি পিতা মাতা শোকাকুল প্রতি জনে জনে। ত্রিসংসার ছার খার. অনিবার বারিধার, विश्वांत नीत्रम नग्रदन ॥ কিছুতেই নহ তুষ্ট, নিয়ত বদন রুষ্ট্র, पृष्टे क्षां क्यन ध्वरण। নদ নদী খাও তবু, নিৰ্ব্বাণ না হয় কভু, প্রকালত অঠর জনল। भन भाव कान महा, उभाव सवा अहा,

মত সদা খাদ্য গুণ গেরে।
বার বার বার যোগে, পুষ্টতন্ত্র ছাই ভোগে,
মাদ মাদ মাদ মাদ খেরে॥
বিক ধিক ওরে যম, পৃথিনীতে তোর দম,
জধম না দেখি আর হেন।
দেখা পেলে বিধানায়, বিশেষ স্থাব তাঁর,
তোর স্প্রিকরিলেন কেনা
পাড়িয়া ভবের ঘোরে, কি জার কহিব ভোরে,
দূর দূর পাপী ছ্রাচার।
এত দ্রবা দিলি দাঁতে, প্রাণের ঘারকানাথে,
তবু তুই করিলি আহার॥
গুণে বশ দিগুদশ, গান করে যার যশ,
কাল তুই কাল হলি ভার।
এই দেখ সবে ক্ল্র, হয়ে স্বীয় শোভাগুন্য,
জগৎ করিছে ছাছাকার॥

# थीग।

लघू जिभनी।

একি পরিভাপ, বিষম সস্তাপ,
সংহনা নিদাত্ত জ্বালা।
রমণী হৃদরে, হার বিনিময়ে,
হুশোভিত ক্ষেমালা॥
যেন হুডাশঙ্গ, রবির কিরণ,
বন উপরন দহে।
বিহন্দ সকল, বিশেষ বিকল,
কাননে আর না রহে॥
বন অধ্বেষণে, ফেরে বনে বনে,
ভূমিত কুরক্ষ্ম।

शंश এकि मांश, अन नाहि शांश, হয় যাত্র স্থলে ভুল 🏽 দুর দরশনে, তপন কিরণে, সরোবর ভাগ হর। তুরিত গমনে, জীবন প্রাপণে, জীবন হতেছে ক্ষয়। হাতী ঘোড়া উট, মারিতেছে চুট, रसान विष्ठम कति। করে ছট ফট, বিকট প্রকট, वमन छक्तिमा धति॥ বহে উষ্ণবাত, যেন বেতাখাত, করিতেছে কলেবরে। গন্ধজল মাধা, সুশীতল পাধা, কেবল শীতল করে॥ ভপন প্রভাপে, মর্র কলাপে, শরীর র থিছে সাপে। আপনার ভক্ষ্য, পেয়ে নাহি লক্ষ্য, কাতর অসহ্য তাপে। ফণি ফলাতল, অতি সুশীতল, তথা নিদ্রা যায় ভেক। কেশরী আলয়, কুজর খেল্যু. মিত্রভার অভিবেক॥ উহু উহু ৰাখা, জুলে যেন দাবা, যে দিগে ফিরাই জাখি। একি দেখি ঘটা, দিবাকর ছটা, ক্ষরিছে অনল মাখি॥ तकनी मगत, वाशु नाहि तश, **हारमत छेमत छारमा ॥** नदद निमाक्रण चक्कांद्र श्रेन,

মরি মরি বিনা আলো॥
আচুক রমণ, যদি আলিক্সনু,
রমণীতে হয় ঘুমে।
অমনি চেতনা, আসিয়ে বেদনা,
বরিষে মানস ভুমে॥
বট বৃক্ষতল, সহ কুপ জল,
আর যাহা প্রয়োজন।
ঘটে যদি ভাই, কিচু নাহি চাই,
রঙ্গে লাল হয় মন॥

-

## শুক্ত তারা। \*

ত্রিপদী।

একি হে প্রিয়সি বল, আকাশেতে স্থানির্মাল, তারা ঐ চাক্ত শোভা ধরে।

\* বৎসরের ছয়মাস প্রাতঃকালীন পুর্বব দিকে এবং অপর ছয়্মাস সন্ধাকালীন পশ্চিমদিকে যে নক্ষত্ৰ অতি প্ৰদীপ্ত ভাবে প্রকাশ পায়, ভাষাকেই জ্যোভিবে ভারা শুক্র গ্রন্থ করেন, শাস্ত্রে ইহার প্রতি প্রবাম করণের মন্ত্র যথা,—" হিমকুন্দ মূণালাভং দৈত্যানাং পরমং গুরুং। সর্বাশস্ত প্রব-ক্রারং ভার্সবং প্রণমাম্যহং। '' উপব্লি উক্ত মন্ত্রের অর্থাসুযায়ী এই নক্ষত্রের আভা हिम, कुन्म, भृगीत्मत न्यांस, खर्थाए मीभरकत মত খেতোজ্জন, এই নক্তকে সাধারণ লোকে শুকভারা কহিয়া থাকে। শুক্র হইতে " শুকু " শব্দ উৎপন্ন ছইয়া থাকিবে ! ইংরা জীতে ইহাকে "ভীনস্" ও " হিস পেরস্" এ "ভীস পেরুস" এবং ইভনিংষ্টার প্র-ভূতি শব্দে বাচ্য করিয়া থাকে

নকর কিরণ ধর, বটে তার কলেবর,
• কিন্তু নহে দীপ্তা প্রেম করে॥

#### ---

ৈকিবল ৰূপেতে মন, গালেনাকো কদাচন,
ভংগদ প্ৰেণয় রস বিনে।
চক্ষু মাত্ৰ দথা হয়, মন কিন্তু মুখা নয়,
ভ্লেয়ের বিনোদ বিপিনে॥

অ'চ্ছে অতি মনোহর, যুগল নক্ষত্রবর,
বিরাজিত বিমল কিরণে।
প্রোজ্জ্বল হীরকচয়, সরমে মলিন হয়,
ধরতর কর দরশনে॥

শূন্যেনাহিশোভেতারা,তবেকোথাশোভেতারা
তূমি কি জাননা সবিশেষ।
এই দেখ তারাদ্য, শোভা করে অতিশয়,
তব যুগা নয়নের দেশ॥

যে নয়ন আকর্ষণে, টেনে জানে দেবগণে, দেবলোক পরিক্রম করি। মর্ভ্যে তারা এসে কয়, নয়ন মনোজালয়, নন্দন কানন পরিহুরি॥

স্বর্গের উজ্জ্বল ভারা, আর নাহি স্মরে ভারা,
ভুলে গেল কামিনী নয়নে।
শূন্যের ভারকচয়, সামান্য আলোকময়,
নহে দীপ্তা প্রেণয় কিরুধে॥

প্রীতি বিষয়ক প্রশোদ্ধর।

প্রশ্ন ।—বলনা ললনা প্রাণ, ললিড নয়নি।
নলিনী মলিনী কেন, করে সে রজনী।
উং।—যেকপ স্বভাব যার, সে চায় সেকপ।
শক্তির বিচার করে, করিতে স্বকপ।

তিমিরে ত্রিলোক তুর্ন, পুর্ণ করে যেই<sup>ন্</sup>
 তামরসে তমোরসে, দান করে সেই ॥

প্রং।—অবনী অসিত্বর্ণা, নিশা যদি করে।
তবে যে কুমুনী রাজে,রম্বত নিকরে॥
উং।—সময়েতে হর যারে, বন্ধু অমুকুল।
কি করিতে পারে তারে, শক্র প্রতিকুল॥
কুমুদ বান্ধর ইন্দু, পূর্ণালোকময়।
তিমিরারি আপ্রিতে, তিমিরে নাহি ভয়॥

थः। काथा मिह हेन्सू वसू, निवा जाध्यस्त ।

प्रान्ति क्यूनी हित, तिवित कित्रत्व ॥

जैश जैश्युक श्रान्ति यात्री, मान यनि हृद्ध ।

गानी जाटह कजू नटह, फूचिक जल्लद्ध ॥

गानी स्वा, जिन वह, छावि मदन मदन ।

क्युनी मुनिजा हृद्ध, छूच नाहि श्रान ॥

প্রাং ৷— কুমুদিনী কমলিনী, নায়ক দ্বিপক ।

এর মধ্যে বল দেখি, শ্রেষ্ঠ কার সখ্য ॥
উং ৷—শ্রেষ্ঠ গুল তার, যার, সভাব সরল ।

সে নহে উত্তম যার, হাদয় গরল ॥

স্থাতিল, স্থাকর, নায়ক প্রধান ।

ক্ষাণু প্রণিত ভান্থ, কৃতান্ত সমান ॥

প্রাং।—নিলিনী নায়ক ঘদি, নায়ক অধম।
পিল্প তবে কেন তারে, ভাবে প্রিয়তম॥
উং।—সমানে সমানে যদি, মিলন উপজে।
উভয়ের মন তবে, প্রেমরসে মজে॥
লজ্জাহীনা কসলিনী, পুর্ণা অহকারে।
প্রচণ্ড মার্ডিণ্ড করু ভাল লাগে তারে॥

প্রং। নলিনীর লজ্জা নাই,কির্নপে জানিলে।
বাপ গর্বে গর্বিতা সে কি হেতু, মানিলে।
উং।—মুখের ভঙ্গিমা দেখি মন জানাযায়।
কে ভাল কে মন্দ লোক, পরিচিত তায়।
বিশেষে পদ্মিনী ফটে, প্রভাত প্রহরে।
পতি চক্ষে ধূলি দিয়ে, উপপতি করে।

প্রং।—কলানাথ কুমুদিনী, প্রেম কি কারণ।
উত্তম নামেতে খাতি, বল বিবরণ॥
উং।—উত্তম প্রণয়িবলি, ব্যাখ্যা করি তারে।
বিচ্ছেদে বিচ্ছেদ ক্লেশ, নাহি হয় যারে॥
অমা আগমনে, স্থাকর না প্রকাশে।
তথাপিও কুমুদিনী, স্থারদে ভাসে॥

প্রাং।—শশী অত্দয়ে বল, নিশি কি কারণ।
কুমুদীর ক্লেশকরী, না হুয় কথন ॥
উং।—প্রবল বিপক্ষ যদি, স্থানান্তর হয়।
কার সাখ্য ভাহার, অধীনে করে হয়॥
কম্পান্তর কলানাথ, হইলে অন্তর।
নিত্য কুমুদীর হবে, প্রেফুল্ল অন্তর॥

প্রং।—বল দেখি প্রিয়ত্ত্যে, করিরা বিচার।
নায়িকার শ্রেষ্ঠ গুণ, কাহাতে সঞ্চার॥
উং।—লজ্জাবতী যে যুবতী, সে উত্তমা হয়।
সেই মাত্র কানে সভ্যা, কিৰূপ প্রেণয়,॥
লজ্জিতা প্রমদা, সহ কুমুদী উপমা।
লক্জাহীনা পক্ষজিনী, নায়িকা অধ্যা॥

## প্রেম নৈরাশ্য।

যার তরে আকুঞ্ন, করিয়া কাতর মন, এ অবধি না হইল স্থির। তাহারে এখনো ভার, আশা আছে পাইবার, আরে মুধ্ব মানস অধীর॥ श्रुटर्स यन देववाधीन, (मण इट्डा कान मिन, উভয়ের হাসিত নয়ন। এখন হইলে দেখা, নাহি পুর্ব্ব প্রেমরেখা, हिं कर्त्र विस्तीम वनन ॥ (हर्द्र तम विमल मूर्य) नश्रत उपा छ्रथ, যথা নিশাচাঁদের উদয়ে। সশক্ষিত নিরম্ভর, সে শুখদ শশধর, গুরু পরিবাদ রাত্ ভরে॥ হবেনা হবার নয়, মনেতে নিশ্চয় হয়, তবে কেন মিছে আশা ভ্রমে। হয়েছে বধির সম্ অধীর মানস মম, প্রবোধ মানেনা কোনক্রমে॥ ধিক কার্য্য নয়নের, ধিকরে আশার ফের, ধিক্ ধিক্ প্ৰেণয় যাতনা। হাদয়ে চড়িলে দাগ, আর কি উঠে সে রাগ, প্রেম নতে শ্লৈর বেদনা।।

পাইয়া মানৰ দেহ, এসোনা এসোনা কেহ, প্রেমনদী অবগাহনেতে। পিরীতি তটিনীতলে, নানা হিংস্র জন্তদলে, কেলি করে কমলা সনেতে ! कनक भीषन एक, हिसा नामा महास्यक, ভাছে বিষধরী ভরকরী। কুলোক কক্কটি যত, গর্ত্ত করে মনোমত, প্রেমিকের মন্শ্রেদ করি॥ আছে বটে পদাবন, অতিশয় হুশোভন, হুখ নামে বিখ্যাত ভুবন। দেখরে দাঁড়ায়ে তীরে, এই যে কুম্ভীর নীরে, নিরাশা কুন্তীর নিকেতন॥ यि कि र मः भागित्न, भक्तिन मस्त्रत्ति, পদাবনে হয় উপনীত। মনস্কাম সিদ্ধ তবে নভুবা অস্থির রবে, নিরাশা দশনে হবে ধৃত॥

मः गीउ।

র'গিণী ঝিঁঝিট। মধ্যমান।
চিরদিনের আশা মস, শেষ হবে এক দিন।
আছেমাত্র প্রাণ বায়ু, হয়ে এই আশাধীন।
প্রভজ্বলিত ক্ষুধানল, সভত করে চঞ্চল,
উপায় কি করি বল, হয়ে সে স্থধা বিহীন॥

শ্রীষাশতু বর্ণন। উদয় হইল গ্রীষা, ভীষারূপ রবি। দিবাভাগে রুদ্রভাব, হয় রৌদ্র ছবি॥ বিশেষত মধ্যাত্র মরীচি রুচিখর। ধরা জ্বরা হয় তাপে, বিদীর্ণ ভূধর॥

মলিন ফলিন শাখা, ছদম সহিত। লভাগণ মৃতা সম, বরার পতিত॥ কুত্বৰ বিষম তাপে, না হয় প্ৰকাশ। কলিকালে ওম্ব হেরি, অলির উদাস॥ मुकूरण जाकूण रुद्या, श्रांत्र मधुकत । নীরস হেরিয়া ভাষা, বিরস অস্তর॥ পত্ৰভণে পভত্তি, রাধিয়া নিজ ভমু 📗 বাহির না হয় রয়, যাবৎ সে ভানু॥ নিরাহারে পক্ষীকুল, জক্ষিনীরে ভাসে! নিয়ত নীরদ ধ্যানে, ধার নীর জামে। নীরাশয়ে নিরাশয়ে, ভূচর খেচর। নীরাশয়ে গভায়াত, করে নিরস্কর॥ কিন্তু যদি নীরাশে, নিরাশ হয় কেছ। সহসা ধরাতে ভার, ধরা যায় দেহ। এৰপ নিদাঘ রীতি, বাসরে নিদেষ। তপন তাপেতে সবে, সদা পায় ক্লেম। काल धर्मा मना घर्मा, वट्ट कटलवरत्। জনকের নাহি হুখ, ক্লণেকের তরে॥ কায়ার বাসনা সদা ছায়াযোগে থাকি । সমীরণ সঙ্গে তাঙ্গ, মিলাইয়া রাখি॥ कीरन जीरन जम, जीरत्व कारह। की वन विश्वत की व, की वतन कि वादह ॥ यि एन वन विन्तु, वित्रिश्न श्य । धर्ताष्ट्र ममञ्जू करने, यादन ভारधानित्र ॥ কৃষিগণ ক্ষেত্র মধ্যে, নেত্র উর্দ্ধে করি। ধারা আশে ভারা আছে, দিবস সর্বারী।

मुत्रिषे।

হইল স্থার বৃষ্টি, শীতল করিল স্থাটি, সস্তাপ প্রভাপ হৈল শেষ।

चिक्षकत वित्रयत्। युष्ट्रयन्त मधीतत्। ঘুচে গেল শরীরের ক্লেশ। स्थिम विन्द्ध नाहि कारत, विश्वानिन करणवरत, বিহরে শিহরে যুবা জানি। অনেক দিনের বাদ, দিনে পূর্ণ মনোসাধ, পরিবাদ তাৰিবাদ মানি ৷৷ নীলক্ষচি নীলধর, শোভাকর মনোহর, নয়ন প্রফুল্লকর অভি। হায় রে কালীর ঘটা, হেরি ভোর শোভা ছটা. সাধে মজে ব্রঞ্জের যুবতী॥ শুনি ঘন ঘন ধ্বনি, অপার উল্লাস গণি. চাতকিনী হুখধনে করে। ছুখের যামিনী ভোর, ত্রখ ভরে মীন চোর, ষোর দিয়ে জ্রমে সরোবরে ॥ महाम स्मिष्ठ मदन, मद्भ नद्य श्रीयुश्त. সম্ভরণে না দেয় বিরাম। করিরব কুক কুক্, প্রকাশে মনের হুখ, ডাত্ক ডাকিছে অবিশ্রাম॥ শুনিয়ে মেখের নাদ, মতুমতি মেখনাদ, পাদপুট হইল অন্থির। জলধর দেয় তাল, নৃত্য করে পালে পাল, কাল পেয়ে প্রফুল্ল শরীর। আর আর হলচর, জলচর খুন্টর, চরাচর নিবসরে য়েব। হইয়ে শীতল কায়, কেহ ধার কেহ গায়, আত্মত করে আত্মসেবা॥ भाग कति थात्रा कारल, भागल विमल मरल, তরুতলে নব শোভা ধরে। বিরহ বিশ্রামে যেন, হাস্যরস পুর্ণ হেন,

যুবা জন আস্য শশধরে॥ তরুণ পল্লব মালে, দেখাযার ভালে ভালে, কদম্ব কলিকা বিক্সিত। मधुमिक मख इर्य, नरङ्ग उ चनन नर्यः... পান করে অয়ত অমিত 🎚 হেরি তার মন্ত ভাব, মনে ভাব আবিভাব, ভয় হয় কবিতা রচনে। গুপ্তভাবে গুপ্তভাব,রাখিলে কি হবে লাভ, ওরু ভয় ওরু কুবচনে॥ মধুমকি মধুহরি, অভএব ব্যক্ত করি, মন্ত্র হয় বরষা কুপায়। মল্লিকা মুকুতা ভাতি, মধুকর মঙ্গে মাতি, গুঞ্জরিয়া ভুঞ্জে মধু ভায়॥ আর এই দেখ সদ্য, খাইয়া মেঘের মদ্য, প্রাচীনার শিরোমণি ধরা। নবীনা যোড়শী প্রায়, অপরূপ শোভা পায়. রসিক ভাবুক মনোহর।। রুসপানে ভরুলতা, প্রাপ্ত হয় প্রবলতা, মাদকভা গুণে বলিহারি। যত সব নদী নদ, খাইতে তুষার মদ, হইয়াছে শেখর বিহারী॥ त्राज हरत्र शन शन, शहिश शत्र शन. সাগরেতে করিছে পরান। তথা সিন্ধ হুখী হয়ে, তাদের উচ্ছিষ্ট লয়ে, অবিরত করিতেছে পান। ত্রিলোক তিমির হর, নাম যার দিবাকর, সেই স্থৰ্য্য মদে মাত্ৰয়ালা। **एन एन नान गुर्लि, প্রকাশি বিশেষ স্ফুর্তি,** শুষিছেন সংসার পেয়ালা॥

ভাতএব বুধগণ, আমাদের নিবেদন,
এবাণতে হউন সম্ভোষ।
দেখিতেছি চরাচরে, সকলেই পান করে,
ভাতাগায়ণেতে হুছ দোষ।
বছ বহ সমীরণ, বরিষ বারিদগণ,
চমক হে চপলার মালা।
সহাস্য রহস্য মুখে, পান করি মনোহুখে,
জুড়াইব জন্তরের জ্বালা॥

## यश्र ।

বিচিত্ৰ বাণিজ্য শাল, অতি অপৰূপ। নানাস্থানে পরিপুর্ণ, দ্রব্য নানা ৰূপ॥ দোকানি প্রারি কত, সংখ্যা নাহি হয়। স্থানে স্থানে দেখি স্থাপু, কুষ্ণবর্ণ ময়। ক্ষুদ কুঁড়া কিছু না হি, হয় হস্তগত। অন্ত ধরি প্রহরী, পাহারা দেয় কত॥ মুখে মাত্র মহাজন, মহাজন বলি। ফলিভার্থ কেহ নছে, মহাজন বলী॥ পদে পদে প্রতারণা, পরিপুর্ণ পাপ। ভাব দেখে কার সাধ্য, কাছে যায় বাপ !! कारन कारन कुन् कुन्, चुन् चून् बन्। ঘুদাঘুদি শব্দ শুনি, স্তন্ধ লোক সব॥ विविद्ध त्रक (प्रथि, प्रथा इस मन। তথাচ লইতে দ্রব্য, করি আকুঞ্বন॥ मत्न मत्न अरे हेक्छा, नव कति क्रय । প্যাটন দেখিরা কিছু, পছন্দ না হয়॥

কারে বলি সারজন, কোখা ভার সার সারজন কেছনয়, সকলি জ্ঞার !! হাতে যাঁর দুঁ ড়ি পালা, পালা তার ভারি।
চারিদিকে খরিদার, অতিশয় জারি ॥
খরে খরে দ্রব্য সব, শোভে তাঁর মরে।
কেমনে করিব ক্রয়, বনেনাকো দরে ॥
না জেনে বাজার ভাও, আঁচ দিই আঁচে।
দর শুনি কি জানি মা, কাণ ধরে পাছে॥

काटि काटि वाटि वाटि, इय अकाकात । নানা রঙ্গে বোট শ্রেণী, শুণে উঠা ভার।। দ্রণ পূর্ণ কত বোট, আসে পাল্পাল্। মাঝে মাঝে কন্সেল, কন্সেল আল্॥ জাহাজের আমদানি, জন্ত নানা ৰূপ। বিশ্বমাঝে দুশ্য নাহি, হয় ছেন ৰূপ॥ উপরের ঘরে শোভে, কতরূপ পাখী 1 কণমাত্র হেরিলে, জুড়ায় চুই জাঁখি ॥ পাখামধ্যে কত রঙ্গ, কত রঞ্জ ভরা। পিঁজিরায় বন্ধ তবু, নাছি যায় ধরা ॥ সব পক্ষী এক হয়ে, করে সদা গোল। বুঝিতে না পারি কিছু, তাহাদের বোল॥ টিয়া নয় ভোতা নয়, কিবা রব করে। ভার মধ্যে একপক্ষী, মিশে গিয়া ঝাকে। করে কেলি হেলি হেলি, ডেভে ডেভে ডাকে॥ ভানিলাম এই পাথী, হাতে করি আগে। এখনি লইব কিনে, যত দর লাগে ॥ কর পেতে দর করি, নিকটে ঘুনিয়া। ভয় পেয়ে ভাগিলাম, ম্যা ডাক গুনিয়া ॥ नाहि आंत्र थाकिलांग, किए जिहे छुला। পাখী ডাকে ম্যা, ম্যা, ভাৰ খনে কাণ জ্বলে 🛭 বিদেশী বিহঙ্গে আর, নাহি প্রেয়েরন।
দিশি পাখী দিশি বোল, তাহে তুষ্ট মন॥
রব শুনে মুখ্য সদা, স্বিশ্ব হই দেখে।
গৃহত্বের খোকা হোক, পাখী কর ভেকে॥

# আশা ভঙ্গ। ত্রিপদী।

शंग्र शंग्र अकि मांत्र, श्रीन यात्र कर कांग्र, দহে কায় মনস্তাপে মরি। দেখিলাম আগে পাছে, সর্ব্ব দুখে পার আছে আশা ভঙ্গে উপায় কি করি॥ কুগ্রহ করিয়া আড়ি, মারিল বিষম আড়ি, ভালরফ ভাগোর খেলায়। পড়িল প্রমাদ পাশা, দিশা হারাইয়া আশা, मार्थ वाम घिल (इलाय ॥ देश्या जानि लोख खरू, जिंतन मण्यान ऋरूरी, একে একে হারিলাম পবে। ভার পর মনোমনি, ভাহাকেও তুচ্ছ গনি, হারিলাম স্থবের স্বপনে। বাকীমাত্র ছিল আশা, তাহাও হুরিল পাশা, কর্মনাশা কেমন কুটিল। বেচি দেহ গেহ পাটা, যাহা ছিল প্ল'জিপাটা, क्राय क्राय नकन नू हिन॥ কুগ্ৰছ বিপক্ষ সম, প্ৰকাশি বিষম তম, মনোমত যাহা ইচ্ছা করে। হালি হারা তরী প্রায়, ভাসিছে আমার কায়, সীমাহীন নিরাশা সাগরে। फर्पर वानिका हरन, योवन क्निधिकरन,

ভাসাইয়া শরীর ভরনী। প্রেমন্বীপ অভিমুখে, চলিল পরম তুর্থে, गम मन जांधू निद्धांमिन ॥ বৈধ্যা হালি করে ধরি, চালে ভরি ত্বা করি, থিঁকা মারে থাকিয়া থাকিয়া। আনা পালি বায়ু পূর্ণ, ভরন্থ বিনাশে তুর্ণ, জুড়ায় নয়ন নিরখিয়া॥ করিলাগ অতুমান, **छ्थ इत्ला अ**वमान, প্রেমদ্বীপ নিকট হইল। সাধু সদাগর মন, আনন্দে অস্থির মন, প্রেমধারা নয়নে বহিল॥ হায় একি পরিতাপ, এমন সময়ে পাপ, উठिल कलक भिष्ठ (द्रथा। বহিল বিচ্ছেদ বড়, ভাকে খল কড় মড় অমোঘ আতক দিল দেখা॥ খণ্ড খণ্ড আশা পালি, কাণ্ডারীর চতুরালি, नक एक रामा (मई एता। হালি হারা তরী প্রায়. ভাসিছে আমার কায়, সীমাহীন নিরাশা সাগরে॥

## ৰূপক।

# আশা কি সুখের বিষয়।

এই সায়ামর মহীয়গুলে মানবমগুলী
ব্যেহডোরে বন্ধ হইয়া আশার সহিত প্রাণ্য
রাখাতে কি আশুচর্য্যরূপে অবনীর কার্য্য
কদম্ব নির্বাহ হইতেছে, আশার মুসার
জন্য সকলেই নিজ নিজ যন্ত্র, পরিশ্রম, উৎ
সাহ, উদ্যোগ প্রভৃতি ব্যয় করাতে জন্যান্য

শ্রেকার আশাসমূহ স্থাসিত্ত করিয়া সহজে বা বহু কষ্টে হুখী হইতেছেন, এই প্রকারে আশাবায়ু অনবরত প্রাণিপুঞ্জের হাদ্যুগগনে প্ৰবাহিত হইয়া নানা কাৰ্য্যের প্ৰবৃত্তিৰূপ ধূলিরাশিকে উড্ভীয়মান করিতেছে, প্রোণীমাত্রেই আশার দাস, আশার ক্ষেত্রে স্থাস্য প্রাপণাশয়ে সভত প্রযন্ত্রনপ সেচনী দ্বারা বহুবিধ উদ্যোগৰূপ সলিল সেচনে অনেকেই ব্যব্র আছেন, কেহবা স্থন্ধ মান-সাকাশ স্থাকাশিত আশাচন্দ্রের প্রভা ক্রমে বহু প্রকার ভাবী হুখ লক্ষ্য করিতে ছেন, কেহবা বাঞ্ছিত ছখের লোভ হেতৃ আশাকে সম্বল করিয়া অতি গভীর চুর্গম ভীম সমুদ্র কুদ্র বোধে উল্লঙ্গন পূর্বাক অতি উচ্চ শিখরাদি নিবিড গহনবিহারী নানাবিধ হিংস্র পশুর সন্মুখ দিয়া দ্বীপ দীপান্তর গমনান্তর স্বকার্য্য উদ্ধার করত হর্ষকে স্পর্ম করিতেছেন। বিষয় বিশেষের আশা বিফলা হইলে আক্ষেপ জন্য প্রাণ বিনাশের সম্ভাবনা হয়। কিন্তু ঐ তুঃখে র কালে আশা কেবল বন্ধু স্বৰূপ সহায় হইয়া मारम मात्म कीवनरक म्हरू मरश कहरम স্থাপিত করে। অতএব যে কারণে এই সং সারে আসা, আশাই ভাহার সকল মূল কারণ হইয়াছে। আশাপুৰ্ণ হইতে বিলম্ব হইলে সে সময়ে মানস ধামে কি আশ্চর্য্য ভাবের উদয় হয়। আহা! বিষয় বিশেষের আশা পরিপূর্ণ ইইলে অন্তঃকরণে যে প্রকার আ-ব্লোদ জ্বমে, তাহা বাকা দ'রা ব্যক্ত করিবার

নহে, যাঁহারা আশা স্থাপের বিগুড় মর্ন্ম দুড় বাপে জ্ঞাত হইরাছেন, তাঁহারা স্মরনমাত্রেই মুগ্র হইরা জাতিরেক আনন্দে বোধশুনা হইবেন, জামি ভালবাসা ভালবাসি, স্থাতরাং প্রাণ থাকিতে ভালবাসার জাশা ছাড়িতে, পাপিব না, এবং ভালবাসার ভালবাসায় আসা ছাড়িতে অক্ষম হইব।

আশানুরক্ত বিরক্ত মহাশয় আশার আশা পরিত্যাগ প্রবিক আক্ষেপ চিত্তে আ শার বিষয়ে প্রভাকর পত্তে প্রার প্রবন্ধে যে এক পত্র লিখিয়াছেন, আমরাভাহার প্রত্যেক কবিতার কৌশল দুষ্টে এবং তাৎ পৰ্ব্য ঘটিত ভাবাৰ্থ অৰধারণে গোপন মৰ্ম ও বিশেষ চতুরতা লক্ষ্য করিয়া অভিশয় ত্ট হইলাম, আশাবিবেকী পত্ৰ লেখক কি কারবে এতদ্রেপ স্থাখের আশার বিরক্ত হই-লেন, ৰোৰ করি কোন আশাবিশেষে ৰঞ্চিত হওয়াতে অভিমান জন্য হঠাৎ এই বিবেক ভাবের উদয় হইয়াছে, ফলতঃ বিবেচনা করা কর্ত্তব্য যে, গমন কালে চরণ চালনার ত্রুটী হেতৃ মৃত্তিকায় পতিত হইলে পুনর্কার দেই সৃত্তিকা ধরিয়। উত্থান করিতে হয় অভএৰ ভিনি যে আশা করিয়া নিরাশা-ক্ষেত্রে পতিত হুইয়াছেন, পুনরার সেই আশার হস্ত ধরিয়া বলপুর্বক দণ্ডারমান रहेटन अवनाहे अधिमांव मिस्र रहेटबक, आनामत्छ मधी इहेग्रा मछ आही वाशीत ন্যায় শাস্তি দও ধারণ করত একেবারে এপ্র কার অর্সিকতা ও অপ্রেমিকতা প্রকাশ

করা উচিত হয় না, সে যাহা হউক, তাঁহার মনের ভাব ঈশর জানেন, আমার ভালবাসা আমাকে ভাল বাহ্নক বা না বাহ্নক, হুখ ভাহাতে হউক বা না হউক, কিন্তু মনের কিন্তু কখনই রাখিব না।

#### পয়ার ৷

অহরহ আশা বজে, মানস পথিক। আশার স্থসার হেতু, চিস্তে স্থগতিক॥ আশার আত্মীয় মন, আশার আশ্রিত। আশা পায়, আসে যায়, আশায় বাধিত॥ নির্ভুর নিরাশা যদি, হয় বলবান। পুনর্বার আশা তাহে, আশা করে দান। এক আশা পূর্ণ হলে, অন্য আশা আসে। তাশায় ভাসায় সদা, অতিরেক আশে। শরীর সদনে প্রাণ, যদবধি থাকে। তদবধি আশা তারে. স্থির ভাবে রাখে॥ দিবস যামিনী সন্ধ্যা, প্রভাত সময়। হেমন্ত, বসন্ত, গ্রীষা, তার্দি ঋতু ছয় ॥ বার বার সাত বার, সাতবার আসে। বারোমাস ডুই পক্ষ, ভাহাতে প্রকাশে॥ এইৰপে ভারা সব, আসে নাশে আয়ু। ভগালি না দূর হয়, দীর্ঘ আশা বায়ু॥ পুরিলে সনের আশা, আশা নাহি ছাড়ে। নিয়ত নবীন হুখে, অভিলাষ বাড়ে। যদি বল সব আশা, সিদ্ধা নাহি হয়। সে কথা যথার্থ বটে, খণ্ডিবার নয় ॥ কিন্তু তাহে কিন্তু ভাব, অপ্রেমের প্রথা। যত হয় তত ভাল, খেদ করা ত্রখা । ঈষৎ নিরাশা তুখ, কত হুখ তায়।

সেই জানে যারে সেই, মজার মজার॥ আশা যার পূর্ণ হয়, সমুদয় লোভে। অগাধ আনন্দ জলে, মন ভার ডোবে॥ প্রতিকৃল ইথে সব, মন্দ অভিপ্রায়। স্থের হইলে ভোগা, রোগ নাহি যায়॥ সত্য সত্য সত্য বটে, লিখিয়াছ যত। ফলত সকল নহে, অভিমত মত। এযে রোগ, দীর্ঘ ভোগ, ছাডিবার নয়। ত্মখের কারণ রোগে, রোগ রৃদ্ধি হয়। এ রোগের হুখ তুখ, জানে মাত্র তার।। বার বার ভুক্ত ভোগী, প্রেমরোগী যারা॥ আশাবটে তুরাশয়, নিরাশার ভাই। ফলত উভয় ভেয়ে, প্রেমালাপ নাই II নিরাশার প্রভাবে, কেবল মনে ছুখা আশায় হাসায় সদা, বৃদ্ধি করে স্কথ। তাশায় আসায় যারে, তার আশা ভাল। नितानात घरत नारे, खांख्नारमत जारना॥ তুমি এসো,আমি ম্বাসি,আর যেবা আসে। আসাতে আশাতে শেষ, খেদরাশি নাশে॥ সে জানে বিশেষ মর্দ্ম, মন যার ঝোঁকে I আশা হুখ কি বুঝিবে, প্রেম শূন্য লোকে॥ স্থুখ ক্ষেত্রে আশাবৃক্ষ, স্থুখ ভার নানা। ফলের আসাদে তার, গুণ যায় জানা॥ যে প্রকার ভার ভার, ফল ভাল বটে। ফলত সৈ ফলে ফলে, বিকল না ঘটে। ভালবাসে ভালবাস, ভালবাসা আশা। পরীক্ষায় বুঝিয়াছি, ভাল ভালবাসা॥ তোমার এ কথা সব, ভাল কিলে হয়। ভালবাসি কথা কভু, প্রকাশের নয়॥

ভালবাসা কারে বলে, ভালবাস কারে।
ভোমার যে ভালবাসে, ভালবাস ভারে॥
ভোমার যে ভালবাসা, বুঝিলাম এই।
আমার যে ভালবাসা, মনে জাগে সেই॥
ভালবাসা কাননে, কলক ফুল ফুটে।
প্রাথম পবনে ভার, স্থসোরত ছুটে॥
ভাবিক প্রেমিক বত, স্থথে মুধ্ব ভার।
অরসিকে গন্ধ পেয়ে, মন্দ গুণ গায়॥
অতএব বলি ভাই, শুন মন নেয়ে।
প্রেমন্বীপ ছেড়নাকো, আশানদী বেয়ে॥
আশা করি প্রেম হাটে, প্রতিদিন যাবে।
রসিক রসিকা সনে, নানা রস পাবে॥

-

তত্ত্ব প্রকরণ।

চিত্ররেখা চৌপদীক্তদ।

পাপকার্য্যে সদা জীন, তত্ত্বীন অতি দীন,
তেটামার স্থাখের দিন,
এলোনা ছে এলোনা।
পাতিয়া সংহার জাল, সম্মুখে শমন কাল,
আলম্যে চরম কাল,
টেলোনা হেটেলোনা॥
শুন মন মহীপাল, দেহরাজ্য ক্লবকাল,

বেলোনা হে বেলোন।।

বল বল ধর্মাবল, কর্মাণ্ডণে ফলে ফল, হাতে পেয়ে গুভ ফল,

বিষয় বাসনা ঝাল,

ফেলোনা হে ফেলোনা॥

ক পাল ভোমার পো ড়া, হারালে কন্মের গোড়া,

হিংসাৰূপ বিষ কোড়া, (भरनानां एक (भरनानां । विकल विवास प्रसा, जित्र जाना हिनि इसा, পাপ লোভ কাল সর্প, (भारतीयां १६ (भारतीयां ॥ আশায় প্রবল আশা, সম্ভোষ হারার বাসা,. বুথায় হুখের পাশা, (थटलांना (२ (थटलांना। ভিড়িল নৌকার পাল্ হাবা দাবা ছেড়ে হাল্ মিছামিছি বাজে চাল, (हरलानां (इ (हरलानां ॥ বিবেকের লহ সঞ্চ, বিপুরঙ্গ দেহ ভঙ্গ, যায়ার তরফে অঞ্ চেলোনা হে চেলোনা। করণা কুন্থম হার, কর নিজ অলকার, বিবাদ প্রদীপ আর, জ্বেলোনা হে জ্বেলোনা॥ উপহাস পরিহাসে, যদি কেহ কটু ভাষে, রাগরজ্জু দেষপাশে, হেলোনা হে হেলোনা॥

श्रमा ।

শান্তিগুণে চুই পদে,

र्छटनांना एवं रहेटनांना।

देश्या यत भटन भटन,

रुरा गंख जबगरन,

অহরহ, অহরহ, কত গত হয়। এই অহ, এই রহ, লোকে এই কয়॥ রাত্রি দিন যুক্ত, তুক্ত, কাল সমুদ্য। দিন বাত্রি আছি আমি, মুখে প্রিচয়॥

দেখি বৈটে এই কাল, ফলত অদৃষ্ট। হুখ তুখ ভেদে বলি, অপিন অদৃষ্ট ॥ প্রপঞ্চ শরীর পেয়ে, যুহদিন রই। এই কাল এই আমি, এই মাত্র কই॥ নাহি জানি কেবা,কেবা, আমি কেবা হই। ে ৰুভু ভাবি, আমি আমি. ৰুভু আমি নই ॥ বই করি স্থিতকাল, খুলে দেহ বই। ভবের খাতার শুধু, করি ঢেরা সই 🏽 वांक्रिल छूंगेत चिंज, रत्ना तांक्रमरे। আর কেন'ওহে ভাই, কর হই হই॥ বোঝা গেল সবিশেষ, মিছে বোঝা বই। কার প্রতি ভার দিই, কার ভার বই।। আমি বলি এই এই, ভূমি বল ওই। দেখা যাবে এই ওই, ক্ষণকাল বই ॥ कृटल (थरक सन लह, विल পहे भरे। फुरिटल माधात जुरम, शारानारका यह ॥

> শারদীয় প্রভাত বর্ণন। ত্রিপদী।

-1010

যামিনী বিগত হয়, তরুণ অরুণোদয়,
শশান্ধের শব্ধিত শরীর।
কাতরা যতেক ভারা, চন্দেতে নীহার ধারা,
বহে শ্বাস প্রভাত সুমীর॥
কারো বা কম্পিত দেহ, নয়ন মুচিছে কেহ,
কেছ পড়ে কেহ হয় লোপ।
নির্বিয়া সেই ভাব, কত কত নব ভাব,
হইতেছে অন্তরে আরোপ॥
থেমন অস্তিমকালে, খেরি প্রিয় মহীপালে,

মহিষীর শ্রেণী করে শোক। কেহ পড়ে ভূমিতলে,কেহ সিক্তা অঞ্জলে, কেহ খূন্য দেখে তিনলোক॥ অবোধ শোচনা মাত্র, কেবা কার প্রিয়পাত্র, সকলের এক দশা শেষ। कीवत्न पिवन क्य. এক অঞ্চে গত হয়; যথা বনে বিহঙ্গ প্রবেশ॥ ভোগ ফুরাইলে আর, বন পক্ষী কেগা কার, একেবারে বিষয় বিচ্ছেদ। অভএব বুথা খেদ, বুথা ভাক্র বুখা স্বেদ, কালের নিকটে নাই ভেদ॥ পরশোকে স্থলে তুল, দেখহ নক্ষত্ৰকুল, বিলাপেতে বিষম ব্যাকুল। কিন্তু তারা প্রতিক্ষণে, দিবাগমে জনে জনে, কালগ্রাসে হতেছে নির্দান। छेकित्लन पिराकतः एम एम करनावर, বিমল অনল প্রভাধর। প্রেমিকের মনে যেন, নবপ্রেম দীপ্তি হেন, ধিকি ধিকি উঠে নিরম্ভর ॥ ক্রমে যত তেজ বাড়ে, খরতর কর ছাড়ে, সরমের সর্বারী পোহায়। লোকভয় তমোরাশি, পুঞ্জ পরাক্রমে নাশি, ৰিক্ৰম প্ৰকাশি ততো ধার II ওই নিরীক্ষণ কর, তপনের কলেবর, घिति एक घन घन विदर्भ। এই ৰূপ প্ৰেমিকের, নৰভাৰ হাদয়ের, মান হয় মনান্তর মেঘে॥ সমীরণ সহকার, বায়ু যোগে প্রনর্কার, দিনকর হতেছে মোচন।

এৰপে প্ৰেমিক মন, সুক্ত হয় সেইক্ষণ,

যদি ৰহে আশা সমীরণ॥

অস্ত্রগত হেরি শশী, বকুল বিপিনে বসি, পিকবর ললিত কুহরে। হার রে মধুর স্থর কবিজন মনোহর, বরিষহ হুধা শ্রুভিপুরে॥ বরষা সন্থানে যায়, শরদ আগত প্রায়, ञ्माविध अमरमत घरे।। ফলে কোকিলের গানে,অন্য ঋতু কেবা জানে, मत्न जुटल वमरखन इते॥ প্রভাত প্রহরে নিত্য, পিকরবে ফুল্ল চিত্ত, শিহরে শরীর নব রসে। কুৰূপ বিহস্পৰ্য, প্তবে মুগ্ধ চরাচর, দশদিগ পরিপূর্ণ যণে॥ অতএব গুণ শ্রেষ্ঠ, ব্রপের সোদর জ্যেষ্ঠ, কনিষ্ঠ অশিষ্ট লোকে ভাবে। নহে ভান্য দ্বিজাবলী, পিকের প্রধান বলি, খ্যাত হতো স্থৰপ প্ৰভাবে ॥

দিনপতি প্রিয়দূত পিকবর গুণ যুত,
তার মুখে পেয়ে সমাচার।
জাগিল যতেক পাখী, প্রকাশিয়া তুই আঁথি,
হেরে নব প্রভার আধার॥
অপার আনন্দ মনে, সহ সহচরগণে,
গান আরম্ভিল নানা স্থরে।
মন মুখ্য মিষ্টরণে, যেন তুমুরাদি সবে,
সঙ্গীত সংযুক্ত স্থরপুরে॥
রজনীতে ফ্ল বন, ছিল সবে অচেতন,

স্থা সরে হৈল সচেতন। প্রকাশিয়া প্রস্পাচয়, হাস্য করি স্থ্যময়, সৌরভেতে পুরিল কানন॥

ফুটিল চম্পক কলি, হেমছটা পড়ে গলি, কিবাকামিনীর কাস্তি হর। মানিনীর মন প্রাঙ্গ, অভি উগ্র গন্ধ ভায়, লভিমাত্র ভূক অনাদর॥ पलटक (प्रांथीं) एल, नाना तक यल यल, ংখত রক্ত হিঙ্গুল পিঙ্গল। কোমল হাদয় অতি, তাহাতে হিমের মতি, হার ৰূপে শোভে ছবিমল। ধরিয়া হ্লেন ছন্ত্র, ফুটিতেছে স্থল পদ্ম, জলজের হরিতে গৌরব। কিন্তু কোথা মকরন্দ, কোথায় মোহন গন্ধ, কোথা মধুকর মিষ্টরব॥ এই ৰূপে নানা ফ্ল, ৰূপ রুসে সমতুল, প্রস্ফুটিত কানন ভিতর। মধুমকী মধুব্রত, প্রজাপতি আদি যভ, मधुलाति चिक्त कल्लवत् ॥

আগমনে দিনমান, সরোবর সমিধান,
মনোহর শোভার শোভিত।
প্রবল হিল্লোল পরে, রাজহংস কেলি করে,
প্রফুল্ল পক্ষল প্রলোভিত॥
ধবল তরক্ষ রক্ষ, মরালের খেত অক্ষ,
প্রভেদ না হয় অমুমান।
হংস হৈত অপাহ্লব, কেবল শুনিয়া রব,
অমুভব আছে বর্ত্তমান॥

**हातिमिटक वस्तर्थः स्टब्स स्टार इट्रा तरा,** বোধ হয় এই সে কারণ। नित्रिंश नर्सती भ्यत, कृत्रुनीत गुर्श्वरम्भ, বিষাদের বস্তে আবরণ ॥ ইন্দু বন্ধ অন্তগত, বিরহে বাসরে রত, অবিরভ তুখের উদর। দেখি তার মলিনতা, ক্রদ্যমান বৃক্লতা, শক্ষীন প্রায় সবে রয়॥ কে বলে কৃত্বম ধরে, আমি বলি অক্ষিবরে ভূঞ্জপ নয়নের তারা। ক্ষরিতেছে হিম অক্রধারা॥ मुधिन कमलावली, अलि जारह क्जूहली, সংযোগ সম্ভোগ পরায়ণ। শুঞ্জরে মধুর স্থর, তাঙ্গে করে খর কর, **हक**्मक् हक्ष्म कित्र ग॥ গাইতে নলিনী গুণ, তাতিশয় স্থনিপুণ, গাও গাও উচিত ভোমার। অধা যেই উপকৃত, তথা সেই উপক্রীত, কৃতজ্ঞতা ধর্মের আচার॥ কিন্তু দেখ প্রজাপতি, রসপানে রত অতি, ফলে গুঞ্জ রব নাহি মুখে। অকৃতজ্ঞ নর যেই তাহার তুলনা এই, রীতি হেরি মঙ্গে লোক দুখে। এইৰূপ শ্রদের, ন্ব শেভা প্রভাতের, প্রদীপ্ত হতেছে ক্রমে ক্রমে। হায় হায় এ কি জেত, চঞ্চল চরণ যুত, र्यं कोल धरां जल खर्ग॥ সে দিনে শর্দ গেলো, তাবার ফিরিয়ে এলো,

স্থানয় শারদীয় প্রকা।

ঘরে ঘরে দেখা যায়, জানন্দের স্রোত ধায়,

নিয়নিত দেবী দশ ভুজা॥
প্রতিদিন উষাকালে, স্থানধুর বাদ্য তালে,

গীত হয় জাগননী গীত।
শুনিয়া বিমুদ্ধ মন, যতেক ভাবুকগণ,
হাদয়ে করুণা সঞ্গরিত॥

#### প্রণয়।

প্রাথ স্থরে সার, পার নাহি যার। কি হেতৃ মনরে তত্ত্ব, কর অর্থ ছার॥ ত্যজিয়ে জনর্থ ধন, অন্বেষণ তার। করিলে সংসারে তরা, কিছু নাহি ভারা কিন্তু প্রণয়ের আশা, কর্ম্মনাশা সার। সরলতা প্রেমে জাশা, ক্রিয়া পুষ্পাহার॥ আশার অতীত বেই, পরুয়ে গলায়। সরল সভাবে সভ্য, ভাবেরে গলায়॥ কপট প্রণয়ে ভাই, কিছু নাই স্থা। স্থ্ই সভাবে ভেবে, ফেটে যায় বুক॥ আমি করি আমার, আমার যেই জনে। কভু নাহি আমায়, ভাৰয়ে সেই মনে॥ এমতে প্রণয় ভাই, নাছি রহে সার। কেবল কলক মাত্র, হয় অনিবার ॥ অভএব মন তুমি, উপদেশ ধর। পরমার্থ প্রীত জন, সহ প্রেম কর॥ তাহাতে পাইবে স্থ্য, সহচ্চে নিয়ভ। স্বৰূপে সমান জ্ঞান, হইবে নিয়ত ॥

# व्रक्रनीरक छात्रीतथी।

আহা মরি তর ক্লিনী, কিবে শোভা ধরেছে।
রজত রক্ষিত শাদী, অঙ্গবেড়ি পোরেছে॥
গুন্য পরে শশধরে, হেমছটা ক্লরিছে।
অশীতল নিরমল, কর দান করিছে॥
তটিনী তরক্ষে তারা, কত রক্ষে খেলিছে।
পবন হিলোল যোগে, খন ঘন হেলিছে॥
যেন কোনো বিয়োগিনী, নিদ্রাভরে রোয়েছে।
ফগ যোগে পতিলাভে, প্রমোদিনী হোয়েছে।
হাস্যবশে স্থবদন, ঝলমল করিছে।
থর থর কলেবর, নিগর শিহরিছে॥
দেখিয়া স্থভাব ক্রিয়া নয়ন প্রকাশিছে।
দেখিয়া প্রভাব কিন্তু, হুদে লাজ বাসিছে॥

---

দীর্ঘ পয়ার। প্রশোন্তর। কারে কহিব প্রণয়,কারে কহিব প্রণয়।

প্রেম মনের এ চতা,প্রেম মনের একতা। চুমকেতে লাভ করে, আকর্ষণ যথা॥

প্রেম অনুরাগ আদি, শব্দ পরিচয়॥

বল কোথা সেই থাকে, ২। কিবা লাভ হয় ভার, ধরে প্রেম যাকে॥

থাকে হুজন অন্তরে, ২। ধরায় কৈবল্য আদি, দেয় ভার করে॥ বল স্থন্ধন কেমন ২। কিৰূপ প্ৰকৃতি তার, কিৰূপ লক্ষণ॥

ভারে কহিব স্থজন ২। সরলতা গুণে যার, মুধ্ব ক্রিভুবন॥

কহ সরলত। কারে ২। কিবাপ প্রকার সেই, এ ভব সংসারে॥

তারে বলি সরলভা ২। গরিমা গরল ইনি, সাধু স্থালভা॥

বল সরল কোথায় ২ । ভাকপট ধীরমভি, কোথ; পাওয়া যায়॥

কর নিগূঢ় সন্ধান ২। অবশ্য মিলিবে সেই, পুরুষ প্রধান॥

কছ এ কেমন কথা ২। পুরুষে প্রেমিক হয়, নারীতে অন্যথা।

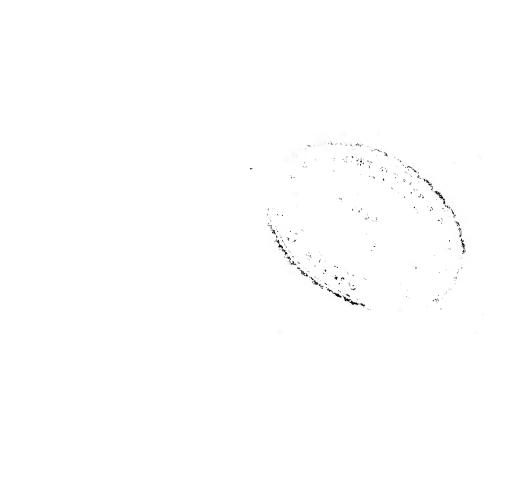
নছে সে পুরুষু বলি ২। আত্মায় উল্লেখমাত্র, আত্মায় সকলি॥

ভাল ভাঙিল সন্দেই ২। ভাপনি প্রেমিক কিনা, পরিচয় লহ॥

# গ্রীব্যের পলায়ন ও বর্ষার রাজ্যাভিষেক।

হাস বৃদ্ধি সবাকার, কাল অন্নগারে ! না বুবে। ভাবোধ লোক, মরে অহকারে॥ যেমন গ্রীষ্মের গর্বন, ছিল সর্বদেশে। পড়িয়া বর্ষার হাতে, থকা হৈল শেষে॥ ৰৱষাৱ দাপে গ্ৰীষা, গোল অধঃপাতে। অধর্মা বুক্ষের ফল, ফলে হাতে হাতে॥ গ্রীষা ভয়ে বরষা, হইয়াছিল দীন। এতদিনে দীনের, কপালে শুভদিন॥ ভাইল বর্ষা ঋতু, সহ পরিবার। পুনর্কার পাইল, আপন অধিকার॥ গ্ৰীষা ঋতু পলাইল, দেখিয়া বিপদ। দিনে দিনে বরষার, বাজিল সম্পদ !! চাতক ময়ুর আর, জলধর ভেক। বরষাকে করিল, রাজ্যেতে অভিযেক ॥ সেনাপতি জলধর, শরবৃষ্টি করে। স্থানে স্থানে ভেকগণ, নকিব ফ্করে॥ আকাশে চাতকগণ বাজাইছে তুরী। ্জানদের কাননে নাচে, ময়ুর ময়ুরী॥ ঘন ঘন ঘন ঘটা, গভীর গর্জ্জন। গগনে গ্রীষ্মের প্রতি, করিছে ভর্জন। গ্রাম্বের সহায় ভারু, ভয়ে লুকাইল। সেই হেতু চতুর্দ্দিক, তিমিরে পুরিল্॥ তডিত প্রদীপ শিখা, করিয়া ধারণ। কোনে কোনে জ্রীস্মের, করিছে অস্বেষণ॥ সম্ভাপে ভাপিত করি, সকল সংসার। কোথা পলাইল গ্রীষা, তৃষ্ট ভুরাচার॥

मः रगाती यूवजी यूना, कतिल विस्कृत। বিয়োগীর শতগুল, সংযোগীর খেদ। क्षकारेल मरतायत, नपनपी हुए। ঘটাইল চুষ্ট গ্ৰীষ্য, এতেক বিপদ। তবে যদি পাই দেখা, দেখাইব তারে। এমন জন্যায় যেন, রাজ্যে নাহি করে॥ এইকপে ধরাধর, করিছে শাসন। ধরায় না ধরে ভার, ধারা বরিষণ॥ হ্বধাবৃষ্টি প্রায় বৃষ্টি, রিষ্টি করে দূর। করি দৃষ্টি পরিভৃষ্টি, জগতে প্রচুর॥ পৃথিবীর উত্তাপ, ছরিল কাদম্বিনী। ম।তিল মদন মদে, পুৰুষ কামিনী॥ বিত্র মধ্যে সরসা, বরষা মনে গণি। তাহে সেই ধন্যা যার, পাশে গুণমণি॥ অবিরত রত ভোগা, যত মনে উঠে। না চুটতে আপনি, কামের বাণ চুটে॥ গুহ পাশে সেফালিকা, কুন্তম হুগন্ধ। স্থানীত সমীরণ, বছে মন্দ মন্দ॥ আকাশে গভীর ধীর, ঘন ঘন ডাকে। মুনির মানস টলে, অন্যে কোথা থাকে॥ রজনীতে না পুরে, নারীর মনোর্থ। দিবস ছইলে রাজি, হয় মনোগত॥ নিবারিতে বরষা, নারীর মনো খেদ। রজনী দিবস দোঁহে, করিল অভেদ॥ শান্তে বলে মেঘাচ্চন্ন, দিন যে তুর্দিন। কিন্তু কামিনীর পক্ষে, অভি সে হুদিন॥ পূর্ব্ব প্রভাকর লুপ্ত, বরষার গুণে। পর প্রভাকর দীপ্ত, বরষার গুণে॥



# কবিতাবলী।



মহাকবি।

মহাত্মা ঈশ্বরচন্দ্র গুপ্ত মহাশয়ের বিরচিত কবিতার সার সংগ্রহ।

मर्छ मः था।





কলিকাতা। প্রভাকর যন্ত্রে মৃদ্রিত।

मन ১२४० माल।

মুল্য চারি আনা মাতা।

### স্বভাবের শোভা।

আঁমরা যথন সৃষ্টির প্রতি দৃষ্টি নি-ক্ষেপ পূর্বক চিন্তা সাগরে নিমগ্ন হই, ভখন অন্তঃকরণে কত কত হুতন মূ-তন আশ্চর্য্য ভাবের উদয় হইতে থাকে। কিন্তু কোন্ অভাবনীয় শক্তি বা ভাবের প্রভাবে নেই সকল ভা-বের আবির্ভাব হয়, ভাবনা দ্বারা তাহার কিছুই স্থির করিতে পারি না। যাঁহার যে পর্য্যন্ত বুদ্ধির সীমা, তিনি নানা প্রকার তর্ক, বিচার, অমু-সন্ধান, চিন্তা ও বিবেচনা দ্বারা সেই পর্য্যন্তই নির্ণয় করিয়া থাকেন, ফলতঃ তাহাতেই বা কি নিশ্চিত হইতে পারে ? কারণ সেই পৃথক পৃথক নির্ণয়কারি ব্যক্তিব্যুহের মধ্যে পরস্পার পৃথক পৃথকরূপে মতের বিভিন্নতাই দৃষ্ট হইতেছে। যিনি যেরূপে ব্যাখ্যা করুন, কিন্তু স্বভাবতঃ মানব বুদ্ধির এতদ্ধপ উচ্চতর শক্তি নাই, যদ্বারা এতৎ নি-রূপন বিচিত্র বিশ্বের আশ্চর্য্য কার্য্য-কপাল ধার্য্য হইতে পারে,তবে মহান্ত্র ভব মহোদয়েরা সম্ভবমত অন্মুভাব ক্রমে ভবঘটিত যে সকল ভাব অন্থভাব করিয়াছেন, সেই মনোভব ভাবের

মধ্যে যে যে বিষয় অবিরোধে যুক্তির সহিত যুক্ত হয়, কেবল তাহারাই আ-মাদিগের স্থদ হইয়া বিশ্বাদের হৃদয়ে নৃত্য করিতে থাকে। সে যাহা হউক, যিনি এই সঞাকার ব্রহ্মাণ্ডকে ভাণ্ড-• বৎ খণ্ড বিখণ্ড করিয়া জলে স্থলে রসাতলে, শৃত্যে শৃত্যে আপনার অ-নির্বাচনীয় অচিন্তনীয় ক্রীড়া সকল প্র-কাশ করিতেছেন, তাঁহার প্রকাণ্ড কাণ্ড মধ্যে বুদ্ধি হতির ক্ষুর্তি হওরা কোন-মতেই সম্ভব নহে। আমরা যে সময়ে যে স্থানে থাকিয়া স্থিরচিত্তে যে যে বস্তুর প্রতি নিরীক্ষণ করি, সেই সময়ে সেই সেই বস্তু মধ্যে কত কত চমৎকার মনোহর শোভা দেখিতে পাই। স্বভা-বের সদনে অভাবের বিষয় কিছুই দৃষ্টিগোচর হয় না। প্রকৃতির বিকৃতি মাত্র নাই,ক্ষুদ্র এক তৃণ, রক্ষের এক পত্ৰ, এবং মক্ষিকা প্ৰভৃতি কীট পত-ঙ্গাদির শরীরের বিচিত্র কার্য্য দৃষ্টে সেই অম্বিতীয় অদৃশ্য শিম্পিকারির কি আশ্চর্য্য শিশ্প বিদ্যার পরিচয় প্রকাশ পাইতেছে। জল, স্থল, শৃত্য এবং এই তিনের সন্তর্গত প্রাণিও আর আর দৃশ্যাদৃশ্য বস্তু কিয়া পদার্থ

পুঞ্জ ইহার। প্রতোকেই স্ব স্বভাবা-चूमारत भक, न्याभ, तथ, तम, भन्न, এই পঞ্চেক্রিয়ের প্রত্যক্ষ হইয়া প্রতি ক্ষণেই প্রত্যরকে প্রশানন্দগয় প্রমে-ুশ্বরের প্রণয়পথে প্রেরণ করিতেছে। শ্বেত, পীত, পিঙ্গল, পাঞ্জু, রক্ত,নীল, শ্যাম, ক্লফাদি বিবিধ বর্ণ বিভুষিত আকাশমণ্ডলে বিপুল শোভার বিভাস দৃষ্টে চিন্তাযুক্ত চিত্তমধ্যে কি অদ্ভুত চিন্তা সকল সমুদ্ভূত হইতে থাকে! তথাচ তাহার কিছুমাত্র হেতু নিণীত হয় না। কারণ অনুমান কপে প্রায় চিন্তার বিশ্রাম নাই, গভীর সমুদ্রের তরঙ্গের স্থায় ভাব দকল মন হইতে নিয়তই নিঃসৃত হইতেছে, ইহাতে এক ভাবের উদয় হইলে তৎক্ষণাৎ তাহার অভাব হইয়া আবার নানা ভাবের সঞ্চালন হইতে থাকে। স্থুতরাং সহ-জেই বিবেচ্য ছইবেক,যে, যে প্রকার ত-রঙ্গ সমূহ পুনঃ২ বিশ্ব ও বিন্দু বিশিষ্ট হইয়া সিন্ধু হইতে উত্থিত হওত পবন হিল্লোলে নৃত্য করিয়া সেই সিন্ধুসলি-লেই বিলুপ্ত ছইতেছে,সেইরূপ মন্তুষ্যের মন হইতে অনবরতই ভাবপুঞ্জ উদিত হইয়া চিন্তার বাতাদে প্রচলিত হওত আবার ঐ মনেই লয় হইয়া থাকে।
আমারদিগের চিন্তাশক্তির এমত কি
শক্তি আছে, যে, তাহার দ্বারা দেই
অচিন্তা চিন্তাময়ের অনন্ত সৃষ্টির অন্ত
করিতে পারি ? সমস্তই ভূতের ব্যাপার,
ভূতে ভূতে যোগ করিয়া যে সকল
অন্ত ব্যাপার করে, তাহা অন্তভূত
হওনের বিষয় কি ?

কি আশ্চর্যা সৃষ্টির কৌশল। আ-মরা প্রতি দিবস প্রতিক্ষণে যাহা দৃষ্টি করি, তাহার কিছুই পুরাতন বোধ হয় না, যেন সকলি স্থতন, এই মাত্র সৃষ্ট হইল। শয্যা হইতে গাত্রোত্থান পূর্ব্বক প্রভাতে পরমেশ্বকে স্মরণ করিয়া যৎকালে সূর্য্যদেবের মুখাবলোকন করি, তৎকালে ইহাই অন্তভূত হয়, এই প্রভাত গত দিবসের প্রভাত নহে, বিশ্ববিরচক সেই মৃত পুরাতন প্রভাতের পদে এতন্মনোহর মুতন প্রভাতকে প্রেরণ করিয়াছেন। রক্তিমাকার তরুণ অরুণ অদ্য প্রস্থত হওত স্বকীয় স্বভাব গুণে প্রভাপুঞ্জ প্রকটন পুরঃসর পঙ্কজের প্রফুলকর হইয়া সরোবরের শোভা রদ্ধি করি-তেছেন। দিবসের চারুদীপ্রি, আকা- শের পরিচ্ছিন্নতা, সভাবের সৌন্দর্য্য ও সুশীতল মলয়ানিলের মন্দ গমন প্রাভৃতি পরিবর্তনীয় ভাব দ্বারা ভাবুকের মনোমধ্যে এমত ভাবের উদয় হইয়া থাকে যে, ধরণী নিদ্রা হইতে উঠিয়া হুতন পরিচ্ছদ ধারণ করত যেন এই নব যৌবন প্রাপ্ত হইলেন।

#### शमा ।

প্রতি দিন প্রাতে উটি বিভু নাম শ্বরি। তরুণ অরুণ আভা বিলোকন করি॥ সভাবের শোভা কভ, একাশিব কিবা। নিদ্রা তাজি উঠে থেন, কুলবধু দিবা॥ স্বামি তানুরা**গে জা**গে, ভাঙ্গে যুম ঘোর। জাগাইছে জরবিন্দে, প্রেমানন্দে ভোর॥ शंमा भूषी कर्माननी, (घामहा चुनिहा। নাচিতেছে মৃতু মৃদু, তুলিরা ছলিয়া॥ ছুটিয়াছে গন্ধ তার, ফুটিয়াছে কলি। মধুলোভে গুণ গুণ, গুণ গায় অলি॥ দিজরাজ অস্ত দেখি, দিজকুল যত। নানা স্বরে রাগভরে, গানকরে কত। ধরতিল হুশীতল হুবিমল হয়। পূর্বভাগে পূর্বরোগে অপুর্বর উদয়॥ অপুর্বা নহেক সেটা অপুর্বা প্রভাগ। নৰ পৰিচ্ছদ যেন, ধরেছে আকাশ॥ ছটা যুক্ত হৃবর্ণের হৃদ্দর অঞ্রী। অঙ্গুলিতে ধরে যেন, প্রকৃতি হুন্দরী। হেরিয়া প্রভাত প্রভা, পূর্ণানন্দ ময়। পুরাতন নয় বেন, পুরাতন নয়॥

হয়েছে ন্তন স্তি, এই **দৃষ্টি হ**য়। যেন প্রবাতন ময়॥

পরস্তু যথন নার্ভণ্ড আবার প্রচণ্ড প্রভা ধারণ করত নুমধ্যাহ্লসময়ে মন্ত কোপারি স্থিত হন,

ভার এক নৰ ভাব, মধ্যম সময় ৷ দিবার থৌবন যাছে, প্রকটিত হয়।। শুনোর সর্বাঙ্গে থেন, হুতাশন ভরা। তপনের ভপ্ত তমু, দীপ্ত করে ধরা॥ সমীরণ স্থা অঞ্জে, আলিক্ষন দিয়া। জানায় পৃথিবী ময়, প্রকৃতির ক্রিয়া॥ নবভাবে নভো পূর্ব্ব, ভাব পরিহরি 1 পুনর্বার শুদ্ধ হয়,ধৌত বস্ত্র পরি॥ পশু পক্ষী চোরেখায়,ভাপ লাগে শিরে। থেঁকে থেকে কায়া রাখে,ছারার কুটিরে॥ ক্ষুধা ভৃষ্ণা উভয়ের,একত্র মিলন। আল্সা ভালয় লয়, দেহ নিকেতন। अरमत रहेल जम, भाकि धीरत धीरत। বিরতি বসতি করে, মনের মন্দিরে॥ অকস্মাৎ এইভাব, কিসের কার্ব। নয়ন লজ্জিত অতি, দেখিতে তপন।। হেরিয়া ভবের ভাব, হয় নিরূপণ। সভাৰ উচিল জেগে, দেখিয়া স্বপন্॥ মধাকাল হেরে মন, ভাবে মুগ্ধ রয়া। পুরাতন নয় যেন, পুরাতন নয়॥ হয়েছে নতন সৃষ্টি, এই দৃষ্টি হয়। শেন পুরাতন নয়॥

তদনন্তর সায়ং কাল। সন্ধ্যার সন্ধির যোগে, সূর্য্য হন বুড়া। পশ্চিমে ধরেন গিয়া, অস্তাচল চূড়া॥ ঈষৎ আরক্ত ছবি, প্রভা হীন কর। অধোভাগে যান যেন, জলের ভিতর॥ 'কোথা বা প্রথর দেহ, কোথাবা কিরণ। সান মুখে মনোতুখে, মুদিত নয়ন॥ অহসহ এক ভাব, নাহি আর ক্রম। যোতির মৃকুট ভাঁর, কেড়ে লয় তম। দিননাথে দীন দেখি, দিন অতি লাজে। লুকায় আপ**ন অঞ্চ, অন্ধকা**র মাজে। তিমিরের শয়ায়,শোভিত হয় নত। নবভাবে যেন তায়,নিদ্রা যায় ভব॥ ভাবি ভাবে মুধ্ব হয়, ভাবকের মন। বুঝরে ভবের ভাব,ভাবক যে জন॥ দ্বিজরাজ আসিতেছে, সঙ্গে লয়ে রহ। দ্বিজ্ঞাণ বাসালয়, নিজ্ঞাণ সহ॥ ভরু শাখা স্থিম হয়ে, এই সন্ধ্যা কালে। ভঙ্গি করি গীত গায়, পবনের তালে। মানস মোহিত হয়, সায়াহ্য সময়। পুরাতন নয় যেন,পুরাতন নয়॥ হয়েছে নুতন সৃষ্টি এই দৃষ্টি হয়। যেন পুরতিন নয়॥

অনন্তর রজনী।

রজনী সঞ্জনী সহ প্রাফুলিত মনে। হাসি হাসি বসে আসি, আকাশ আসনে॥ ক্ষনমাত্রে দেখাযায়,অপরূপ ভাব। স্থভাব ধরেছে যেন, নুতন স্বভাব॥ তারা যারা,তারা, তারাপতি থেক্নে জ্বলে। মুকুতা মঞ্জিত যেন, রঞ্জত অচলে॥ বায়ুর বিচিত্র গতি,নানা ভাবে বছে॥ প্রকৃতি বিকৃতি হেডু, এক ভাব নহে। কখনো নিৰ্মাল করে, গগন মণ্ডল। কভু করে ছিন্ন ভিন্ন,মেঘ ঢল ঢল ॥ নদ নদী কত দেখি,গগন উপর। ললিত লহরী যেন, চলে থর থর॥ প্রহর হইলে গত, নিদ্রাগত সব। ক্রমে সব স্তব্ধ হয়, নাছি শব্দ রব॥ ভূমিতল স্থশীতল, তাপ নাই আর। তৃণ পত্রে শোভা করে, নীহারের হার।। বছৰপী বিভাবরী, বছৰপ ধরে। শোক চিস্তা ভাপ আদি, সমুদর হরে॥ কখনো বা অন্ধকার, কভু শুভ্রময়। পুরাতন নয় যেন পুরাতন নয়॥ হয়েছে হুতন সৃষ্টি এই দৃষ্টি হয়। যেন পুরাতন নয়॥

সীত, বসন্ত, গ্রীয়, বর্ষা, শরং, হিম, এই ষঢ় ঋতু পুনঃ পুনঃ গমনাগমন পূর্বাক স্ব স্থ গুণান্দ্রসারে পৃথীবীর সমূহ প্রকার উপকার করিতেছে।
ফলতঃ বিশ্বের কি বিচিত্র ভাব! যখন
যে ঋতুর অধিকার হয়, তখন সেই
ঋতুই নয়নের নিকট ভুতনরূপে নিরীক্ষিত হয়, শীত যে সময়ে স্পর্শনেভিরের প্রত্যক্ষীভূত হয়, গ্রীয় যে

সময়ে দেহে অগ্নির্ফী করিতে থাকে, বর্ষাকশলে ঘন ঘন ঘননাদ হইতেছে, জলধর ধীবর স্বরূপ হইয়া সংসার সাগরে তিমিরজাল নিক্ষেপ করিয়াছে. কেবল এক একবার স্বভাবতঃ তড়িৎ প্রদীপ প্রদীপ্ত হওয়াতে প্রকৃতির আক্রতি অবলোকন হইতেছে, সেই সময় যখন বারি মিশ্রিত বায়, সঞ্চা-লিত হইয়া স্পর্শ দ্বারা শরীরকে শীতন করে, তখন বোধ হয়, যেন তাহাদি-গের প্রত্যেকের সহিত এই মুতন সান্ধাৎ হইতেছে। আহা এতদ্বারা সেই অদ্বিতীয় শি প্রকারির শিপ্প বিদ্যার কি সামান্য গুণ প্রকাশ পাঠতেছে ?

পদ্য।
বসস্ত নিদাঘ বর্ষা, শরদ নীহার।
কাল ক্রমে ক্রমে সব, করে অধিকার॥
ছয় কালে ছয় ঋতৃ, ছয় রূপ ভাব।
ছয় কালে ছয় ভাবে, শোভিত স্বভাব॥
থাকে না অন্যের বোধ, একের সময়।
এইরূপে কত কাল, গত করি ছয়॥
এই শীত ক্ষণ পরে, গ্রীষ্ম যদি হয়।
শীতের স্বভাব ভায়, অহ্নভুত নয়॥
ছয় ঋতৃ অধিকারে, ছয়রূপ যোগ।
নব নব পরাক্রমে,নব নব ভোগ॥
কথনো কম্পিত কাল,নাত সমীবনে।

লালসা অধিক হয় রবির কিরণে ॥
কখনো তপন তাপ সহ্য নাহি হয়।
স্থশীতল নিধা রসৈ, ইচ্ছা অভিশয় ॥
কখনো বা ভাসে স্থাষ্টি বৃষ্টির ধারায়।
মেঘনাদ, অন্ধাকার, দৃষ্টি হীন ভায়॥
জীবের ভোগের ছেতু, ঋতুর স্থান।
পৃথকে পৃথক ভার, প্রভা প্রকটন ॥
প্রতিক্ষণ, পায় মন, নব পরিচয়।
পুরাতন নয় যেন, পুরাতন নয়॥
হয়েছে নুডন স্থাষ্টি এই দৃষ্টি হয়।
যেন পুরাতন নয়॥

অপরন্তু, নিশু ণের গুণদারা যাহা
প্রণীত হইয়াছে, তাহা অতি অদ্ভূত
ও তুলনা রহিত, এই মৃত্তিকা, অগ্নি,
বায়ু, বারি প্রভৃতি ভৌতিক ব্যাপার
যাহা দেখি, তাহাই অতি বিচিত্র,সকলি
আশ্চর্যাময়। নদ নদী, বন, উপবন,
দ্বীপ পর্বতাদিতে প্রতিক্ষণেই এক
এক ত্তন তুতন আশ্চর্য্য অবলোকিত
হইতেছে, ক্ষুধা, তৃষ্ণা, আহার, নিদ্রো,
ক্ষুধ, হুঃখ,ক্লেশ,তৃপ্তি ইত্যাদি অনাদি
কালের সৃজিত ও অতিশায় পুরাতন
হইয়াও পুরাতন হয় না, নিয়তই যেন
স্থুতন রহিয়ায়ছ। ধৃত্য ধৃত্য।

পদ্য। এই ধরা, এই বহ্নি এই বায়ু জল। এই তরু, এই পত্র, এই পুষ্ণু কল॥

এই ড্রাণ, এই দৃষ্টি, এই স্পর্শ রব। এই এই, এই এই, এই এই, সব ॥ এই ভব পঞ্চীক্বত, পঞ্চ ছাড়া নয়। এই পাত, ভেদগুণে, কতপাত হয় ॥ এইক্ষুধা, এইতৃষ্ণা, এই শোক, রোগ। এই সুখ, এইবুখ, এই তৃপ্তি ভোগ॥ এই ভাব, এই বোধ, এইচিন্তা, মন। এই খাদ্য, এই মুখ, এই আস্বাদন॥ এই নদী, এই ক্ষেত্র, এই উপবন। এই চন্দ্র, এই সূর্য্য, এই তারাগণ॥ এই রাত্রি, এই দিন, এই তিথি, বার। এই দৃশ্য, এই আলো, এই অন্ধকার॥ এই প্রাত, এই সন্ধা, এই মধ্যকাল। এই পল, এই দণ্ড, এই, খণ্ড কাল॥ কি আশ্চর্য্য, ভবকার্য্য, সব পুরাতন। অথচ নয়নে নিত্য, নির্থি ন্তুতন ॥ বিচিত্র তোমার দৃষ্টি, ওহে বিশ্বময়। পুরাতন নয় যেন, পুরাতন নয়॥ হয়েছে ন্থতন সৃষ্টি এই দৃষ্টি হয়। যেন পুরাতন নয়॥

> বৰ্ষা বৰ্ণন। প্ৰাথম। ত্ৰিপদী।

ছুটিল পুনের বায়ু, টুটিল গ্রীয়োর আয়ু, ফুটিল,ক্রদম কলিগণ।

बित्रिय जलभजन, इतिरव (जरकत मन, করিছে সঙ্গীত অনুক্ষণ॥ ত্ৰুণ বয়স কালে, अक्र कलम् ज्ञारम বৰুণ সহিত করে রণ। প্রভাতে সমর রঙ্গ, প্রভাতে ভাতুর অঞ্চ, শেভাতে না হয় নিরীক্ষণ॥ মলিন দিবস কান্ত, মলিন বিরস কান্ত, অলীন ভ্রমর ভাহার কোলে। वध्र वहत्व मध्र भूना (हथि कुनवँधू, খেদ করে গুল গুল বোলে ॥ হায় হায় একি দায়. লোকে কয় বর্ষায়, সংযোগীর উন্নত সম্ভোগ। তবে কিবা আপিরাধে, মধুপ বঞ্চিত সাধে, পদ্মিনীর সহ নহে থোগ। এই হয় বিবেচনা, প্রাবুড়ের বিভ্যনা, গ্রীমাপতি ভান্থ প্রতি রাগ। ভাই ভাঁর সমান্তিত, কিবা পত্নী পত্নী শ্রীত, সকলেতে জন্মায় বিরাগ॥ নিবিছ নীরদ কলা, কি শোভা না যায় বলা, ञ्यमना कानिकी तक्ष्मय। यत्न यत्न এहे शनि, शांत्रिवादत दिनस्ति, उरे कालगातिनी उपग्र॥ বরষার ঘোর রিষে, নীরদ ভুজঙ্গ বিষে, ভামুকর নিকর নিঃকর। ভন্ম আঞ্চাদিত যেন, প্রেজ্বলাজনল হেন, আজুপ্রভাতের দিনকর। অতঃপর ঘোরতর, নীরধর আড়মর, খুন্য পর করে অভিশয়। চারু চারু সমুদিত, তারু গুরু গর জিত, ছুক ছুক কম্পিত হাদয়॥

বহিতেছে সমীরণ, করিতেছে হয় রণ,

• নিদাঘ বরমা সহকার।

সন্সন্সরে গাজে, অন্ অন্মাজে মাজে,

শব্দ করে স্তব্ধ ত্রিসংসার॥

চক্ মক্ চিকি মিকি, ধক্ ধক্ ধিকি ধিকি,

স্চঞ্চলা চপলার মালা।

বাম্ আম্ হয় জল, ধরাতল স্থাতিল,

ঘুচে গেল সস্তাপের জালা॥

একবারে পড়ে ধারা,কিবা শোভাপায় তারা,

তারা যেন পড়িছে খনিয়া।

পুলকে চাতক দল, পান করে ধারা জল,

গানকরে রনিয়া রনিয়া॥

বর্ষার অভিষেক। লীরদ দ্বিরদবর, আরোহিয়া ভতুপর, ঋতুবর বরবার জাঁক। ७७, ७७, ७४, ७४, ७७, म ७७, म ७४, ঝজিতেছে রণ ব্যুটাক॥ ওই করে ফর্ ফর্ গতি গ্রভি ধরতর, দামিনীর উড়িছে পতাকা। প্রজারপে ভরুচয়, প্রণত হইয়া রয়, দিয়া কর ফল পাকা পাকা॥ यनि (कर पृष्ठे रयु, निमाय्यत भाष्य तथु, নাতোয়ানি নষ্টামিতে ভরা। मांटकायांन मधीतन, कान धति (मह कान, লুটাইয়া দেয় তারে ধরা ॥ মগুল কাঁটাল ভায়া, পেয়েছেন বড় পায়া, হেঁড়ে পাগ ভুঁড়ি ছবিখ্যাত। ফলের পিতৃবা বুড়া, শ্যালা রসিকের চুড়া, ঘরে মরে সবে আছে জ্ঞাত।

কুলের কামিনী ধনি, চাতকিনী স্থথগনি,
তলুপ্রনি করে অবিরত।
কলশয় হংসীগন, জলে দিয়া সম্ভর্ন,
কলরবে কেলি করে কত॥
পুর্ন হলো মনোসাধ, করিতেছে ভেরিমাদ,
তীষণ ভয়াল রবে ভেক।
আযাঢ়ের স্থস্থারে, শুভ শশধর বাড়ে,
হইল বর্ষার অভিষেক॥

বৰ্ষা বৰ্ণন।

দ্বিতীয় ৷ खिशनी। সসজ্জ সন্ধান পুরে, আসিয়া প্রীয়ের পুরে, প্রবেশিল বরষার দল। রিপুর প্রবল বল, দেখিয়া গ্রীম্মের দল, ভঙ্গ দিয়া ভাগিল সকল॥ মহা শিলাবৃষ্টি ঘায়, প্রাণওপ্টাগত প্রায়, হইল গ্রীম্মের অস্থি শেষ সম্ভাপ সৈন্যের পতি, না পাইয়া অব্যাহতি, পলাইতে চাহে অবশেষ॥ শক্র ভয়ে ভীত হয়ে, वित्रहीत मनে রয়ে. গোপনেতে লইল আগ্রয়। একি অপৰূপ ধারা, নয়নে সলিল ধারা, অন্তরে সন্তাপ অতিশয়॥ বর্ষা হইয়া ভূপ, সর্ব্ব রাজ্যে গাড়ে যুপ, উঙাইল ভড়িত পতাকা। অভ কোলেণ্ডভ আভা কি কব তাহার শোভা, দেখ ওই উড়িছে বলাকা॥ श्रुद्रिल मरनद जांध, श्राम करत जिश्ह्नांह, ঘন ঘন যত ঘনগণ।

जिञ्च तरन निया भाषा, वांकांत्र विजय काष्ठा, ওার ওার রবে অনুকাণ॥ পূর্ণ করি জল স্থল, আকাশ তীর্থের জল, আনি করে ভূপে অভিষেক। চামর কেতকী ফুল, টুলার ভ্রমর কুল জ্বর জ্বর ধ্বনি করে ভেক॥ নয়রেতে মোরচ্ছল, করিতেছে তারিরল দাঁড়াইয়া নূপতির আগে। ময়ুরী সে সভা মাঝে, সৃতু মনোহর সাঞ্জে, নৃত্য করিতেছে অমুরাগে॥ তপসাতে বহুদিন, শরীর করিয়া ক্ষীণ, যলিন আছিল নদীগণ। সংপ্রতি অমৃত খায়, হয়ে অমরের প্রায়, সঞ্চারিল পুনশ্চ জীবন। চির বিরহিণী ছিল, খাডুখোগ সঞ্চারিল दिसारम इडेल इर्सामग्र। আহ্লাদে অফুল্ল কায়,নিজ পতি প্রতি ধায়, যত নদী বেগে অতিশয়॥ মেঘাচ্ছন্ন চরাচর, শশী আর দিবাকর, লুপ্তপ্রায় না হয় উদয়। দিনেত্র মুদিত করি, স্থথে নিদ্রা যান হরি, এই সে কারণ চিত্তে লয়॥ বর্ষা বিরহী নারী, ধরিয়া দিবসকারী, করে অতি দৃঢ় আলিঞ্সন। করের কক্ষণ ভাষ্ খণ্ড খণ্ড হয়ে যায়, লোকে বলে বিছাৎ পতন ॥ ভড়িত নর্ত্তকীগণ, নৃত্য করে অনুক্ষণ, স্কলিত জলদ সভায়। ছিঁড়িল মুকুডা হার, সেই ছলে অনিবার, জ্ঞালধার পডিছে ধরায়॥

শ্বত্র প্রভাবে হেন, রবি শশী নাহি যেন, নিশা দিন সমান আকার।. কুমুদিনী রাত্রি জ্ঞানে, প্রফুল্লিডা দিন মানে, পদাসনে কিবা চমংকার॥ ভাস্কর গগনে গুপ্ত, শশাক্ষ তিমিরে লুপ্ত, দিবারাত্রি বোধ নাছি হয়। বায়ু সহ यन यन, क्यन क्यून शक्त, দেয় দিবারাত্রি পরিচয়॥ ঘন ঘোর অন্ধকার, দৃষ্টিরোধ সবাকার. বৃষ্টিজলে পূর্ণ সৃষ্টি পাত্র। লুকায়িত বিকর্ত্তন, অনুদেশ জ্যোতিগণ, জোনাকি পোকার দৃষ্টি মাত্র॥ ब्लग्र न्डय्ल, क्लग्र ज्यक्त, क লময় গিরি দিক দেশ। দেখে হয় এই জ্ঞান, পুনরপি ভগবান, ধরিলেন বরাহের বেশ। আসিয়া বর্ষাকাল, ফেলিল জ্বলদ জাল, গগন গভীর সরোবরে। त्रवि भनी छाष्ट्रि भीन, शशदन श्रेल लीन, ক্ষুদ্র মৎস্য লুকাইল ডরে॥ বিদ্বাৎ বড়সী প্রায়, চতুর্দ্ধিকে ফেলি তায়, বিরহীর প্রাণ মীন ধরে। ভাসার ভাবিয়া হরি, কমলারে সঞ্চে করি, ঢালিলেন শরীর সাগরে॥ দাতা ঘন হরষিত, হেরে হয় উপস্থিত, যাচক চাতক বিজ্ঞাগণ। ঘন তাগে দেয় জল, করিয়া বিদ্যুৎ ছল, স্বর্ণমুষ্টি করে বিভরণ॥ মেঘ পটু নানা সাজে,চতুদ্দিকে বাদ্য বাজে, ময়ুর ময়ুরী নৃত্য করে।

পথিকের সর্বনাশ, ঘন ৰহে ঘন শ্বাস, নিজ বাদ ভাবিয়া অন্তরে॥ বিয়োগীর হরে আয়ু, ৰহে স্থশীতল বায়ু, সংযোগীর পরম উল্লাস। তারা করে অভিলাষ, বর্ষা হোক বার মাস, জনা ঋতু না হয় প্রকাশ॥ বিয়োগীর বুকে বর্ষা, মারে বর্ষা ভেঁই বর্ষা, নাম তার বিদিত ভুবনে। শুনি জলদের শব্দ, বিরহিণীগণ স্তব্ধ, দগ্ধ হয় মনের আগুনে॥ প্রবাসী জনের ক্লেশ, বর্ণিরা না হয় শেষ, এই ছার বরবা সময়। অস্তরে বিচ্ছেদ বাতি,জুলিতেছে দিন রাতি, दाहित्त्र विविध फुटथान्य ॥ রাগ্রাঘরে কালাহাটী,ভিজে কাট ভিজে মাটী, কোনমতে নাহি জলে চলো। नारक (हारक अल गरत, (महेष्ट हेक्हां करत, ृहरनाच्यक हारन यात्र हूरना॥ নিয়ত নিকটে ধনী, ধনির স্থাবের ধ্বনি, নাহি যাত্র মনের বিকার। ভাল গাড়ী,ভালবাড়ী,প্রতি হাতে মারে আড়ী, মনোমত আহার বিহার ॥ স্থিরভোগে স্থিরুদ্ধি, স্থিরযোগে স্থিরশুদ্ধি. পাত্রে পাত্রে পাত্রের বিচার। সদা ভায় সদাচার, আচারে কি কদাচার. লোকাচারে মিছে ব্যভিচার ॥ দীন তাহা কোথা পান, স্বধুমাত্র জলপান, ভুড়ি সার মুড়ি নাই মুখে। টাকা বিনে হতবুদ্ধি, কিলে বল হবে শুদ্ধি, যাস কাটি ধান বোনে চুকে॥

विष्मी धर्मात शांक, जतमा कवन जांक, ভাগ্য দোষেতাও যায় ভেঙ্গে। বহু রাত্রে পেয়ে চুটী,চুটে আলে ছেড়ে কুটী, किनात भरत क्क्यूरतस्य । যত সৰু বিলস্বাধা, সকল শরীরে কাদা, জামা পাগ ভিজিল উদকে। বহুকেলে ছেঁড়াজুতা, পাইয়া বৃষ্টির ছুতা, একেবারে উচিল মস্তকে॥ আমরা টোলের ছাত্র, নাহিজানি পাত্রাপাত্র, তানি শুদা এক নাত্র পাঠ। বাবুদের গেরে গুণ, নাহি মাচ তেল ল্ণ, **छो हार्या (पन हांन कांटे ॥** মরি এই বাদলায়, কেহ নাহি বাদলায়, পুঁতি পাঁতি সব যায় ভেসে। তিন মাদ রুদ্ধপাঠ, ফিরে হাট ঘাট মাঠ, দেখে শুনে মরি ছেনে ছেনে॥ চিরজীবী অড়হর, আমাদের স্থৃষ্টিধর, আদসিদ্ধ তাই হয় পাক। পৈতৃক সম্পত্তি বাদা, ভাহার চৈম্বড়ি দাদা, তাহে যুক্ত করি নটে শাক॥ ডুই সন্ধ্যা তাই,খাই,মাবে মাবে গীত গাই, বোৰা বেটা ঘটায় প্ৰমাদ। রাত্রিকালে হাত বুকে, নিদ্রা যাই মহাস্থরে, মিত্রজরে করি আশীর্বাদ॥ বরষা ভোমার গুণ, কি কহিব পুনঃ পুনঃ, বারিবাকো চরাচর ভাসে। কি আর তোমার ঝাঞ্চ, দোসর হয়েছে ব্যাঞ্চ, দেখে রঙ্গ রাচ্ বঞ্চ হাদে॥ আমরা বিপ্রের পুত্র, ধরিয়াছি যজ্জন্তুত্র, ত্তন ওহে ঋতুরাজ বাপা।

চাল ভেঙ্গে পড়ে ঘর চাপা ॥

#### বর্ষ।

# (তৃতীয়।)

ঋতৃপতি ব্যারাজ, ক্রিয়া সমর সাজ, অবনীমগুলে উপনীত। রণস্থল করি রুদ্ধ, কাপিল পৃথিবী শুদ্ধ, যোর যুক্ত গ্রীন্মের সহিত॥ দেখিয়া বিপক্ষ দল, গ্রীষ্ট্রের টটিল বল, পরাজয় করিল স্বীকার। পলাইল পেয়ে ভেয়, বরষার মহাজয়, ত্রিভুবন করে অধিকার॥ গগনের সিংখাসনে, বসিলেন ছাষ্ট্র মনে. ভিমিরের মুকুট মাথার। প্রবন প্রবল অতি, পুর্ব্বদিকে করি গতি, দিবানিশি চামর চুলায়॥ ওড়ুনি জলের জাল, লেটের উড়ুনি ভাল, মাবে মাবে লাগিয়াছে খোঁচা। বারির বসন পরা, লুটাইয়া পড়ে ধরা, বাতাসেতে উড়ে যায় কেঁচো॥ সরুজ মেঘের দল, চলচল ছল ছল, হত বল প্রবল অনিলে। স্থির চক্ষে দেখা যায়, সাটিনের কাবা গায়, আস্তিন হয়েছে তার ঢিলে॥ নোণার দামিনী হার, গলায় ছুলিছে তার, আহা মরি কত শোভা তার। সেফালিকা প্রজাটিত,অতিশর স্থশোভিত, জরির লপেটা জুতা পায়॥

জাতি ধর্মোভিক্ষা করি,প্রাণে যেন নাহি মরি, বিলে বিল নদী নদ্য সরোবর সিন্ধু হুদ, আর যত পারিষদ্গণ। मकरलत এक (वाल, প্রেমানন্দে দিয়া কোল, পরস্পার করে জালিঞ্চন॥ তরকুল নত শাখা, প্রতি পত্তে জল মাখা, মারি সারি সরস অন্তরে। নজর ধরিয়া ছলে, বর্ষার পদতলে, যোড় করে প্রনিপাত করে॥ ভেক্পাল কোতোয়াল,করেকরি খাঁডা ঢাল, জলে হলে কত স্থখ লোটে। দেখিয়া ভেকের ভেক, বিয়োগীর বাড়ে ভেক, ইচ্ছা হয় **ডেক নি**য়া **ছোটে**॥ নকিব চাতক চয়, আসর ভূপতির জয়, প্রতিক্ষণ এই রব হাঁকে। कल (मर्द्र काम (मर्द्र, श्रीन योश कल (मर्द्र, অলদেরে আর নাহি ভাকে॥ क्वांन जुष्ट् थिदश्चेत्र, वत्रवात नाम्यत, মনোহর শিখর সনাজ। দুশ্য অতি অপৰূপ, চিত্ৰ করা নানা রূপ, সমুদয় স্বভাবের সাজ। নিজ স্বরে জলধর, গান করে বহুতর, নানা স্বরে রাগা ভাঁজে মুখে। বৃষ্ঠির বাজন! ভাল, ঝুম্ঝুম্বাজে তাল, শিখী নিত্য ন ত্যকরে স্থখে॥ কেমন কালের ধারা, অবিভান্তে বারি ধারা. স্থার স্থার বরিষণ। সদাই প্রফুল মন, চাতক চাতকীপান, ওভক্ষণ করে স্ভক্ষণ॥ क्षांकिन (ভকের দল, মাগিল স্বর্গের জল, त्रांथिल जूनरम ভोल यम।

ভাকিল মেঘের পাল, হ"াকিল ঠুকিয়া ভাল, ু ঢাকিল তিমিরে দিগ্দশ॥ कतिल উত্তম कर्मा, इतिल भाट्यत धर्मा, মরিল পিপাসা দাহ জুর ভরিল যুবক যারা, ধরিল যুবভী দাবা, পরিল পোষাক বহুতর॥ চারিদিক অন্ধকার, দুষ্টিরোধ স্বাকার, জলে স্থলে একাকার ময়। ट्वि एक भीदांकांत्र, नित्रक्षन निर्वाकांत्र. এই বুঝি চিহ্ন তার হয়। হায় হায় একি দায়, মহা প্রলয়ের প্রায়, সকল পৃথিবী ভাসে জলে। অধরা হইল ধরা, জল নাহি যায় ধরা. একেবারে যায় ধরাভলে॥ ক্রোধযুক্ত ধরাধর, জুবে গেল ধরাধর, কেবল মন্তক দেখা যায়। ভুজ্ঞ বিহঙ্গ যত, কত শত হয় হত, পশু যত করে হায় হার॥ রাজার বাজার জাঁক, গরবেতে গোঁপে পাক, ছাড়ে হ'বি ঐগ্রাবতে চডি। বাজে লোকে বাজ কয়,ফলভঃ সে বাজ নয়, বর্যাব দস্ত কড্মড়ি॥ বিষম বজের শব্দ, ত্রিলোক হইল স্তব্ধ, থর থর ভয়ে কাঁপে সব। रुष् पर् कर्मष्. मही करत गर्मष्, চড়ু চড়ু কড়ু কড়ু রব॥ শুনি ধ্বনি বজ্ঞাঘাত, গভিনীর গর্ভপাত, প্রমোদে প্রমাদ সদাগবে। মাত্রস্থ তাত্রস্থায় মনে॥

হুভূত্তুড়, মেঘনাদ ওড় ওড়, জালদ জুটেছে ভাল যুটি। লোকে বলে একি কাল, উড়িয়া স্বর্গের চাল, ভেম্পে পড়ে আকাশের খুঁটি॥ নাশিতে সকল রিষ্টি, বরষার কোপ দৃষ্টি, নয়নে অনল তার জ্বলে। সেই জাগি দুশ্য হয়, ভ্রমেতে মন্ত্রাচয়. চপলা বিদ্যাৎ তারে বলে॥ কেছ কেছ এই কয়, এ ভাব যথার্থ হয়, কেহ কয় তাহা নয় ভাই। রণে হয়ে পরিশ্রাস্থ্য, মহাবল পরাক্রান্ত্র, ঘন তোলে ঘন ঘন হাই॥ क्टिकट्ट मिन्मिनी, वत्रवात श्रिय तानी, इक्क भभी भूमि गरमां इत।। তাহার মুখের হাসি, প্রকাশিয়া প্রভারাশি, অন্ধকারে আলো করে ধর।॥ वृश्वितरल (कर्वरल, श्रीकृष्टत्यन इरन्) পাতিয়াছে ঘোর ষড়জাল। বে†পে অস্ব জ্বর জ্বর, যুক্তি করি জলধর, জ্বালিয়াছে তড়িং নুশাল॥ স্থবিমল শশধর, গৌপন করিয়া কর, অন্ধকারে লুকাইল আসি। जिथा वन्तुत पूर्य, वियोग विषद वृक, রজনীরু মুখে নাই হাসি॥ সপত্নী সকল তারা, মুদিয়া নয়ন ভারা, ভারা শুদ্ধ তারা তারা বলে। ডাকে ভারা ভারাকাস্ত,কোণা তারা তারাকাস্ত. অবিশ্রান্ত ভাসে শোক জলে॥ প্রক্স প্রক্স সম, নিজাঞ্চ করিল তম কুমুদের মনে খেদ. অন্তর হইল ছেদ্, চকোর করিছে হালাকার!

তার পক্ষে কেবা আছে আর ॥ দিনপতি অভি দীন, দিন দিন প্রভাহীন, कौन मिन स्मिन ना इस। কেমন কুদিন ভাঁর, ছর্দ্দিন না যায় আর, রাত্রিদিন এক ভাবে রয়॥ ক্লাত্রিমান দিনমান, নাহি হয় অভ্যান, পরিমাণ মনে পায় ছখ। ক্যলের মহামান, অপমানে সিয়মাণ, অভিমানে নাহি তুলে মুখ।। সংযোগীর অভিলাষ, উভয়ে একত্রে বাস, কোন ৰূপে না ইয় বিচ্ছেদ। বুৰো সার অভিমত, তাই ৰধা এই মত, রাত্রিদিন করিল অভেদ॥ क्रिड अरनक कुल, छूटि इ जगत कूल, জুটেছে কাননে শত শত। টুটেছে বিরহি জনে, উঠেছে বিচ্ছেদ মনে, ঘটেছে বিপদ তার কত॥ গেল সব নিরানন্দ . কু স্কুমে মধুর গল্প, वदर मन्त गूटथ मन्त शांन। ञालिवुमा मानामम, আনন্দে হইয়া অন্ধ্ৰ, করে হুখে মকরন্দ পান॥ বিষম চক্ষের শূল, কদম কদম কুল, দোলে পেয়ে বাভালের দোলা। বিরহি করিতে বধ, সেনাপতি ষ্টপদ, কামের কামানে ছোড়ে গোলা॥ সংযোগীর মহাযোগ, যুক্তযোগে বাড়েযোগ, (योगवल वांद्र (छोशवल। क्ति, जुष्क म्जूर्वर्भ, अर्थ अर्थ छेन्। হাতে হাতে পায় স্বৰ্গ ফল ॥

ক্ষুধায় স্থধায় তারে, স্থধায় তুরিতে পারে, কাস্তার্যণ সহকাস্ত, করে ক্রীড়া অবিশ্রাস্ত, রতিকান্ত হারাইল দিশা। বর্ষা তাহে অন্তরঙ্গ, ক্ষণ ৰহে তাল ভঞ্চ, অন্ত প্রসঞ্জে সাজ নিশ।। বে প্রকার শারি শুক, সুখের বাড়ায় হুখ, সদাকাল থাকে মুখে মুখে। ধরতিলে সেই ধন্য, কে আর তেমন অন্য, যুবতী রমণী যার বুকে॥ যার খরে বেড়াছিটে, যদিগায়ে লাগেছিটে, অয়ত সমান জ্ঞান করে। পড়ে বৃষ্টিছিটে কোটা,পড়েমন্ত্র ছিটে কোটা, প্রাণনাথে ভুলাব'র তরে॥ সংযোগীর এইৰূপ উথলে আনন্দ কুপ, আহার বিহার যথোচিত। বিরহির বুকে বর্ষা, মারিয়া নির্দায় বর্ষা, বৰ্ষা নামে হইল বিদিত। প্রবাসি পুরুষ যত, একেবারে জ্ঞান হত, (अंशमीत (अंग गत्न इंश। মদন বাডায় রোষ, স্বপনে তাধিক দোষ, কোন ৰূপে পরিতোষ নয়॥ কি কব চুখের দশা- দিনে মাচি রেভে যসা-पुरेकाटल वसु पुरेखन। শব্যায় ভার্যার প্রায়, ছারপোকা উঠে গায়, প্রতিক্ষণ করে আলিঙ্গন ॥ খুক্ খুক্ ভুলে কাশ বার বার ফেরে পাশ, দহে মন কামের আগুনে। বিছেনার লট্পট্, প্রাণ্যার ছট ফট্, বাঁচে গুদ্ধ বালিসের গুণে॥ যেমন মুষলধার, পড়ে বৃষ্টি অনিবার, বাহিরেতে নাহিযার চলা।

রসিকা রমনী যেই, অনুমান করে এই,
, আকাশের ফুটিয়াছে তলা॥
বিমানে বাজিল জাঁক,বারিদ বাজায় শাঁক,
বজ্ঞ ছলে উলু উলু ধ্বনি।
বর্ষার বিষম গুণ, বিবাহ করিবে পুনং,
পুরোহিত ভেক শিরোমণি॥
ময়ুরী নেড়ীর দলে, খেঁউড় গাইছে ছলে,
নাচিছে চপলা সবঁ এয়ো।
আনন্দের পরিপাটি, স্থখে করে কাদামাটা,
চাতক জুটেছে ভাল রেয়ো॥

# ভারত-ভূমি।

#### शमा ।

ভারতের দশা হেরি, বিদরে হৃদয়।

ক্রননী তুর্ভাগ্যে যথা, তাশিত তনয়॥

মনে হলে প্রাচীন, মুখের স্থসময়।

অসম্ভব বলি কভু, প্রতায় না হয়॥

রিপ্ররূপে বিজ্ঞাতীয়, রাজা রাহ্ছ আসি।

মুখরূপ শশধর, আহারিল গ্রাসি॥

দেবরপ স্থধাভাগু, লয় হলো ক্রমে।

মানুষ মানস কল, লয় হলো ক্রমে।

ললত মালতী লত', ভারতের ভাষা।

কটুতা কীটের যাহে, নিতি মিলে বাসা॥

কবিতা কুম্মকলি, ফুটেছিল কত।

সাহিত্য স্থরপ মধু, পুর্ণ অবিরত॥

অলক্ষার পত্রপুঞ্জ, লালিত্য পরাম।

বর্ণরূপ বর্ণ তার, স্থবিচিত্র রায়॥

শানুরূপ কল এক, ধরেছিল তায়।

ভক্ষণেতে চতুৰ্বৰ্গ, কল যাহে পায়॥ বেদবিধি রসভার অপরাপ ভান। ক্ষুধা ভূষ্ণা হত ভাঁর, যেই করে পান।। অগ্নি হোত্র আদি নিভা, নৈমিত্তিক ক্রিয়া। কোথা ক্ষুধা কোথা ভূষণ, এসব আভািয়া।। বিজ্ঞান স্বৰূপ বীজ, ছিল সেই ফলে। অসংখ্য লভিকা যাহে, জনিতা বিরলে॥ এমন হুখের লতা, আশ্রেয় বিহনে। দিন দিন বিষয়মাণা, তুঃখের কাননে॥ হায় হার সভ্যাত্রায়ী, মতুষ্য কোথার। অসত্য হইল সত্য, মিখ্যার প্রভায়॥ অবিদ্যায় অবসন্ধ, মানবের মন। অবিবেকী অবিনয়ী, আদর ভাষান॥ প্রসন্মতা প্রবাহ, প্রবায় সাধুজনে। প্রবোধ প্রভব কভু, নাহি হয় মনে ॥ व्यमीत्भव मीखक्भ, व्यभक्ष जात्मारम। মুধ্বনন মধুকর, প্রমদা প্রমোদে ॥ প্রত্যু প্রবল অতি, প্রসক্তি প্রসঙ্গ। প্রত্রা পাইয়া সদা, দম্মকরে অঞ্চ॥ রাগে অনুরাগ হত, রোধাল রসনা। নয়নে নয়ন করে, আগুনের কণা॥ গরল মিশ্রিত তাহে, মুখের বচন। ক্ষমা শান্তি আদি, হয় যাহাতে নিধন। কটাক্ষের শরে ুকরে, সকলে অন্থির। প্রচণ্ড সমীরে যেন, সরোবর নীর ॥ লোলিত হয়েছে পুনঃ লোভ ৰূপ ফাঁস। পরায় মনের গলে, বাসনা বাডাস॥ পরদারা পরধন, হরণে ব্যাকুল। विश्वल लालमा गरम, ममा कुरल जूल॥ মোহ মেঘ করে আছে, বিবেক আচ্ছন।

চেতনা চন্দ্রিমা যাতে, গুপ্ত প্রতিপর। দার। স্তৃত সহ, সমাবেশ সর্বাক্ষণ। চিত্তের কমলে মায়া, হয় সঞ্চারণ ॥ মদেতে প্রমন্ত মন, বিপদ ঘটার। পরের সম্পদে সদা, কাভর করার॥ ঈষী হিংসা দেষমদে, পূর্ণ এই দেশ। সকলে সমান নাই ইতর বিশেষ॥ গরিমা গরলে গেল, গুনের গৌরব। তাপিনি কৈবল্যধাম, অপর রেরিব ॥ এইৰূপ ষড় রিপ্ত, নিগ্রিভ নহে। সোণার ভারত-ভূমি: ভঙ্ম করি দংখ। যত লোক অলসে, অংস কলেবর। দরিদ্র, পরের ছিদ্র, সন্ধানে তৎপর॥ নাহিমাত্র ঐক্য স্থাভাবের সঞ্চার। হীন ধর্ম্ম কর্ম মর্ম্ম গুপ্ত সবাকার॥ কুকর্মোতে গুনাহয়। ধনের ভাগুরি। স্থকর্মে মুদিত হস্তু, কমল আকার॥ কোনমতে বুদ্ধি যাহে, নহে স্বীধ্ৰ গৰ্ম্ব। করেন বিবিধ পর্বন, আন্ধ আদি সর্বন॥ কিৰাপ পাতক বৃদ্ধি, উৎসবের দিনে। লিখিতে লেখনী যায়, লজ্জার অধীনে॥ হিন্দুধর্ম রক্ষাহেতু, যে হয় উদ্যোগ। বালির দেতুর প্রায়, সেই কর্ম ভোগ॥ ধর্মা রক্ষা হেতু এক, বিদ্যালয় আছে। কতদিন প্রদেশ, অস্থির হইয়াছে॥ তাবশেষে ধনাভাবে, হলো ছায়াবাজি। বিপক্ষে দিতেছে গালি, বলি চুঁছোবাজি॥ ধর্মসভাগতি সবে, ধর্মা অধিকারি ॥ কি কর্মা করিছে যত, উত্তরাধিকারি। পিতা পৌত্তলিক পুল্র, একেশ্বর বাদী। নাম মাত্র মতাক্রান্ত, সর্বর ধর্মাবাদী॥

হিন্দুনাম ইহাদের হয়েছে কেমন।
নানেতে বিহঙ্গ সাত্র, মরাল বেমন॥
ইহঁরা করেন ছ্না, খৃীষ্টিংনান মনে।
কোকিল দোষেন যেন, কাকের বরনে॥
একপেতে পুন্যভূমি, হলো ছারখার।
বিভুর করনা বিনা, রক্ষা নাহি আর॥
ভারতের দশা হেরি, বিদরে হাদয়।
জননী তুর্ভান্যে যুখা, তাপিত তনয়॥

দুর্মোৎসব সময়ে অত্ত নগরী মধ্যে মাহেবদিগকে নিমন্ত্রণ করিয়া কোন কোন দিন্দুর ভবনে খানা দেওয়া হয়, এই উপ-লক্ষে ভগবতীর প্রতি কবির উক্তি।

তুমি দেবি দেবারাখ্যা, সকলের সারা। ত্রিলোক তারিণী হেড়, নাম ধর তারা॥ দেব পেব মহাদেব, স্বর্মে যাঁর বাস। করেন ভোমার তিনি, মহিমা প্রকাশ॥ ত্রেতাযুগে রামচক্র, বহু গুণাধার। করিলেন পৃথিবীতে, প্রতিমা প্রচার॥ ভক্তভাবে হইয়াছ, দেবী দশভুকা। তিন দিন অবনীতে, এসে খাও পুঞা ॥ পবিত্র সকল দ্রুগ্য, পবিত্র আচার। ধূপ, দীপ, গন্ধ, পুষ্পা, নানা উপচার॥ দেবীর প্রজার দেখি, বহু অনুষ্ঠান। মত্তিলোকে দেবগণ, হন অধিষ্ঠান॥ ' দেব দেব দারা ভারা, দেব সেব্যা হও। মতে। আসি চুঃখপাও, দেবগুহে রও॥ ক্রিয়াকাণ্ড পণ্ডকারি, মুচ্ছপাতি যারা। তৌমার পূজার আসি, খানা খায় তারা॥

কৌধা ছুর্গে মাতা ছুর্গে, ঘোর ছুর্গে নরি।
হিন্দুয়নী শেষ হয়, রাম রাম হরি॥
ভগবভী পেলে পরে, পেটে যারা পুরে।
মদখেয়ে নাচে তারা, ভগবভী পুরে॥
ভবানি! কোথায় আর, ভোমার আদর।
ভবানী ভরেছে তারা, ভাঁছের ভিতর॥
ধর্মাসভা অধিপতি, নূপনাম যাঁর।
ভনিহাছি নানা শাস্ত্রে, দৃষ্টি আছে তাঁর॥
নূপতিকে স্কমতি মা, দেহ এই বার।
লাংবের নিমন্ত্রণ, না করেন আর॥
অন্কুলা হও মাতা, কুগুলিনী কালি।
পুজা করি খাব কড, পাদরির গালি॥

### কার্ত্তিকে বর্ষা কি ভয়ঙ্কর।

কর হে কর্রণাম্য, কর্রণা প্রকাশ।
অকালেতে ভাতিবৃষ্টি, সৃষ্টি হয় নাশ॥
আশাহত চাদাযত, ভেবে হর দারা।
গুরুবাড় দক্ষ্য হাতে,শস্য যায় মারা॥
এ ভীম জলধিভবে, তৃমি মাত্র সেতু।
স্থলন পালন আর, সংহারের হেতু॥
তিনের সমান ভাগে, সমভাবে চাই।
অগ্র আছে, শেষ আছে, মধ্য কেন নাই॥
স্থাজিয়াছ বটে বিভু, না করি পালন।
একেবারে সংহার, করিছ কি কারণ॥
অস্টা হয়ে একপে, নাশিলে স্প্র সবে।
দয়াময় নামের মহিমা, কোথা রবে॥
বিপান্নে প্রসন্ধত্ব, সম্ভব এভবে।
ওহে শিব, দেহ শিব, বাঁচে জীব ভবে॥
কাতরে অভয় তব, দীর্ঘকরে ধরি।

দৃশ্য হও বিশ্বনাধ, প্রাণপাত করি॥
যুচাও বিকটভাব, সভাব প্রকট।
কল্যান কল্যান চাই, তোমার নিকট॥
বস্তধার দুখআর, নাহি সহে প্রানে।
যায় সৃষ্টি নাশ রিষ্টি, দয়াদৃষ্টি দানে॥

• রসলতিকা চৌপদীচ্ছন্দঃ। তুড়িতে গ্রীম্বারে জাড়ি, বরষার বড বাড়ী, ভেম্পে পড়ে ঘর বাড়ী, অতিশয় বাড়াবাড়ী কোরেছে। পৃথিৰীর ঘোর রিষ্টি, অবিশ্রান্তে বারি বৃষ্টি, ডুবিল বিধির স্থষ্টি, জন্ধকারে দৃষ্টিপথ হোরেছে॥ ঋতুরাজ নবরঙ্গী, मध्य मर मगम्भी, বিকট প্রকট ভঞ্চী. কালের করাল বত্র পোরেছে। মেঘের বিষম জাঁকে, খোরে হাঁক, গোঁপে পাক, ডাকে ডাকে ছেড়ে ডাক, আকাশের চারিদিকে চোরেছে॥ থক থর কলেবর, জুর জুর গ্রীমাবর, প্রভাকর শশধর, দুই যোকা সংখদর মোরেছে। অধিরল পড়ে জল, রণ্শল টল মল, যভদল হত বল,

প্রতিফল পেরে সব সোরেছে॥ लाय लाय वीत्रनात्न, আকাশ পাতাল কাঁপে, বিরহী পড়িল পাপে, অমূভাপে তম্ভার জ্বোরেছে। সেনাগণ ভাগণন, টন্টন্ভন্ভন্, मभीतन मन् मन्, দেখে রণ ত্রিভুবন ভোরেছে॥ বর্ষার ঘোর্ঘটা, তমে! ছট', শিরেজটা, বরুণ দারুণ ভট্ উঠে উর্দ্ধে থোর যুদ্ধে তোরেছে। গুড় গুড় চুড় চুড়, ন্ডনে প্রাণ ধুড় ধুড়, দিবানিশি হুড় হুড়, मभितिक काटिन क्रम **(क**ाटतटक्र ॥ বরষার নাহি পার, অনিবার বারিধার, কোথা তার উপকার, সবাকার অপকার কোরেছে। স্বভাবের ভাব বেশ, প্রথমে সংহার বেশ, কোরে শেষ সক দেশ, অবশেষ শিষ্ট বেশ, ধোরেছে॥

# भूतली-ष्ट्रमः ।

বরষা আপন ধর্ম্ম, ভালস্বপে পেলেছে। অবিশ্রান্ত নিবানিশি, কত জল ঢেলেছে॥ চপলা মেঘের সঙ্গে, বহু রঙ্গে থেলেছে।
নিজ অঙ্গে রাঢ়ে বঙ্গে, স্থুখন্তীপ জ্বেলেছে।
শরদ শিনির গ্রীষ্ম, দলগুদ্ধ হেলেছে।
ক্রোধযুক্ত জলধর, ভাল ঝাল ঝেলেছে।
ঘর্মপেধ্রে মর্ম্মপীড়া, গায়ে ঘর্ম্ম গেলেছে।
বর্ষা তারে একেবারে, তৃইপায়ে ঠেলেছে।
সংযোগীর মহাস্থু, বুকে বুক মেলেছে।
রাত্রিদিন সমভাবে, নিজ চাল্ চেলেছে।
অল্ককার সরোবরে, কামমীন থেলেছে।
যতনে ধরিতে তারে, স্থুখ টোপ ফেলেছে।
আশার পুরিল আশা, নিরাশারে টেলেছে।
যুক্ত হোরে, ভুক্ত ভোগে,অবশেষ থেলেছে।
বিয়োগীর বুকেতে, বেলুন যেন বেলেছে।
তৃখেরে সে বুকে রেখে, প্রানপনে পেলেছে।

রূপক।

প্রবয়।

शमा ।

মিলন না হবে যদি, স্থথ কোথা তবে।
কেবল প্রেণয় কথা, কথায় কি রবে?
দেখেছি নয়নে তার, মুখপদা যবে।
সে অবধি ভাসে মন, আশার অর্ণনে ॥
হায় হায় একি দায়, হইল আমার।
ডুবিল মানষ্ড্রি, রাখা নাহি যায়॥
সে মুখচঞ্চল হাসি, হইলে ম্মরন।
উথলে প্রণয় সিন্ধু, বারি অনুক্ষন॥
অকুলে আকুল হয়ে, দুকুল হারাই।
সে ভাব প্রভাব আমি, কাহারে জানাই॥

আসার আশায় স্থাখে, কভ স্থাখেদিয়। হরিবেষ বরিষে ধার\, নয়ন উভয়॥ ক্ষথন কখন ভাবি, তুখ ছলো শেষ। ত্মচারু প্রণয় বনে, করেছি প্রবেশ ॥ কাছে গিয়া দুষ্ট হয়, বিজ্মনা নদী। প্ৰবল প্ৰবাহ তাহে, বহে নিরবধি ॥ কার সাধ্য পার হয় ভারে খরবেগ। किवल क्रमाय वृष्ति, विश्वन উদ্বেগ ॥ সরস মাতঙ্গৰূপ, করিয়া ধারণ। भिनन कमन्त्रन, कतिरह महन्॥ হেরি তায় ছুরাচার, নয়ন-ভ্রমরা। নিশিদিন অঞ্জলে,সিক্ত করে ধরা॥ বির্দ অধ্র রাগ্য নীর্দ র্দনা। সরস সেৰপ মাত্র, হাদয়ে রটনা॥ বিরহ-অনলজুলে, প্রবল হইয়। করিল ভম্মের রাশি, হাদয় দহিয়া॥ भिनन-भरघत कान, वित्र वृतिता। চেতনা-চাতক রহে, বিলাপে মজিয়া॥ প্রবোধ না মানে চিত্ত, প্রাণের সহিত। জ্ঞান সহ পূর্ব্ব ভাব, হইল রহিত॥ প্রেমে মজে একি দায়, ২ইল আমার। অস্থির অস্তর সদা, ইতস্ততো ধায়॥ ভাবহে ভাবুক জন, ভাব ভাবভরে। বিরহে হৃদয় ভাব, কি স্বভাব ধরে॥ সতত মানসে যাতে, মানসে নেহারি। সেইজন দের তুখ, সহিতে না পারি॥

নিতান্ত আমার বৈলে, জানিতাম থারে। সে ভাবেতে ভাবান্তর, দেখিলাম ভারে॥

বিৰূপ দেখিয়া তার, হতেছি বিস্ময়। কিৰাপ আমার ভাব, প্রকাশ না হয়॥ প্রজ্বলিত থরতর, চিন্তা হুতাশন। বেষ্টিত হইয়া ভায়, দধ্য হয় মন॥ নিখাসের সমীরণে, উডে ভার চাই। নিখালের নাহি আর, বিশ্বাদের ঠাই॥ ভুলাতে আমার মন, কত হাঁদ হাঁদে। আনার সরল ভাব, পড়িলাম ফাঁদে॥ ফাঁদে ফেলে তার মন, নছে অনুগত। कं, मारेल, हैं। मारेल, कें। मारेल कर।। যেৰূপ আমায় বলে, আমার আমার। এরূপ " আমার :, আর, কত আছে তার॥ কিৰূপ আমার আমি, করিব প্রমাণ। শতেক " আমার ,, তার, আমার সমান॥ আমার বলিয়া তারে, তবে হতো বোধ। যদ,পি করিত মম, খাণ পরিশোষ॥ প্রকাশ্যে আমার ভাবে, রেথে অন্থরাস। গোপনে দিয়াছে কত, প্রণয়ের ভাগ॥ মনের বাজারে ভার, কভ ৰূপ ঠাট। ভাগে ভাগে ভাগ দিয়া, বসায়েছে হাট॥ আগে যদি এইৰূপ, অনুভব হবে। হাটের ঠাটের প্রেম, কেন করি ভবে॥ পরীকা না করে তারে, সঁপিলাম মন। কপালের দোষে হলো, দুখের ঘটন॥ আমার মনের টান, সে কেবল রোগ। ভাগের ভোগের বস্তু, কার হয় ভোগ॥ আমার ভোগের ভোগ, কেন হবে সেই। ভোগ হয়, ভোগ তার, ভাগ্যধর যেই॥ সবে মাত্র তৃটা চক্ষু, সম্ভাবিত ভার। কত দিকে দৃষ্টি ভায়,বুবো উঠা ভার॥

अजीत हरेन जांब, कीन महकादत ! ভাবের ভাবক কই, ভাব কই কারে॥ रम यनि आंगांत ভारत, मा २३ल ভारती। ভবে কেন তার ভাবে, রুখা আমি ভাবি॥ চিরদিন সমভােে, ভাবের প্রভাব। বুঝিতে না পারি ভার, কেম্ন স্বভাব॥ কত বলে, কত ছলে, কত ছলে ছলে। প্রেমপক্ষে দেব করি, দেশছেড়ে চলে। হেসে হেসে কাছে এনে, কথা কয় কত। অথচ আমার ভাবে, কভু নহে রও॥ লোকে বলে, ভালবালি, ভালবাসে তাই। ভালবাসা বটে কিন্তু, ভালনাসা নাই ॥ আশাপথে থাকি আমি, নিজ ভাৰ বলে। আশার ভাসার সদা, নিরাশার জলে॥ অপরের প্রতি প্রীতি, প্রতি বাক্যে ভুর। গোপনে রোপন করে, প্রেমের অফ্লুর॥ 🛮 কট কপট সেই, তার বাক্যে ভুলে। **এত কাল** মরিলাম, আশা-কুপে উলে॥ অভিমান মানসং, নাহি পায গাঁই। বুঝে না অবোধ মন, কথা কই তাই।। धरोत रहेल (मथा, कथा नाहि कर। রাখিয়া মানের মান, মুখ ঢেকে রব॥ যদি সে রসিক হয়, থাকে রসবোধ। অবশ্য করিবে তবে, ঋণ পরিশোধ॥ महल श्रेंदर मग, निज असूद्रादा। সাধিয়া প্রশয়সাধে, কথা কবে আগে॥ শুনিলে মধুর ভাষা,আশা পাবে সুখ। ভালবাসা ভালবেসে, দূর হবে চুখ ॥

বসত্তে বিরহীর ভাব। চুৱন্ত বসন্ত যেন, নিতান্ত কৃতান্ত। ' আইলেন বিরহীর, করিতে প্রাণান্ত। কুন্ত কুন্ত কাকলিতে, কোকিল কুহরে। শিহরে কোকিলাকুল, কোকিলের স্বরে॥ সে রবে কে রবে আরু, স্কৃত্তির জন্তবে। সার শরে প্রাণ সতে, প্রাণেশরে মারে॥ কাগিনী কুম্বম ফুল, বিকশিত হয়। कांगिनी (कमरन वल, वल धरत त्रा॥ নহে কৈছ ভামুকুল, সবে প্রতিফুল। কেমনে রাখিবে আরি, কুলবালা কুল।। ব্যাকুলা আকুলা বালা, গেল বুবি কুল। তাকুল বিরহার্গনে, ব্যাকুল স্তীকুল॥ প্ৰভিকুল বালা প্ৰতি, ফ্ল প্ৰভিকুল। বকুল মল্লিকা জাতি, কুন্তমের কুল।। ফ্ল ফুল হেরি জালি, প্রযুল্লিভ প্রাণ। মুখভরে মধুকরে, মধুকরে পান। বিরহী ব্যথিত করে, গুল গুল স্বর। গুণ গুণে মনাগুন, হিগুণ প্রথব॥ মলর প্রালয় করে, হরে লয় প্রাণে। সে মলয় বিরহীর বুকে, শেল হানে॥ যামিনী কামিনীকুল, করিছে বাাকুল। সংযোগিনী স্থী, মরে বিয়োগিনী কুল॥ গগনে সঘনে ভারা, অক্ষিপাত করে। দেখে পূর্ণ শশধর, লোকে শশধরে॥ वनना ननना किटम, त्रस वन धरत। ভেসে যায় নেত্রজলে, জ্বলে সে অন্তরে॥ যদি বালা ফুলমালা, কখন গাঁথয়। विवधत मग गाला, विषधत रश ॥

এই মত তার প্রতি, কিছু ভাল নয়। ভালই নহেক ভাল, কিলে ভাল হয় ? বসস্ত অশক্ত অতি বধিলে পরাবে। বসস্ত যাইবে কবে, তারা ভাবে মনে॥

# মহারাজা দলিপ সিংহের হুরবন্থা।

পর্বত কাঁপিত আগে,যাহার প্রতাপে। এখন তাহারে দেখে, তুন নাহি কাঁপে॥ সিংহাসনে সিংহ সম, যে করিত বাস। এখন শুগাল তারে,করে উপহাস॥ গণেদের মুখ করি, হরি হেরি হাসে। শিবস্থত মুগু বলি, হরি মরে ত্রাসে॥ হর শিরোভ্যা বলি, তাহকারে নাম খগরাজ নির্থিয়া প্রকাশরে রাগ॥ বরষায় মহী ছাড়া, তাহি জলে ভাষে। দেখে ভেক কত ভেকে, হাসে উপহাসে॥ স্থান দোষে পারিন্দ্রের, পাতালে প্রান। স্থানগুণে শূনী হয়, সিংহের সমান। তবেই আদর ভার, যদি থাকে স্থানে। স্থান ছাড়া হলে পর, কেহ নাহি মানে। সম্পদ বিপদবদ্ধ, অদুষ্টের জালে। স্থুখ, দুখ, মানানান, স্থানে আর কালে। অযোধাার পতি রাম, নিজ্বাম ছাড়ি। বন্ধুবোলে ঢুকিলেন, চাঁড়ালের বাড়ি॥ ত্রিলোকের পতি হয়ে, ন্ত্রীলোকের ভরে। যাচিয়া দিলেন কোল, বনের বানরে॥ দৈত্য-দর্পহারী হরি, প্রভু ভগবান। ব্যাধের বাণের ঘাত্ত ত্যজিলেন প্রাণঃ

धारिकार शिक् रक्षत, लीला सब्दरन। যতুকুলবধু হরে, ক্ষুদ্র গোপগবে॥ খাণ্ডৰ দাহনক রী, ভৃতীয় পাশুৰ। 🗎 সে সব দেখিয়া যেন, হই লেন শব॥ শক্তিহীন ধনঞ্জা, ধনঞ্জা মনে। ধনঞ্জন মন্ত্র আরু, নাহি খাটে রবে॥ কুরুপতি চুর্ষ্যোধন, ধরা পরিহরি। শত্রুভয়ে লুকালেন, জলরাস করি। জ্লাশয়ে জ্ঞাতির কুকথা নাহি সয়ে। মরিলেন কুরুরান্ত, উরুভঙ্গ হয়ে॥ হ্বথ চুখ চুই ঘটে,ভাগ্যের আধারে। কালের কুটিলগতি, কে বুঝিতে পারে॥ কহিতে দারুণ কথা, মধ্য হয় ভেদ। হায় হার কারে ভার, প্রকাশিন খেদ॥ প্রকাণ্ড পাণ্ডব রাজ্য, অধিকার যার। সিংহাসনে সিংহ স্থ করিত বিহার॥ এখন সম্পদ স্থং, কিছু নাহি জার। ছইয়াছে কার্যার, বাসস্থান তার॥

> ত্র**ক্ষদেশের সং**গ্রাম বিষয়ক পদ্য।

বীররসে বিভাসে, জুড়িয়া জোর তান।
ছাড়িতেছে সেনা সব, রণজয়ী গান॥
হইল বিবাদ শুঞ্জি, বড় বলবান।
না হয় নির্বাণ আর, না হয় নির্বাণ॥
কত দূর ছুটে অগ্রি, নাহি পরিমাণ।
ক্রুন ধরণী হুখে, নররক্ত পান॥
এক গাড়ে গাড়িতে, মগের বাচ্ছা জান।
শ্বেত সেনাপতি যত, জল্মানে যান॥

কলে চলে জলে তরি, ধ্মুযোগে টান। এক এক জাহাজেতে, হাজার কামান॥ হোয়েছেন কমডোর সবার প্রধান। কোনৰপে বিপক্ষের, নাহি আর ভাগ॥ জলে স্থলে, আগে তিনি, হলে আগুয়ান। কোথা রবে মগোদের, বগ্মারা বাণ॥ লাফে লাফে বীরদাপে, শব্দ আন্ সান্। পাতালেতে বাসকীর, দেহ কম্পবান॥ রেস্থ্রের গবানর, হবে হতমান। জাসিবে শিকল পায়ে, হয়ে বঁদিয়ান। হোরা দিয়া গোরা সব, খেতে দিবে ধান। অথবা করিবে তার, দেহ খান খান॥ কি করে আবার রাজা, যুবা জামুবান। ভাগ্যের দিবস তার, হয় অবসান॥ ইংরাজ সহিত রণে, পাইবে আসান। ভেক হয়ে ধরিয়াছে, ভুত্তপ্লের ভান ॥ ক্ষণ মাত্র নাহি করে, মনে প্রণিখান। কেমনে হইবে রক্ষা, জাতি কুলমান॥ শোভা পেতো হোলেপরে, সমান সমান। পর্বতের সহ কোথা, তুণের প্রমাণ ? वम्बीकाल तात्र किन्छ, यात्रकात्का श्रान। ্" বেভিমেন্স লেভে" পাবে বসতির স্থান ॥ সেখানে খ্রীষ্টান হোয়ে, ঢেঁ কির প্রধান। মেকির নিকটে লবে, ধর্মের বিধান 🏻 ধরাইয়া হাতে হাতে, করাইবে পান। মেকাই একাই তারে, করিবেন ত্রাণ॥

অনঙ্গ উঠিল জ্বোলে, কে করে নির্মান। সে অনলে অনেকেই, পাইবে নির্মান।

ব্রিটিস নিকটে তথা, মগের প্রতাপ। জুলন্ত আগুনে যথা, পভঙ্গের ঝাপ॥। ফণি ফণা ভুচ্ছ করি, কুচ্ছ বহুতর। ভেক লয়ে ভেক ডাকে, গাাঙ্গর গাাঞ্গর ॥ হোতে চায় করি সম, স্থরূপ খুকর। তুরগের খরগতি, ইচ্ছা করে খর॥ দেখিয়া রবির ছবি, নাচিছে **জো**নাকী। বকের বাসনা বড, বধিতে বাসকী॥ সূনীম্বত মিছে কেন, করিছে আক্রম। হরি কি ধরিতে পারে, হরির বিক্রম ? ভীক্ত ফেব্রু রব করি, জয় করে হরি। হরিবোল, হরিবোল, হরিবোল হরি॥ ইংরাজে করিবে দুর, কদাকার মগে। কোথায় লাগেন, ''বগা বাঙ্গালের লগে ॥ ধোরে থাকু পাথা ভাঙ্গা, মাচ্রাঙ্গা থগে। বাঁধুক আবার অভা, দোক্তাচুণ রগে॥ রাঙ্গামুখা দল যদি, বল করে ভালো। আঁকো বঁ।কা কালামুখ, আরো হবে কালো।।

সন্ধিত্বলৈ রণানল, করিয়া নির্বাণ।
আবার ক্ষেপিল কেন, আবার প্রধান॥
হীনবলে এত কেন, প্রকাশিছে রোশ।
বুঝিলাম ধরিয়াছে, কপালের দোব॥
নিরতে টানিলে পরে, নাঞ্চি যার রাখা।
মরণের হেতু উঠে, পিঁপীড়ার পাখা॥
দিজরাজে দর্প করে, হইয়া সালীক।
অবোধ বণের প্রভু, মণের মালিক॥
সকল শরীর চিত্র, বিচিত্র ব্যাভার।
সাক্ষাৎ দ্বিদদ পশু, মানব আকার॥

সেনা আর সেনাপতি, সম সমুদার।
কেবা রাজা, কেবা প্রজ্ঞা, বুবা অতি দায়।
শ্রীরাম কাটারি হস্তে, সমরে নামিয়া।
মাঝে মাঝে ছাড়ে ডাক, "খামিয়া খামিয়া।
ইরেস্তা বুকুলি ভুলু, কামিয়া কামিয়া।,
নাচে আর মান গায়,খামিয়া থামিয়া॥
কর্ম্মের উচিত ফল, অবশ্যই পাবে।
ভাবাপতি হাবা অতি, বুঝিলাম ভাবে॥

জ্ঞানহড, পশু যত, আর কত জ্বালাবে।
ভূতবেশে, যুদ্ধে এসে, মিছে কেন ঢলাবে॥
খেতবীর, বাসকির, উচ্চ শির টলাবে।
রাজপুর, হয়ে চূর, বসাতলে তলাবে॥
কোপে কোপে, তোপে ভোপে, গিরিদেশ
হেলাবে।

জলে হলে, শত্রুদলে,কটি চেলা চেলাবে॥
তীরে উঠে, ছুটে ছুটে ছুই হাতে ঢেলাবে।
ডাক্ছাড়ি তুলে আড়ি,গোঁপদাড়ি ফেলাবে॥
কোরে রাগ্, ধোরে তাগ্, বাঁকা ডগ্লেলাবে
ডুরি দিরা- মাঠে নিরা, কত খেলা খেলাবে॥
হত দিশে, বুঝে নিশে,কাণে সিসে ঢালাবে
মগাই পগাই স্বোলা, কামানেতে গালাবে॥
সেফাযেরা, বেঁধে ডেরা,জোরে ধনি জ্বালাবে।
বাকারাজে, চোরসাজে, সিস্কুপথে চালাবে॥
বত গোরা, মেরে হোরা, ভালঝাল ঝালাবে।
আবাপতি, হাবা তুপ, বাবা বোলে পালাবে॥

## পরমার্থ তত্ত্ব।

#### ত্রিপদী।

অনিত্য ভৌতিক দেহ, চিঃস্থিতি নহে কেহ, ক্ষণকাল দুশ্য শোভা বটে। জন্মনিশা হয় ভোর, শমন করিয়া জোর, ধরিয়'ছে জীবনের জটে॥ কাননে কুন্থম ফুটে, চারিদিকে গন্ধ ডুটে, ে ভায় আমেদ করে কত। কিছু পরে দেপ্রকার, সৌরভ না থাকে আর, একেবারে সব হয় গত।। যৌবন কুন্তুম সম, ক্রমে ক্রমে যায় ক্রম, পরাক্রম কিছু নাহি রবে। সুলদেহে সূল পঞ্চ, ঘুচিবে তাদের তঞ্চ, ক্রমে স্থায়, ভারো স্থায় হবে॥ সংসার বাহার কীর্ভি, রচনা করিয়া পুথী, স্ত্রন করিল নানা প্রাণি। অন্য সব মিছা আর, এক সত্য সেই সার, মনে মনে তাঁরে গুদ্ধ মানি॥ विश्वाम वीक्षवदत्र, প্রণয়ের সহোদর, সেই যেন রহে রাজি দিবা। আকার প্রকারতার, থাকে থাকে যে প্রকার, প্রকাশের প্রয়োজন কিবা॥ সরল সভাবে থাক, প্রণয়েরে হ্লদে রাখ, দেষহিংসা ক্রোধ পরিহর। হিতকার্য্যে হোয়ে রভ, অবিরত সাধ্য মভ, জগতের উপকার কর।। कत मन। यक कर्मा, नान नशा मुन धर्म, (পলে মর্ম শর্মা কল কলে।

শুভকার্যা যেই করে সংসার জাধার ঘরে, প্রশংসা প্রদীপ তার জ্বলে॥ তাভিমান অহস্কার, ধনজন পরিবার, ফ্রিকার বিষ্ণের মুলি। রবে শুদ্ধা রবে রব, শেষেতে নিফ্ল সং, সার মাত্র হরিবোল বুলি॥

কেন মন কি কারণ, এত নিদ্রা তোর! নোহমদে এত মত্ত, নাহি ভাঙ্কে ঘোর॥ উঠ উঠ চেয়ে দেখ, নিশি হয় ভোর ! প্রভাত হইলে পরে, পলাইবে চোর॥ নয়ন মুদিরে আছি, কিলে হবে জোর। দেখিতে না পাও কিছু, মুখে মিছে শোর। এই আছে এই নাই, এইত শ্রীর। কখন বিনাশ হবে, কিছু নাহি স্থির॥ দিন যত গত ভড়, গণিতেছ দিন। অখচ জাননা তুমি, দিনের অধীন॥ নিশ্বাস বায়ুর সহ, আয়ু হয় শেষ। কৃতান্ত নিতান্ত তব্য ধরিয়াছে কেশ॥ স্থিরভাবে এক ধার, কররে সারণ। আ'সিছে বিকট কাল, নিকট মরণ ॥ কলে চলে কলেবর, ভুমা তার কল। সে কল বিক্ল হলে, বিফল সকল॥ পাঁচের বিকার হেতৃ, আকার স্বীকার। এই আমি এই আছি, এই নাই আর॥ যতদিন থাকে দেহ, ততদিন ভাল। মানস মন্দির মাঝে, জ্ঞানদীপ জ্ঞাল। পেয়েছ পবিত্র দেহ, শর্মনাভ তাহে। ষশ্ম বুৰো কৰ্মা কর, ধর্মা রহে যাহে॥

বিশ্বমাঝে দুশ্য যত, নহে বিশ্বয়ল 🗈 সে সব যে কিছু দেখ, নয়নের ভুল।। ইস্ক্রিরের অগোচর, চিদানন্দ যিনি। স্থল, জল, প্রস্তুর, অট্রী নন্ তিনি॥ অন্ধ হোয়ে অন্ধকারে, কোথা ভাবে পাবে। নিজ দেশে দেষ করি, কোন্দেশে যাবে॥ ঘরে আছে মহারত্র, দেখিতে না পাও। কাঁচহেতু যত্ন করি, দুরদেশে যাও॥ একি ভ্ৰম, কেন ভ্ৰম, বুন্দাবন কানী। নিতা সেই, নিতা বিজ্ঞ, চিত্ততীর্থ বাসী॥ রোয়েছে সকল বস্তা, মনেব আগাবে। ভক্তিভরে জ্ঞানপ্লেপ্,পূজা কর তাঁরে 🛭 ভাবের ভবনে বসি, ভব ভাব লও। মিছে কেন ভব ঘূরে, ভবঘুরে হও॥ সকলি অসার, আর সকলি অসার। আত্মতীর্থ মহাতীর্থ, সকলের সার॥ আপনি হে আপনার, পরিচয় লও। আত্মার আত্মীর হোয়ে, আত্মতীর্থে রও॥ অত্রাগে, একরাগে, বিভুগুণ গাও। দুর হবে ভবক্ষুধা, জ্ঞানস্থধা থাও॥

# 

## সার উপদেশ।

হায় হায় কি আশ্চর্য্য, মন্থ্যের মন।
কিছুই নিশ্চিত নাই, কখন কেমন॥
দৃঢ়জ্ঞানে এক বস্তু নাহিভাবে সার।
এই ভাবে একরূপ, কলে ভাবে আর॥
স্থথে মুদ্ধ হোয়ে করে, অধর্ম স্বীকার।
বিশাসের প্রতি শেষ, বিশেষ বিকার॥

তত্ত্বনিষ্ঠ দৃঢ়জ্ঞানী, বেজন স্থগীর। একমনে এঁক বস্তু, সেই ভাবে স্থির॥ ভ্ৰমশীল অজ্ঞানের, চুখ নানা ৰূপে। দ্ধা করি নিজ গুহ, বাসকরে কুপে॥ স্বীয় পথ ক্রদ্ধ করি,মিথ্যা উপদেশে। কলুষ কনিকৈ পড়ি, খঞ্জ হয় শেষে॥ তাবোধ কুরঙ্গ কুল, নিজা নিজ ভাগে। স্থাকর জলবোধে, নানাস্থান ভাষে।। ভ্রমে প্রাণ যায়, পিপাসার দায়। সর্বব্যাপী প্রভাকর, দোষী নন্ তায়। আহারের লোভহেত্, ক্ষীণ মীন রাশি। লোহার কন্টক কলে, বিদ্যু হয় আসি॥ স্থুখ লোভে সেৰাপ, অবেধি লোক বত। পাপের কউকে পোড়ে, আয়ু করে ২ত॥ পরম প্রণিত পথে, কিছু নাহি খেদ। জাতি বর্ণ ধর্মা কর্দ্যা, প্রভেদ প্রভেদ॥ ধর্ম ভেদে মন্যোর, ভিন্ন ভিন্ন ভেক। উদ্ধারের কর্ত্তা দেই, সারমাত্র এক॥ ঈশ্বরের এই আজ্ঞা শিরোধার্য্য করি। ভবসিন্ধু পার হেতু, নিজ ধর্মতরি॥ স্থীয় পথ পরিহরি, পরপথে ধায়। চর্মে পর্ম বস্তু, কভু নাই পায়॥ शुलवर्जा (ছড়ে **फी**त, जूलপথ ধরে। জলে থেকে মীন যথা, পিপানায় মরে॥ লোভে ক্ষোভে বৃদ্ধি ২ত, অলি অলিবঁধু। নলিনী ব্যতীত নাহি, কাষ্ঠ হয় মধু॥ স্করে অমুল্যহার, দেখিতে না পার। কাঁচভুষা অস্বেগনে, দূরদেশে যায়॥ কৃষ্ণার যদ্যপি যায়, চাতকের প্রাণ।

তথাচ মহীর নীর, নাহি করে পান ॥
চকোরের যদি হয়, তাতিশয় ক্ষধা।
চিত্তস্থথে খার শুধু, চারুচক্ত স্থধা॥
সভাব স্থানিজ্ব যার, তার এক ভাব।
সভাবে সন্তুষ্ট মন, সারবস্তু লাভ॥
অগ্লির দাহিকাশক্তি, তাগ্লি মধ্যে রাখে।
সলিলের নিম্মগুন, সলিলেই থাকে॥
গাতাসের গুন যাহা, যাতাসেই স্থিতি।
ক্ষিতির ধারন শক্তি, ধরে সেই ক্ষিতি॥
ফলের স্থাদ যাহা, ফল মধ্যে হয়।
কুস্থমের গন্ধগুন, কুস্থমেই রয়॥
আকাশের গুন কিছু, যাতাসেতে নহে।
নিজ্ঞ নিজ কর্মগুন, নিজধর্দ্মে রহে॥

# প্রণয়ের প্রথম চুম্বন। প্রদ্য।

প্রণয় স্থানে সার, প্রথম চুম্বন।
তাপার আনদ্যপ্রদা, প্রেমিকের ধন॥
আছে বটে অমৃত, ভামরাবতী প্রুরে।
প্রেমোদিত করে যাহে, যত সব স্থরে॥
উথলয় স্থাসিল্লু, পানে এক বিন্দু।
যার আসে গ্রাসে রাহ্ন, প্র্নিমার ইন্দু॥
সে ক্ষুধার স্থধা মাত্র, নহি একক্ষন।
যদি পাই প্রনয়ের প্রথম চুম্বন॥ ১

অধ্রের প্রিয় পেয়, স্থরারস মাত্র। রসনা সরস গাত্র, পরশিলে পাত্র॥ ষার লাগি হলো ধ্বংস যতুবংশগণ। সভাবে অভাব সদা, রেবতী রমণ॥ প্রস্যাবধি মদ্যমাত্র, পানীয় প্রধান। বিদ্যন্তন খাদ্য মাঝে, সদ্য বিদ্যমান॥ এমন মধুরা স্করা, নাহি চায় মন। ফদি পাই প্রণয়ের, প্রথম চুষম॥ ২

ভাষল কমল সম, কবিতার শোভা।
ভাবকের মন ভাহে, মন্ত মধুলোভা॥
ছহ্মপানে মুধ্ব যথা, ভাবকের মন।
কবিতার তৃপ্ত তথা, হয় সর্বান্ধন॥
যাহায় প্রসাদে পরিহত, পুত্রশোক।
পুলক ভালোক পায় ভাগ্যহীন লোক॥
হেন কবিতার শক্তি, নাহি প্রয়োজন।
যদি পাই প্রণয়ের, প্রথম চুম্বন॥ ৩

গলকুও দেশে আছে হীরক আকর।
রক্ষত কাঞ্চনময়, স্থানক শেখর।
নানারত্ম পরিপূর্ণ, রত্মাকর জালে।
গল্পক্তা মূল্যযুক্তা নহেক সিংহলে॥
ক্বের লইরা যদি এই সমুদর।
ভানারে প্রদান করে, হইয়া সদয়॥
ক্পেণ করিব দূরে, প্রহারি চরন।
যদিপাই প্রণয়ের প্রথম চুম্বন॥ ৪

তদ্র মন্ত্র প্রাণাদি, সর্বশান্তে শুন।
পুন পুন এই বাক্যে, কহে যত মুনি॥
ইংধরা, চুখভরা, অসার সংসার।
নহেক তিলেক স্থুখ, সুধার সঞ্চার॥
মুনীনাঞ্চ মতিজ্রম, এইস্থলে ঘটে।
নতুবা অযুক্তি হেন, কি কারণ রটে॥

দেখাইব কত হংখ, এ তিন ভুবন। যদিপাই প্রান্থের, প্রথম চুম্বন॥ ৫

নয়নে নির্থি প্রকটিত পদ্মবন।
স্থমধুর গীত ক্রতি, করয়ে অবন।
হৃদয়ে আনন্দে প্রভা, হয় সদ্দীপন।
সহস্র সহস্র স্থা, প্রাপ্ত হয় মন॥
রসনায় রসবারি, ধর স্রোতে বয়।
নিহরে সর্বাঞ্চ, ভঙ্গ দেয় লজ্জাভয়॥
এইরূপ স্থগভোগ, লভি সর্বাক্ষন।
যদি পাই প্রান্তরে, প্রথম চুন্দ॥ ৬

# রতির প্রতি বিরহিণীর উক্তি।

ওগো পঞ্চশর দারা, ভুবনমোহিনি!
হাবভাব লাবণ্য সম্পন্ধ!, বিনোদিনি॥
তব পতি নিদারুণ, আগুন সমান।
সতত দহন করে, রমণীর প্রাণ॥
তুমিত অবলা বট, সরলা প্রকৃতি।
পতিরে সরল কর, তবে মানি কৃতি॥
অধিনী প্রেমদা তব, তব লাতি হই।
তব পদ দাসী আমি, অন্য কেছ নই॥
কাতরে করুণা কর, কামের কামিনী।
অমঙ্গ দহিছে অঙ্গ, দিবস যামিনী॥
এমন হিতের কার্যো, যদি খাকে রতি।
তবে মানি ওগো সতি! নাম তব রতি॥
পর উপকারে যদি, বিরতি তোমার।
কিরপে হইবে তবে, যুবতি প্রচার॥

বিরহ কেমন জ্বালা, জান ত সে সব। ভৰ কোপানলৈ ভন্ম, হলে মনোভৰ ॥ চেয়েছিলে ভেজিবারে, জীবন জীবনে। শারদার প্রবোধে প্রবোধ পেলে মনে॥ কুলের কামিনী আমি, কোখা সে প্রবোধ। শারদা কিৰূপ ভাষা, নাহি মাত্র বোষ॥ একবার শুনেছিলে, মম নিবেদন। প্রিয়তম সহ যবে, প্রেম সঞ্চটন॥ সমাদর পেয়েছিলে, ভাহার উচিত। এবে কেন গালি খেতে, এতেক সম্প্রীত॥ দ্রখের সাগরে ভাসে, কলেবর ভরি। বিরহ বাভাসে ভাছে, উপজে লহরি॥ তীরে বসে তব কাস্ত: মারিতেছে তীর। ছিদ্রময় হলে। তাহে, তর্রনি শরীর॥ তবল তরফ দেখে, মন কর্ণধার। হাল ছেক্ডে ঘোর দুখে,করে হাহাকার॥ চারিদিকে শূন্য দেখি, হয়েছে কাতর। নিরাশ হইয়া ভয়ে, কাঁপে ধর ধর ॥ প্রতিক্ষণ এই মাত্র, করে প্রতীক্ষণ। কতক্ষণে দেহতরি, হবে নিমজ্জন ॥

#### বিম্পকচ্ছন্দঃ।

স্থাবের সাগরে, মিলন দ্বীপ।
মম প্রোনেশ্বর, তার অধিপ॥
দেহ তরি মন, নাবিক তার।
বেচিবে তাহারে, প্রেম ভাণ্ডার॥
অতএব দেবি, করুণা কর।
ভয়াল বিরহ, তুখ সাগর॥

একি বিপরীভ, কুসম কাঙ্গে। क्रम्य (मर्द्राष्ट्र, जनम काला॥ মাঝে মাঝে উঠে, বিজলি আশা। নিনাদ বিলাপ, কপাল ভাষা॥ তরঙ্গ বয়সে, তর ফে মরি। প্রতিকুল তাহে, মহেশ অরি॥ মনোজনোহিনী, গুন গো সতি। নিবার ভোমার, পতির মতি॥ व्यवना मत्रमां, कृत्नत्र वाना। কি ৰূপে সহিব, এতেক জ্বালা॥ দক্ত দলন, তমুজা যিনি। মনুজ ভাতৃন, করেন ভিনি॥ তাইবলি ভারে, করো বিনয় कामिनीविधितन, यम ना इस ॥ বৰদা হও গো. অধিনী क्रांत। বিতর আমায়, মিলন ধনে॥

-

#### প্রবয়।

প্রিক্তন অন্নেষ্বনে, চল যাই মন।
বিরহ অনলে কেন, হতেছ দাহন॥
এ অনল পরশেতে,নাহি বাঁচে কেহ।
ক্রমে ক্রমে প্রেমিকের, দহ্ম হয় দেহ॥
নিরস্তর অস্তর, দহিছে তার চুখে।
তথাচ গোপনে রাখি কথা নাই মুখে॥
মনে কি নির্বাণ হয়, মনের আগুন।
প্রকাশ করিলে পুন, বাড়য়ে দ্বিগুণ॥।
অরসিক অপ্রেমিক, শক্রে লোক যারা।
সে আগুনে উপহাস ঘৃত, দেয় তারা॥

আহতি পাইয়া অগ্রিদিখা উঠে উড়ে। কোথায় থাকিবে আশা, বাসা যায় পুড়ে॥ তখনি নিভিবে সব, ভালবাসা পেলে। ভালবাসা কোথারবে, ভালবাসা গোলে॥ বাড়িল বিষম বহ্নি, চিন্তার অনীলে। শীতল হইবে তার, সাক্ষাং সলিলে॥ পোড়ার পোড়ায় ঘর, গোড়া তার নাই। আমারে করিছে ছাই, নিজে হয়ে ছাই॥ তখন দেখিব ভারে, স্থা সঞ্চি হয়ে। পোডায় পোডাব শেষ, পোড়া ঘর লয়ে॥ সে যদি আমার মত, হয়ে থাকে পোড়া। তুই পোড়া এক হয়ে, পোড়াইৰ পোড়া॥ আলোকে পুলক পাব, রহিবে না তয। অনঙ্গ পোডাবে ভাঙ্গ, পভঞ্চের সম॥ বচনে পোড়ায় সদা, পোড়ালোক যারা। মনের অভিনে তারা, পুড়ে হবে সারা॥ হিংদার বাতাদে তাগ্নি, হইবে প্রবল। নাহি পাবে পুন, আর নির্বানের জল॥ সাহস সহায় করি, আশা পথে চল। প্ররিবে আশার আশা, ভারে এই বল।। নিরাশারে যেতে বল, খেদ সিম্বতটে। অমুরাগযুক্ত থাকু, মনের নিকটে॥ ভাব চিন্তা অভিপ্রার, সঞ্চে সঙ্গে লছ। তারা যেন ঐক্য থাকে, প্রণয়ের সহ।। একতায় যদি তায়, ঐক্য নাহি হয়। देश्वर्गा র রক্তর দিরা, বধ সমুদয়॥ প্রবেদে প্রযন্ত্রে ডাকি, চাল মনোরথ। সেথো হয়ে দেখাবে সে, মিলনের পথ ॥ অভাব না হয় ভাবে, ভাব রাখ বশে। উভয়ে শীতল হব, প্রণয়ের রসে॥

#### श्रेश्रा

#### जिलमी।

বহুদিন যার লাগি, হয়ে প্রেম অনুরাগি, আশাপথে আশা ছিল একা। সদয় হ'ইয়া বিধি, দিয়াছেন সেই নিধি, গোপনে পেয়েছি তার দেখা॥ न्छेदद न्दर्श्व, মনোহর ভাবভঞ্চি, সঙ্গে তার সঞ্চি নাই কেই। স্ভাবে স্থভাব বশে, যশ্যুক্ত নিজ্মণে, ষেহ রসে পরিপুর্ণ দেহ॥ ভাবের করিয়া স্ঞ্টি,প্রতিবাবের প্রীতি বৃষ্টি पृष्टिभाष मामिनी ननाक। কিছু তার নছে বাঁকা, লজ্জার বদন ঢাকা, ন্যনের পলকে পলকে। বিষাধরে স্থাক্ষরে, প্রেমিকের ক্লুধা হরে, বাক্য শুনি ভ্রান্ত হয়ে মনে। পিকবর মধুকর, শুনে স্বর জুর জুর, নিরস্তর ভ্রমে বনে বনে॥ মনে মনে এই চাই, কোন খানে নাহি যাই, ক্ষণমাত্র ভার সঙ্গ ছেড়ে। প্রেমভাবে কাছে এসে, ঈষৎ কটাক্ষে হেসে, একেবারে প্রাণ নিলে কেড়ে। থেকে২ আড়ে আড়ে,আড়চকে দুষ্টি ছাড়ে. ভাব দেখি ত্রিভুবন ভোলে। চক্ষে শোভা নাহি তুল, অর্দ্ধ ফোটা পদা ফল, প্ৰন ছিল্লোলে যেন দোলে॥ তুলনা তুলনা তার, তুলনা কি আছে আর, সেৰপের নাছি অমুৰূপ।

হাস্তভরা আম্ভখনি, গলিত অমৃত বানী, • ললিত লাবণ্য অপৰাপ॥ कटलनत कमनीत्र, নহে কাম গ্ৰামনীয়, র ভির সে রমণীয় নয়। ভাবে সব ভাবে স্বীয়, সভাবে সভ'র প্রিয়, সিয় হেরে মির্মান রয়॥ অনুরাপ অভিপ্রার, স্থিরকাপে দীপ্তি পায়, আশা চায় উভয়ের আশা। এক ঠাঁই যুক্ত ভথা, मरा (क्षेत्र भवलंडा, হৃদয়েতে মাধুর্য্যের বাস:॥ মনোমত কত মত, বুবে: সব অভিমত, মনোভার বাক্ত করি মুখে। বিপক্ষেরে দূষিয়াছে, শোকসিন্ধ শুবিয়াছে, ত্বিরাছে সম্ভোবেরে সুখে॥ আগে মন ছলিয়াছে, শেষে সভ্য বলিয়াছে, গলিয়াছে স্বেহ বস নিয়া। মম ভাবে কাঁদিয়াছে, কত ছাঁদ ছাঁদিয়াছে, বাঁধিয়াছে প্রেম ড্রি দিয়া ॥ দেখিয়াছি যত ক্ষণ, কত হুখ তত ক্ষণ. প্রেবর নানা ফাল ফে দে : এখন নাছিকো দেখে, কি ফল জীবন রেখে, থেকে থেকে প্রাণ উঠে কেঁদে॥ আমারে বিনয় করি, ছটা হাতে হাতে ধরি, দেখা যায় ওই যার চোলে। বাহু তার বাক্য আসি,ধৈর্যাশশি গেল গ্রাসি, হাসি হাসি আসি আসি বোলে॥ হাসিহাসি আসি বলে,শুনে ভাসি আঁবিজলে এসো এসো কোন মুখে বলি। निद्युष क्रिय উठि: (नृद्ध न हि मुध कृति, শনের আগুনে গুদ্ধ জুলি॥

তদবধি আমি নই, আমি আর কারে কই, আমি আমি কব আর কারে। সে যদি আমার হয়, আমারে আমার কয়, আমার কহিব খামি তারে॥ সে দিন পাইব করেঁ, करत वा गञ्जल इत्त, অমঙ্গল কপালে আমার। আশাপথ চেয়ে তাতি তার॥ त्य यथन गरन कार्श, किछू ना है छाल नार्श, ভাবি শুদ্ধ বিরলেতে বসি। স্থির নহি ক্ষণমাত্র, চিন্তাপুর্ণ চিন্ত পাত্র, গাত্র হতে অগ্নি পড়ে খসি॥ সে যদি প্রেমিক হয়, প্রেমের দরদ লয়, দেখে যাবে কি ৰূপেতে থাকি। এবার পাইলে দেখা, স্থের না হবে লেখা, রেখাদিয়া একা কে'রে রাখি॥

#### প্রণয়ের আশা।

কভ আর রব ভার. আসা আশা লোয়ে।
দিন দিন তন্ত্ ক্ষীণ, প্রেমাধীন হোরে॥
সদা যার ক্ষেহভার, শিরে মরি বোয়ে।
আমারে কি ভুলাবে সে, মিছে কথা কোয়ে॥
একাকী রোদন করি, এক স্থানে রোয়ে।
বিরহ যাতনা আর, কত রব সোরে॥
বুঝি ভার আশাপথে, পরিপুর্ণ হুখ।
কখনো জানে না মনে, নির্শার তুখ॥
এমন না হলে পরে, দেখা দিত ফিরে।
ভামারে ভাসাবে কেন, নির্শার নীরে॥

প্রণয়ের লক্ষ্যে সেই, করে যার আশ।। সে বুঝি দিয়াছে ভারে, হৃদয়েতে বাসা॥ তাশা দিয়ে বাসা দিয়ে, রাখিয়াছে বেঁধে। আমার ভাবিয়া আমি, রুথা মরি কেঁদে॥ বুঝেনা ভাবোধ মন, প্রানীধ না মানে। ু আমার বলিয়া তারে, নিতান্ত সে জানে। সবে তার এক মন, এক ঠাঁই বাঁধা। অনেতে আমার মনে, লাগিয়াছে ধাঁধা॥ হোক হোক ভার হোক, স্থাী আমি ভাতে। আমারে ফেলিল কেন, নিরাশার হাতে॥ যদি না আসিবে সেই, বাঁধাপ্রেম ছেড়ে। ছলেতে আমার মন, কেন নিলে কেডে॥ যখন বির্লে সেই, বোসে রবে একা। এই কথা বোলো ভারে, হলে পরে দেখা। বিধিমতে ভোষার, মঞ্চল যেন হয়। মঙ্গল ভোমার পক্ষে, এ পক্ষেতো নয়। ইঙ্গিতে বলিবে সব, যে স্থখেতে আছি। ছাড়া হয়ে কাড়ামন, ফিরে পেলে व । চি॥ বুঝায়ে বলিও ভারে, অভি ধীরে ধীরে। একবার দেখা দিয়ে, মন দেয় দিরে॥

#### প্রভায়।

# বিচ্ছেদের পার মিলঅ ঘটিত— কথোপকথন।

"ছুঁ যোনা ছুঁ যোনা প্রাণ, ছু যোনা আমায়। কয়োনা কয়োনা কথা, হাত দিয়া গায়॥ জ্বর জ্বর কলেবর, প্রণয়ের দায়। প্রবল বিচ্ছেদ তব, জনলের প্রায়॥

ত্র সম তমু মম, পুড়িতেছে তায়। অন্তরে জ্বলিছে শিখা, দেখা নাহি,যায় 🛭 তোমার বিমল ৰূপ, স্থকোমল কায়। তাপিত হইবে তন্ত্র, পরশিলে তায়॥ ষ্ণরে মিলন বারি, সদা মন চায়। শীতল হইবে তাহে, এই অভিপ্ৰায়॥ কি জানি কপাল দেখে, নাহি হয় হিত। ভয় আছে ঘটে পাছে, হিতে বিপরীত॥ ना इत्ला ना इत्ला यम, अनल निर्वार। তোমারে শীতল দেখে, জুড়াইব প্রাণ॥ (थर्मानत्न यम यन, प्रश्त रश पृत्य। তবু ভাল ভাল প্রাণ, তুমি থাক হুখে॥ আমার বিশেষ ভাব, ২ইল প্রকাশ। বুঝিতে না পারি প্রাণ, তোমার আভাস ৪ যে প্রকার ভোমার, বিরহে প্রাণ দহে। সেৰাপ কি ভূমি প্ৰাৰ, আমার বিরহে॥ ভূমি হে আমার মত, যদি প্রাণ হবে। নিদর্শন কেন ভার, দেখালে না ভবে ॥ ? ,, " আমার নিকটে সদা, আসিয়া আসিয়া। কহিতেছ কভ কথা, হাসিয়া হাসিয়া॥ দেখিয়া ভোমার হাসি, ভাসি আমি দুখে। নিরব হয়েছি প্রাণ, কথা নাই মুখে॥ যদি হে ভাপিত নহ, বিরহের বিষে। আমার সমান প্রাণ, তবে হবে কিসে? আমার বিরস ভাব, করি নিরীক্ষণ। সরস হইল কেন, তোমার বদন॥ আমার নয়ন হুটী, সদা ছল ছল। তথাচ করিছ তুমি, নয়নের ছল॥ নঃনে নয়ন দৃষ্টি, রাথিয়াছি বেঁধে। থেকে থেকে ভবু দেখে, প্রাণ উঠে কেঁদে !!

বুঝিতে না পারি ভাব,এ ভাব কেমন। আমার এ মন কেন, হইল এমন ? বলনা বিশেষ কথা, অভিলাষ মত। কত বাঁধে বাঁধাইবে, কাঁদাইবে কত 🛭 তোমার প্রেমের ফাঁদ, ফাঁদিতে ফাঁদিতে। কত কাল যাবে আর, কাঁদিতে কাঁদিতে॥ বরঞ্চ সে ভাল ছিল, না হইড দেখা। বিরলে তোমার ভাবে, কাঁদিতাম একা॥ দেখা হয়ে যত দুখ, কি করিব বোলে। দ্বিতাৰ আগুন পুন, উচিয়াছে জ্বোলে॥ ভোষার মনের কথা, বলিতে বলিতে। मार्न रुख्छ मन, खुलि**छ खुलि**छ ॥ পরকীয় প্রেমমদে, টলিতে টলিতে। এখনো করিছ ছল, ছলিতে ছলিতে॥ যাওমেনে থাক ডুমি, নিজ অন্তরাগে। এখন আমায় আর ভাল নাহি লাগে॥ রাগের উদয় হয়, মনের বিরাগে। বিছার কামড় তব, মিছার সোহাগে॥ সোহাগ ভোমার প্রাণ, সোহাগা ভ নয়। গলিবে তাহাতে মম, সোণার হৃদয়॥ ভাতএব ভোমার এ. সোহাগ বিকল। शिकारत ना कित्रिमिन, खुलिरत कित्रल ॥ ,, " কি কথা কহিছ প্রাণ, সরল সভাবে। পেয়েছি তোমার ভাশ, তোমার অভাবে॥ তবে যে মুখের হাসি, স্থাখের সে নয়। বুকের উপর দেখ, চুখের উদয়॥ পৃথিবী ভূষিতা ছিল, হয়ে ভাতি কুশা। নয়নের জলে তার, ভাঙ্গিয়াছি ত্যা ॥ র জনী রয়েছে সাক্ষি, সহিত স্থপন। যেৰূপে যামিনী আমি, করেছি যাপন।

বিশেষ সংবাদ পাবে, জতনুর কাছে। কেমনে আমার তমু, তমু করিয়াছে॥ সাক্ষাতে জিজ্ঞাসা কর, কৃত্বমের দলে। আমার দারুণ দশা, তাহারা কি বলে ॥ দেখিনি নরন মেলে, সূবাসের বাসা। আন্তাণের ভয়ে সদা, ঢেকে রাখি নাসা॥ বিধুক্তরে মৃত্ভাবে, কর বরিষণ। কখন দেখিনি সেই চাঁদের কিবল ॥ দেখ হে সমান আছে,স্থচারু চন্দন। সৌরভের ভয়ে তারে, করিনে ঘর্ষণ।। সংযোগী সম্ভোদ হয়, কোকিলের গানে। আমি হে বধীর হই, হাত দিয়া কাণে॥ মলয়ারে স্থাইলে,পাবে সব স্থির। কেমন্ আমার পক্ষে, দক্ষিণ স্মীর॥ সে যেমন প্রতিক্ষণ, পরাক্রম করে। উড়াইয়া দিই তারে, নিশাসের ভরে ॥ আর কি হে আছে প্রাণ পরীক্ষার বাকী। তোমারে প্রবোধ দিতে, সাক্ষি সব রাখি॥ তুমি কেন বুধা ভ্রমে, ভাব ভিন্ন ভাব। ভয় নাই হয় নাঁই, আমার জভাব ॥ ভবে যে প্রকাশ হাস, বদনেতে আছে i দেখিয়া নিরস ভাব, লোকে বুবো পাচে॥ উভয়ে যদ্যপি ফেলি, নয়নের **জল।** প্রবোধ পাবে না তবে, দাঁড়াবার স্থল 🛚 ছলকরি জল ঢাকি, হাসি রাখি মুখে। অগচ অন্তর দহে, নিদারুণ ছুখে॥ এখন সে ভাব নাই, হেরি তব মুখ.৷ অ্থের উদয় মনে, পলাইল দুখ 🛭 তবু যে নিরস তুমি, পুর্বভাব মত। আমারে সরস দেখি, কহিডেছ কত 🗈

জামার সরস ভাব, এই শুভিপ্রার। সভাবে সভাবে প্রাণ, আনিব ভোমায় ॥ -'' যে কথা কহিলে প্রাণ, সকলি প্রমাণ। সত্য সভ্য সভ্য সৰ, বটে বটে প্ৰাণ ॥ জানিয়া তোমার মন, আমার সমান। মিছে কেন এত ক্ষণ, করিলাম মান।। তুমি তাহা বলিয়াছ, আমি যাহা চাই'। তুমি আমি আমি তুমি ভিন্ন আর নাই॥ অতএব বিচ্ছেদেরে, কেন দিব ঠাঁই। আগুনে আগুন দিয়া, আগুন নিভাই॥ মিলনের মেঘে বহে, সংযোগের জল। এখনি শীতল হবে, প্রবন্ধ অনল॥ রুষ্ট কণা শুনে তুমি, তুষ্ট হও প্রাণ। উষ্ণজ্ঞলে করে যথা, জনল নির্কাণ।। উভয়ের মনে আর, কিচু নহে ভেক উভয়ে উভয় ভাবে, হয়ে রব এক॥ স্থচিকণ স্বেহ,ডারে, প্রেম আছে আঁটা। ছুই পার ঠেলে দিব, কলকের কাঁটা।। উচ্চরবে তৃচ্চ করি, লোক পরিবাদ। প্রথা প্রমোদে আরু, হবে না প্রমাদ॥ উভয় মনের মিল, খিল দেহ ঘরে। দুখের বাতাস যেন, প্রবেশ না করে॥ স্থির চিন্তা পালঙ্গেতে। ভাবের মসারি। স্তুথের শয়ন তাহে, শরীর পশারি॥ নিন্দক মশার পাল, বাহিরেডে থেকে। হিংসায় মরুক সব, ভন্ভন্ডেকে॥ ভাবনা চুখের গুছে, রবে অহরহ। নিদ্রার হইবে যোগা, নয়নের সহ॥ স্লদলে বল প্রাণ, উঠুক সে সব। ফুটুর ভূলিয়া মুখ, চুটুক সৌরভ।

বলুক সে ভাগরার, মৃত্ মৃত্ হাসি।
পুঞ্জে পুঞ্জে মধুভুঞ্জে, শুঞ্জে কুঞ্জে কাফি।
করক সে কুহরব, যত সাধ আছে।
বহুক মলকা বায়ু, যত শক্তি তার।
এখন তাহারে কিছু, ভয় নাহি আর॥
এখন ধরুন চাঁদ,মনোহর শোভা।
করুন নিকুঞ্জধাম, অতি মনোলোভা॥
চন্দন ঘর্ষণ করি, এক পাত্রে রাখি।
ঘেহরসে মিশাইয়া, রক্ষে অক্ষে মাখি॥
দুই অক্ষে দৃশ্য হবে, একরপ রেখা।
মন্ধ্র পেয়ে পঞ্জশর, এসে দিবে দেখা॥
সংযোগ করিব তাহে, সংযোগের বান।
প্রাণ ভয়ে পলাইবে,পাপ পঞ্চবাণ॥

---

বিলাতের টোরি ও ভূইগ সম্প্রদায়ের পরস্পার গোলীযোগ।

কিছুমাত্র নাহি জানি,রাম রাম হরি।
কারে বলে রেডিকেল,কারে বলে টরি॥
হুইগ কাহারে বলে,কেবা ভাহা জানে।
হুইগের অর্থ কভু, গুনি নাই কাণে॥
টরি আর হুইগের,যে হন্প্রধান।
আমাদের পক্ষে ভাই, সকল সমান॥
গুনে করি গুনগান, দোষে দোষ গাই।
শুধু সুবিচার চাই, শুধু স্থবিচার চাই॥
আমাদের মনে আর, অন্য ভাব নাই।
শুধু স্থবিচার চাই॥
১ ৪

লিতান্ত অধীন দীন, এদেনের লোক।
শক্তিহীয় অভি ক্ষীন, সদা মনে শোক॥
রাজ্যের মঙ্গল হেডু, ব্যাকৃল সকল।
প্রাজ্যেন প্রীতিক্ষণ, রাজার কুশল॥
চাতকের ভাব যথা, জলদের প্রতি।
সেরপ রাজার ভাব, আমাদের প্রীতি॥
যাহাতে দেশের স্থ্য, চিন্তা করি তাই।
শুধু স্থবিচার চাই, শুধু স্থবিচার চাই॥
শুধু স্থবিচার চাই। ২॥

চারিদিকে যুজের, অনল রাশি জ্বল।
নির্বাণ করহ ভিন্তু, সন্ধিরপ জলে॥
রণরঙ্গে প্রাণিনাশ,বিষাদের হেতু।
বিবাদ সাগরে বান্ধা, ঐক্যরূপ সেতু॥
সন্ধিযোগে দান কর, শান্তিগুণ রস।
প্রথিবীর লোক যত, প্রেমে হবে বশ॥
প্রশংসা প্রজ্পের গন্ধা, বাবে স্বর্গ ই।
শুধু স্থবিচার চাই, শুধু স্থবিচার চাই॥
'আধাদের মনে আর, জন্য ভাব নাই।
শুধু স্থবিচার চাই।

পরিবর্ত্ত কর সব, নিয়মের দোষ।
যাহাতে হইবে বৃদ্ধি, প্রজার সন্তোষ॥
জন্ম কর্ম ধর্মা রীতি, জাতি জার দেশ।
কোন ৰূপ কেনে পক্ষে, নাহি থাকে দ্বেষ॥
নির্মাল নয়নে কর কুপাদৃষ্টি দান।
এক ভাবে ভাব মনে, সকল সমান॥
মাঙ্গলিক সব কার্য্যে, স্বেছ যেন পাই।
শুধু স্থবিচার চাই, শুধু স্থবিচার চাই॥

আমাদের মনে জার, জন্য ভাব নাই। শুধু স্থবিচার চাই॥ ৪॥

চুজ্জন তক্ষর ভয়ে, ভীত লোক সব।
চারিদিকে উঠিয়াছে, হাহাকার রব॥
ধনিকপে থাতাপন্ন, জমীদার যারা।
নীলামের শক্ত দায়ে, মারাযায় তারা॥
শমনের সংহাদর, নীলকর যত।
ধনে প্রানে প্রজাদের ছুখ দেয় কত॥
জত্যাচার দেশে যেন, নাছি পায় ঠাই।
শুধু স্থবিচার চাই॥
আমাদের মনে আর, অন্য ভাব নাই
শুধু স্থবিচার চাই॥ ৫॥

# তত্ত্ব প্রকরণ।

প্রভাকর নিজকরে, কত প্রভাকরে।
জগতের সমুদর অল্পকার হরে॥
গগনে হইলে সেই, নাথের উদয়।
কমল তামল ভাবে, প্রকটিত হয়॥
মরি কিবা সরোকর, শোভা মনোহর।
বধুসহ মধুথায়, বঁধু মধুকর॥
অন্তাচলে গেলে পর, সেই দিবাকর।
আকাশ আসনে আসি, বসে শশধর॥
যামিনী কামিনী তার, প্রেমভাব ধরে।
সথী যারা ভারা তারা, চারু শোভা করে॥
কুমদ প্রমোদ হেতু, প্রেমদের আশে।
তামোদ প্রমোদ ভরে, প্রেমজলে ভাবে॥
চকোর নিকর ভাবে, দূর করে কুধা।
হেলায় থেকায় স্থেপ, পান করি সুধা॥

এইবাপে শলী স্থা, উদয় অধীন। দিন গতে রাজি হয়, রাজি গতে দিন॥ রাত্রি দিন দিন রাত্রি, প্রভাত প্রদোষ। ক্রমে ক্রমে ধ্রন্য করে, আয়ুর কলস।। গ্রহরাশি সমুদয়, তিথি পরিক্রমে। বার বার আফে যার, যহার নিয়মে॥ রীতিমত হ্রাস বৃদ্ধি, দুশ্য সবাকার। নির্ম লঙ্ঘন করে, সাধ্য আছে কার ॥ মূলস্ত্র বেধি হেডু, সার প্রণিধান। মনবুদ্ধি অহস্কার, যে করিল দান॥ বাহাতে নীমাংসা কম্পে, জ্ঞানের উদয়। স্প্রীর কৌশল সব, অনুভব হয়॥ বোধ ৰূপ ভানলেতে, ভ্ৰাম্বিন দহে। তামি আমি আমি বুদ্ধি, আর নাহি রহে। জলবিষ সমভাব, আমি জলগামি আমি কিন্তু আমি সেই, ভিন্ন নই আমি ॥ এভাবের কর্ত্তা যেই, কর্ত্তা নাই যার। সেই প্রভু তাঁর পদে, প্রণান আমার ॥

# পরমার্থ তত্ত্ব।

সংসার কুহক কাচে, বিষয় বিষম।
কৈনে কেন ভ্রমে খাও, বিষয় বিষম।
দেহ গেই নরদার, সুন্য বটে তিন।
প্রপঞ্চ তাহাতে প্রঞ্চ, পঞ্চাই লীন॥
পাঁচেতে ব্যাপক স্কুল, শিখিয়াছি শুনে।
সে পাঁচ প্রভেদ আছে, পাঁচে পাঁচে গুলে॥
নিদ্রালস্য কুষা ভৃষ্ণা, লজ্জা ভয় আর।
ক্রমেতে উদ্ভব পাঁচে, পাঁচিশ প্রকার॥

পাঁচের দেখিয়া ভিন্ন, পাঁচ ভাব ছিন। পঞ্জায় ঘেরে আছে, সকল শরীর॥ अकामरण मश्रमन, के खदत्र सारन। দশেন্ত্রিয় চুই ভাগ, কর্মা আর জ্ঞানে। নাসিকা বসনা ত্বক, প্রবণ লোচন। জ্ঞানেন্দিয় এই পাঁচ, শাস্ত্রের বচন॥ পদোপস্ত পানি আদি, কর্ম্মেতে নিয়োগ। অকার ব্রহ্মাণ্ড বিশ্ব, স্থলকপে যোগ॥ মনবৃদ্ধি দশেন্তিয়ে, পঞ্চ সমীরণ। তৈজ্ঞ শরীর স্থান্ম, অপঞ্চী গঠন॥ উক্ত তুই দেহ নানা কৰ্ম্মের কারণ। ভাপুর্বর মকার প্রাক্ত, শরীর কারণ॥ উক্ত তিন তমু আছে, তিন ভাগে ছেদ। সুষপ্তি জাগ্রত স্বপ্ন, ত্রয়াবস্থা ভেদ॥ ধরাকাশ যুক্ত কিন্তু, নানা কলধরে। কলে চলে কলেবর, প্রাণবায়ু ভরে॥ বাতাস হইয়া রুদ্ধ, হত হবে বল। त्म कल विकल इरल, विकल मकल। অতএব রাখ মন, পরতত্ত্ব প্রথা। কলের মুরাদ ছোয়ে, বল কর বৃথা॥ लावना विभिष्टे वर्षे, खनम महीत। কখন বিনাশ হবে, কিছু নাই স্থির॥ তুমি নহ ফলিতার্থ, পথের পথিক। কেমনে বুঝিবে সার, দেহের গতিক॥ পদাদল জল তুল্য, জীবনের গতি। বিশ্বাস না হয় কভু, নিশ্বাসের প্রতি॥ দেহের বিচিত্র শোভা, নষ্ট হয় ক্রমে। অস্ত্য জগতে কেন, সত্য বৌধ ভ্রমে॥

# শুদ্ধ পত্ৰ।

<b>श्रुक्त</b> ।	क्षेत्र ।	পংক্তি	- ভাশ্বৰ	39
		\$ <b>5</b>	নিৰূপন ।	নিক্সম !
<b>₹</b>	٠ چي	६२	কপাল।	ক <b>লাপ</b> ।
<b>3</b>	⊸. ২	₹8	প্রাণিও।	अवि ।
500 S	5	\$	পরিচিচ্ছত:	পরিচচ্নতা।
2/9/8	G	৯	যোগিকর।	জ্যোতির ৷
٠ <u>٠</u> .	2	39	ব†স:লয় :	ৰাসা লয়।
બ બ્રે	÷	\$5	সীত।	শীত।
् अ	2	25	পৃথীবীর।	পৃথিৰীর।
	5	5 <b>&amp;</b>	পাঠতেছে।	পাইতেছে।
\$100 B	<u>)</u>	56	শ্বতু।	শ্বতু। — — — :
<u>.</u>	2	8 ج	রহিয়ায়ছ।	রহিয়াছে :
	<b>&gt;</b>	ja.	ভাহার।	ভ†র ।
ુજ્છ જે	2,	\$15	कारशतरिय !	জ্বপরাদে।

# কবিতাবলী।



মহাকবি

মহাত্মা ঈশ্বরচন্দ্র গুপ্ত মহাশয়ের বিরচিত কবিতার সার সংগ্রহা

-:0:-

मक्षम मध्या।



কলিকাতা। প্রভাকর যন্ত্রে মৃদ্রিভ।

जन ১২৮० जांस।

### তত্ত্ব প্রকরণ।

## যিনি যাহা করুন, কিন্তু তত্ত্বজ্ঞান ভিন্ন মুক্তি হইতে পারে না। পদ্য।

সাংসারিক কত ক্লেশ, করিতেছ ভোগ।
মনে মনে এই বোধ, শিক্ষা হবে যোগ॥
স্থানের বাসনা যত, করি পরিহার।
নিরাহারে কতু থাকে, কভু নীরাহার॥
ইচ্ছাধীন আহার না, চাহকারো চাঁই।
এরপ সাধনা করি, কোন ফল নাই॥
ভালদের মূখ চেমে, গগনেতে থাকে।
ভানা যায় সচিক, ফটিক জল ডাকে॥
প্রাণান্ত মহীর নীর, কভু নাহি লয়।
চাতক চাতকী তবে, যোগী কেননয়? ১

বা হাক বিষয়ে প্রায়ন বাসনা বিহীন।
লোকের সমাজে তুমি, সাজিয়াছ দীন॥
ভাজিয়াছ নসন, ভূবন চারু বেশ।
উলক্ষ সয়াানী হয়ে, জম দেশ দেশ॥
পরিক্রদ পরিহারে, প্রাক্ত হলে পর।
উদ্ধার হইত কত, খেচর ভূচর॥
ফেচ্চাধীন চিরদিন, যথা তথা জ্যে।
ক্রখ ভোগ আতিশ্যা, নাহি কোন ক্রমে॥
লজ্জাহীন দিগম্বর, নিজ ভাবে রয়।
বনের গর্মন্ত তবে, যোগী কেন নয়? ২

সেচ্ছাচারী ইয়ে তুমি, স্বেচ্ছাচার ধর।
খাদ্যাখাদ্য কিছু নাহি, বিবেচনা কর॥
ঘূলা হত, হথে রত, স্থমত প্রচার।
কোনমতে নাহি কর, আচার বিচার॥
ঘাহা ইচ্ছা হথে ভাষা, করিছ ভক্ষণ।
ভক্ষণী কখন নয়, যোগের লক্ষণ॥
আহারের লোভে সদা, নেড়ায় ঘূরিয়া।
ঘাহাপায়, ভাহাখায়, উদর পুরিয়া॥
ভক্ষ্যাভক্ষ্য বিচারেতে,ঘূলা নাহি হয়।
দূকর দুকরী তবেং যোগী কেন নয় ? ৩

শরীরের সমুদয় লোমকুপ তেকে।

দিবানিশি থাক তৃমি, ছাই ভক্ষ মেখে॥
বড়ছটা ঘোরঘান, ভক্ষমার জাঁক।
মানো মানো উচ্চরনে, ছাড়িতেছ ডাক॥
ভ্রম হেতু ঘোগতত্ত্বে, হারারেছ দিশে।
ডেকে ডেকে ছাইমেখে, যোগী হবে কিনে?
ভক্ষমাথা কলেবুরর, দুশ্য ভরক্ষর।
ভয়ে কাঁপে থরথর, দেখে যত নর॥
থেকে থেকে ডাকছাড়ে, ভক্মমানো রয়।
কুকুর কুকুরী তবে, যোগী কেন নয়? ৪

শীত গ্রীষ্ম সহ্য কর, নিক্স দেহ বলে।
তৃথ গোধ নাহিমান্ত, রোদ্র আর ক্সলে।
জল আর তৃণফল, করিয়া আহার।
তপসাধ চিরকাল, করিছ বিহার।
সমভাবে সহ্য কর, সকল সময়।
তপস্থীর এই যদি, সত্যধ্যা হয়।
তৃণ জল থায় শুধু কাননে বসতি।
হিৎসামাত্র নাহি করে, সদা শুদ্ধাতি॥

भीए, ऑ'फ़, त्योम, बहार भट्ट अहुएर वदमत इतिन ७८० रण नी दहर राष्ट्र र

শিবতুলা কিংন ব ল, বলিং নিজ হাবে কালা কুৰু, বাধাকুজ ল'বাকুষ লবেধন দেবদেবী নাম কাৰ, নবে প্রতি লি তাল উচিচেল্যেবে শিয়োক ল'বে কিং পাল কিং পাল কিন্তি কি ল'বেল কিংল কিং পাল কিং পাল ক্ষে বাম মুখে বলি, লাক কালা প্রতি ল মুক্তিপদ প্রাপ্ত হতে, লিক্স সেব রাধাকুষ্ণ শিবেদের সেনা মুখে ব

মি হিংনী হও তুমি লেইবাছ তেব ছটী ভাই প্রেলুপ্রেম, হংশে অভিনেক। সঙ্গতের সঙ্গতের পিজতে বিনিধা। অধর জামৃত খাও, বিনিধা রিনিধা। পত্রে পত্রে এক কবি প্রেলুপ্রেম বার। উচ্চিষ্ট আহার কবি, বাহু তুলে নার। আহাব দেখিলে পবে, সম্বেথিত থাকে। লাঞ্জুল বিস্তাব কবি, মেও মেও দেকে। পাতের উচ্চিষ্ট খেষে, মনে ভুটান্য। গুগাঁর বিভাল ভবে, ধোহী কেন নাই প

রক্ষ দিয়া অক্ষবার্গ, অক্ষ স্থানে হিছে।
দেখে হয় মানুষের, মানস মোহিত।
শিষ্টবেশ হত কেশ, তাপৰাপ ভাব।
সমুদ্য শ্রীরেতে, প্রিপুর্ণ ছাব।

নাদিকি বৈ চিত্র কবা তাহে বসকলি।

ব লাগ ত্রিকাঠি বাহ্ম নাথে নামাৰলী॥

া ছাব নেবে ভাব জন্বি, তাহে কিবা কল।

তিলক কৃত'ল নহে, মুক্তির সম্বল॥

বিচিত্রে কবিলে দেহ, যোগী যদি হয়।

মহৰ মধ্বী তবে, যোগী কেন নহ বিল

প্রজা থেম, যজ্ঞ, যাগ,নানারপ জিলা।
গঙ্গা ভীনে গুমধাম, কোষাকৃষি নিবা।
গুল ভাল লান কবি, প্রজায় নিবেশ
নাল শন প্রজান, কবিংছি শেষ।
গিভলেন গোপালের প্রম জানব।
নিমাণ করছ শিব কাটিয়া পাপর।
লইন পিত্র থভ, মাধাও চন্দন।
মনে মনে ভার তাহ, নন্দের নন্দন।
ঘ টিব প্রেয়ব কাসা, যোগী যদি হয়।
কাসারি ভাক্তর ভবেন যোগী কেন নয় ? ১

সংখদুখ বিজু নক, বোধ নাই মনে।
সমভাবে একা ভুমি, বাস বর বনে॥
দিবানিশি ধবাসনে মদিয়া নহন।
কটক ভ্বেব পুঠে, স্থেতে শ্যন॥
বোপনে নিবিড স্থানে, আছু মাত্র একা।
মান্ত্রেব সঙ্গে আবি, নাহি হয় দেখা॥
একাপ বিবল ভাবে, বাস করি বনে।
সিদ্ধা হয়ে বিভু পায়, ভ্রমমাত্র মনে॥
বিষত নিউজন হয়ে, বনশাসে বয়।
ভালুক শাদ্দুল ভবে, যোগী কেন ন্য? ১০

শরীরে বিশেষ চিহ্ন, করিয়া প্রকাশ।
বাহিরে জানাও স্বীয়, ধর্ম্মের আভাল॥
বাধ্য করি নিজ মতে, বন্ধ করি দল।
বিস্তার করিছ ক্রমে, যত যুক্তি বল॥
ধর্মের স্থচনা করি, নাম হলো জারি।
নানারপ গীতবাদ্য, আড়ম্বর ভারি॥
সাধনায় সাধুভাব, স্বভাবে সরল।
ভিন্ন এক চিহ্ন ধরি, কিছু নাই কল॥
ভোল মেরে গোল কোরে, জ্ঞানী যদি হয়।
নটা নট, যাত্রাকর, যোগী কেন নয়ঃ ১১

-91010

তত্ত্ব প্রকরণ। একাবলী চ্ছন্দঃ।

ওহে মধুকর, কর কি আশা। কেৰ ভবে তব হয়েছে আসা? বেমন ভাবিবে, তেমন হবে। ভাবিহে ভোমার, ঘোষণা রবে ॥ কর মধু জাশা, চরম পদে। প্রমার্থ কলি, দলোনা পদে। সংসার কেডকী, ভাহা কি চাও ? অন্তর রাজীব, পশ্চাতে চাও॥ একান্ত বাসনা, মান্তিও করে। নিভান্ত কমলে, প্রফুল করে॥ হোলে ফুল ফল, প্রমোদ ত্রাণ। लाटल मधुनिर, वाँहिटन खान ॥ खरम मधुशैन, कलेकी कूला। গেলে অন্ধ হবে, পরাগ কুলে॥ পাতকী কেতকী, শুধুই ছাৰ। পড়িলে তাহাতে, নাহি হে ত্রাণ॥ অসি সম ধার, প'তার তার। পক্ষ ছিন্ন হবে, বলি ছে নার ॥ থাকিতে যাইতে, না পারে মন। এহেতু নিশ্চয় কর হে পন। প্ৰেয় কেত্ৰীর, পাশে না যাবে। শ্ৰেষ্ট্ৰঃ পদ্মিনীতে, সম্ভোষ পাৰে ॥ নিতা মধু পেয়ে, তাজ না ওছে। বুখাজন কেন, সংসার মেতে॥ সোরভ গৌরবে, বিষ প্রস্থান। আছুয়ে বৰ্দ্ধিত, বলি হে শুন।। তার তার পেলে, না হবে ভুল। ভব ঘুরে যার, না পাবে ভুল॥ অভ এব বলি,শুন হে সার। পক্ষজের পর, লহ হে তার॥ কত শত অলি, ভ্রনিছে তথা। সাধু সাধু বলি, কহিছে কথা।। নাহি শোক মোহ, কিছুই কার। প্রমার্থ ভারি, গলার হার ॥ এক যাত্র সেই সভ্য বিধান। করে। মত্য পণ, মনেনিধান॥

যৌবন। ত্রিপদী!

সিঞ্চিয়া অমৃত নিধি, জীবে দান দিল বিধি,
নিজ্ঞপম যৌবন বৌতুক।
যে রতন হারাইলে, কোটিকপ্পে নাহি মিলে
কালকূট কালের ক্রেতুক॥
দিনেয়া স্থমস্ত মনি, যৌবন রতন গনি,
তরনি তুলিতে ডেজ যার।

থরতর কর ভরে, হাদয় রাজীব বরে, ফুলকরে হরে জন্ধকার। আনন্দ হুন্দর গন্ধ, রস তায় মকরন্ধ, छेल छेल करत नित्रस्त । ি বিবিধ প্রবক্ষে তায়, কেলি করে ফুল্ল কায়, রস-খার মনঃ মধুকর॥ নৃত্য নবরস রজে, নিত্য নবরসে মঞে, নৃত্য করে পশিয়া নীরজে। কভু পরিহাস লাস্য, হাস্যে বিকশিত হাস্য, প্রতি অঞ্চে আনন্দ উপজে॥ कथन कक्षण तरम. नयुन मौत्र ब्रह्म, হরিষে বরিষে বারিধার।। সেই ধারা ভারাকারা, শীতল যাহার ধারা, ধরা তাপ হরা যেন ধারা॥ কখন ঘূণার বশে, বিকল বীভংস রসে, মানসের শশ প্রায় গতি। मार्गामाल मधा दन, कुन एक कुत्रक गन, চপল চপলা সম তাতি॥ প্রণয় পরম রঙ্গ, তাহে হলে আশা ভঙ্গ, প্রবৃত্তি পিপাদা পরিশেষ। ভাল বাসা ভাল বাসা, তাহে পেয়ে ভাল বাসা, আনন্দের নাহি থাকে শেষ॥ প্রথমেতে বাড়াৰাড়ি, তারণার কাড়াকাড়ি, অবশেষ ছাড়াছাড়ি মাত্র। विषय वित्र वाथी, यत्नी जाता के कथी, খেদানলৈ প্রড়ে উঠে গাত্র॥ হু ভালে হতাল বাড়ে,বিলাপ প্রলাপ পাড়ে, শোচনা প্রেমিক মন ছেরে। শ্রান্তি নাহি হয় হত, ভ্রান্তিতরে অবিরত, नकन अभन नम (२८ मा

পরেতে প্রবোধ লয়ে, প্রণয়ে বিরাদী হয়ে,
অন্যল্প ভাব পথে ধায়।
প্রণয়ের হভাদর, নির্থিয়া নিরস্তর,
ক্রমে ক্রমে থৌবন পলায়॥
হেরিয়া যৌবন অস্ত, মন সদা ছুখ গ্রস্ত,
নিরস্তর আনন্দ বিহীন।
ক্ষুধায় ভ্রমরা ক্ষুন্ন, শতদল শোভা মূন্য,
প্রদোষের প্রমাদে মলিন॥

-1010

রপক।

প্রেম প্রকরণ।

যথার্থ প্রেমের পথে, প্রেমিক যে জন। নির্দাল জলের প্রায়, স্বিদ্ধা তার মন॥ শুদ্ধ ভাবে থাকে শুদ্ধ, আপনার ভাবে। প্রিয়ন্ত্রনে প্রিয়ভাবে, তাপনার ভাবে॥ সরল সভাবে পায়, সন্তোষের মুখ। ভ্রমে কভু নাহি দেখে, ছলনার মুখ। রসের রসিক সেই, পরিপূর্ণ রসে। ভুগন ভুলার নি**জ,** প্রণয়ের বশে॥ ভাব তুলি ক্ষেহে তুলি, রঙ্গে রঞ্চ মটে। মিত্রৰূপ চিত্র করে, হৃদয়ের পটে॥ মুখময় শুক্পক্ষী, ভাল ভালবাসা। মানস বুক্ষেতে ভার, মনোহর বাস।॥ প্রতিক্ষণ প্রতীক্ষণ, অনুরাগ কলে। পড়া পাখী না পড়াতে, কত বুলি বলে॥ তাঁখির উপরে পাথী, পালক নাচায়। প্রতিপক্ষ প্রতিপক্ষ, বিপক্ষ নাচায়॥ প্রেমের বিহঙ্গ ফেই, ভালবাসি মনে। আদরে পুষেছি তারে, হৃদয় সদৰে॥

পোষদানা পড়া পাখী, দরিদ্রের ধন। সাবধানে রাখি কত,করিয়া যতন ॥ পোড়া লোকে পাপচক্ষে, দৃষ্টি করে তারে। আর আমি কোনমতে, দেখাবনা কারে॥

### ভাব ও প্রণয়।

নানা হতে সদা যুক্ত, মাহুদের মন। স্থিরশ্বপে নাহিপায়, স্থাখের আসন॥ চিত্তের চঞ্চলগতি, স্থিত কত্ন নর। কত ভাবে কত ভাবে, ভাবের উদয়॥ চিন্তাৰপ সমীরণ, বহে প্রতিক্ষণ। ভাবরভ্জ দোলে দোলে, স্থির নহে মন। একভাবে এক ভাবে, আরভাবে আরু। ভাবে ভাবান্তর ভাবে, ভাবের সঞ্চার॥ লজ্জা করে আচ্চাদন, বাসনার মুখ। কেসনে হইবে তার, প্রণয়ের স্থখ। ফটিলে প্রবিষ্ণার, সুখলাভ যাতে। প্রতিবাদী প্রতিকূল, কত কাঁটা তাতে॥ কলক কুরবগলা, কুটিলের মুখে। আশায় হাসায় লোক, ভাসায় অহুখে॥ প্রেমিকের প্রেমমদে, মন যদি টলে। কলক ফুলের হার, অলকার গলে॥ ভালবাসে ভালবাসা, ভালবাসা ভার। তখন কি করে আর. লোকের কথায়॥ শক্র সব সরল স্বভাব, নাহি ধরে। পদে পদে প্রেমপথে, পরিবাদ ধরে॥ না হয় ভাবের বশ, সদা রস হত। রসিকের মন ভাঙ্গে, অরসিক যত॥ যার নাই রস বোধ, সে করে ভাষণ। জামি কেন নিজ রসে, হইব বিরস।

প্রিয়জন আনারে, আমার যদি কয়।
সরসে বিরস ভাব, তবে আর নয়॥
গোষ্ঠে করে গোচারণ, গোপাল যে জন।
গোপনে গোপীর ভাবে, বন্ধ তার মন॥
তরস্থ বয়স চারু, নবীন ক্রিভঙ্গ।
যমুনার তরঙ্গে, করিল কত রঞ্গ॥
রাধিকার অধিকার, মনেতে চাহিয়া।
তরুণী করিল পার, তরণী বাহিয়া॥
দানী হয়ে দানসাধে, কত ছল করি।
যোগী হয়ে নানসাধে,শিরে জটাধরি॥
তাত্রব প্রেয়রসে, মুঝা গেই ইয়।
ক্টিলের বাক্যে তার, কলক্ষ কি হয়॥
অদৃশ্য শরীর সব, ভাগিছে চিকুর।
ভ্বিয়াছি দেখিব, পাতাল কতদুর॥

#### -

### লোভ।

পাণের তনয় লোভ, অতি ভয়য়র।
বাপের মঙ্গল হেডু, ফেরে নিরন্তর॥
প্রেকট বিকটাকারা, হিংসা দারা তার।
চকিতে চমকে লোক, নাম শুনে তার॥
প্রতিক্ষণ প্রিয়পন্ধী, সঙ্গে রঙ্গে রাখে।
ধরিয়া যুগল ৰূপ, প্রেমভাবে থাকে॥
স্ত্রীপুরুষ এক হংফ, স্পর্শ করে থারে।
ভানাদরে অপমানে,প্র্ণ করে তারে॥
লোভের ভনয় দেষ, দেশথাভ যেটা।
বাপ্রে বাপের চেয়ে, বল ধরে সেটা॥
এমন বিষম লোভ, থাকে যার মনে।
সজ্যেষ না হয় তার, পৃথিবীর ধনে॥

পাইলে প্রাচুর ধন, কোন্ড নাহি ছাড়ে।
পারের অনিষ্ট হেতু, জন্তিলাম বাড়ে॥
উপকারে উপকার, নাহি খাকে বোধ।
দ্বেরর সহিত সদা বৃদ্ধি হয় ক্রোধ॥
ক্ষোন্তের উদয় হয়, লোভেরে দেখিয়া।
ক্তজ্ঞতা মহাধর্মা, পলার ছুটিয়া॥
লোভির ছাদয় শুধু, হিংসানলে দহে।
আত্ম পর বোধাবোধ, কিছু নাহি রহে॥
অত্মব মন ভায়া, স্থির বৃদ্ধি ধর।
সন্তোষ সহায় করি, লোভ পার্হর॥
অন্য লোভ নপ্টকরে, আহ্লাদের আলো।
ক্ষার সাধনা লোভ, সেই লোভ ভাল॥

## বারু চণ্ডীচরণ] সিংহের খুফধর্মান্তরক্তি।

---- 0 ---

লেখাপড়া শিখিয়াছ, তুমি নও শিশু।
অভএব মিছা অমে, কেন ভ্ৰম যিশু॥
সবিশেষ জান সব, সনেমাত্ৰ এক।
ভিন্ন ভিন্ন যতদেখ, সে কেবল ভেক॥
পেয়েছ নিৰ্মাল নেত্ৰ, জানিয়াছ দেখে।
শুভাবে বৈক্ষন জাতি, কি করিবে ভেকে॥
রাগেতে বিরাগ করি, মিছুছ লও ভেক।
প্রবল কুপ্তর হয়ে, কেন হও ভেক॥
রহিল কলক অক, প্র্নিমার চাঁদে।
জেনে শুনে দিলেপদ, অধ্যের ফাঁদে॥
হঠাৎ একপ কেন, বৃদ্ধির বিকার।
শুমুখে শীকার করি, হইলে শিকার॥
ফিকিরি শিকারি ভার', ধরিয়াতে হাতে।
এখনি করিবে গ্রাস, রক্ষা নাই ভ'তে॥

বিষম পাপের ভোগ, খণ্ডিবে কেমনো ইচ্চায় দিয়াছ হাত, সাপের ক্রনে॥ জুর জুরাকলেবর, ভুজক্ষের বিবে। বুথা করি জলসার, রক্ষা হবে কিসে॥ পাপারত্যে কেন গেলে, হয়ে তুরাশর। বাঘের কি মনে আছে, গোবধের ভয়। লো ভী কি পাইলে খাদ্য, রুদ্ধ করে মুখ? পরদ্রব্য গ্রহণে কি, চোরের অমুখঃ সম্মুখে ইন্দুর মীন, যদি হয় লাভ। বিড়াল না ধরে কভু, বৈঞ্চবের ভাব ॥ শব আদি মাংস খণ্ড; পাইলৈ প্রচুর ! ভক্ষণে কি কান্ত হয়, শুগাল কুকুর ? কুলটার কুটিল, কটাক খরশরে। লম্পট কি কতু ভাই, শাস্তিগুণ ধরে ? যেখানেতে ভ্রাদ্ধ আদি, দলাদলি ঘোঁট। ভবানী কি সেখানেতে, করেনাকো চোটনা যেখানেতে দান প্রদা,রজত মণ্ডিত। সেখানে কি নাহি যান, ব্ৰাহ্মণ পণ্ডিত হ যেখানেতে বালকের, নিপরীত মতি। সেখানেই মিসনরি, বলবান জতি॥ পাতিরা কুহকী ফাঁদ ফেলিয়াছে পেড়ে। এমন মুখের প্রাস, কেন দেবে ছেড়ে ॥ গাচপাকা মৰ্ত্তমান, বৰ্ত্তমান চোকে। বুদ্ধি দোষে ছেড়ে দিয়ে, কেন যাবে ফোকে। ভূমি ত স্থবোধ চণ্ডী, বৈঞ্চবের ছেলে। কোথা যাও মনোহর, মাল্সাভোগ ফেলে॥ হিন্দু হয়ে কেন চল, সাহেবের চেলে। 🔻 উদরে অসহ্য হবে, মাংসমদ খেলে॥ ক্ষীর সর ননী খেয়ে, বুদ্ধি কর কায়।। বিধর্ম ভোবার জল, খেয়োনা হে ভায়া॥

যদ্যপি আহার হেজু,ইচ্ছা ভোর হয়। আয় ভাই যরে আয়, কিছুন!ই ভয়॥ কত কারখানা করে, খেতে দিব খানা। গোটুহেল ডোনকের, কে করিবে মানা॥ সরপোট বোসে খার, খুসি মের: খুসি। यित (कंष्ट्र किছू बटल, धरत (मश्री घुनि॥ আহার বিহারে ভাই, ভয় কার কাছে। ধর্মসভা নাহি লয়, ব্রহ্মসভা আছে ॥ আপন বিক্রমে হব, রুসীয়ার কিং। টেবিলে বসিব খেতে, হাতে দিয়া রিং॥ গায়ত্রী করিব পাঠ, প্রতি বুধবারে। পাব নিত্য চিত্তৰাপ,শরীর আঘারে॥ জ্ঞান ভাঙ্গে কেটেদেহ, মারাৰূপ গভী। खमनर् प न ही इरह, (कन इन्ड म ही। 'পুৰ্ব্বৰৎ হিন্দুহত, যিশুমত খণ্ডী। হাড়িবী চণ্ডীর তাজ্ঞা, ঘরে আয় চণ্ডী॥

জীব।

এই অবনীমগুলে বিবিধ পথাবলম্বী মানবমগুলী স্ব স্থ দেশবিহিত
আচার ব্যবহার ও পারলোকিক
সাধন, প্রধানরূপে জ্ঞান করত
তদবলম্বন পূর্ব্ধক দেহযাত্রা নির্ব্ধাহ
করণে যত্নশীল হইতেছেন।—যিনি
যে পথে ভ্রমণ করুন, যে বাক্য
উচ্চারণ করুন,—যেরূপ আচরণ
করুন, অথবা যেরূপ ব্যবহার করুন,

যাহা করুন, কিন্তু সকলেরই উদ্দেশ্য এক মাত্র---সকলেই কেবল সেই সর্বজীবের আদি কর্ত্তা এক অদ্বিতীয় পরম পুরুষ পরমেশ্বের পরম পবিত্র প্রীতি পথের পথিক হইতে ইচ্ছা করিতেছেন। সকলেই সেই করুণা-করুণাসাগরে অবগাহন <u>শাগরের</u> করণে অনুরত হইতেছেন।এই জগতে প্রায় কেছই যথাসাধ্যক্রমে পুরুষার্থ সাধনে বিরত নহেন।—কিন্তু কি অযোগ্য, হুর্ভাগ্য !—সরল স্থপথ কাহারো দৃষ্টিপথে দৃষ্ট হয় না। এতদ্বিষয়ে পূর্ব্ব পূর্বে সাধু সদাত্মা সর্ব্বজ্ঞ জনেরা নানা উপায় নির্দ্দেশ করিয়াছেন, ক আশ্চর্যা। সেই সমস্ত মহতুপায় সত্ত্বেও জীব সকল ভ্রম বশতঃ জগদীখরের মায়াকুহকে পতিত হইয়া সাংসারিক সুখকে পরম সুখক্ষ্ব পরম পুরুষার্থ জ্ঞান করিতেছে, এ সুথ যে, কি অসুথকর, তাহা কেছই বিবেচনা করে না---কেবল এই মাত্র দেখিতেছি যে, তাবতেই পরব্রহ্ম বিষয়ে বিমুখ হইয়া এই অনাদি সংসারে ত্রিগুণ নদীর **ভোতে পড়িয়া শুদ্ধ উদ্ম**ক্তন নিমক্তন

রূপে কাল্যাপন করিতেছে। ইহার প্রধান কারণ এই যে, জাল্মবোধ কাহারো নাই। হায় কি বিচিত্র! যে ব্যক্তি আপনাকে আপনি জ্ঞাত নহে, সে ব্যক্তি কি প্রকারে গুণাতীত সর্বপ্রধায় নিগুণ পুরুষকে জ্ঞাত হইতে পারিবে ? অতএব সর্ব্বাগ্রেই সর্বজীবের জাল্মবোধ করা অতি অবশ্যই আবশ্যক হইয়াছে।

হে জীব !---- ভূমি মনে করিতেছ, '' আমি ব্রাহ্মণ, বেদজ্ঞ। আমি সংকুলীন, পণ্ডিত। আমি শ্রোত্রিয় গোষ্ঠিপতি। আমি গৌর, অতি সুরূপ, আমি স্থূল, আমি বলবান,---জামি ক্ষত্রিয়, আমি বৈশ্য, আমি শূর্ত্ত,,---এইরূপ আমি আমি করিয়া কতই অভিমান এবং কতই অহস্কার করিতেছ,—কিন্তু এে সকল কেবল তোমার ভ্রমণাত্র।—কুরণ " তুমি,, যে এক ''পদার্থ,, সে পদার্থ কি ?— " জুনি পদার্থ ,, যিনি " তিনি ,, পুরুষ নহেন, জ্রী নহেন-নেশুংসক নহেন—তিনি ত্রাহ্মণ নহেন—ক্তিয়, रेवना नरहन- ७ मृख नरहन ।--তাঁহার জাতি নাই।—তিনি সূল

नटहन---कींग नटहन----(गोत नटहन, --- কৃষ্ণ নহেন।---ত্রান্ধণ, ক্ষত্রিয়, বৈশ্য, শৃদ্ৰ,—কুলীন, শ্ৰোত্তিয়-— भीत, क्रयः, ञ्रूल ७ कीन, এ मकल কেবল দেহধর্মাত্র ৷— তুমি অভেদ বুদ্ধিতে এই দেহের মধ্যে বাস করি-তেছ, এজন্য এই সমুদয় দেহধর্ম----আরোপমাত্র হইতেছে। তোগতে এইফণে যদিস্তাৎ তুমি স্বীকার ভ্রম ছাড়িয়া এই শরীরে পরকীয় বুদ্ধি কর, তবে তুমি আর কথনই দেহধর্মে আক্রান্ত হইবে না—তাহা হইলে তুমি বথাৰ্থই—" তুমি ,, হইবে—-কেন না অহন্ধার আর তোমার উপর অহস্কার করিতে পারিবে না---অভি-মান অভিনান পূর্ব্বক পলায়ন করিবেক, ভ্রমের বিষদ ভ্রম হইবে, ভ্রম আর এ পথে ভ্রমণ করিতে পারিবে না।

তুমি বিবেচনা করিতেছ, "এই দেহ, আমার দেহ, আমি কি রূপে এই দেহে পরকীয় বুদ্ধি করিতে পারি ? ,, জীব হে! তোমার এই উক্তি শিবকর নহে। তুমি বিশেষ বিচার করিয়া স্থিররূপে—প্রণিধান কর " তুমি,, কে?—তুমিই কি এই

দেহ ? কি, এই দেহ তোমার ?— কি এই দেহ পরকীয় ?——তুমি কখ-নই এই শরীর নহ এবং শরীর কখ-নই তোমার নহে।—অতএব তুমি দেহ, অথবা—তোমার দেহ কোন-মতেই হইতে পারে না।

প্রথমতঃ দেহ, পিতার তাঙ্গ হইতে নিগতি প্রজাবতুলা নামক চরমধাতু, এবং মাতার শোণিত, এই হুই অস্পৃশ্য বস্তু, যাহার স্পর্শে স্থান করিতে হয়, দৈব বশতঃ তাহা একত্র সংযুক্ত হইলে শরীর উৎপন্ন হয়, পরে আহারাদি দারা ক্রমশঃ উন্নত হইতে থাকে ৷----উল্লিখিত অস্পৃশ্য বস্তুদ্বয় পরিণত জড় পদার্থ-রূপ দেহমধে তুমি চৈতন্সরূপ প্রম ব্রহ্মের তংশরূপে বাস করিতেছ।----সুতরাং কিরূপে তোমার সহিত দেহের অভেদ হইতে পারে १——ইহাতে যে অভেদবুদ্ধি দে অতি হুৰ্ব্বুদ্ধি। বিশে-ষতঃ এই ''দেহকে,, আমার বলা কোন ক্রমেই তোমার কর্ত্তব্য হয় না। কারণ যিনি উৎপাদনকর্তা পিতা, তিনি এমত বলিতে পারেন, যে, "এই

অতএব ইহা আমারি, ইহাতে আর কাহারো অধিকার নাই,, এবং যিনি গর্ভধারিণী জননী, তিনি অবশ্যই এরপ কহিতে পারেন, যে, আমার শোণিতে এই তমু উদ্ভব হইয়াছে, আর আমি দশমাস গর্ভে ধারণ করি-য়াছি ও লালন, পালন, পোষণ আখা হইতেই হইয়াছে---অতএব এই বপু শুদ্ধ আমার, ইহার উপর অন্যের কিছুমাত্র স্বত্ব নাই---অপর এই যাহার অন্নে সে ব্যক্তিও এমত আমি যখন অন্ন দিয়া এই শরীর রক্ষা করিয়াছি, তথন বিচারমতে ইহা আমারি বস্তু ১,, যে ব্যক্তি ক্রয়কর্তা, দে কহে ''আমি যখন অর্থ দিয়া ক্রয় করিয়াছি, তখন এই দেহ আমা ভিন্ন অন্য কাহারো হইতে পারে না।,, — অগ্রি কহিতেছেন ''আমি চরমে এই দেহ দগ্ধ করিব, অতএব এই দেহ আমারি বস্তু।,, অধিকস্তু কি কহিব ! শৃগাল কুকুর ও কাক প্রভৃতি পশুপক্ষিগণ হাস্য পৃৰ্ব্বক কহিতেছে ''আমরাই শেষকালে এই দেহ ভক্ষণ কলেবরটা আমার বীর্ষ্যে জন্মিয়াছে, করিব, অতএব বিচারমতে ইহাই

কেবল সামাদিণের তোগা হই-তেছ।,, হে জীব। দেখ, এই শরীর সাধারণ বস্তু, দেহকে আমার আমার বলিয়া কি কারণে এত জ্রান্ত হই-তেছ?—অসার জড় পদার্থকে সার ভাবিয়া কেন মহামোহে মুগ্ধ হইতেছ?

#### अमा ।

কে তুমি, কে তুমি, জীব, কে তুমি, তা কও।
যে তুমি, যাহার তুমি, তার "তুমি,, হও॥
দেহে কর, আমি নোগ, "দেহ,, তুমি নও।
অংশবাপে, হংলবাপে, দেহে তুমি রও॥
কে তোমার, বহে ভার, কার ভার বও।
ভামার আমার করি, কার ভার লও॥
কে তুমি, কে তুমি, জীব, কে তুমি, ভা কও।
যে তুমি, যাহার তুমি, তার "তুমি, হও॥

কিৰপে শ্জিত হয়, এই কলেবর।
মনে কর, কিৰপেতে, হোলে তুমি নর॥
করিছ যে দেহ পেয়ে, এত অহকার।
মিছে দ্বেহ, এই দেহ, মনে কর কার॥
মনে কর, কোণা তুমি, করিতেছ বাস।
মনে কর, কিৰপে, এ দেহ হবে নাশ॥
মনে কর, কে তোমার, তুমিই বা কেবা।
ভামার বলিয়া তুমি, কর কার সেবা॥
দেহেতে অভেদ ভাব, একি অপরপ।
একবার ভাবিলেনা, আপন শ্বপে॥
কেবল ভ্রমেতে কর, আমার আমার।
আদ্যাবধি আ্লবোধ, হোলোনা ভোমার॥

মায়ার কুহকে ভুলে, কিছু নও জ্ঞাতী। ভুলির ছ, সুরাতন, সথা "অবিজ্ঞাত,,।। কেবল দেখিছ সূক্ষ, দৃষ্টি নাই মূলে। পেলে নাম "পুরস্তন, নিরস্তন ভুলে॥ মুকুরে নির্থি মুখ, স্থুথ কতৰাপ। মনে মনে অভিমান, হোয়েছি সুৰূপ॥ গলদেশে স্থত্ত দিয়া, স্থত্ত তায় ভারি। "ব্রাগাণ,, হোয়েছি বোলে, কর কত জারি। বেদপার্কে পুজা পাও, পঞ্জিত হইয়া। भरत करत समानंत्र, कुभीन तनिशा॥ অপিনিট ভবে পোড়ে, না পাও পাথার। ভাগত লোকেরে কর, ভবনদী পার॥ তিন খাই "দড়ি,, বেঁধে, আপনার গলে। ত্রিলোক বেঁধেছ তৃমি, কুহকের বলে॥ একেতো মাধার স্থত্তে, পড়িয়াছি বাধী। আবার এ স্থাত্ত দেখে, ল:গিয়েছে ধাঁধা॥ কোথায় স্থাতের গোড়া, নিৰাপণ নেই। এক খেয়ে উঠিতেছে, কত খেই, খেই॥ করিয়াছ আরোহন, অভিমান-রথে। কেবল করিছ গতি, প্রবৃত্তির পথে॥ ছেডে ভত্ত, মদে মত্ত, কিসে পাবে পদ। হারাইলে পুর্বকার, সহায় সম্পদ।। ব্রাঙ্গাণ, ক্ষত্রিয়, বৈশ্য, মৃদ্র চতুষ্টয়। অভিযান সারমাত্র, কিছুইতে। নয়॥ "তুমি,, কোন বৰ্ণ নও, জাতি ভব নাই। দেহধর্ম্যে অহকার, কেন কর ভাই 🛭 নর নও নারী নও, তুমি নও, কেউ। ত্রিগুণ সাগরে কেন, গুণিতেছ ডেউ। ত্মি, আমি, আমি, তুমি, জেনো এই সার। তিমি আহি, এক হোলে, কেবা আর কার॥

দেহেতে অভেদজ্ঞান, কর পরিহার।
ভামার এ দেহ, বোলে, ছাড় অহস্কার॥
বিচারে ভোমার তন্ত্র, কখনোভো নয়।
ভূতের ভবন এই, ভূতে হবে লয়॥
ভাড়ে কেবা শুড়ীভূত, করিল ভোমারে।
কেন হও, অভিভূত, ভূতের ব্যাপারে॥
ভূতের কুহকে যদি, হোয়েছ হে ভূত।
ভার কেন মিছামিছি, কাল কর ভূত॥
সকলি ভূতের হাট, ভূতের ভবন।
ভূতাভীত ভূতনাথ, কররে অরন॥

হে জীব! তুমি যে পদার্থ, তা-হাতো জ্ঞাত হইলে, একণে তোমাতে ভোমার "তুমি রুদ্ধি,, করা অভি বিশুদ্ধ হইয়া জড়ে কেন জড়িত হও? ---তুমি ত বিনাশী, অক্ষয়, তোমার नाम नाहे, अप्र नाहे--- द्वित (य (म-হের স্বেহে মোটিত হইয়াছ, সেই দেহ ভৌতিক মাত্র, চিরন্তন বস্তু নছে, —এখনি বিনাশ হইবে, দেহের নাশে কিছু তোমার নাশ হইবে না, তুমি যে চৈতন্যময় নিত্য পদার্থের অংশ স্বরূপ, তাহাই থাকিবে।— অতএব দেহের হ্রাস রৃদ্ধি ও সুখ হঃখে তোমার সুগ হঃখ ভোগকরা ও আহ্লাদ করা বা শোক করা উচিত হয় শ। এই অলীক নশ্বর দেহের পতনে

তোমার কি হানি আছে?—কছুই নহে-তুমি তোমার--- " তুমিত্ব ,, বিষয়ে কখনই বঞ্চিত হইবে না— কিন্তু এইকণে মায়া তোমার সর্বনাশ . করিতেছে।—জীব ভায়া—তুমি যত দিন মায়া জায়ার ছায়া-পরিত্যাগ না করিবে, ততদিন তোমার পক্ষে কল্যাণ দেখিতে পাই না। তুমি সুর্য্য স্বরূপ, তোমার প্রভা মেঘে আচ্ছন্ন করিয়াছে। তুমি অগ্নি স্বরূপ, তোমার আভা ভষে আক্ৰাদিত হইয়াছে। তুমি উজ্জ্বলমণি স্বরূপ, ধূলায় তো-মার জ্যোতিঃ আবরণ করিয়াছে। গোৰজালে আচ্ছাদিত হওয়াতে তুমি আপনার ভাতি আপনি দেখিতে পাত্তনা, তুমি সঙ্গদোষে আত্মবিম্মুত হইয়াত ।—স্বধর্মত্যাগী হইয়াত, অত-এব আর কুসজে কুরজে কুপ্রসঙ্গে অন-র্থক সময় সম্বরণ করা উচিত হয় না। তুমি আর কেনঁ ভান্ত রও, ভান্ত রও। এখনি শান্ত হও শান্ত হও।—বিষ-ময় বিষয় ভোগে কান্ত রও, কান্ত রও। এই দেহ থাকে থাকে থাক থাক্, যায় যায়, যাক্ যাক্। অনিত্য শরীরের নিখিত তুমি এত কেন

ব্যাকুল হইয়াছ ? সাংসারিক সুথ হুংথে এরপে ব্যাপৃত হওয়া তোমার পক্ষে বিধেয় নহে।—তুমি এই সমস্ত ব্যাপার হইতে অবসৃত হইয়া শুদ্ধ স্বীয় শিব সম্পাদনে সংযুক্ত হও— স্বভাবে থাকিয়া স্বভাব সম্পন্ন কর— কেবল আনন্দ কর—আনন্দ সাগরে অবগাহন করিয়া আনন্দ প্রনিতে দিক্ সকল আক্তর্ন কর। আপনার মালিন্য হর—আপনাকে পবিত্র কর—জ্ঞান-রূপ বিশুদ্ধ বন্ত্র পর, আনন্দময়ের ধ্যান ধর, সদানন্দে সদানন্দে স্মরণ কর।

### নবগ্রহচ্ছ मः।

সাহসে বাঁধিয়া বুক, প্রকৃতির দেখ মুখ, দুরে থানে সব তুখ, বিষয়ে বিশেষ তুখ, হয় হয়, হোলো, হালো, না হয়, না হয়, হোলো, হয় হয়, নয় নয়, মিছে খেদ কোরো না।
চিরণীবি নহে কেহ, পতন হইবে দেহ, পেয়েছভুতের গেহ, মিছে কেন এত স্নেহ, থাকে, থাকে থাক, থাক, যায় যাবে যাক্যাক, থাকে থাক, যায় যাকে ভাক, না ভাবিলে মহাকাল, নিকট বিকট কাল, না ভাবিলে মহাকাল, এইকাল, সেইকাল, কালেই আসিছে কাল, প্রাপ্ত কাল, যাহ কাল, বুণা কাল হোরো না॥

ভুলিয়াছ তব ভাব, ভাবিতেছ ভব ভাব, ভাবে সভাবে ভাব, কর নিক্ষ অন্থভাব, কি ভাব, কি ভাব, কে বুরে ভাবের ভাব, ভাবে ভাব, আবির্ভাব, অভাবেরে ধোরোনা॥
মানস-বিহারী হংস, তুমি হে তোমার অংশ, দেহিরাপে অবতংশ, নাহিক তোমার ধ্বংস, মানসের সরোবর, পরিহরি নিরন্তর, কর কিলে, গুণনীরে, আর তুমি চোরো না॥

ছিলে তুমি অপ্রকাশ, হইলে হে মুপ্রকাশ, ভাল-বাস ভালবাস, পেয়ে বাস, কর বাস, কত আশ, অভিলাষ, কত হাস পরিহাস, শুন ভাষ, ধর ভাস, ভ্রমবাস পোরোনা॥

আমি হে ছিলাম একা, পেয়েছি ভোমার দেখা

নাহিক স্থাধের লেখা, আর কেন হও ভেকা, ঠেকিয়া হোলোনা শেখা, দিতেছ চ্চালের রেখ দেখে, শেষ ভুলে দেশ, আর যেন সোরোনা। ভাশিবের ধন নও, আছ জীব, শিব হও, শিবরব মুখে কও, শিবের সদনে রও, কেন হে অশিব লও, অশিবের ভার বও, বার বার, দেহে ভারে, পাপভার ভোরোনা।

হে জীব! তুমি যত দিন এই দেহ গেহে অবস্থান পূর্বকে এই জগতীপুরে বিচরণ করিবে, ততদিন তুমি পরমা-রাধ্য পরমপূজ্য পরমপ্রিয় পরমেশ্ব-রকে নিরম্বর অন্তর দধ্যে স্মরণ করিবে, ক্ষণকালের নিমিত্ত তাঁহাকে অন্তরের অস্তর করিও না ৷—যদি জগতে আ-সিয়া জগতীয় যাবতীয় সরল সুখ সম্ভোগ করণের অভিলাষ হয়, তবে জগতের প্রিয় হও।—জগতের প্রিয় হইবার নিমিত্ত যে সকল প্রিয় কর্ম্মের প্রয়োজন হয়, প্রিয়জন হইয়া তাহাই কর। তুমি জগতের প্রিয় হইতে পারি-লেই জগদীশ্বরের প্রিয় হইতে পা-রিবে, তাহাতে কোন সন্দেহই নাই। করুণাময় জগন্নাথের প্রধান অভি-প্রায় এই যে, জীবমাত্রেই তাঁহার নিয়মান্ত্রসারে হিতকর কর্মে নিয়ত নিযুক্ত থাকিবে, তাঁহার নিয়োজিত নির্মা পালন পূর্বক সমুদয় ইন্দ্রিয় সহিত শরীর সার্থক ও জন্ম সার্থক করিবে।

এইক্ষণে তুমি আপনার কর্ত্ব্য কর্ম্ম বিবেচনা কর। কি কি কল্যাণের কার্ম্য করিলে তোমার "প্রেম,, এই সংসারীয় সমুদয় জনের মনের মন্দির অধিকার করিতে পারে, তৎকশ্পে অনুরাগী হও। সর্বাগ্রে তোমার ঘরের প্রতি দৃষ্টি করিয়া পরে পরের প্রতি কটাক্ষ করাই উচিত হয়। দেহকে বনী-ভূত কর,—ইন্দ্রিয়গণকে যথা যোগ্য

শুভ্যয় বিষয়ে নিযুক্ত করিয়া চরিতার্থ কর।—নয়নকে জ্ঞান-পুরিত দর্শনে এবং এই বিনোদ বিশ্বের বিচিত্র ব্যপারব্যুহ বিলোকনে।——> শ্রবণকে ভৌতিক ধনি সকল ও সাধু সমূহের সত্নপদেশ শ্রবণে।---নাসি-কাকে সুখময় সুরভি সকলের সৌরভ গ্রহণে।—ত্বককে শীত উষ্ণাদি অমু-ভব করণে—রসনাকে শুভদ সুস্বাহ সামগ্রীর রসাস্বাদনে স্বাদিত করণে, প্রিয় কথনে, পরম পুরুষের গুণ সংকীর্ত্তনে।—চরণকে সজ্জন সমাজে গমনে, শিবকর বস্তু বিশেষ আনয়ন গতি করণে।—করকে পাত্র বিশেষে দান করণে, মহা মান্সলিক কাষ্য সাধনে ও মহা মঙ্গলময় মহেশ্ব-রের গুণ লেখনে নিয়োজিত কর।— কামকে নানাবিধ বিষয় ভোগে বিরত করিয়া **ঈশ্বর<sub>ু</sub>প্রেমকামনায় কা**মী কর। — ক্রোধের বারণ কারণ বোধের অরা-ধনা কর।—লোভকে সামান্য ধনতৃষ্ণায় বিরত করিয়া পরম পুরুষার্থ পরমার্থ ধনাহরণে উৎস্থক কর।—মোহকে পরম প্রেমে মোহযুক্ত কর, তাহা হইলে আর দেহে আত্মবুদ্ধি থাকিবে

না---অর্থাৎ আমার পিতা, আমার আমার লাতা, আগার পুত্র, আমার কন্যা, আমার গৃহ, আমার বিষয়—আমার আমার আর করিবে ন।।—মদকে ভক্তিমদে 'মত করিয়া রাখ, মদ তত্ত্ববিষয়ে মত হইয়া যত মদ প্রকাশ করিতে পারে করুক।— মাৎ**স**র্য্যকে পূর্ব্বোক্ত পঞ্চ রিপুর প্রতিকূলে মাৎসর্য্য প্রকাশ করিতে আদেশ কর।—মনকে জ্ঞানের গুহে স্থাপন করত আপন বশে আন-য়ন কর, তাহা হইলেই তোমার সকল অভীট নিদ্ধ হইবেক, আর কোন অমঙ্গলের সন্তাবনাই থাকিবে না, কল্যাণকরী রুত্তি স্বস্ব ভাবে আবিভূ তা হইয়া তোমাকে অশেষ স্থায় সুখী করিবে।

তুমি যেমন আপনার সন্মান,
আপনার সন্ত্রম, আপনার সুখ,
আপনার স্বাস্থ্য ও অপিনার মন্ত্রল
আপনি প্রার্থনা কর, সেইরপ
এই সংসারে আপনার স্থায়
সমভাবে সকলের সন্মান, সকলের
সন্ত্রম, সকলের প্রস্থা, সকলের সাস্থা
ও সকলের মন্ত্রমের প্রতি দৃষ্টি কর।—

তুনি যেমন আপনার স্থুখে আপনি মুখী, আপনার ছঃখে আপনি ছঃখী, ও আপনার ক্লেশে আপনি ক্লিফ হও, তদ্রপে পরের স্থার সুখ, পরের ছংখে হুঃখ ও পরের ক্লেশে ক্লেশ ভোগ কর—–তুমি যাহার সহিত যেরূপ ব্যবহার করিবে, সে তোমার সহিত সেরপ ব্যবহার করিবে।——তুমি যথন নয়নাগ্রে দর্পণ অপণ কর, তখন কিরূপ প্রতিবিশ্ব দেখিতে পাও? তুমি আপনার মুখ ভঙ্গিমা যদ্রেপ কর, প্রতিবিধের ভঙ্গিমা অবিকল তদ্রপই দৃশ্য হইয়া থাকে, অতএব যখন তুমি তাপনার দেহ ভঙ্গিমা দোষে আপনিই আননার রূপের নিকট উপহাস প্রাপ্ত হও, তখন শ্বপ্রিয়ব্যবহার দারা পরের নিকট প্রেম লাভ করিবে, ইহা কি প্রকারে সম্ভাব্য হইতে পারে ? তুমি স্বয়ং যদি মহাশয় হইয়া মহাশয় পাদে বাচ্য হওনের ও গৌরবযুক্ত স্থসন্তাযণের প্রার্থনা কর, তবে সমুদয় মন্ত্ৰ্যাকে সাধুভাবে সন্তা-যণ পূৰ্ব্বক মহাশয় শক্তে সধোধন কর।— প্রিয় হইবার উপায় কেবল "প্রিয় হওয়া,, তুমি আপনি যদি সক-

লকে প্রিয় জ্ঞান কর, তবে তাবতেই তোমাকে প্রিয়জ্ঞান করিবে। তুমি অভিমান ও অহস্বারের অধীন ২ইয়া যদিস্থাং সকলকে ঘ্নণা পূৰ্ব্বক তাজ্জা করিয়া কুকথা উল্লেখ কর, তবে কে তোমার পদে ফুলচন্দন দিয়া পূজা করিবে ? কে তোমাকে মস্তকে তুলিয়া নৃত্য করিবে ? কে তোমাকে সুজন বলিয়া সমাদর করিবে ? ভুমি যাহার উপরে একগুণ হুর্ব্যবহার করিবে, দে শতগুণে তাহার পরিশোধ লইতে ক্রটি করিবে না। আপনার স্তুখ সন্মান কেবল আপনার ব্যবহারের প্রতিই নির্ভর করে।—তুমি যাহার শরীরে প্রহার করিবে, সে কিছু স্বীয় কর দারা তোমার শরীরের সেবা করিবে না।—তুমি যাহাকে পীড়া প্রদান করিবে, যাহাকে অপমান করিবে, যাহার ধন হরণ করিবে, मिद्द, ও যাহার মনে বেদনা এই জগতে সেই ব্যক্তিই তোমাকে পীড়িত করিবে, ব্যথিত তোমার মান নাশ, তোমার ধন নাশ, তোমার প্রাণ নাশ ও তোমার সর্ব-নাশ পর্য্যন্ত করিবে। একটা প্রাচীন

কথা আছে "আপ ভালা, তো, জগৎ ভালা, তুমি আপনি ভাল হও, তো জগৎ তোমার পকে ভালই হইবে, এবং ইহার বিপরীত হইলে। সমুদয় বিপরীত হইবে।

তুমি এই ভূতময় সংসারকে মনো-ময় কর।—মমতা ছাড়িয়া সকল বিষ**য়ে স্নে**হের সমতা কর।—তুমি অভেদজ্ঞানে এই কলেবরে থাস করাতে ইংার প্রতি আমার বলিয়া তোমার মমতা হইয়াছে, একারণ ইহার কফ জন্ম রুফ ও পুঞ্চ জন্ম তুষ্ট হইতেছ। — আমার দেহ, আমি দেহের কর্ত্তা, এইরূপ অভিমান স্থথে সুখী হইয়া বেশ বিন্তাস পূৰ্ব্বক কতই কম্পিত শোভা ধারণ করিতেছ। এই দেহ চিরস্থায়ী ভাবিয়া কত কন্ট স্বীকার করিতেছ, চিরকাল স্থথে मत्छाश इरेद्व छाविया छेलार्झनार्य না করিতেছ এমত কর্মই নাই।---আমার গৃহ, আমার শ্যা, আমার পরিচ্ছদ, আমার ভাণ্ডার, আমার ভূমি, আমার শস্ত, আমার সরোবর, আমার উদ্যান, আমার রক্ষ, আমার পরিবার, আমার দাস, আমার দাসী,

আমার জ্ঞাতি, আমার কুটুয়, আমার গ্রাম, আমার পল্লী, আমার হট্ট, এবচ্ছাকার প্রত্যেক প্রত্যেক যাহাতে যাহাতে তুমি আমার আমার উল্লেখ করিতেছ, তাহাতে তাহাতেই তোগার মমতার আধিক্য হইতেছে।——তুমি আপনার দেহে বেদনা পাইলে যেমন কাতর হও, পরকে তদপেকা সহত্র-গুণে পীড়িত দেখিলে কখনই তাহার শতাংশের একাংশ কাতরতা প্রকাশ কর না। আনলে অপনার গৃহ দগ্ধ হইলে, দৈব ঘটনায় আপনার স্থাবর বস্তুর ব্যাহাত হইলে, আপনার অস্থা-বর বস্তু অপহৃত হইলে, রাজদারে বা জন সমাজে তিরস্কৃত হইলে, কোনরূপ বিপদ ঘটিলে এবং আপ-নার পুত্র পৌত্রাদি কেহ মরিলে, ছুংখে কত খেদও কত বিলাপ করিতে থাক, শোকে হৃদয় বিদীর্ণ হইয়া যায়, মুতবৎ হইয়া ধূলিশয্যা<sup>6</sup>সার কর। কিন্তু অপরের সেইরূপ শত শত বিপদ দেখিলে তোমার কিছুমাত্র ছঃখ বোধ হয় না, যে হেতু সেই সকল বিষয়ে তোমার স্বকীয় বলিয়া জ্ঞান নাই, পরকীয় বোধে আনার বলিয়া

মমতা জন্মে নাই, সুতরাং তালাতে তোমার স্নেহ হয় না, প্রেম হয় না, এজন্য খেদও হয় না। ফলে স্থিররূপে প্রণিধান করিলে তোমার পক্ষে উভয় তুল্য। তুমি যাহাকে আমার বলিতেছ, বিচারমতে তাহাতো তোমার নহে। যদি ভোমারি সাব্যস্ত হয়, হউক, হানি কি ? এইস্থলে বিবেচনা কর, তুমি যেমন আপন বস্তুকে আমার বলিয়া মমতায় ব্যাকুল হইতেছ, সেইরূপ জগতী ধামে তাবতেই স্বস্থ বিষয়ে আমার আমার করিয়া অধিক মোহে মুগ্ধ হইতেছে। অতএব তুমি যখন আপনার মিথ্যা দেহ, গেহ, বিষয় ও পরিজনাদির মঙ্গলামঙ্গলে ও সুখ হুঃখে সুখী হুঃখী হইতেছ, তখন ঘটনায় সেইরূপ অন্যের শুভাশুভ সুখী ও সেইরূপ হুঃখী কেন না হও ? হে জীব! তুমি যতদিন এরপ না করিবে, ততদিন যথার্থ মনুষ্যত্ত্ব লাভ করিতে পারিবে না।

দিনকর যেমন স্বীয়করে সর্বত্ত আলো করে, বিধু যেমন মূছকরে সকলকে ভৃপ্ত করে, মেঘ যেমন র্ফির,সৃষ্টি করিয়া সমভাবে সর্বত্ত বর্ষণ করে, শিশির যেমন নীহার রফি করিয়া সকল স্থান জাত্র করে, বায়ু যেমন প্রবাহিত হইয়া সকলের শরীর শীতল করে, পুষ্প যেমন সক-লকে সমান স্থবাল প্রদান করে, নদ-নদী সকল যেমন জীবন দানে তৃষা-তুর্রদিগের জীবন রক্ষা করে, তুমি লেইরূপ স্বীয় সাধ্যক্রমে সর্ব্বজীবে সমান ভাব, সমান দয়া, সমান প্রেম ও সমান স্বেহ বিতরণ কর।—তুমি গ্রেকা এক গুণ বায় করিলে কোটি কোটি জীবের নিকট হইতে কোটি-গুণে প্রাপ্ত হইবে।

হে মানব! তুমি রহস্পতিতুল্য পণ্ডিত হও, ত্রহ্মার স্থায় কবি হও, জনকের স্থায় জ্ঞানী হও, কামের স্থায় স্থানর হও, বলির স্থায় দাতা হও, ভীয়ের স্থায় বীর হও, কুবেরের স্থায় ধনী হও, এবং সসাগরা পৃথি-বীর অধিপতি হও, কিন্তু মনে কিঞ্চি-মাত্র অভিমান ও অহঙ্কার থাকিলে সকলি রথা হইবে। তোমার সেই বিদ্যা, বৃদ্ধি, পাণ্ডিত্য, সভ্যতা, বল, বিক্রম, বিষয়, বিভব, রাজত্ব, প্রভুত্ব কিছুতেই কিছুকরিবে না। সমুদ্র রত্না-

কর ও জলনিধি হইয়াও লবণ-দোবে ত্যজা **হইয়াছে ৷—চ<del>ভ</del>্ৰ** জগতৃপ্তিকর সুধাকর হইয়াও মুগচিহ্ন জন্যুকলঙ্কীরূপে বিখ্যাত হইয়াছেন।-ফণী মণিধর হইয়াও গরল-দোষে তাব-তের অবিশ্বাদী হইয়াছে। হ্ব্বাদা मूनि महर्वि इरेग्ना छेन्द्र-एनारम ला-কের নিকট নিন্দিত হইয়াছেন।— নারদ মুনি দেবঋষি হইয়াও কোন্দল-দোষে দেবমগুলে অমান্য হইয়াছেন,— ধর্মপুত্র যুধিষ্ঠির পরম ধার্মিক হই-য়াও অশ্বত্থামার বিষয়ে কৌশলে মিথ্যা বাক্য উচ্চারণ করাতে নরক দর্শন করিয়াছেন। অতএব তুমি পর্বত তুল্য উচ্চ হইলেও গর্ব্ব-দোষে থৰ্ব্ব হইবে, ইহা বিচিত্ৰ নহে। দান্তি-কতা, ছলনা, চাতুরী, অভিমান প্রভৃ-তিকে শান্তিসলিলে বিসর্জ্জন কর। হৃদয়মন্দিরে সত্যদেবের করিয়া নিষ্ঠা-পূর্ব্বক দয়া, ধর্মা, শ্রদ্ধা, ভক্তি, করুণা, প্রেম, বিবেক, বৈরাগ্য ইত্যাদিকে মনের ক্রোড়ে সমর্পণ কর।—মন যেন আর ক্ষণকালের নিমিত্ত ইহাদিগের অঙ্গসন্ধ ভন্ধ দিয়া অনন্ধরঙ্গের রঙ্গী ও সঙ্গের

সঙ্গীনা হয়। খিনি এক অবিতীয় অন্দ অসজ, কেবল তাঁহারি সঙ্গে সজ করক ও তাঁহারি রঙ্গে রঞ্জ করক।

ত্বনি যদি অতুন ঐশ্বর্ধার অধি-পতি হও, সিংহামনে বসিয়া অনে-কের উপর প্রাভুত্ব কর, লোকে তো-মায় মহারাজ চক্রবতী বড়মানুষ বলিয়া মহা সম্ভ্রমে সম্ভোধন করে, কিন্তু তুনি যদি আপনি মানুষ না হও, তবে মান্তুৰে তোনায় কখনই মানুষ বলিবে না, মানুষ, মানুষ, বড় মানুষ, সে বড় মান্ত্র কি ধনে হয় ? ধনের বড় মানুষ কখনই মনের বড় মানুষ नरह, धरनत योश्वय योश्वय नश, यरनत মানুষ মানুষ। আমি ধন দেখিয়া তোমাকৈ স্মানর করিব না, জন দেখিয়া তোমার আদর করিব না, সিংহাসন দেখিয়া তোমার সন্মান করিব না, বাভ্বল দেখিয়া তোমার সম্ভ্রম করিব না, কেবল মন দেখিয়াই তোমাকে পূজা করিব। তুমি যদি-স্থাৎ স্বয়ং অমানুষ হও, অথচ দণ্ডধর হইয়া দণ্ড ধরিয়া আমাকে দণ্ড করণে উদ্যত হও, তথাচ আমি দও ভয়ে কলাচ তোমাকে দশুবং করিব না।
কিন্তু তুমি যদি পবিঅচিত্তে সাধুস্বভাবে ভিক্ষার বালি ধারণ করিয়া
আগগমন কর, তবে তোমার দর্শন
মাত্রেই তংক্ষণাৎ অমনি ধূলি ধুষরিতাঙ্গ হইয়া পদতলে প্রণত হইব।
অতএব যদি মানুষ হইবার অভিলাষ
থাকে, তবে মনকে বিমল কর, ও
সরল কর।—আপনি ছোট হইলেই
বড় হইবে, বড় হইলে কখনই বড়
হইতে পারিবে না।

তুমি এই পৃথিবীকে আমার আমার বলিয়া যতই অভিমান করিবে, পৃথিবী ততই হাস্ত করিবেন। কারণ তোমার ন্যায় এমনধারা কত "আমি,, আমার আমার করিয়া গত হইন্যাছে, গত হইতেছে ও গত হইবে, তাহার সংখ্যা নাই। "তুমি,, বলিতে অথবা "আমি,, বলিতে, আমার বলিতে বা তোমার বলিতে, জগতে কেইই রহিবে না, কিন্তু বস্তুমাতা যেরপ স্বভাবে শোভা করিয়া আছেন, চিরকাল সেইরপ থাকিবেন। যদি এই অবনীকে তোমার নিতান্তই আমার বলিতে ইচ্ছা হইয়া থাকে,

তকে বল, কিন্তু আমার বলা উচিত হয় না, আমার পৈতৃক ধন বলিয়া সম্ভোগ কর, অভিযান কর, অহম্বার কর, তাহাতে কেহই তোমাকে পরি-হাস করিতে পারিবে না এবং বসুধা মতীও আর হাত্ত করিবেন না, কারণ জগদীশুরের এই জগৎ। জগদীশুর তোমার পিতা, তুমি তাঁখার পুত্র, অতএব পিতার পুত্র হইয়া পিতৃধন আমার ধন বলিয়া ভোগ করিলে কে ভোষাকে হান্তাস্পদ বলিয়া মুণা করিবে ? পৈতৃক সম্পতির স্বত্বের প্রতি আপত্তি কেই করিতে পারে ন। । – হে জীব। তোমরা তাবতেই পরম পিতা পরমেশ্বরের বংশ, সম-ভাবে অংশ করিয়া ভোগ কর, কেহ কাহাকে বঞ্চিত করিও না, বল পূর্ব্বক যিনি পিতৃধনের অধিকার অন্যান্য ভাতাদিগকে বঞ্চনা করেন, তিনি পিতার প্রিয় হইতে পারেন না. পিতা যে তাঁহাকে গোপনে গোপনে ত্যজ্যপুত্র করেন, তিনি তাহা জানিতে পারেন না। তাঁহাকেই উত্তম সংপুত্র বলি, যিনি পিতার অভিমতামুখায়ী কর্ম করেন, তাঁহা-

কেই পিতার মধ্যম পুল্ল বলি, যিনি
পিতার আজ্ঞান্ত্র্যায়ী কর্ম করেন,—
এবং তাঁহাকেই পিতার অধ্য অসং পুল্ল
বলি, যিনি পিতার আজ্ঞা অবহেলন,
করেন। তুনি যদি অতি উত্তম সংপুল্ল
হওনের প্রার্থনা কর, তবে অভিপ্রেত
রপ কার্য্য সাধন করত তাঁহার প্রিয়
হইয়া প্রেমলাভ কর। লাতৃগণের
সহিত বিরোধ ত্যাগ কর, সকলের প্রতি
সমান দয়া কর, তাহা ইইলেই তুনি
সাধুসমাজে সাধুবাদ প্রাপ্ত হইবে, সকলের প্রিয়ত্ম, জগতের প্রিয়ত্ম এবং
জগদীশ দয়াময়ের ক্বপাপাত্র হইবে।

### नश् जिलिनी।

বল দেখি ভাই, ভনি ভামি ভাই, কি ভৌমার আছে প্রীজ। এসে এই ভবে, চিরদিন রবে. মনেতে ভেবেছ বুঝি॥ আমার স্থামার, মুখে বার বার, गिए किन जोतं कह। হোলে তুমি মর, (शर्व कर्नवंत, কণনো অমর নহ। ভাব নিজ ভাব, रदत सूर्य लाख, महल अखात धता मकरल मगान, প্রেম কর দান, ভাতিমান পরিইর

আমার এ সব, আমার বিভব, মত, মতা, সংখ্যার। ভোমার ভনয়, তোমার, ত, নয়, মমভা সমভা কর॥ পথ ছেড়ে সোজা, বোয়ে কার বোঝা, कूगए कूश थ हत। বল তুমি কার, কেবাই ভোমার, কার ভার বোয়ে মর॥ অসত সহিত, বসত বিহিত, এ ভার কভু না ধর। অহিত রহিত, স্থজন সহিত, সতত বসত কর॥ পর বাসে রোয়ে, পরবশ ছোয়ে, মিছে কেন কাল হর। ভাব কি ভাবনা, কেন রে ভাবনা, পরম পুরুষ পর ॥ ভ্রমে পরস্পর, দেখে নিজ পর, নাহি জানে নিজ পর। जक (लाहे भारत, एवपू (जाहे भारत) পর নাহি তার পর ॥ নিজ পরিবারে, নিজ ভাব যাবে, নিজ নহে সেই পর। ভোমার যেজন, হইবে আপন, কেমনে সে হবে পর। ভবের ভিতরে, যে তোরেন বিতরে, - আশেষ স্থাপের নিধি। ভাগরে ভজনা, সেরসে মতনা, একিরে, বিহিত বিধি॥ ভাহার পীরিতে, গিরিতে ফিরিতে কিছুই না করি ভয়।

जनल जनित्त. भांडाल मलिहन, সৰ চাঁই পাব জয়॥ জয় গুণধাম, জয় দাভারান, রাম রাম নাম লহ। রাম নাম নিয়া, হাসিয়া খেলিয়া, বেড়াও সবার সহ॥ ভাই হে যখন, থুলিয়া নয়ন व्याष्ट्रता खनगज्मि। যে ভোরে দেখিল, সকলে হাসিল, কেবলি কাঁদিলে তুমি॥ শেষেতে যখন, মুদিয়া নয়ন, যাইবে আপন বাসে। ভোমার গমনে, যেন কোন জনে, সে সময়ে নাহি হাসে॥ ममा ममाठात, इंडेटन श्रेठांत्र. मन मिट्रा यम छुछि। দেহ হোলে শব, কাঁদে যেন সব, হাহারৰ যেন উঠে। যত দিন আছে, যত দিন বাঁৎ, যত দিন রভে ভবে। প্রেমেতে বাঁধাও, কাঁদিয়া কাঁদাও, হাসিয়া হাসাও সবে॥ সাধু যদি হও, সাধু পথে রও. নাহিক হুখের লেখা। থলের ভাচার, ছলের আগার, যেমন জলের রেখা। জগতে সনাই, হয় ভাই ভাই, আপনা দেখনা একা। (मधीरन (यक्षण, "मिधरन मिक्स) मुकूदत तमन (मर्था।

ভালবাস যাহা, যদি চাও তাহা, ভালবাস তবে সবে। পাবে স্থখসার, ভুলোকে সবার, ভালবাসা তুমি হবে॥ সময় পাইয়া, ভুডেখর লাগিয়া, করিলে না কিছু গল্গ। আসিয়া মেলায়, মায়ার খেলায়, হেলার হ'রালে রজ। করিয়া যতন, পরিয়া ভূষণ, দেহ ঢাকো চারু বাসে। আঁচডিয়া কেশ, যত কর বেশ, ততই শমন হাসে॥ জারজ কুমার, ভেবে আপনার, যে জন আদর করে। ভ্ৰম শুধু ভার, ভনয় আমার, মনে কভ সাধ ধরে॥ डाहांत्र वननी, विकट्ग अर्थान, আপনারি মান মানে। বলে একি পাপ, ভূমি করে বাপ, যার বাপ সেই জানে॥ নাহি জেনে মূল, স্তুলে হয়ে ভুল, বিষয় আসবে রত। ভাবিয়া প্রধান, যত অভিমান, অপমান হয় তত॥ এই যে আমার, ধরা অধিকার আমি হই ক্ষিতিপতি। শুনে তার ভাস, করি পরিহাস, হাসেন ধরণী সভী॥ অবনী আমার, স্থামী আমি তার, একথা ভানিবে যেই।

লাজ না বাসিবে, কুভাব ভাষিবে, কুহাস হাসিবে সেই॥ পেয়েছ রসনা, পুরাও বাসনা, ছোষণ করহ মুখে। আমার পিডার, অখিল সংসার, ভোগকরি আমি হথে॥ পৈতৃক বিভব, স্বভাবে সম্ভব, ভোগ কর ভবে থেকে। কেহ না ডুষিবে, সকলে ভৃষিবে, পুষিবে হৃদয়ে রেখে॥ ভাই আছু যত, হোগে এক মত, এক ভাব সবে ধর। করি এক মন, করি এক পন. সমানে হুভোগ কর॥ কেহ্ নহে পর, স্ব সছোদর, পরস্পর কর স্থেহ। धक द्राम भन, कद धक द्रन, একের দোহাই দেই॥ একের বাজার, একেই হাজার, একে হর কত শত। এक ऐंदन निर्म, किছू नांशि मिल्न, সমুদ্র হয় হও॥ তাই বলি ভাই এক বিনা নাই, একের প্রকাই ধর। नम् कि खोरन, (शंदक अक शारन कीवन जयल कर ॥

পিয়ার। বোয়েছে পরম ধন, নিকটে পড়িয়া। এই বেলা লহ জীব, যতন করিয়া। শ্বধন না লও যদি, পাবে না হে আর।
শবদেষে কেবল, যাতনা হবে সার॥
সময়ে এ ধন যদি, হাত ছেড়ে যার।
শব্বহি করিবে খেদ, হায় হায় হায়॥
নির্ধনের ধন এই, নিধনের ধন।
এ ধন সাধন কর, ওরে বাছা ধন॥
মহাধন, এইধন, যদি নাহি রয়।
কি ধন পাইবে তবে, নিধন সময়?
এ ধন হৃদয়ে রাখ, ঠেলোনা ঠেলোনা।
হাতে কোরে, তুলে লও, ফেলোনা ফেলোনা॥
হবে ধনী, রবে ধ্বনি, ওরে বাপধন।
নিধনে সধন হবে, পাইলে এ ধন॥

প্রীতি যদি বাখ তুমি, জগতের প্রতি।
করিবে তোগায় প্রীতি, জগতের পতি॥
জগতের প্রিয় হও, ন্যবহার গুণে।
জগৎ বন্ধন কর, ব্যবহার গুণে॥
যে ভাবে জগতে তুমি, দেখিবে যেরূপ।
জগৎ দেভাবে ভোরে, দেখিবে সেরূপ॥
প্রেম-বলে জগতের, প্রিয় হয় যেই।
জগদীশ পুরুষের প্রিয় হয় দেই॥

প্রবার শিখিতে যার, মনে সাধ আছে।
এখনি শিখুক গিরা, পতঙ্গের কাছে॥
দেখ তার, কি প্রকার, প্রবারের ধারা।
আনায়াসে অনলে, পুড়িয়া হয় সারা॥
লাক মেরে বাঁপি দিয়া, প্রাণ দেয় স্থাথ।
একবার আহা, উহু, করেনাকো মুখে॥
সহচ্চে কি প্রেম কোরে, তারে পাবি বোকা।
চিরকাল একভাব, বুড়া হোরে থোকা॥

জ্ঞানাগুনে ঝাঁপ দেরে, দুরে যাক্ খোঁকা। এখনি পুড়িয়া মর, হোয়ে প্রেম পোকা॥

ঘরে ঘরে ফের যদি, ঘর ছাড়া ছোরে।
ঘর ছেড়ে কিবা কাজ, থাক ঘব লোয়ে॥
পেট নিয়া, ছারে ছারে, যদি গুল হাপু।
এমন সন্ধাসে ভোর, ফল কিরে বাপু॥
ঘর ছেড়ে ঘরে ঘরে, না ফিরিভে হয়।
ভবে বাপু, ঘর ছাড়া, অনুচিত নয়॥
বে'সেথাকো এক ঠাই, নীরব হইয়া।
চেঁচাওনা কারো কাছে, পেটে হাত দিয়া॥

প্রভাতে উঠিয়া করি, হাস্য পরিহাস।

সে দিন করিতে হয়, যদি উপবাস॥

যায় যায়, উপবাসে, দিন যায় যাবে।

সাধুসহ সদালাপে, কত হুধা খাবে॥

অমৃত ভোজন করি, যদি যায় দাঁত।

হরিগুণ লিখিয়া যদ্যপি যায় হাত॥

যায় দাঁত, যায় হাত. কিছু ক্ষভি নাই।
লেখ লেখ হরিগুণ, হুধা খাও ভাই॥

কন্মীছ:ড়া যদি হও, খেয়ে আর দিয়ে।

কিছুমাত্র হুখ নাই, হেন কন্মী নিয়ে।

বিজ্ঞাত্র হুখ নাই, হেন কন্মী নিয়ে।

বিজ্ঞাত্র হুখ নাই, হেন কন্মী নিয়ে।

বিজ্ঞাত্র হুখ নাই, মেন কন্মী নিয়ে।

বিজ্ঞাত্র হুখ নাই, মেন কন্মী নিয়ে।

বিজ্ঞাত্র হুখ নাই, মেন ক্ষমী নিয়ে।

হথে যদি কমলার মন নাহি সরে।

প্যাচা লয়ে যান মাতা, কুপণের ঘরে॥

ভাগী বিনা, সভাবের, ভাব কেবা ধরে। জ্ঞানী বিনা, জ্ঞানপণে, কেবা আর চরে॥ বর্ষা বিনা, সাগরের, উদর কে ভরে। মাতা বিনা, সস্তানের, আদর কে করে॥ রবি বিনা, জগতের ধ্বাস্ত কেবা হরে। দাতা বিনা, দরিদ্রের, তৃঃখে কেবা মরে॥

হার হায়, হাসি পার, ভোমার দেখিয়া।
কুশল কামনা কর, কুসক্ষ করিয়া॥
বিষ-বৃক্ষ স্থাজিরা কি, পাবে স্থাকল।
অনল কি দিতে পারে, জালের শীতল?
জলনিধি রল্লাকর, বিমল শরীর।
অপার বিস্তার যার, সভাবে গভীর॥
অগাধ নীরধি যেই, বহুগুণরাশি।
বাঁধা গেল রাদনের হয়ে প্রতিবাসী॥

ঠক ঠক শক্ষ করি, ঘূরাতেছ মালা।
ভাবিয়াছ,দশের, যশের তুমি শালা।
চাল নাই, খুঁটি নাই, নাহি গুণ লেশ।
কেমনে হইবে শালা, বল না বিশেষ॥
ঠক ঠকে, ঠোকে যাবে, আয়ু ফুরাইলে।
কি হইবে মিছামিছি, মালা ঘূরাইলে।
হাদয় পবিত্র নহে, কিসে রবে হুখে।
না বুঝিরা পারণাম, হরিনাম মুখে॥
কেরে কেরে কেরাতেছ, জোপে কের কের।
জান না কি এই কেরে, কত আছে কের॥
পড়ুক কাটের মালা, হাত থেকে খোসে।
জপরে মনের মালা, ছির হয়ে বোসে॥

কদিন বঁ।চিবে, আরু, কদিন বাঁচিবে। এ ভাবে, কদিন আরু, জীবন যাচিবে॥

কদিন, ধরিবে আর দেখের এ বল। কদিন, চলিবে আর, দেহের এ কল 🛚 কদিন, ইন্দিয়গণ রবে আর বশ। কদিন, করিবৈ ভোগ, বিষয়ের রস ॥ জীবন জীবন বিষ, হায়ী কভু নঃ। নিশানে বিশাস নাই, কখনু কি হয়॥ শত বর্ষ পরমায়ু, লিপি বিধাতার। রক্ষনী হরণ করে, অর্দ্ধভাগ ভার 🛭 বাল্য রোগ, অরা, फু:খ. বিষম জঞ্জাল। বিফলে বিনাশ হয়, তার অর্দ্ধকাল॥ তথাপিও অবশিষ্ট, অপ্পকাল যাহা। কলহ, দম্পতি-মুখে, নষ্ট হয় তাংগ॥ ভথাচাকঞ্চিৎকাল, বাকী থাহা রয় । দলাদলি নিন্দাবাদে, করে তাহা ক্ষর। অহরহ পাপপথে, চালে দেহ রথ। ভ্রমেও ভাবেনা জীব, পরমার্থ পথ॥ গতকাল, পুন কিছু, আসিবে না আর। তাসিছে যেকাল, ভাষা, স্থিত থাকে কার ম বর্ত্তমান কাল শুধু, হিতকর হয় ম করিতে উচিত যাহা, কর এ সময়॥ এসেছে অতিথিকাল, কর তার সেবা। অতিথে বিমুখ হোটে, যশ পায় কেবা ॥ আপনাৰ হিত দ্বেখ, বিহিত বুঝিয়া। অতিথি বিদায় কর, স্থকর্মা করিয়া॥ কাল যত গত, তত, গত হয় আয়ু। তথাচ না দুর হয়, মিছে আশা বায়ু। নিরাশা পরমন্ত্র, আশা ছোর ছব। আশানদী পারে গেলে, পাবে কত হথা বিমল সম্ভোষ ধাম, প্রাপ্ত হবে যদি। পার হও মিছে আশা, কর্মনাশ। নদী 1

যৌষনের শোভা আর, ফুলের সৌরত।
করোনা করোনা এই, ছথের গৌরব ॥
যৌবনে কপের ভাতি, ফুল সম হয়।
কিছুকাল নোভামাত্র, পরে নাহিশ্বয়॥
সম্পদের অভিমান, করোনারে মন।
পদে পদে বিপদের, হয় আগত্রন॥
যে প্রকার বর্ষায়, নদী আর নদ।
সেকাপ নিশ্চর জেনে', জীবের সম্পদ॥
হিমাগমে জলের প্রবাহ হয় হ্রাস।
বিপদে ভেমনি করে, সম্পদ রিনাশ॥
যদিও ভোমার এই, সম্পদ রবেনা।
বিপদের পদ ভল, বিপদ হবে না॥

কেন আর কাল কাট, হেলার হেলার। ,
দীবন করিছ শেষ, খেলার খেলার।
আর কত ছরিবে হে, মেলার মেলার।
এই বেলা পথ দেখ, বেলার বেলার।
ভূতে করে হাড় গুঁড়া, ঢেলার চেলার।
ভাননা কি যাবে প্রাণ, কালের ঠেলার॥

মুক্তি মুক্তি করি সদা, যত নারী নরে।
কথার বসায়ে হাট, কেনা বেচা করে॥
কেহ বেচে, কেহ কেনে, কেহ করে দান।
সকলেই শুনিভেছে, কারো নাহি কান॥
সকলেই দিখিতেছে, চক্ষু কারো নাই।
কোথা যুক্তি,কোথা মুক্তি,ভাবি আমি তাই॥
প্রকৃতি প্রকৃতি গেলে আকৃতির নাশ।
পাঁচে পাঁচ মিশাইয়া, হয় অপ্রকাশ॥

অবিনাদী জাতা এক, স্বভাবেই রয়ং বল তবে এ জগতে, মুক্তি কার হয়।

#### মান।

মনে যার প্রবাস পীর্ষ ভূষা আছে। অভিমান মুয়ুমাণ, হর ভার কাছে॥ দহিলে প্রেমিক মন, িচ্ছেন চুর্জ্জয়। মানসে উপজে মান, মিলন সময়॥ মুখের আলাপ নাই, নরনে আলাপ। কে কারে সাধিবে ঘটে, এই পরিতাপ॥ বন্ধ হয়ে মনপন্দী, মানের পিঞ্রে। অবিরভ জ্ঞানহত, ছট্ফট্করে॥ হুচাৰু প্ৰবয় তৰু, অপৰূপ ঠাম। ধরেছে স্থকল ভাহে, স্থথ যার নাম॥ কিন্দে সে,ফল বল, পাইবে অন্তর। পিঞ্জর বাহিরে সেই, ফল মনোহর॥ হাদয়েতে ক্রমে উঠে, প্রণয়ের শোক। নয়নের জলে নিবে যার ধ্রেমালোক॥ কিন্তু উভয়ের মনে, প্রণয়ের টান। পুনর্বার হুভাশনে করে বলধান। বসনেতে ইয়াপিয়া, বদন শতদল॥ ্যোপনেতে সম্বরণ, করে ভাত্রজন। ছল ছল করে.তবু, অভিযান ছলে। শিশিরের শোভা যেন,শতদল দলে॥ অথবা মুক্তা হার, পদ্ম রাগ পরে। ঝক্ ঝক্ ভক্ ভক্, কিবা শোভাকরে॥ তখন উভয় মন, নহে এক মত। একজন মান্ডরে, অন্য জন নত।।

ন্মু হোটুয় ধরে প্রিয়, চরণ যুগল। লভিকা জড়ায় যেন, ভব্লনর দল॥ কভু করে ধরে কভু,ধরে বিস্বাধর। সাধনা কর্মে কত, বাড়ুয়ে আদর ॥ ''একি আর দেখি প্রাণ, হিতে বিপরীত। ভাভিমানে অধোমুখ, সাধের পীরিত॥ অনুগত জনে কেন, এত জপমান। জনাদর নাহি সহে, স্থের পরাব॥ অনুযোগ করে। মোরে, তাহে ক্ষতি নাই। ভানালাপে হাদরেতে, বড় ব,থা পাই॥ অমুক্ষণ জমুরক্ত, আমি হে ভোমার। অনুসূচনতে কত, জ্বালাইবে আর॥ জানুমান করি তব, অনুরাগ নাই। অত্নপায় তামি ওছে, গোহ ই দোহাই। অনুচিত অনুগতে, এত অভিৱোষ। অমুদিন তব ভ:বে, না হয় সম্ভোষ॥,, এইৰূপ সাধনায়, কোথা অমুরোধ। মানির মনেতে নাহি, প্রবেশ প্রবোর॥ পরিতপ্ত হয়ে প্রিয়, যত ভারে সাধে। ততই বাড়িয়ে মান, পর্মাদ সাধে॥

### ঈশর-স্তোত্র।

### ठम्शकष्ट्र**म**ह।

দরাম্য, তে:মা বিনা, আর কিছু, চাইনে। আর কিছু চাইনে॥

তব নাম স্থা বিনা, আর কিছু খাইনে। আর কিছু খাইনে॥ তব গুণ-গাঁত বিনা, অন্য গাঁত গাইনে। অন্য গীত গাইনে। তৰ প্ৰেম-পথ বিনা অন্যপথে হাইনে। অনা পিথে যাইনে॥ তব প্রকালল বিনা, অন্য জলে নাইনে। অন্য জলে নাইনে॥ তব হুখে হুখ বিনা কিছু হুখ পাইনে। কিছু হুখ পাইনে॥ তব ভাৰ দিক্ ছেড়ে, কোন দিকে ধাইনে। कान मिक धाइरन॥ ওংে হরি, তোমা ছাড়া, কোনদিকে চাইনে॥ কোন দিকে চাইনে॥ ितकांन (थए मित्र, नाहि शाहे माहेता। নাহি পাই মাইনে॥ বিনা মূলে কিনে লবে, লিখেছ কি আইনে। লিখেছ কি আইনে !

লঘু পরার।

এ জগতে যত কিছু, সকলি অসার।

সকলের সার, তুমি, সকলের সার॥

দরাময়, দয়া কর, দেখে দীনহীন।

তোমার অধীন, আমি তোমার অধীন॥

তোমার চরণ যেন, স্মরণ হে রয়।

মরণ সময়, নাথ, মরণ সময়॥

চরমে পরম গীত, রসনায় গায়।

ভুলিনে তোমায়, যেন, ভুলিনে তোমায়॥

অথে তব, নাম লব, হন ভব পার।

কি ভয় আমার, বল, কি ভয় আমার?

দিনাস্তে যে তব নাম, অপে একবার। বিপদ কি ভার, নাথ, বিপদ কি ভার ? । হৃদরে তোমার ভাষ, হইলে উদয়। কিছু কিছু নয়, আর, বিছু কিছু নয়। ় কখন হওনা মম, অন্তর অন্তর। জাগ, নিরস্তর, মনে, জাগ নিরস্তর॥ জ্ঞানৰূপ অসি দিয়া, কাটো মোহপাশ। অজ্ঞান বিনাশ কর, অজ্ঞান বিনাশ।। মনাকাশে বোধ-নশী, করং প্রকাশ। এই অভিলাষ, করি, এই অভিলাষ॥ যত্রপ ভখভোগ, বিষয়ে বিধান। করি তণজ্ঞান, সব, করি তণজ্ঞান। ধরণীর কোন ধনে, নাহি করি আশা। তুমি ভালবাসা, হও, তুমি ভালবাসা॥ তোমায় না ভোজে, যদি, হয় মুখোদয়। স্থ কভু নয়, সেতো, স্থ কভু নয়॥ ভোমার সাধনে হোলে, চুখের উদয়। দুখ কভু নয়, সেতো, দুখ কভু নয়॥ ভোমার সাধনা হুখ, সেই স্থখ স্থখ। আর সব তুখ, নাথ, আর সব তুখ। ত্র নাম-চাঁদের, অমৃত যেই খায়। কুষা তৃক্ষা যায় তার, কুষা তৃক্ষা যায়। সে রসের আস্বাদন, পেয়েছে যে अन। সকল জীবন, তার, সকল জীবন॥ তারে, ভাবে, তারিয়াছে, পেয়েছে সে তার। সকলি বেতার, তার, সকলি বেতার॥ চীদ ফেলে আছাড়িয়া, নাহি ছোঁয় স্থা। যায় ভব ক্ষুধা তার, যায় ভব ক্ষুধা। ইহ, পরকালে ভার, চুইকালে জয়। সদা শিব্ময়, সেই, সদা শিব্ময়॥

নিরানন্দ নিকটেডে, থেতে নাহি পারে। সন্তোষ-সাগরে, ভাসে, সন্তোষ-সাহরে॥ কাননের ভরুতল, নগর প্রধান। সকল সমান, ভার, সকল সমান। রোগ, শোক, জরা, চুখ যাতনা অপার। কিছু নাই, ভার, মনে, কিছু নাই ভার ॥ जना काल, जमछात, जम्मादन विश्वरम् । মতি তব পদে, শুধু, মতি তব পদে॥ यकन, कूकरन मारे, जुष्टि जात (यह। আতা পর, ভেদ নাই, আতা পর ভেদ। মেৰূপ বিমলভাষ, ওছে বিশ্বসার। কবে পাৰ আর, আমি, কবে পাব আর॥ ভ্রমের বাড়ায়ে ভ্রম, ভ্রমি এই ভবে। আমার কি হবে, নাথ, আমার কি হবে ? আমারে অভ্রম যদি, কর এই ভবে। অভ্ৰম কি হেে, ভাষ, অভ্ৰম কি হবে॥ ভ্রমে ভ্রমে, মন সদা, নাহি ভানে ক্রম। হর ভার ভ্রম, হর, হর ভার ভ্রম।। আমায় কৃতার্থ কর, কল্যাণ করিয়া। নিজ জ্ঞান দিয়া, বিভু, নিজ জ্ঞান দিয়া॥ আমি, আমি, আমার, আমার সমুদর। না করিতে হয় যেন, না করিতে হয়। যুখন যে ভাবে আমি, যেখানেতে থাকি। তোমারেই ডাকি, শুধু তোমারেই ডাকি॥ অন্তর বাহির আরু, কেন রাখ ভেদ। দূর কর খেদ, সব, দূর কর খেদ॥ করিবে হে, তব প্রেম, বারি বরিষণ। ছেরিয়া নয়ন, ৰূপ, ছেরিয়া নয়ন॥ मत्रा छिष्य रहाक, श्रवम धार्वाथ। আমি আমি বোষ, যাক্, আমি আমি বোধ॥ আমার ক্লবে না কেহ, আমার আমার। হইব তোমার, শুধু, হইব তোমার॥ সংগীত। রাগিণী ললিত। তাল আড়া।

কি হবে, কি হবে, ভবে, কি হবে আমার হে, কত দিনে পাব আমি, প্রবোধ কুমার হে॥ এসে এই মারাপুরে, অক্ষকারে মরি ঘ্রে, এখনো গেলন। দূরে, ত্রিভাপ আঁধার হে॥ পরম প্রেণয় ধরি, বুথা স্থুখ পরিহরি, রসনায় হরি হরি কবে কবে আর হে॥ পরমেশ প্রাৎপ্র, পতিতে প্রিত্র কর্ পতিত পাবন নাম, শুনেছি তোমার হে॥ জ্ঞানারণ অমুদিত, হাদিপদ্ম সমুদিত, মোহমেঘে আচ্চাদিত, অখিল সংসার হে॥ পাইয়া অনিত্য দেহ, নিতাভ্রমে করে খেত, আপন স্বৰূপ কেহ, না করে বিচার ছে॥ মন নহে মনোমত কত ভাবে ভাবে কত, অবিরত হেরি যত, মাগারি বিকার হে॥ বিফলে বিগত কাল, নিকট হোতেছে কাল, না হইল ক্ষণকাল, হুখের সঞ্চার হে।। যেজন যেভাবে ভাবে, সভাব না পায় ভাবে, ভাবিতে ভাবিতে ভাবে, ভাবনা অপার হে ॥ স্বৰূপ স্বভাব মতে ভামিলে ভাবনা পণে, দেখা যায় এজগতে, সকলি অসার হে ॥ ভুতময় যত হয়, কিচু তার সার নয়, সদানদ শিব্যয়, তুমি মাত্র সার হে॥ কেহ নাই ভব সম, প্রাণাধিক প্রিয়ত্তম, মানস মন্দিরে মম, করছ বিহার হে॥

সং ভাবে অপৰূপ, বিৰূপ কিৰ্মণ রূপ, স্বৰূপে স্বৰূপ ৰূপ, ধর একবার হে॥ মনোময় ৰূপ দেখে, অন্তরে বাহিরে রেখে, নিরস্তর চেকে রেখে, নয়নের দার হে॥ সকলে ভোমায় কয়, নিরাকার নিরাময়, আমি দেখি মনোময়, তোমার আকার হে।। কভৰাপ কভৰাপ দেখিভেছি যভৰাপ, ভাৰতেই ভৰৰূপ রোধ্যেছে প্রচার হে॥ (मृद्य क्रे उनकार्य, ना (मृद्य य उन कार्य, হায় একি অপৰূপ, বুথা জন্ম তার হে॥ অচল সচল চয়, ৰূপ শোভা যত হয়, সকলেরি দ্যাময়, তুমি মূলাধার হে॥ তোমার বিভাস তায়, যদি না প্রকাণ পায়, একে একে সমুদায়, হয় অন্ধকার হে॥ क्यन मदनत जून, की र मन बुद्य जून, ভব মূল, তব মূল, বোধ আছে কার ছে ? না চিনিয়া আপনায়, ভোমায় চিনিতে চায়, সাঁতারে কি হ্ওয়া যায়, পারাবার পার হে॥ মিছে কাল হরিলাম, মিছে ভার ধরিলাম, किछूरे ना कतिलाय, निष्ठ उपकात है।। ভয় করি পর-ক্রোধ, অনুবোধ উপরোধ, জনমের পরিশোধ, হইল এবার হে॥ আমি দ্বিজ আমি মুচি, আমি পাপী, আমি শুচি, এ অরুচি, এই রুটি, দেশ ব্যবহার হে॥ মতে মতে দিয়া মত, সময় হইল গভ, এখনো রাখিব কত, পাপ দেশাচার হে॥ কেবা বিপ্ৰা, কেবা মৃচি, কে অশুচি কেবা শুচি, দেখিতেছি মিছামিছি, এ সব বাপার হৈ॥ বুথা করি পরিশ্রম, ভোমার কুপার ক্রম, বিনা এই ঘোর ভ্রম, হবে না সংহার হে॥

অবিদার ঘার জোর, রজনী না হয় ভোর, কেবল করিছে সোর, চোর অহস্কার হে॥ যত দিন শত্রু সবে, প্রবল হইরা রবে, ভতদিন এই ভবে, না দেখি নিস্কার হে॥ ৰপুৰাসে রিপুদল, প্রকাশ করিছে বল, क्रां (मरे मलवल, रूट्डिइ विस्तात है॥ থাকিতে সরল সে:জা, না হইল সার বোঝা, ক্রমেই ভ্রমের বোঝা, হইতেছে ভার হে॥ এ ভার বিষম ভারি, আমি নিজে নই ভারি, এ নহে ভোমার ভারি, হর এই ভার ছে॥ ভারি হয়ে ভার ধর, ভারি ভার হর হর, ত্রাকর কর কর, আশার অসার হে। কুপাকর কুপারাশি, অবিদ্যার বল নাশি, করুকু িবেক আসি, দেহ অধিকার হে॥ এৰপ হইলে ভবে, আর কি হে ভর রবে, বিরাগ আসিয়া হবে, অহুচর তার হে॥ বিবেকের ভাষ্যব, দেখে হবে পরাভব, ছেড়ে যাবে শত্রু সব, মনে ু জাগার হে।। রাগ ঘেষ নাহি রাক, আমার মানস তবে, সহকে পরিত্র হবে, হরে পরিষ্কার হে॥ रहेल धर्मात अयु, ममुनव एडमर, বিপক্ষের থত ভর, হবে ছারখার ছে॥ आंगाय (नश्यक्ष) मीन, धमन छुनिन, निन, তবে জানি ভক্তাধীন, কর্মনা অপার হে॥ গত যত হয় ভাগী, ততই ভাবেতে ভাগি, সেৰপে ভাবের ভাবী, কবে হব আর হে॥ গুপ্ত কথা নাহি কোয়ে,হাসিতেছ গুপ্ত রোয়ে, আমি কেন গুপ্ত হোষ্ট্রে,ভূগি ক রাগার হে॥ निरम्ह केश्रेत मान, मा निर्व केश्रेत थाम, ঈশ্বর ভাষার নাম, করিয়াতি সার হে॥

কি ক্রিব নাম নিয়', তুষিলেনা ধ'ম কিয়', নামে ধামে এক করা, বিহিত বিচার হে॥ বিবেচনা স্থালয়, ক্রিয়া সব শুভ্ময়, সকলেই যেন কয়, ঈশ্বর ভোমার হে॥

### পয়ার।

প্রভ'কর প্রভাতে, প্রভাতে মনোলোভা। দেখিতে হৃদ্দর অতি, ক্লগতের শোভা॥ অকিশের ভাকস্মাৎ, আর এক ভাব। হয় দুষ্ট নৰ স্থা, সুখদ স্বভাব॥ তরুল তপুন ২েরে, তরুল তামস। লোহিত লাবণ্য হেরি, মে'হিত মানস॥ ক্রমে ক্রমে সে ভাবের, হয় ভাবান্তর। খরতর করকর, হন্দিগাকর॥ ক্রমেতে, ক্রমের হাস, পশ্চিমেতে গতি। দিন যত গত, তত, দীন, দিনপতি॥ পরিশেষ পুনরিরে, ঘোর তান্সকার। প্রণাম ভোমার, ও ভু, প্রণাম তা মার॥ হথনি কৃত্ৰ কৃত্ৰি, এগনি সংহার। ভোমার জনস্ত লীলা, বুবো সাধ্য কার 🕫 এই দেখি, এই আছে, এই নাই, আর। প্রাণাম তোমায়, প্রাভু, প্রাণাম আমার॥

প্ৰেকুল্লিভ কভ কুল, বন উপৰনে।
শত শত শতদল, শোভা করে বনে॥
কুস্থমের াদ ছেড়ে, কুস্থমের বাদ।
বায়ু ভরে এদে কবে, নাসিকার বাদ॥
মধুভরে উল্টেল, চলচল ৰূপ।
ভাগ্য ভলা, হাস্ম ভাগ, দুশ্য স্থাৰূপ॥

মাজে মাজে, যত ছিল্ল, নিজ নিজ দলে।
রস আর, যশ গায়, বোসে প্স্পানলে॥
শরীর পতন করে, খন্য তার ক্রিয়া।
বাঁচায় অসংখ্য জীব, মকরন্দ দিয়া॥
ক্রণ পবে, সেই শোভা, নাহি থাকে তার।
প্রাণাম তোমায়, প্রভু, প্রণাম আমার॥
এখনি স্তন্ধন করি, এখনি সঙ্গার।
ভোগার অনস্ত লীলা, বুরো স'ধ্য কার ই
ক্রান্থ, এই অ'ছে, এই নাই, আর।
প্রাণাম তোগায় প্রভু, প্রণাম আমার॥

নয়নেতে হেরি এই বিশ্বপ আভাস। সেত্ৰয়, সমুদ্ধ, অমল জাকিল।। প্র দেখি, নব নব, অসম্ভব সব। খেত, পীত, নীল, রক্ত, কুফারর্ণ নভ॥ ভার বার, দেখি ভার, নাহি সেইৰূপ। সভাল জলদজালে, জগৎ বিৰাপ।। নহানেরে হাজ্জা দেয়, অন্ধকার রাশি। ভাই দেখে, মাজে মাজে, চপলার হাসি॥ সে সমহ, মনে মনে, ভাবি এই ভাব। স্কু'বের সেই ভাব, হবে না অভাব॥ ক্ষণ পরে, দেয়ে দেখি, সকলি িকার। প্রধাম তোমায়, প্রভু, প্রধাম আমার॥ এখনি সূজন করি, এখনি সংহার। ভোমার অনম্ভ লীলা, বুবো সাধ্য কার ? এই দেখি, এই আছে, এই নাই, আর। প্রণাম তে'মার, প্রভু, প্রণাম আমার॥

এই আমি, এই আছি শুএই অবয়ব। এই ৰূপ, এই হুস, এই আছে, রব॥ এই হস্ত, এই পদ, এই ছাছে, সব।
এই এই, ছার নেই, পরে এই শব।
এই ছাতা, এই পুল্ল. এই পরিবার।
এই ছাত্যা, এই স্থাও এই হাছাকার।
এই ছাত্যা, এই ভক্তি. এই বিলোকন।
এই চিন্তা, এই শক্তি, এই বৃদ্ধি মন।
এই চিন্তা, এই মাকি, এই অনুমান।
এই তৃত্যা, এই আগি, এই অনুমান।
কান পরে, আমি কোখা, কেবা আর কার?
প্রামা ভোমার, প্রভু, প্রণাম আমার।
এখনি স্কলন করি, এখনি সংহার।
তে'মার জনস্ক লীলা বুবো সাধ্য কার?
এই দেখি, এই আছে, এই নাই, আর।
প্রামা ভোমার, প্রভু, প্রণাম আমার।

মর নাম, দাতারাম, ধরি হে চরণে।
দরাকর, দয়া কর, দীনহীন জনে॥
ক'লের নিদাঁলে, আমি, নাহি করি ভয়।
ভিতরের গ্রীষা যত, সব কর ক্ষয়॥
তাপেতে দাঁহছে দেহ, রহেনা রহেনা।
সহেনা, সহেনা, আরু, যাতনা সহেন॥
অহকার, দিবাকর, খর কর ধরে।
অভিমান অনিষা, অনল বৃষ্টি করে॥
আশারূপ ঘূর্ণাব'তেই ঘোর অন্ধকার।
দেখিতে না পাই কিছু, করি হাহাকার॥
কর্মাভোগ ধূলা উড়ে, অন্ধ কোরে রাখে।
ক্রিভেগ্ন প্রলার করি, দিক সব ঢাকে॥
ধনত্বা, নহে কুশা, সদাই প্রবল।
মাকস-চাতক ভাকে, দে জল, দে জল॥

লোভ ৰূপ ঘন, ঘন, করিছে গর্জন। নিরস্তর চেরে আছে, ভাহার বদন।। মাবো মাবো কোধ ৰূপ, বজুনাদ হয়। ত্তনে রব, হই শব, জীবন সংশয়॥ , কামনার অনল, প্রবল হোয়ে জুলে। সে অনুস, শীতল, না হয় কোন জলে॥ বল আর, কিপ্রকার, রাখিব জীবন। পিপাণায়, ছাতি ফাটে. না পাই জীবন॥ मग्र-नमी खर्यादयुष्ट्र, त्वभ न हे आता। মোহৰূপ, পাঁকে ভরা, কলেবর ভার॥ সাঘ্য কার, ভাহার, উপর করে গভি। পদার্পন করিলে, অমনি অধোগতি॥ কোথা হে, জনাথনাথ, করুণানিধান। তোমা বিনা, এ শক্ষটে, কে করিবে তান।। অস্তর তো নও, ভূমি, অস্তরেই রও। কি দোষ দেখিয়া তবে, সদর না হও? ভাবময় ভগবান, তুমি গুণাকর। তঃণের সাগার হোয়ে, গুণ ভার ধর॥ হর হর পাপ তাপ, এ যাতনা হর। দ্যাময় ! দাসের, ছর্দ্দশা দুর কর ॥ অনুগত অকিঞ্ব, অনুভাপে মরে। কিঞ্চিৎ করুণা কর, কাতর কিন্ধরে॥ করণা-বরুণালয়, তুমি ফুপাময়। এ বিপদে বারি দান, স্থবিহিত হয়॥ হরি হে, গগনৰূপ, হৃদয়ে আমার। করহ বিবেকরূপ, বর্ষা সঞ্চার॥ অনিরত জ্ঞানবারি, করি বরিষণ। জন্তরে করিয়া দাও, বরষা আবিন। স্থার স্থার মত, পড়িবে হে নীর। একেবারে জুড়াইবে, অস্তর বাহির।।

পাপ ভাপ নিদাঘের, দায় এড়াইয়া।, লইব ভোমার নাম, শীতল হইয়া॥ আর না রহিবে দেহে, কোন**রপ ভ**য়। স্থবৈতে করিব ধান, " **জগদীশ জয়**,॥

#### -1010

১১৬০ সালের বিদায়। ভোমার সময় স্থ, হয় অবস্থা। আর নাহি ক্ষাকাল, হবে অবস্থান ৷ এখনি খ জিয়া লহ, আপনার স্থান। খাইয়া মাছের মুড', করহ প্রস্থান॥ প্রকাশ হইলে দিন, মীন যাবে মারা। তুমিও তাহার সহ, হইবে হে সারা॥ যভক্ষণ আছে চাঁদ, গণনমণ্ডলে। যভক্ষণ তারাগণ, বিকিধিকি জুলে॥ যভক্ষণ কুণুদিনী, থাকিয়া প্রকাশ। বিতরণ করিবেক, তাপন স্থবাস। যভক্ষণ প্রকাশিত, না হবে ময়ুখ। यङकान कमलिती, ना जुलिटन पूर्य॥ যতক্ষণ কোকিল, প্রভাতী নাহি গায়! ততকণ দেখা শুনা, তোমায় আমায় 🛭 দিনের প্রবেশ হোলে, মীনের বিনাশ। অকমাৎ ভেড়া এসে, চোরে খাবে ঘাস। তথন তোমার আরু, না থাকিবে ভোগ। উশার দর্শন পক্ষে, চাঁদের সংযোগ। যাও যাও যাও তুমি, লয়ে পরিবার। याहे, यहि, यहि, विनव ना आत्॥ ওহে কাল, আর কেন, কালবেশ ধর? মহাকালে মিশাইয়া, কাল গিয়া হর॥ যে তোমার দোষ গুল, ভুলিব না মোলে। স্মরে করিব গান, "পুরাজন,, বোলে ॥

এইৰূপু কভ বৰ্ষ, ভোমার মতন। ঘুরে ছিল বাশিচক্রে, হইয়া নূতন॥ সবাই হয়েছে গত, তুমি ছিলে বাঁকি এখনি ঘুমাৰে ভুমি, মুদে ছুই জাঁথি॥ সালেতে পড়িলে শূন্য, হয় সর্বানাশ। উপমা রয়েছে তার, চল্লিশ, পঞাশ।। পঞ্চাশের 'ওলাউঠা, নষ্ট করে দেশ। চল্লিশেতে ডুবে যায়, দক্ষিণ প্রদেশ। গ্রামে আর লোকজন, কেই নারহিল! একেবারে ঘরবাড়ী, উভাত ২ইল।। মারা গেল, শিঞ্রের, বাবু জমীদার। বিকুলো মণ্ডলঘাট, অমীদারি তাঁর ॥ বিশেষতঃ তিরিশ সালের বিবরণ। মনে হোলে, 'হাৎকম্প, হয় প্রতিক্ষণ।। এই বাসালায় আছে, যডেক বাসাল। একেবারে ইইয়াছে, স্বাই কাঞ্চাল ॥ নীরাকারে নিরাকার, সমুদ্র স্থলে। ভারতের সব ভূমি, ভেমেছিল জলে ॥ উঠেছিল নাম, नद्ग, সব এক গাছে। সেকেলে 'মগাই জুর, আজো মনে আছে। কাহারো শরীরে আর, ছিলমাকো সাড। হাড়ে হাড়ে, থুড়েছিল, ভেম্বোছল ঘাড়॥ তোমাতে দেখিয়া 'শুন্য, হোমেছিল ভয়। প্রতিদিন ভাবিতাম, কি হয় কি হয়॥ ভূমি 'ষাট্, কর নাই, সেপ্রকার ঘাট। প্রকার কল্যান হেতু, কিছু ছিল জাট্।। অতিবৃষ্টি, অনাবৃষ্টি, মহামারী, আর। হয় নাই (এ বছর,) সেরূপ প্রকার ॥ ভালৰপে জন্মেছিল, শস্য সব দিশি। কেবল দামেতে চড়া, সোর্যে আর ভিশি॥

আলোর বিষয়ে ভাল, হয় নাই হিছা তেলের সমান দর, ঘূতের সহিত ॥ মটর, কলাই, মুগ, ছোলা, যব, গম। কোনৰূপে কোন খানে হয় নাই কম॥ পটল, বেশুন, আলু, সিম, কচু, দাটা া হয় দাই আঁটা দর, সব ছিল ঘাটা॥ আহারের এত হুখ, আর নাহি হবে। পেট ভোরে মধুফল, খেয়েছিল সবে 🛭 এ সকল উপকার, ভুলিব না মনে। এখনো খেতেছি আঁব, ভোমার কল্যানে॥ তুমি দিয়ে গেলে গাছে, ভাল আঁব কাঁচা। ভারি দায়, ভুতনের, হাতে তার বাঁচা॥ কাছে দেখি, গাছে দেখি, মনে ভয় আছে। আসিয়া ' নুতন সাল, , সাল হয় পাছে॥ আঁাৰ দেখে ভাৰ উঠে, প্ৰাৰ কাঁপে ভৱে। প্रवन ( यवन गाए। ), कि बानि, कि करत ॥ রাগণের মধুবন, ভাঙ্গিলেন যিনি। र्दंद्ध मल, कि कल, थान जब छिनि॥ হার হায়, কৰ কায়, ভেবে হই হাৰা। একা তাঁরে রক্ষা নাই, বায়ু তাঁর বাবা॥ গলে জাঁটি বেধেছিল, অশেকের বনে। বানরের সেই কথা, আজো আছে মনে 🏾 পাকার নিকটে ভয়ে, নাহি যান বাছা। রাম কোরে, পাঁতা ফুল, কেনী, খান্ কাঁচা। ছেলে ব্যাটা, ঘোর ঠাটা, করে এইপাপ্। পাকিতে না দেয় ফের, বুড়ো তার বাপ্॥ দোহাই "অজনা দেবী,, দোহাই ভোমার। গঞ্জনার ভাগী হবে, হোলে অভ্যাচার॥ ভোমার ছেলের হাত, এড়ানো গিয়াছে। সাংখ্য সোণার আাবে, আঁটি ধরিয়াছে॥

ছলিতে না মুখ ফুটে, ভোমার যে, তিনি। করিয়া বিচিত্র গভি, ঘ্রিছেন যিনি॥ শাখায় না চড়ে যেন, নামাও নামাও। থামাত থামাও ভাঁরে, থামাও থামাও। কিন্তু যেন বেঁধনাকো, হৃদয়েতে রেখে। নিয়ত চরাও ভাঁরে, কাছে কাছে থেকে॥ তিনি যদি "মন্দ্র, হন, মন্দ তবে নয়। সন্দ হোলে, জগতের, কত ভাল হয়॥ বা হোক, তা হোক, যটি, যা হয়, তা হয়। তোমারে তোমার গুণ, বলা ভাল নয়॥ দুই এক বিষয়েতে, যে কোরেছ হানি। ভামি ভারে দোষ বোলে, কৎনো না মহি। সে দেখেৰ কে দোষে বল, এত যার গুণ। তুষুকু বিলিতি লোক, রণে হোয়ে খুন। বলাবলি করে সব, এরাপ প্রকার। "কোষ্পানি না পেতো যদি ত্বতন চার্টার॥ কুইনের অধীনে, থাকিলে অধিকার। ভারতের হইত, অশেষ উপকার॥,, কি জানি, কি হোতো ভায়, কে বলিতে পারে। এ কারণে, একারণ, চুষিনে ভোমারে॥ খুঁ ড়িতে খুঁ ড়িতে কেঁচো, যদি উঠে সাপ্। তবেই প্রাণের দফা, একেবারে সাপ্॥ কহিলাম যতত্ত্ব, মিছা সব হয়। করিলে কি সর্ববনাশ, গমন সময়॥ তিন দিন বড় করি, রঙ্গদেশ ছেবে। ব গানের যত ভাষি, সব দিলে সেরে॥ একেবারে উঠাইয়া, ভারতের ভাত। ৰজ্জাঘাতে করিয়াছ, মাত্র নিপাত॥ শিবনারায়ণ ঘোষ বাবু গুণরাশি। হইলেন পুৰাফলে, গঙ্গাতীরবাসী॥

এক দিনে কি বিপদ, করিয়াছ তাঁর।
গরুহত্যা নারীইত্যা, ব্রহ্মইত্যা আর ॥
যোড়াসাঁকো সিংহপুর, করি অন্ধকার।
হরিলে ইরিশ ধন, সর্বান্তনাধার ॥
তাঁহার অভাবে সব, মরিতেছে ছুখে।
হাহাকার উঠিয়াছে, সকলের মুখে॥
আপনি বিদায় হোন্, করি নমস্কর।
সভায় করিব পাঠ, কুলুফী তোমার॥

১২৬১ সালের রাজ্যাভিষেক। এসো এসো, একষটি, নববর্ষরাজ। ভোমার কারণে আজি, কোরেছি সমাজা। বোসো বোসো সিংহাসনে, ধর্মা ভাবভার। প্রজার প্রালক থেকে, কর স্থবিচার॥ করি এই নিবেদন, করিয়া প্রাণতি। অনুকুল ২ও নাথ,ভারতের প্রতি॥ অদ্য তব ভ ভিষেক, মঙ্গলের তরে। কতৰূপ শুভাচার, প্রতি ঘরে ঘরে॥ দ্বারেতে কদলী তরু, কুস্তমের হার। পুর্ণঘটে আমুশাখা, করিছে বিহার ॥ আনক্ষের বেশিছল, করি সব নরে। জলছত্র ছারাছতে, স্থাপে দান করে। কাড়িয়া হুতন খাতা করিয়া প্রবাম। প্রথমেই লিখিয়াছে, আপনার নাম॥ আমাদের হুথ চুথ, মান অপমান। ভৌতিক সম্পদ এই, দেহ, আর প্রাণ॥ যা করিবে, তা ইইবে, শুন গুলাকর। নকলি নির্ভর হোলো, তোমার উপর॥ অনুকুল হও তুমি, এই ভিক্ষা চাই। কোরোনা অশিব কিছু, দোহাই দোহাই ॥

# কবিতাবলী।

-- : • : -----

### মহাকবি

মহাত্মা ঈশ্বচন্দ্র গুপ্ত মহাশয়ের রচিত কবিতার সার সংগ্রহণ

--- 305 --

वर्षेत्र मः था।



কলিকাতা। প্রভাকর যন্ত্রে মুদ্রিড।

नन ১२৮১ मोल।

শীতকালে কবি নৌকারোহণ পূর্ব্বক গঙ্গাপথে পশ্চিম প্রদেশ গমন করিতে করিতে নিম্নলিখিত কবিতাটী রচনা করেন।

#### ত্রিপদী।

বিগত বিষাদ যত, ভ্রমণের স্থাকত, অবিরত হুখে রত মন। হেরি সব নৰ ন ৰ , কত কৰ, হত রব, পরভিব মুখেব বচন॥ এক ভাব অংর শ, দেখা হয় যার সহ, महापत मम (महे कन। কিছমাত্র নাঙি খেদ, কিছম ত্র নাহি ভেদ, অভেদভাবেতে আলাপন ॥ আদু সিদ্ধ করি পাক, উদরেতে পরিপাক, ক্ষুধানল তখনি নির্বাণ। ভাল-মন্দ ভেদ নাই, যাহা পাই ভাহা খাই, লাগে ছাই ভমুত সমান। রোগীর নাথাকে রোগ, ভোগীর দ্বিত্তন ভোগ, যোগীর যোগেতে মন লয়। বিধাতার চারু স্তষ্টি, চারিদিকে করি দুষ্টি, হুখৰপ বারি বৃষ্টি হয়॥ একেতো গঞ্চাব শে'ভা, অভিশয় মনোলে'ভ ত্রিভুগনে তুল্য ত র নাই। ভাবে অভি প্রিরতর, নয়ন সম্ভোষকর, মনোহর চর ঠাই ঠাই ঃ

স্থানে স্থানে কত কভ, নদ নদী শত শত, পরিণত গ্রন্থ র ১রনে। েধি হয় ভারা সাং, কল কল করির ব পুৰকিত ছেম খালাপনে॥ নদী নদে গেগা যথা, ভাপৰাপ ভাৰ ভথা, ८म कथा क'इन काटन जांत्र ? যে জান ভাবিক হল, সেই ভার ভাব লয়, দেখে সেই, চক্ষু আছে যার। সভাবের ভাল ধারা, এক টাই চুই ধারা, প্রভেদ প্রভেদ তার ড'র। এক দিকে কৃষ্ণারখা, স্থির রূপে যায় দেখা, থেতিরেখা অনা দ.ক ভ র॥ হয়েছে একতা যোগ, দলত বিভিন্ন ভোগ, ভিন্ন গুল ধৰে দুই জল। এক জল যেন মুধ্ন পান মাত্রে নাডে ক্ষধা, স্থভাৰত জাত মর-ল।। নানা জাতি নানা জন, বিশেষত মহাজন, ए दिएबार्श नाना ० एवं संस्। डांछि यांस एल एल. (कड़रा डिक न हरत. যেখানে যাহার মন চাচ। शामा नक्ष सार्षे सार्षे, नारहे बारके शार्षे मार्रे, নানা কাতি দ্রব্য সমদয়। নাহি অন্য অ'কাপন, নিৰাপণ করি পৰ, मिशा धर्म (कना (व ! इर ॥ मर्षाधन अवश्रीत, कार कार मांवस्तर ব্যবধান হাটের ভিতর। বুঝে সৰ নিজ হল, হলেতে লাভের তুল, कुल नारे कुटलात केंग्र ॥ क्ट्यात्र कार्याञ्चलः क्ट्र व खमन हृत्तः কেছ করে তীর্থ পর্যটম।

যাহার যেমন আস্বাদন।। সমস্ত দিবস ভরি, সাহসে চালাই ভরি, স্থিতি করি সময়। কোথা গ্ৰাম কে থা হাট কোথা হন কোথা মাঠ. কিছুমাত্ৰ নিৰাগিত নয়॥ দশখানা এক ঠাই, তাহে কিছু ভয় নাই, নিদ্রা যাই অভয় অন্তর। বত কণ জাগরণ, হাসি খসি তভক্ষণ, হুখে মন থাকে নিরম্ভর॥ স্থান বথা ভাল নয়, তথা চর মনে ভয়, দহ্মান্য পাছে লয় ধন নিজাযোগ পরিহবি, জপ করি হরিহরি বিভাবরী করি জাগরণ। স্থির করি চুই তারা, দুষ্টি করি স্থতারা, কারো মুখে তারা তারা রব। নিশি যাবে কডক্ষণ, নিরীক্ষণ প্রতিক্ষণ, প্রতীক্ষণ করে তাই সব॥ ব্রক্ষেতে বিহশ্বচয়, দের দিবা পরিচয়. ললিত ভৈরবে ধরি ভান। ঈষৎ রক্তিন রেখা, পুর্বাদকে যায় দেখা, পুলকে পুরিত হয় প্রাণ॥ হেরে প্রভাতের মুখ, বিগত বিপুল চুখ, नत रूथ छन्दं उपग्र। নৌকাবাসী যত নরে, বিশ্বকর বিশ্বেশ্বরে, • ভক্তিভরে স্মরে সমুদয়॥ অরিংবাল অরিবেলে অরে,,। 'ৰালা, বোলে ভাকে উচ্চ বরে॥

গতি বটে সৰাকার, সেইৰূপ হুখ ভার, , গুনিয়া সে সব ধানি, অন্তরে আহ্লাদ গণি, দিনমণি করি দরশন। অপৰূপ আভা ভার, ভব্লণ কিরণ হার, জালে জুলে লোহিত বরণ ৷ হেরি এই অপরাপ, মনে ভাবি এইরাপ, করিয়া জাহ্নবী জলপ'ন। পরিভুপ্ত প্রভাকর, বিস্তার করিয়া কর, শূন্য হতে স্বর্ণ করে দান॥ কুজাশা যদ পি হয়, তমোময় সমুদয়, দুষ্ট নাহি হয় জলস্থল। যে দিকে কিরিয়া চাই কিছু না দেখিতে পাই, জন্ধক'রে আবৃত সকল। আসিয়াছে দিন্যান, কেবা করে অনুমান, শিহ্মাণ নিজে দিনকর। জলস্থল একাকার, ভেদ বোধ নাছি আর, ধুমাকার তিমির নিকর॥ শিশিরের ঘোর ধৃদ্য জল হতে উঠে ধৃদ্য উৰ্দ্ধভাগে উচিতে ন পায়। चन चन थात थात, शक्कांत शास्त्र भारत, বায়ুভৱে খেলিয়া নেড়ার॥ (थठत ना ६८त ६८त, जांथि गुप्त दुक्त भरत, মারে ম'রে করে নিজ সর। ভাতে পাই উপদেশ, রজনী হইল শেব, প্রাচীতে উদয় প্রভাকর। একেবারে গতি রোধ দুরে গেল দুর বোধ, মহা ভাষ মরীচিকা প্রায়। श्रुद्दत्र वाकाल कीव, 'देवहवी, ववांनी विव, उसात जूमात वृष्टि, पूरत शाल पूत पृष्टि, আপনারে দেখিতে না পাঁ।। ৰত সৰ দেড়ে চাচা, দাভি ধুয়ে খুলে কাচা, তরকের অঙ্গ পরে, নীহার বিহার করে, স্রোভবেণে সিক্সপথে ধায়।

নাহি তার অহুৰূপ, মৃহধ্বনি টুপ্টুপ্ 'অপৰূপ ৰূপ হয় তায়॥ নয়নের পরিত্তি, রবির কিঞ্চিৎ দীপ্তি, ভলে যদি জুলে সেই কালে। তাহে বোধ হয় হেন, हक्ष्मा हलना यन, বিভূষিত রজতের জালে॥ ভূতের অদুত খেলা, ক্রমে যত হয় বেলা, ভ্যালা ভালা ঐশিক ব্যাপার। क्तर्य ভाর यांत्र क्रम, खांगरकत यांत्र खण, শ্রমপথে ফুক্ত পুনর্ব্বার॥ অরুণ উদর কালে, চুটে যায় পালে পালে, দাঁড়ি মাজি আর আর যত। প্রভাতের কর্দ্য সারি, উঠে সব সারি সারি, নিক নিজ কর্মো হয় রত॥ হাঁক ডাক জোর জ র্ করে কত শোর্শার্, (लार्ग यां यु महा शंखरशाल। ধ্বজি তৃলে খুলে ভরি, "বদর বদর হরি., " গঙ্গার পীরিতে হরিবোল ,,॥ डी हिभार यात्र यह, जात्मत उल्लाम कछ, কপি হেঁকে পালি আকর্ষণ। কপি মুর্দ্তি নিরখিয়া, পিড় বেহ প্রকাশিয়া, অনুকুল আপনি প্ৰন 🛚 ফ্যালে দাঁড়্বু:ঝ বাঁক, ঘোর হাঁক জোর ভাক. গোঁপে পাক সভোষ হৃদয়। একে পালি, ভাহে ভাঁটি, ছুইদিকে পরিপাটী শীতকাল তাদের সদয়॥ গোড়েরে গোড়েনে উঠে.নীরকেটে ভীর ছুটে, নিমিষেতে চক্ষু ছাড়। হয়। কলের ভাগাল সব, ভার কাছে কোবা পড়ে রয়॥

यात्र छेकात्मत यान, यात्र छकानीत्र कान, প্রতিকুল অঞ্জনার পতি! নিত্তৰ সহজে তুৰ, তাৰ পেটে ৰত তুৰ, সেই গুৰে অভি মৃদ্যাতি॥ ্লে তরি অপ্প নীরে,ধীরে ধীরে তীরে তীরে, বাজিয়াছে বিষম বিপদ। কি কব ভাহার ঘতি, যেন সতী গর্ভগতী, চোলে যেতে টোলে পড়ে পদ॥ স্থানে স্থানে পাৰ্ক জল, ছ'ড়ে ডাক কল কল, বল করি বেগে দের মে:ড়া। উজানীরা সেইখানে, নাহি আর বাঁচে প্রানে, গোদের উপরে বিষ্ফোতা ॥ লহরী আসিছে ভাড়ে গুণ বায় উচ্চ পাড়ে, चार्छ वल कति (पशंहीन। অতি জার একট না, কি করিবে গুণটানা, টানাটানি কোরে যায় প্রাণ॥ কাটিতে জলের টান্, সটানে মারিছে ট্রি, তবু নাহি আধ হাত নড়ে। ক্ষণমাত্রে হয় খুঁন, তথাচ না ছাড়ে গুণ, হাটিতে হোঁছোট খেয়ে পড়ে॥ পাছাড় মারিছে ধেয়ে, কাছাড় ভাছাড় খেয়ে, তরুসহ পড়ে এসে জলে। শব इय विश्वीत. (भारत खग्र मान मागु, সমুদর ধার রসাতলে। সেইখানে যত নায়, ঠেকাঠিক হোয়ে যায়, গুণ নিয়ে হড়াহড়ি লা গ। পাশাপাশি চালাচালি, সদালাপ শালাশালি, গালাগালি পাড়ে সৰ রাগে॥ মিছামিছি করে রব। পরস্পার ঠালে বাংগে, বাংহির হইবে জাগের ছই কাপ ভেঙ্গে যায় কছ।

ৰচনেতে মাভামাভি, কিন্তু নাই হাভাহাভি, কটু কর মুখে তা সে যত॥ ভেড়ু া নেজ্যা াদি ভাগে ভাগে হয় বাদী, কি কব স্থের ভাব, অপুল্রের পুল্র কাড,, ভে'র েরি কিন নয় পুরা। আনি তান ভারি দেও, পিছে লাও হট ্লেও, त्विष्टिक्ष्टि काञ्चा ल स्व इंबी 🚜 ॥ ৰ'লে কভতে গ্ৰাস, সেম্বি কেম্বি যায়, মাজি বলে. "ওণ ছ রে দিমু ? স্তির পে লানি হাল , ভরিলে পেনের ছাল ু দ। ড্টাকা দাম দোৱে নিমু ,,॥ দিশি দুঁ,ভি নালি ফার;,লিশ গ,ল দের ভারা म कथा छ । । छो। काकि ? [इ छि. কাটির স্রোত্তের আড়ি, হোলে পরে ছাড়া-অ:ডাঅ ড়ী আর নার্চ থাকে॥ কোথায় সাঁতার দিয় , চোলে যার কৌকা নিরা, দ্রু ভেঞ্চে উঠে গিয়া চরে। পাধ যদি পায় সোজো, বড়নয় ভার বোজা, ব্ৰীকে ব্ৰাক যায় বসভবে 🛊 ॥ চ'লে ভরি শুষভরে, ঠকে বীয় ভুবো চরে, প্রজি থেরে যার মাজামাজি। ঠেলে যায় বাহুৰ লৈ, পড়িলে অধিক জলে. স'বাস্স্বিস্বলে মাজি॥ ৰহুকঞ্চে সেই স্থান, প্ৰাপ্ত চেই পঢ়িত ে, ধরে গ'ন গুণে বেক্তে বেতে। এত যে করিল ক্লেম, নাই বেখি দুখ লেশ. মনের আনক্ষে যায় মেতে॥

\* রসভর---দ ভ সাজিদিগের বাবহা-ইহার অথ শ্রেণীবছরপে রিক ভাষা। নৌ হা চালনা।

डांटमत ललांडे भटि, धक मिन यपि चटि, অনুকুল পদনের থোগ। । দ্বিদ্রের যেন রাজ ভোগ॥ বদর বদর গানী, চাট্লোঁয়ে মেৎরাণী, এই শেলে পালি দের তুলে। গুড়ুকে মারিয়া টান কাছি ধোরে ছাড়ে গান, র্খাবাড়া সব যায় ভুলে !! এ ঘটনা অসময়, এক দিন বড় হয়, বাতাদের বাতিকের খেলা। কিঞ্চিৎ করিয়া ছিড, একেশরে বিপরীত, ভারদেস পশিচমের ঠেলা॥ বাছার বন্দর ন'ই, তিন দিন এক ঠাঁই, বনে মাঠে করি অধিশাস। আহারের যোগা নয়, উপস্থিত যাথ হয়. পেটপুরে থাই গ্রাস গ্রাস॥ কিছুতেই নাহি চুপ, বিরস না হয় মুখ, महा खूथ हारि निक हिए। যাত্তি সৰ র<sup>\*</sup>ধে চলে, বাভাগনতে প্রাণে মরে, वादा जाना वालि क्लल (धरः॥ সমীরণ শন্শন, দেহ করে কন্কন্ (ক'লোমতে লাভি ইই স্থির। দারণ হজ্জর জাড়্, ন'হি রাখে কিছু সাড়্ ২1ড় ভেঙে কাঁপায় শরীর। ললের উঠেছে দাঁত, চুঁলে নেয় কেটে হাত (शत इश श्रमाण श्रमा পিপাসায় মোরে যাই, শীতে নাহি জল খাই, একি পাপ দাঁতকটো তল।

হোক্জল বড় হিম, হোক্শীত বড়ভীম,

তাতে বভ করেনাকো দোষ।

 সমস্ত দিবস যায়, বড় খেদ করি তায়, বড় ভোর যার ছই ক্রোশ। শুধু মানুষের নয়, ভাবেকের শত্রু হয়, এই শীত চুষ্ট দুরাচর। শত্রু হে'য়ে জাহ্নবীর, শুকায়ে সকল নীর, अञ्चिष्म कविद्रा **ह** भात ॥ অরধুনী আদ্মড়া, বুণেতে পড়েছে চড়া, বঁ কের হয়েছে ফের ভাই। এক ক্রোশ তবু নাহি যাই॥ গমনে বিলম্ব যত, মনের ভাত্থ ভড়, ছুই মাসে কৃতি দিন এসে। মনে ভাবি দর ছাই, ফিরে কার কাজ নাই, ভাটিপথে ফিরে যাই দেশে॥ তর্থনি সে ভাব যায়, স্থিয় করি অভিপ্রায়, নুতন দেখিতে চায়মন। একি যায় তদাগ করা, অজ্ঞান-তিমির-হরা, দুগভরা ২থেব ভ্রমন॥ যদি ইথে আছে চুখ, আমি ভাবি ঘে'র স্থুখ, প্রকৃতির প্রকৃতি একপ। প্রকৃতি র ক'র্যা; সাহ', বিকৃতি কি হয় তাহা, অপরপ ছতি অপরপ॥ ভামকের অভিপ্রায়, দুষ্টিপথে সদা ধায়, সার ভার বস্তুর নিচার। नमी नम शिवि तन, নানাৰ্প দরশন, নিৰূপণ বিশের ব্যাপার॥ लेभिक मकल कार्या, इस बढि खाँनवार्य, করে ধর্য্য সাধ্য কার হয়। ভণাচ ভাবোধ মন, করে ছেভু ভারেষণ, একারণ বিশ্ব পরিচয়॥

মামুষের কীর্ত্তি যত, কড স্থানে হেরি কত, অবিরত মনের উল্লাস । আন্ত আনা আশানিতি, ক্রমে হয় বোর বৃত্তি, জ্ঞ'ত যত হই ইভিহাস॥ কোগায় দেখিতে পাই, মাফুষের বাস নাই, সমুচয় চর আর বন। মর্ভুম হয় যথা, খাদ নাহি পায় তথা, পশুপক্ষী না করে ভ্রমণ ॥ क ज जारम निरंत जिला कि कि कि कि मुद्र मित्र, हिन क्षित भाष को कि वर्ष, हिन जोरा धरेन्द्र है, অতি মনোহর গ্রাম ধাম। গ্রহার ক্সীর গর্ভে, বিনাশ পেরেছে সর্বের, ক্রমে লোপ হইতেছে নাম। তথাকার নানা প্রাণী, হয়ে সব নানা স্থানী, নানা স্থানে করিল আগার। এক ঘরে দুই ভাই, ভারা গোল দুই ঠাই, স্থ নাই কারো মনে আর । স্থানে স্থানে নব গ্রাম, ব্যক্ত তার নাই নাম, বসিয়াছে ছই চারি ঘর। কেই চাষ করে মাঠে, কেই বা দোকানি ঠাঠে, পরিবার পালে পরস্পার॥ এই সব বিলোকনে, বিপুল বিলাপ মনে, ভাগনার পথে ভাব ধায়। हे बतीय कांध कल, (कांधा छल, (कांधा छल, বল বুজি নাহি খাটে তায়॥ ভয়ন্ধর স্রোতসভী, দোয়ে অতি বেগবড়ী, যে দিকেতে করেন গমন। বিস্তার বদন ধরি, (महे पिक शाम कति, ভানা দিকে করেন ব্যন !! विक कुल थान वर्षे, कु हे कूरल मात्र च्रेंहे, কোনো দিকে শোভা নাছি রয়।

এক কুল বাস হত, ভারে কুলে চর যড়, তীরগানী দূরবাসী হয়॥ যেতে যেতে কিছু দূর, অচিরাৎ ছখ দূর, স্বৰ্গপুৰ ভজ্চ ৰোধ হয়। এই যে অখিল সৃষ্টি, যাহাতেই করি দৃষ্টি, তাহাতেই ব্ৰহ্মাংক্ষময়॥ দুর হোতে ধরাধব, চিক যেন ধারাধব. মনোহর ক্ষেবর ভাব। তাহে বোধ কত ৰূপ, হয় ত'র কত ৰূপ, অপৰূপ দুশ্য চনংকার॥ পর্বতে প্রকাশু তর, পেখা যায় কুদ্র সরু, বতিংনেতে নড়ে তার শ'থা। ভাহে হয় এই ভ্ৰম, যেন কৃষ্ণ বিহঙ্গম, উড়িতেছে বিস্থারিয়া পাখা।। खेन्य छन्य हाल. ভার চলে অংশ লে ছুই ক ল অ তি মানালে।ভা। রসনা সর্ম রাস, বাকা নাই ভার বশে, প্রকাশিতে শিখরের শে:ভা॥ रिश्मिष गर्भ कू क'लि, श्रीतम्बनम जालि, যদিনাং হয় আচ্চাদিত। मिनका किनका, भारता गारता करत कत. সঘ:ন চপশা চমকিত॥ নয়ন পেরেছে যেই, সে সালয় যদি সেই, हिर्यु (मर्थ शर्कि . छ व स्थाति । : স্বভাবের ভোর ঘটা, বিনোদ নিচিত্র ছটা, সুট জন এক মাত্র ভাবে॥ বেষ্ট্রন করিয়া জিতি, বক্রভাবে করে স্থিতি, উচ্চ চূড় দুরে দেখা যায়। যেন কার কুলদার, মধুপানে মাভোয়ারা, (नवी त्यावी बनाहेबा धाया।

নিবারে নিঃস্ত নীর, আসাদনে যেন ক্ষীর, তীরবেগে পড়ে ভূমিভল। ' তাহে নাহি কিছু মল, প্রম প্রিত্ত জল, সভাৰত অতি মুশীতল॥ নিকট হইলে পর, তভ নয় মনোহরণ ফলত স্থাদর শোভা বটে। অতি দীর্ঘ স্থলকার শ্রেনী গাঁথা দেখা যার. বির জিত তর্মিণী তটে। অধো উর্দ্ধে বৃক্ষ যত্ত, নানা জাতি শত শত, কত ভার বেষ্টিভ লভার। খেয়ে তার রসফল নানা কাতি দ্বিজদল, নিক স্বানে বিভূ গুণ গায়॥ স্থা তাশ বার মাস, করে যারা চ'ষ বাস, স্তিবৰূপে হোৱে নিরিবাসি। মন্দরের ভাতি কাছে, কম্পরে বন্দর ভাছে-বিকিকিনি করে তথা আবি॥ নাহি কোন অপ্রত্ব, খায় কত ফলমূল, বারণার বারি করে প'ন। পরিশ্রমে শসা হয়, যুত হুগা অতিশয়, স্ভাবত অতি বলবান॥ আস পাশ দেখি চেয়ে,উঠেছে আকাশ ছেয়ে, সাধ্য নাই বায়ু করে গতি হিংস্র জীব বহুতর, বিশাল নিপিন-বর, ঘোরতর ভিঃকর অ'ত। কিন্তু তাতি রমনীয়, সুর্ত্তি তার কমনীয়, कुथ এই গমনীয় नहा। মন বলে যাই উড়ে, ভামিব পৰ্বত যুড়ে, প্রাণ বলে আমি করি ভয়॥ भिष्दत्र निकत्र श्तम, महम श्रीति एपित्र हम्ह ভাল মন্দ বিবেঃনা কত।

দেখিরা প্রাণের ভয়, মন শেষ ভীত হয়, দূতেরে বলেন বাণী, সে দূত পর্বতে আনি, ু সেই মতে দেয় অভিমত ॥ তথাচ না যায় লোভ, মনের না সেটে ক্ষোভ, क उ य उ कद्द आत्मालन। অনুমান করি তায়, যত দুব দুষ্টি বায়, দুবে হোতে লয় আক্ষদন॥ কোনোখানে জলজাড়ে\*, পর্বত উঠেছেক ডে পকী গিয়ে উড়ে বলে ভথ।। मत्न मत्न करव जीज, फेक्क छात्न वार्थ गीज, কোনোৰপ শক্ষা নাই যথা॥ गांति पिटक खलगय, स्थानांति विति तयु. ভ তিশর ভয়ানক স্থল। ভাটি পথে স্রাত ধায়,বেগে লাগে তার গায়, कर्गडिमी भक्त कल कल॥ উচ্চে তার চড়া জাগো, গগুৰৎ মধ্যভাগে, পরিপূর্ণ কালো কালো গাছে। **দরে অমুম'ন করি,** জলপ'ন করি করী উৰ্দ্বদিকে শুগু তুলিয়'ছে ॥ এই ভার একবার, পরক্ষণে ভারি আর এ প্রকার শোভা নাহি পায়। সদাশিব সদা সেবি, স্থরতরঙ্গিণী দেবী, নিরস্তর ধরেন মাথায়॥ स्टत्र दि: छीत साधाः शासान निम्मनी गाँगः শিব তাঁরে না হন সদয়। সপত্নীর দেখে হুখ, দেনীর দারুণ চুখ, ফাটে বুক ভাপিত হাদর॥ হিমাল্য মহাশ্য তু ভিভার তুপচয়, স্তান মনে হটলেন ধাপা। \* काहानशी अवः काक्षितः, अहं मुहे

चरम शकात करमत छेशन शक्ष जाहि।

मिर्यट्ड गञ्चांत बुदक हांना ॥ পুন অনুমান করি, স্করপুনী নিশাচরী, গিরি ধরি কোরেছে আগার। পাতর কঠিন কায়, উদরে কি পাক পায়, পেট ফেঁপে করিছে উদ্দেশ্র॥ স্থানে স্থানে অতি রম্যা, সবাকার হয় গম্যা, হর্দ্যা ভাষ অতি উচ্চতর। অদ্রির উপরে আড়ি, তাহাতে বিচিত্র বাড়ী, ं खल इटड पिथि मंदनाइत। সবল ধাল কায়, নীগকর আসি ভার धन (लांडि मन) करत नाम। গিরিবনে উপবন, তার কোলে চলে বন, বনে বন দেখিতে উল্ল'স। বাস করি এক বনে, যেতে চাই আর বনে, वत्न गत्न वत्नत्र मम् ।। वन भंभी वट्ड इहे, किन्छ नननात्री नहे, थांत नन यांतनांदका छथा। যে দিবস নিশামানে, পর্বতের অধস্থানে, थाका यात्र महेशा खदनी। কেহ আর স্থির নয়, মনে ভয় কড হয়, (करात्रयमकल तक्री॥ কিন্তু যেই ধীর জন, কোরে অতি স্থির মন, नग क्षम करत नित्रीक्न । যায় তার যত তুখ, পার স্বভাবের মুখ, সকল তাহার জাগ্রণ 🏾 অ'ছে বটে গুরুভর, ফলে ভাহা গুরু নয়, मधु रह मगदह आवि त। ভূধরের নিকেতন, তাহাতে বিপুল বন, विटलाकन विटनांप व्यानीत !

স্থলে স্থলে দাপ্তি ছলে, ধর্ম ধর্ম অগ্নি জ্বলে, আলোময় হয় গিবিদেশ। কড ৰূপ হয় শোর, শব্দ তার করি জোর, করে আসি ভারণে প্রবেশ॥ না বুঝি ভাহার ভূত্র, যেন কোন্ধনি পুত্র, পরিপ'টা পনিচ্ছদ ধরি : মণিমুক্তা দিয়া গায়, বিবাহ করিতে যায়, আলো জ্বেল সমারোচ করি॥ ধন্য ৰিজু বিশ্ময় তবৰূপ দৃশ্য হয়, উদ্দিশে অসংখ্য নমস্কার। ভোম'র এ ভব রাজা, কত ভাগ চারুকার্য্য, করে ধার্যা শক্তি আছে কার ? ছোট ছোট নগ মাঝে, শিবের সদন সাজে. মাবে মাবে পীরের আলয় \*। যায় ক্লাশী বৃদ্ধাৰন, যাত্ৰীগণ ভক্তিমন. पत्नन कर्त् नम्मत्। শিখর সমাজে গড়†, এখন রয়েছে ধড় মৃদ্দেহ প্রাণ নাই ভার। সে ছর্গের তুর্গ ঘোর, ভাগোর রজনী ভোর, করিয়াছে সকল স<sup>্</sup>হার॥ প্রভুত্বের হয়ে শেষ্য প্রাধীন রাজ্য দেশ, সম্পদের কোশ মাত্র নাই। রত্নাকর হলো দর, গোস্পদ প্রথর্তর, স্রে'ডধর ক'লে দেখি ভাই॥ পুরাতন কীর্ত্তি নাশ, তারে বলে সর্ব্বনাশ, সর্বামতে তুখের ব্যাপার।

কি করি উপায় হ'ড, মনের সম্ভাপ যন্ত, মিছে কেন প্রকাশিব আর? ভাগ্যের ঘটনা যাহা, কাল ক্রমে ঘটে তাহা, খণ্ডন না হয় কভু ভার। কালেতে পর্বত যত, চূর্ব হয়ে ধরাগত, রেণুধরে পরিত ভাকার॥ ধেহু বংস রাশি রাশি ভারীরথী ভটে আসি, উচ্চ চরে করিয়া জমণ। তৃণ পত্র যত পায়ন সে'বে সোরে গোরে খায়ন র:খাল করিছে গোচাবন॥ নাল বর্ণ ধেতু সব, কিন্ডিড ছে ছাম্মারব, খ'দ্য লয়ে হয় রাগারাগি। থাকে সব্এক ঠাঁই, আর কোন চিস্তা নাই, কেবল আহারে অমুরাগি। হেলে ছলে গতি কেং, কেং সাসে নিশ্ন চরে কেহ করে ভুতলে শয়ন। যথা ইচ্ছা তথা যায়, বাছুৱ পশ্চাতে ধায়, (वँदक (वँदक माध्य हरन ॥ মাবে ম'ঝে কেহ কেহ, প্রকাশিয়া মাতৃ শ্বেহ, ভাপন বৎসের দেহ চাটে। বাছুর পুলক ভরে, থেকে থেকে মৃহস্বরে, হেঁট হোয়ে মুখ দেয় বঁটে॥ ভূতলে ফেলিছে শীর, তৃশাতৃরা পৃথিবীর, তৃষা কৃশা করিনার ভার। যিনি হন সর্বাধার, কলি তাঁর উপকার, মাহ্রের উপদেশ করে॥ নলে, "ওরে নর যত, হরে ভোরা জাবগাত, কেমনে করিতে হয় দান।., मृत्यंत्र आधात मिया, मियास माउना क्रिया,

বাছুর প্রচুর ফুপাবান 🛭

কাপিরার পর্বতে শিবালয় এবং
 পীরের আন্তানা ছাছে।
 † তেলিয়াগড়।

শ্বন্ধ আড় বিকট গৰ্জন। श्रे गाँए प्रशासिक मिट्ड निट्ड किरोठिक করে রণ গাভীর কাবন। খনারে কুহকি ভব, ধন্য তব মনেভিব. ভোমাতেই সকল সম্ভব। যিনি এই ভবধৰ, সেই ভব পরাভব, অসম্ভৰ শক্তি বটে তব ॥ পিপাসা অধিক হোলে, আ'সিয়া গঙ্গার কোলে যভ পাবে কবে জলপান। প্ৰভ্ৰমতী গাভী তাথ, বিনা মূলে নাহি খায়, বাঁট হোতে তৃথা কবে দান॥ একেত ধনল নীর, তাহে স্বভীর ক্ষীব, পতে যেন হুমের্ক্তর ধারা। प्रथा थान छात्रीवथी, অলখান ভগবতী, কথী ভাবা দেখে ভাই যারা॥ আর এক সে সময়. সুখ্যম শোভা হয়, (मर्थ यीत हक्कू कवि श्रित । গছুব গঙ্গায় কাঁকে পেছু চুকে ৰাকে ৰাকে, কম্মিথে কেডে খাগ ক্ষীর 🏻 নির্থি এরপ ভঙ্গি, मन रुव्र नवद्रक्रि, অহুরাগ সঙ্গি ভার কাছে। অভিপ্রায় অমুরাগে, মানস-মন্দিরে জাগে, স্মরণ জীবিত তাই আছে। ष्यात्र व श्वात्व कृति, করেতে লেখনী ধরি. লিখি ডাই যাহা মনে লয়। দোষ যত রচনাব, করিবেন পরিহার, ত্তণগ্ৰাহী তুলি সমুদয়॥ অমণীয় ভাব যাহা, আমি কি বুবিবে ভাষা, প্রকাশিতে করিয়াছি মতি।

পালেতে পালের ষাঁড়,নেড়েঘাড় বুকে চাড়া কললোভী কুক্ত প্রায়, মন মন কর্মে ধায়, किन कानी कि करतम शिक्त ॥ যথা জ্ঞান যথা যুক্তি, সেইৰূপ হয় উজি, ভাবরস অমুগামী ভার। কে পারে করিতে ক্রম, মুনীনাঞ্চ, মডিঅম " দীপের পশ্চাতে অন্ধকার॥ शाँक्नी कतियां करत्र, शाद्य द्वारत त्रव करत्र, (भागान (भागान भारत मारहे। শিশুকালে পশুপালে, সঙ্কেতে সকল চালে, गांद्य गांद्य किर्त चांदि घाटि ॥ পরস্পর করে থেলা,কেহ কারে মারে ডেলা, ভারা যেৰ সাজিয়াছে নাটে। যায় খায় পাছে চার, আগুপানে ছটে ধার, নাচে হাসে রাখালিয়া ঠাটে n পাশেতে পাঁচুনী গুয়ে, ভূমির আসনে গুয়ে, মীত মায় মোহনীয় সরে। বাগ স্কর বোধ নাই, তথাচ শুনিয়া ভাই. অমনি মানস মুধ্য করে। হেরি রাখালিয়া ভাব, কত ভাব আবির্ভাব, ভাব ভরা ভবের ভবৰে। তখনি উদাস হয়, धना वानि गर्भात, ব্ৰজ্লীলা পড়ে যায় মনে। य जीलाय निटक हति, त्रांचारलं वाश यदि, रहेरलय नरमत नम्मन। ননী চুরি ঘরে ঘরে, यत्नामा धतित्रा करत्, উদখলে করিল বন্ধন।। মনোহর মুর্ভি ধরি, উবায় উত্থান করি, ধড়া চূড়া করি পরিধান। जननीत कारह (यरह, नैंकि। हरम (बरह स्वरह, कीत जत्र, नवनीं थान ॥

बोमारेखान जमाधिया, जीनाम आदि जरक निया। महातज्ञ महारम, नाहि जांत्र करम्बन, গোকুলের গছনে গমন। আধো আধো মিষ্টরবে,ভাকিছে রাখাল সবে, স্থামিও সেরাপ হই, যত লিখি যত কই, (वन, खरन धांत्र (धरू भन ॥ তপন তনয়া তীরে, গতি অতি ধীরে ধীরে, ৰূপ হেরি সজ্জা পায় শশী। রাখালেরে সাজাইয়া, বেণু বাদ্য বাজাইয়া, বিহার বিরল বনে বসি ॥ वत्नत्र स्कल शांष्ट्रि, करत नव काड़ाकांष्ट्रि, व दो दोल घुना किह नाहे। খেতে খেতে বনে ফেরে,মুখে রব হারে রেরে হাঁরে ওরে পেরে:মোরে ভাই॥ স্থাসাথা রাধা নাম, বাঁশী লয় অবিশ্রাম, कंड नीमा स्थ वृक्षावरन। ভারতে ভারতী সার, ভামি কি লিখিব আর, প্রণিপাত ব্যাসের চরণে ॥ প্রভাতের একরপ, পরে হেরি অন্যর্বপ, সন্ধ্যাকালে প্রভেদ আবার। धरे नव श्रित काल, সহভাব চিরকাল, প্রতিকাল মূতন প্রকার॥ অন্তগত নিশাকর, প্রকটিভ প্রভাকর, তাহে হয় প্রকাশিত দিন। পাতিয়া জগতজাল, তিন কালে তিন কাল, धदत थाय आयुक्त भीन। জলের হাদরে বাদ, নৃতন দেখিতে আশ, চাই তাই নতন দিবস। কিন্তু ভার বোধ হত, দিন যত হয় গত, খুনা হয় আয়ুর কলস। ভবের ব্যাপার যড, नमूमय धरे मछ, मिरदरम मुख जीव मदन।

বিমোহিত বিকল বিভবে ॥ চাড়া নই অম অন্ধনার। এসেছি खमन ছলে, खिम वर्षे श्रुल जान, তবু সদা বিষম বিকার। কখনো কখনো ভাই, পদব্ৰছে চোলে যাই, মনে কিছু চিন্তা নাই আর। যাই যাই ঠাঁই ঠাঁই,আনে পালে ফিরে চাই, দেখি তায় অশেষ প্রকার॥ কত যায় কত রঙ্গে, দেখা হয় যার সঙ্গে, যেন ভায় কত কেলে প্রেম। কিছু নাহি দেখি চেয়ে,কভ স্থৰ ভারে পেয়ে, দরিদ্রে যেমন পায় হেম।। কিবা জাতি কোথা ধাম,কেবা জানে কার নাম কেবা কার পরিচয় লয়। नकरनंत्र यन भाषा, भव्यभव छाहे पाषा, ভাতৃতাবে সংখ্যম হয়॥ এইবাপ দিবাভাগে, দ্ব নব নব রাগে, অমুরাগে করি সমাধান। রজনীর জাগমনে, তরণীর নিকেতনে, যথা ক্রমে হয় অবস্থান। উল্লাগিত সর্বাঞ্চন, প্রকাশিত পুষ্পামন, সর্ব্বমতে আছি হর্ষিত। বৰ্ত্তমানে সমুদয়, মিতা হয় শতক নয়, কেবল বিপক্ষ ব্যাটা শীত ॥ চড়িয়া মানস রথে, এই শীভে জলপথে, कल-भर्थ हरम (यह बन। বেমন বজ্জাত ঠাটো,তার কাছে জব্দ ব্যাটা, পদাঘাত করে প্রতিক্ষণ ॥

ভাঙো ভাঙো হুম ছোর,চেডমার নাহি ছোর। ময়ৰ মৃদিত নিজ স্থানে। নিশি শেষে দাঁড়ে বেরে,জেলে যায় গীত গোয়ে ভার ভর হুধা লাগে কাৰে: অমনি চেতনা হয়, यम चात्र छित्र मत्र, ন্তমিতে লালসা পুনরায়। আর কি তেমন হবে, তেমন লগিত রবে, পুলকিড করিবে আমাথ। তখন ছিলাম যাহা, পুন আর নাই তাহা, আমি ভো সে আমি আর নই। এখন সে ভাব কট. धयन (य इड् इड्रे, সেই ভাবে করি হুই হুই। লিখিতে লিখিতে মন, হোৱে গোল উচাটন, गद्राम किल जोडे (अम। ध्येषु ध्याप (तर्थ थीछि,चमा वह रता हेछि भद्र इत्व भद्र-भद्रिटक्डम्॥

সিপাহী-বিদ্রোহ শান্তির নিমিত্ত ঈশ্বরের নিকট প্রার্থনা।

কর কর কর দয়া, দীন-দয়ামর।
হর হর হব নাথ, বিপক্ষেব ভর ॥
ভার যেন ন. হি থাকে, কোনোরূপ দার।
রাজা প্রজা হৃথী হোক, তোমার কৃপার ॥
প্রকাশ করহ প্রেভু, স্থবিমল দেহ।
যেন ভারে, হাহাকার, নাহি করে কেহ॥
ভাতাচার করিতেছে, যড চুরাশর।
ভাদের পাপের ভার, কড জার সর ?
ধন, প্রোণ, মান জাদি, সব হয় লোপ।
ভারতের প্রতি নাথ, এত কেন কোপ ঃ॥

যদ্যপি হোরেছে কোপ, কর পরিহার।
তবে জানি কৃপানর, করণা ভোমার।
হইলে মহিনা-চাঁদে, কলক প্রচার।
দরামর নাম ডবে, কে লইবে আর?।
দব দিকে রক্ষা কর, এই ভিক্ষা চাই:
দোহতি দোহাই নাধ, দোহাই দোহাই।

#### একাবলী।

ক্রণা কর হে. কর্রনাকর। हत्र (ह मकन, विश्व हत्र ॥ প্রবৃত্তি করি ছে. চরণে তব। প্রণত পতিতে, প্রসন্ন ভব ॥ मकिन पिर्विष्ठ, श्रमस्य द्वारत्र। বিহিত করহ, সদয় হোরে॥ তোমারি চরণ, স্মারণ করি। তোমারি ভাবনা, ব্যানেতে ধরি। কাতরে ভোমারে, অস্তরে ডাকি। মনের বিষয়, মনেতে রাখি॥ ধর হে আপন, প্রভাব ধর। কর হে বিহিত, বিচার কর॥ পালন শাসন, তুমি এ ভবে। নামের মহিমা, রাথিতে হবে॥ পামর পাত্রী, পাষ্ণ ষ্ড। পাপের ঘটনা, করিছে কভ # অদোষে হইরা, কুপথে রত। त्रम्भी वालक, क्रिट्ड ३७॥ শ্বনিয়া বধির, হতেছি কানে। गट्यां गट्यां, मट्यां कार्या व गव (नचित्रा, क्षांद्र भाषाव। क्मरन एटहट्ड, श्विय क्रान ह

দেখিতে কিছুতো, নাহিক বাঁকি।
তপন-শশকৈ, তোমার আঁথি॥
জীবের অন্তরে, যে কিছু আছে।
সে সব বিদিত, তোমার কাছে॥
অন্তর বাহির, অধীপ হোয়ে।
কিবাপে এখনে, রয়েছ সোয়ে॥

## विनाशिनी इस।

দয়াবান, ভগবান, দয়া-দান, কর। দিয়ে জয়, সমুন্য়, শক্রভয়, হর॥ সবাকার, তুমি সার, মূলাধার, হরি। কোখা নাখ, ভবভাত, প্রনিপাত করি॥ প্রতিক্ষণ, জ্বলাতন, চুখে মন, দহে। বার বার, জনাচার, কত আর, সহে॥ তোমা बहे, कादत कहे, हादय तहे स्वता অনিবার, তাশ্রেষার, হাহাকার শক্ত। व विभएन, तांच्या भएन, मृति भएन, धति। প্রভীকার, কর ভার, স্থবিচার, করি॥ কলেবর, জর জর, অতি থর তাপে। বরাবর, ধর থর, ঘোরতর, পাপে॥ ध (मरभत् नष् (कत्, भी भिरमत्, मी भ। **एमएस**्, उनमस्, ध्वांडल्, काँरिश ॥ হও মূল, অনুকূল, শেতকুল, পকে। সমূচয়, শত্রুক্ষয়, তবে হয়, বুকে॥ অতি ক্ষীণ, জ্ঞানহীন, চিরাধীন যারা। মেরে লাপ, কোরে পাপ, দেয় তাপ, তার 🖁 আজাচরি, রক্ষাকারি, অস্ত্রধারি, বও। একেবারে, এপ্রকারে, পাপাচারে, রত॥ নরপন্ত, হরে বন্তু, করে অন্তু, নষ্ট। হতরৰ, কভ কব, কত সব, কষ্ট

কি বিশাল, সেনাপাল, বামাবাল, নাশে। অকারনে কোষ মনে, প্রভুগনে, শাসে। যে বিহিত, কর হিত, সমৃচিত, ক্ষেহ। নিজবলে, দুষ্টদলে, রসাতলে, দেহ।

-

নানা সাহেব কাণপুরের ত্রিটিস ছাউনি অধিকার করণানন্তর বিখুর নগরে প্রত্যাগমন পূর্বেক নিজ রাজ্যা-ভিষেক কম্পে বহুসংখ্যক তোপধ্বনি করণের আজ্ঞা দেন। তহুপলক্ষে কবির মনের ভাব।——

#### शमा ।

নানার, কি, নানাকেলে, আজো আছে ধন ?
নানার, কি, নানাকেলে, আজো আছে জন ?
নানার, কি, নানাকেলে, আজো আছে মন ?
নানার, কি, নানাকেলে, আজো আছে পন ?
নানার, কি, নানাকেলে, আজো আছে ডাক?
নানার,কি নানাকেলে,আজো আছে জাঁক ?
প্রকাশিছে পাপপন্থা, হোয়ে পন্থী "ঢুচু,, ।
'ঢু, মারিতে জানে শুধু, খটে তার "ঢুচু,, ॥
নানা পাপে পটু নানা, নাহি শুনে না, না।
অধর্নের অন্ধকারে, হইয়াছে কাবা ॥
ভাল দোবে ভাল তুমি, ঘটালে প্রমাদ।
আগেতে দেখেছ মুমু, শেষে দেখ কাঁদ ॥

# কাণপুরের যুদ্ধ জয়ের আনন্দ। রেক্তাচ্ছন্দ।

(এই ছন্দটী অক্ষরগত নহে, মাত্রাগত। ছই শত বৎসর পূর্ব্বে এই ছন্দের সৃষ্টি হয়, পূর্ব্বতন লোকেরা টিকেরার ও কাড়ার বাদ্যতালে এই ছন্দ গান ও পাঠ করিতেন।)

বান্ধী রাও পাসা যিনি। বাজী রাও পাসা যিনি, সাধু তিনি, মান্য নানা মতে। মহারাষ্ট্র, মহা রাষ্ট্র, প্রজ্ঞা এ জগতে। ছেড়ে দে নিজ দেশ। ছেড়ে সে নিজ দেশ, রাজবেশ, বাঁচিবার ভরে। আহা সমর্পণ করে, ব্রিটিসের করে। ছোয়ে সে পুল্র-হত। হোমে সে পুল্ল-হত, ক্রমাগত, করে কত দান। ভাঁটকুড়ো কপালে তবু, হোলো না সন্তান॥ কোথাকার মহাপাপ। কোথাকার মহাপাপ, বোলে বাপ, পুল হোলো 'নানা,। কাকের বাসায় যথা, কোকিলের ছানা॥ সেটা ভো প্রষ্যি এঁডে। সেটা তো প্রষ্যিত্র জে, দক্ষি ভেড়ে, ৰস্বি কর তারে। উঠে ধানে পত্তি যেন, না করিতে পারে॥

नाना, कि, नानां करना। माना, कि. नानां करण, त्रांका शिरण, ভাইতে এত জারি। যাহা স্বেচ্ছা, ভাহা করে, হোয়ে স্বেচ্ছারী॥ (शंल (म भागांत (इला। ब्हांत्व रम भागांत (इत्व, हामांत (इत्व, কেন ভবে চলে ? ছোয়ে কাল, বামা, বাল, নালে নান। ছলে॥ (शंदना म (शंदनाई हिन्दू। हारण ज हारणारे हिन्दू, जारवत निक्रु, (प्रयोगटम पट्ट। গলে দোলে পাপের স্থত্ত, বাপের পুত্র নহে।। সেটাভো একা নয়। সেটা ভো একা নয়. ত্রাশয়, ভাই তার ভোলা। পথে পথে মেনে খাবে,হাতে কোরে থোলা॥ বড় সে ধূর্ত্ত হীদা। বড় সে ধুর্ত্ত হাঁদা, কেরে গাদা, বড় দাদার হিতে। " একা রাবে রক্ষা নাই, হুগ্রীব ডার মিতে ,,॥ জুটেছে স্মান ছটো। कुछिए नमान कृष्टी, माँछ कृष्टी, কোর্ত্তে হবে শেষে। গলে দড়ী, খেঁইর ছড়ি, ফির্বের দেশে দেশে॥ কে গ কার হরির খুড়ো। কোথাকার হরির খুড়ো, মেরে হুড়ো, প্রতা কোরে দেই। বংশে যেন, বাভী দিতে, নাহি খাকে কেই। তারা, যে পন্থী দু দু । ভারা, যে পত্নী চু চু, স্বরে চু চু,

क्षित्र क्षांद्र । शरफ़ यांष्टि वारफ़ पूर्व, रहात्ना একেবারে n বিখুরে আর কি আছে। বিথুরে আর কি আছে, নানার কাছে, নাইক কাণা কড়ি। অভ:পরে অমাভাবে, বাবে গড়াগঞ্ছি॥ ছিল যার বস্তু যত। ছিল যার বস্তু যত, ক্রমাগত, शांतां निल लूरि। ॥ घँउल् ] কোঁংকা খেযে, হে ংকা এ ডে, হান্মা বোলে ছোৱেছে হতভোৱা। হোয়েছে হতভোম্বা, অষ্টরন্তা, নাহি মাত্ৰ চাকি। गत कलिव मन्ता अहे, कड खाइ नांकी। কোরেছে যেগনি গভি । কোরেছে যেমনি মতি, তেমনি গতি, শান্তি জাতে জাতে। অধর্মা একের ফল, ফলে হাতে হাতে। ছেড়ে দেও বামুন বেল। ছেড়ে দেও বামুন বোলে, টোলে টোলে, धति भम्खला। থাৰ্ড়া মেরে, হাৰ্ড়াপথে, ठालान (मर् काला। যদি ভাই আমরা জাঁত। যদি ভাই আমরা ছাড়ি, মাডামাড়ি, 'रकार्य्य (कारा गरव। বাঘেরে গোহতা ভঃ কে ভনেছে কে ? नाना, ना, शाशी नाना। নানা, না, পাপী নানা, কথা নানা, কোয়ো না রে কেছ।

যথা, ভথা, নানা কথা, ছেড়ে সবে দেই 🎚 लिथनी शांक। (थरम। लियमी थारका (थरम, निजा व्यापन, মন্ত হোতে হবে। क्रमात्र मिः रहत कथा, निश्वि किছू जत्त ॥ সেটাতো কতক ভাল! সেটা তো কঙক ভালো, ধর্মা আলে, কিছু আছে ঘটে। নারীহত্যা, শিশুহত্যা, করেনিকো বটে॥ তবুতো অত্যাচারী। ভবুতো অভ্যাচারী, হভাকারী, বোল্তে ডংরে হবে। রাজদেবী মহাপাপী, কবেই কবে সবে॥ হোরে সে রাজ্য ছাডা। (श्रांद्य (म श्रंका हांड़ा, लम्बी हांड़ा, রকা কিসে পারে ঃ कर्म (मोटम, धर्मा (मोटस, अधःशांट्ड शाटन॥ ছোট ভার সিংহ অমর। ছোট ভার্সিংহ অমর্, সেকি অমর্ গোমর করে কিসে? চামর হোয়ে, কোমর বেঁধে সমর করে কীলে? হবে ভার মুখের মত। হবে তার মুখের মত, গোরা যত, भाष्ट्र (मदन (कांट्र)। এক্শপড়ে অস্ত যাবে দস্ত যাবে খোলে ॥ মেতেছে মান্সিত। মেতেছে মান্সিত, নেড়ে শিঙ্, किछ रख (वारन। কুর্ত্ত হোয়ে ধৃত্তি যান্, অভিমানে গোলে # হবে শেষ মানসিংহ।

হবে শেষ মানসিংহ, গ্রাম্সিংহ, বলে সলে থেকে ! হন্যা হোয়ে মারে যাবে, ঘেউ ঘেউ ডেকে। থেকে, সে অনুগত। থেকে, সে অনুগত, পাপে রভ, वृष्ति (मार्य गरत । খানা কেটে লোগ জল, চুকাইল ঘরে। এভ ভাই বড় মজা। এত ভাই বড় মজা, হোয়ে অজা, বাঘের মুখে চরে। পিপীড় ধরেছে ডান, মরিবার তরে॥ शास कि स्नि भागी। शांद्र कि खर्न वांगी, वैंश मित्र तांगी, (ठाँ कि.क. के कि.की। মেরে হোয়ে, সেনা নিয়ে,সাজিয়াছে নাকি? ৰানা তার ঘরের ঢেঁকি। नामा जात घरतत ए कि. गागी त्थकी, शायात्मव परम । **এड मित्र, धान कार्य, धार्य द्रमाजिए।।** ट्टार्य स्थय नानात नानी। হোয়ে শেষ নানার নানী, মরে রাণী, (मदथ वुक कार्ड । কোম্পানির মূলুকে, কি, বর্গিগিরি খাটে? ৰড় সব্ধেড়ে ধেড়ে। वफ् नव. (४एफ् (४एफ्, ह्रांशन-रमर्फ्, নেডে পানে রুকে। कार्ष चार्ष काटम ( ७ ७, शर्ष शर्ष मेरक हिन शिक्टिय यिया योह्य। পশ্চিমে মিয়া মোলা, কাচা খোলা, ভোৰাভালা ৰোলে।

কোপে পোড়ে, ভোগে উড়ে,যাৰে সৰ জ্বোলে, কেবলি মৰ্জি ভেডা। কেবলি মর্জি ভেড়া, কাজে ভেড়া, নেড়া যাখা যত। नदाध्य नीह नाहे, न्दिष्ट एत मछ॥ যেন ঝাল লকা পোড়া। যেন ঝাল লকা পোড়া, আগা গোড়া, নষ্টামিতে ভরা। টেনি পোরে চটে বোসে, ধরা দেখে শরা॥ ভারা ভো হোরে ঢেঁাড়া। তারা তো হোরে ঢোঁড়া, যেন বৈড়া, हिट्ड अला छेळ। একু রতি বিষ নাইকো, কুলোপানা চক্র । সাজ্ঞরে যত গোরা। সাজরে বত গোরা, মেরে হোরা, ভেড়ে,ধরো নেড়ে। ভক্ত লুটে, শক্তাহোরে, রক্ত খাও ফেঁড়ে॥ যত পাও, খেয়ে সেরি। যত পাও, শেয়ে সেরি, হোয়ে মেরি, পাত্র হোতে ধোরে। নেচে নেচে মুখে বল, "হিপ্ হিপ্ ছোরে "॥ এ শীতে বড ঠাতি। এ শীতে বড় ঠাভি, রম্ব্রান্তি, कि कि कि (थरा। गरमत जानतम रम्छ, केष छन शादत ॥ ঘুচিল শক্র ভয়। যচিল শত্ৰ-ভয়, मृत्य वय, অয় সেনাপতি। করিলেন বাহুবলে, অগতির গতি॥ রাধিলেন,র্যাক গড্!

রাশিলেন্ রাক্ষ্ গড়, থাক্ কড়, কলিন্ কাষেল। সাধু, সাধু, সাধু তুমি, বিপক্ষেব শেল॥ কোগা মা ভগবতা। কোথা মা ভগবতা, করি নভি, প্রকাশিয়া দয়া। একোবারে শক্রকুলে, কোরে দাও মহা॥

প্রভাতের ভ্র্য। সভাবের গৌন্দর্য।

হে জীব! শিবময় সদাশিবকে
সারণ করিয়া অদ্য একবার প্রভাতের
মুখাবলোকন কর। আহা! দেখ,
বিচিত্র আকাশ ক্ষেত্রে এবং জগতের
সর্বত্রে কি চমৎকার শোভা বিকীর্ণ
হইয়াছে, এই সমস্ত পদার্থই মহা
মঙ্গলময় মহাপুরুষ মহেশরের মহিমা
প্রকাশ করিতেছে। স্বভাবের সৌন্দর্যা
সন্দর্শন পূর্বাক একবার পরমপিতার
প্রেমরসে আর্দ্র হন্ত।

এই জ্যোতির্ময় লোকলোচন নর্বন সাক্ষী স্থানের কি পদার্থ, তাহার যথার্থ মর্মার্থ গ্রহণ কর, এবং মনের সহিত ভক্তিভরে তাঁহাকে একবার নমস্কার কর।

ত্রিপদী। ওছে জীব বাক্য ধর, ভ্রম নিজ্রা পরিহর, পুর্ব্বদিকে কর দরশন।

ছবির কি কব ঘটা, রবির আরক্ত ছটা, কবির প্রেফ্ল করে মন। • পরিয়া হৃচার ভূষা, शामापूरी হোলো উষা, দেখ ত'র অপরপ শোভা। বিভাকর করে বিভা, প্রকাশ হতেছে দিবা, আহা কিণা নিভা মনোলোভা! নিশা সং ছিল ভারা, কোথায় এখন ভারা, কোখায় গিয়েছে অন্ধকার ?; অধ উদ্ধে করি দৃষ্টি, হইতেছে কুপা বৃষ্টি, যেন এই সৃষ্টির সঞ্চার॥ প্রভার পুরিল ভব, দেখ সব অভিনব, কভ কব, রব নাছি সরে। ভাবে ভাব পরাত্র, দেখি সব অনুভব, যেন নভ নব ধর পরে ॥ লোহিত লাবণ্য ধরি, মোচিত করেছে হরি, সহিত আপন প্রিস জাযা। পতি প্রেম রসে গলে, টল টল তম্টলে, স্থলে জ্বলে জ্বলে ছ'যা॥ धत्रनीत छ दर्भ त्राद्य, ত कनी घत्रनी लाद्य, হইয়াছে কেলি রসে রত। ক্ষণেং কোলে টানে,ক্ষণে ক্যালে অধপানে, ট।নাটানি করিতেছে কত॥ নয়ন রোঘেছে যার, চেয়ে দেখ একবার. पृष्टि गाँक ज्ञान रश मिला। ছায়াজায়া সঙ্গে করি, মাধামুগ্ধ নিজে হরি, আহা মরি কি আশ্চর্যা লীলা॥ धना धना छ त-त्रम, मिक मम एथरम नम. ত্রিভূবন যার যশ ছোবে। একাকী নায়ক মিত্র, কভ নায়িকার মিত্রু সমভাবে সকলেরে ভোষে॥

এক ভাবু সব চাঁই, ছোট বড় ভেদ নাই, তিমোহর দীনকর, विश्व यांट्य जरून नगान। মহাকর প্রভাকব, সভাবে সহস্র কব্, প্রতি কবে প্রীতি কবে দ'ন ॥ भिति वन गमी नप्त, जद्यां व जिल्ला शृप, ख्रभन (भरत्र जत ख्रि। চরাচব দীপ্ত হয়, আলোময় সমুদ্যু, প্রাণিচয় কেই নয তথি॥ প্রভাত দেখিয়া নিশি, যোগযুক্ত হন ঋষি. কি হুখ করিছে কৃষি হুখে। गांनर मांनवी यक, निका निका करनी वक का का भागिन न दल मूर्थ । স্থিত হোথে এক স্থানে, কটাক্ষ স্বাব পানে, শাসনের দণ্ড বড় জোর। দেখিয়া যমেব বাপ, পাপীগণ ছাড়ে পাপ, সাধু হয ভয়ে যত চোৰ॥ লোকে ক্য মিছে ন্য, সাকাৎ অনলম্য, কিন্ত ভায় এই কবি যশ। রসপূর্ণ রসময়, কেবল আগুন নয়, অনলের ভিতরেতে বস। হায়বে ঐশিক-কাষ্য, সমুদ্ধ জনিবার্য্য, र्य धार्या किकाश ध्येकांत्र । य करत माठन करन, सिट करन द्रवि करत, হুশীতল কলের সঞ্চার॥ ভারজন কলমূল, ভক্ষতা পত্ৰ ফ্ল, সূজন করিয়া সমুন্য। मीननाथ मीन न्यामस ॥ নিবপেক নির্বিকার, (नजन्म नगंकार, অপৰাণ অতি অপরাপ।

অভিনয় শুন্তকর, জগতের জীবন স্বরূপ। সহস্র কবের কলে, কিনা শেভা সরোবরে, সেৰপের ন হি অনুবাপ। निलमी किलिया तात्र, विस्तात कतिया वात्र, • প্রকাশ কোবেছে নিক্স রূপ। মাথার জাচল খুলে, প্রিষ পানে মুখ ভুলে, (श्टम (श्टम कि (थना (थनाय । আহা কিবা মনোহর: দিবাকৰ দিয়া কর, Cचटन जांत्र तस्य सूहांस ॥ (मटह (मटह करन करन स्ट्रियर शर् वरम, মনে এই ভাবের অভাষ॥ कमल मरलव खरल, अबि हवि खरण खुरल, বিদ্যারিভ হোডেছে বিলাস । দলগুলি উঠো উঠো,মুখখানি ফোটো কোটো, ছোট ছোট কমলের কলি। मधुक्य परन परन, मिरे किन परन परन, कित्राम वनी वरहे जान । মোহিত মধুব রসে, উত্তে গিয়ে ক্রড়ে বলে, এক ছেড়ে ধবে সিয়া আর। মধুলোভী মধুত্রত, পাইয়াছে সদাত্রও, লুটিতেছে মধুর ভাগ্ডাব॥ দেখি ভাত্ব অমুকুল, বনে বনে কড ফুল, ै प्रश्नदेश खेक्स वनन। ভাদের স্থান লোযে, প্রন চঞ্জ হোলে, খুন্যপথে করিছে গমন। कोविकां कतिया मान, वाँहान कीरतत आंग, वार्छा लारत वायुग्रदय, छेटले छूटले भिट्य क्र्यं, বিহম পত্ৰ অগণন। शान करत्र विक् धन, পান করে সূত্রসা खनियां करण इस मन ॥

ভ্রম ও গৈ প্রভাকের মনাকাশে প্রভাকর প্রভাকর প্রভাকর প্রভাকর দান।
ভক্ষকাব দল কর স্থান হয় সক্ষা হর,
শক্ষট সাগবে বর কাল।
ভাকে প্রভাকর কর, কোপা প্রভাকর কর,
প্রভাকর ভোমার রচিত।
পালিতেছ প্রভাকরে, পাল এই প্রভাকরে,
ভোম'তেই কবেছি জর্পিই।
সদা প্রস্থ রাথ দেই, রহনার শক্তি দেই,
নত্ত কর, কন্ত সম্প্র্য।
নাহি চাই হীরা হেম, ভোমার প্রবিত্র প্রেম,
জন্তরে উদ্ধ্য যেন হয়।

গৌড় রাজ্যের ভগ্নাবন্থা বর্ণন উপলক্ষে কবির থেদোক্তি।

## मीर्घ (होशमी।

কাল-হত্তে সমুদর, কাল ছাড়া কিছু নদ,
কালে হয়, কালে লয়, কালে ঘায় কাল রে।
কে বুঝে কালের মর্মা, কে বুঝে কালের কর্মা
একপ কালের ধর্মা, আছে চিরকালারে॥
একেবারে জনিবার্যা, সম ভাবে হয় ধার্যা,
এ সব ক্মলের কার্যা, শিষম বিশাল রে।
এই এক প্রাকরণ, জনাকাপ পরক্ষণ,
মোহিত করেছে মন, জনালিম্রজাল রে॥
বুক্ক এক অবিরল, মুলে ভার নাই স্থল,
ভাবিরত ক্রিট্রাক্রন, নাহি পাতা ভাল রে।

आंशांनरत इहे वन, ভ্ৰমে কড করি যশ, বিষমাথা তার রুল, মধুর রুলাল রে॥ কাব্ৰ কৰ্মা বহুভৱ, মনোহর শোভাক্ত, আকাশে রয়েছে ঘর, নাহি খুঁটি চাল রে। ভাবভবে হেরি ভব, ভাবে ভাব পরাভব, ভূতের ব্যাপার সব. ভাল্ ভাল্ ভাল্ রে॥ कारन कोन नुश्व त्रा, শশুবার কভু নয়, কৃষ্ণ-কেশ শুল্র হয়, বুদ্ধ হয় বাল রে। मगुक्त खर्थाद्य यांग, দ্বীপের সঞ্চার ভায়, पिनकत कीन-कात, (हांटन मञ्जाकांन ति॥ কালেব বিচিত্র গতি, অমুকুলা বন্থমতী, দারকাব অধিপতি, ত্রজের রাখাল রে। কালে সেই যদ্ৰবংশ, এককা**লে হোলে**৷ ধ্বংস, ভূতে ভুক্ত ভূত অংশ, ভূত ষড়ঞাল বে॥ স্বর্গ-মত্য-অধিকারী, मनामन मर्श्वादी, ইম্র-চন্দ্র-আজ্ঞাকারী, নিশাচরপাল রে। গেল তার জোর ডকা, বন্ধনে সিম্বার শক্ষা, বানরে পোড়ালে লকা, বাজাইয়া গাল রে॥ যারা আগে ছাষ্ট মনে, আহারের অলেষণে, বেড়াইত বনে বনে, পোরে বৃক্ষ ছাল রে। কালেতে তাহারা নব্য, হইয়াছে সভ্য ভব্য, অসম্ভব ভবিডবা, প্রেসম কপাল রে॥ সভ্যধর্ম লোপ হয়, (वनविधि नाहि ब्रग्न, প্রকটিত পাপময়, বদন-করাল রে। खावनीत अधीर्थत, श्खाइ नरमत मन, কি হইবে অতঃপর, হায় হায় কাল রে॥

शमा ।

ভবের ভৌতিক-ভাব, ভাবনীর নয়। ভাবিলে স্বভাব ভাবে, ভাবের উদর॥

ভূতে ভেনে, ভূত নেলে, বুথা হই ভাবী ? নাচি বুঝি কার ভাবে, কেন ভাবি ভাবী ? ভাবের ভবন বটে, ভবের ব্যাপার। যত ভাবে, যত ভাব, নাহি তার পার॥ কভু ছাস্য পরিহাস, হুধের সঞ্চার। কখনো দারুণ দুখে, শুধু হাহারার॥ কখন, কাহার ভাগ্যে ছথের সংযোগ। কেবা করে রাজ্যপাট, কেবা করে ভোগ।। দেখিয়া কালের গতি. মিছে খেদ করা। कार्त्वा शक्क हित्रकाल, ध्वा नन ध्वा॥ কোথাকার লোক এসে, কোথা করে বাস ? প্রচুর প্রভাবে করে, প্রভুত্ব প্রকাশ॥ কালেতে ভবন বন জনহীৰ স্থান। कांटलट्ड कांनरन श्रु, नश्रद्ध निर्मात्॥ আকাশে উঠেছে চূড়া অতি উচ্চতর। অতি দীর্য কলেবর, ধনে ধরাধব॥ কাল ক্রমে হয় ভার, শরীর পতন। ভুধর অধরে কবে, ধরণী-চম্বন।। बार्भात क्रेन छाति, अप्त छव-इटि। যোহিত হইল মন, নাটুয়ার নাটে॥ মোহ মেঘে ঘেরিয়াছে, অখিল সংসার। বোধৰূপ-শশক্ষের, না হয় সঞ্চার॥

ঢাকা, বিক্রমপুর, এবং রাজনগর প্রভৃতির পুরাতন উজ্জ্বল এবং ন্থতন মলিন অবস্থা বর্ণন। তিপদী।

হাঁরে ও করাল কাল, নিদর কালের কাল, চিরকাল স্থিবকাল নও ?

ছোয়ে বছৰপা প্ৰায়, ধৰ ৰহুৰাপ-কাঃ, কালে কালে কতৰাপ কও ! সীমাহীন রত্নাকর, হর তার রত্মকর, কর তার দ্বীপের সঞ্চার। (शांक्शरपत्र विष्णु करण, मिश्रु कर निक वेरक, পূর্ণিমারে কর তান্সকার। রেণ কে পর্বাভ কর । হোয়ে পেই ধরাধর, (माखा करत अवागमधरम। সগ্ৰস্থিত হার গাগল ছাড়ায়ে ভার, মগান করহ রস'তলে॥ मगूपरा (भाषा ६४) নগর কানন কর, कारम कारम काममर्खि भन्न। ভোগার অসাধা किবা, दक्षनीद्र कर मिना, शिवादत तक्ती **क्**मि करा। ভূমি কাল সর্ববকাল, ইঃকাল পরকাল, সকলৈ তোমার করাধীন। যুধার যৌৰন হয়, वालरकरत्र वृष्यं कत्र, विकाद कर्तर वल शैन ॥ शादि अदि गर्वनामी, अस्मानद गर्व नामि. छेनदा मिरश्र वर्गज्या। গৰ্মনাশা, সৰ্মনাশা, পুণীপতি কীরিমাশা, বুভিনাশা, কীৰ্ত্তিনাশা তুদি ? प्रतिश कार्डिक व्याप, जन्न क'त्व त्नाप, দেখিৰ কেমন তুমি নদী। খেরে বারি প্রাবে মারি, একেশরে দকা দারি, कड़्र मृनि शिष्ड शांति यकि। त्रांका त्रांक्षवद्गास्त्र, क्षि-ब्रामश्रह्मद्देश, मधुरद छल्ल देखव धन्। শাখনেভে যেই ৰন, স্থারিল নূপধন, मिहे यम कर्तिल निधन !!

विकास विकास पूर्व, हिला, यि विकास पूर्व, । शर्वाहीन मर्ववानकी, मर्ववानका हो ला। वस्की, সে বিক্রম কিছু নাই আর। वष्ट्राम्भ खक्ष क्रि, রঞ্বন প্রিচরি, বেদ্যেল বেদ্ছত, অঞ্পাভা হরিয়াছ ভার ? জীরাজনগর গ্রাম, শ্রীমতীর প্রিয় ধাম কেবল হোয়েছে নাম সার। শোভামরী রাজপুরী, সে শোভা কারেছ চরি, গ্রাহ নয় ভূম নয়, কারো নয় পরিণয়, मकिल करत्र हारथात्। রাজবংশ অবতংস, ত্ব অংশ ধ্বংস করিয়াছ। মানসের নীর হরিয়াছ। মনোহর সরোবর. धदकरादत जम्मय निलि। অখের জাঙাল ডেঙ্গে নিলি! প্রাচীনের কিছু নাই, ছিল ভিন্ন সব চাঁই, का किन तरत आत तत ! " বেগের ,, সে বেগ হড, মলিম কুলীন যড, शंक्षि लाक्ष्मि (हारना मन॥ থড়দহ মেল যারা, বেমেল হোরেছে তারা, পড়েতে জাগুন সাগিয়াছে। নাহি সার পূর্ব্ব ভাব, ক্রমে ক্রমে ভঙ্গভাব, সভাবে ভভা। গটিহাঁছে॥ विकासिक कृत्व कृत्व, विकामभूत्व कि कृत्व, शक्क क्षत्र विकाद, कारतिकिन-कुटलत शोतन। म कुरल इ नाहि तम, सि कुरल द नाहि यन, নাহি তার মধুর সৌরভ। फल'की नलकी मन, ভববল্ল ভর নাহি দয়া।

সর্বানন্দ পাইয়াছে ময়া॥ বিশেষ কছিব কড, কোণা আছে পণ্ডিত রতন ? বংশজ বংশজ যত, হোয়েছে বংশজ-হত, কেৰা করে ভাদের যতন। দ্বথ হয় কহিতে অধিক। মানদেব রাজহংস, এক ভাব পরস্পারে, ময়ুর থাকিলে পরে, সকলেতে হোতেন কার্ত্তিক॥ নীরানন্দ নাহি আব, ি রানন্দ সৰাকার, গোষ্টিপতি শ্রোত্তি যাঁরা,গোষ্টিহীন প্রায় তাঁরা, ক্রমেডে ক্রমের ব্যতিক্রম। पेश्वनन, रमवचत्र, कुटल भीटम, धन मारन, श्वर्कवर (कवा मारन, কালগুণে ঘুচিল বিক্রম। অথের বাঙাল দেশ, কাঙাল কবিষা শেষ, শোদা ছিল স্বোণা নাম, স্বোণার স্বোণার গ্রাম সে সোণা এখন নর খাঁটি। পুরতিন রাজধাম, কেবল রয়েছে নাম, ভূপতির নাহি ভিটে মাটি॥ কিহ নাই রাজবংশে, প্রজাগণ কোনো অংশে श्वित्र नदह जांत्र स्थि। ত্থসূৰ্য, অন্তগ্ৰত, মানি সৰ শান-হত. धनवान जकदलहे फुबि। মহারাজ আদিব্র, স্থীর সাকাৎ তুর, रेवमः कुलमञ्चक प्रवर्ग। আনিলেন নূপবর, নিজ যন্তঃ সাধন কারণ॥ मान लाट्य निक निक, आहेरमन शक्षात्व, পাঁচ কুল কায়স্ত সে পী চে। বল্লভের নাহি বল, বিছারে মানাতে ভক্তি,জানাতে বিপ্রের শক্তি जानीकां क बिरमन गर्छ॥

গুঞ্জরিল ক্লাম-জমর। অদ্যাবধি সেই ভব্ন, ফলে ফুলে কপ্পভরু, র্ছিয়াছে ইইয়া জমর॥ কোথা সেই আদিমূর, কোথা তার আদিপুর, কোথা সেই বংশধর ভার ! कांश म बल्लाम जून, यात्र कीर्छि नानाक्तन, जाहात विहात वड, क्लोम्बर्फ (बारम्बर्फ क्षांत । জাতির প্রধান গণি, चारह यम नममिक् (इर्झ) কারো নাই অপমান, এখনো সমান মান, বলালের চাপরাস পেয়ে॥ শ্রীরাজবল্লত বায়, শেষ রাজা বাঞ্চলায়, ভষ্ট থাঁবে সকল ব্রাহ্মণ। করি এক যজ্ঞ-ন্থত্র, স্বন্ধাতির যজ্ঞ-ন্থত্র, পুনরায় করিল স্থাপন॥ যে করিল বিভরণ, অকাডরে বহু ধন, कीर्डि योत शृथी-शादत धाय। ফণি বেন মণিছত, উাহার বংশজ যত. দিবসাস্তে আহার না পায়॥ যেন শিশিরের দিন, দিন দিন অতি দীন, कीव होन मिलन वनन। রা। নাই পুর্বে রাগে, সতি হয় অধোভাগে, ভাঙিগছে স্বর্গের সদন।। কি ছিল, কি হোলো আহা, আর নাকি হবে তাহা, যা হবার হইয়াছে শেষ। বিস্তারিয়া কালগ্রাস, কালেতে কোরেছে গ্রাস ममुमग्र विश्वतित्र (मण ॥ প্ৰভা যত পূৰ্ব্ব কাৰু, কিছুমাত্ৰ মাহি আর, অন্ধকার হেরি স্ব স্থান।

সে ভরু সীরস ছিল, আশীর্ক দে মুঞ্জরল, কানোদিকে নহে ভালো, টবলোর মৌভাগ্য काटना, अटकबादब एडाइबर्ड निर्देश ॥ কায়স্থাদি জাতিচয়, পুর্বারূপ কেই নয়া সবে কয় চুখের কাহিনী। क्वन नारमञ्ज छाका, छाकाय मेहिक छैकि।, প্ৰতিক্লা পেচকবাহিনী। কিছু নাই পুৰ্বা মত, বেশভুষা ছোডেছে প্রভেদ। कुलीन माथात गरिन धनी त्वाल ध्वनि मांक, प्रभुशीन गर् भांक, সকলেরি অস্তরেতে খেদ ॥ কত গঞ্জ কত গ্রাম, বিখ্যাত যাদের নাম, কিচু ভার চিহ্ন নাহি ভার। করিয়া ভীষণ মতি, কুল খেরে কুলবভী, ममृषय कार्टबट्ड मःश्रं ॥ বড বড় মহাজন, हिन कछ मश्छन, মহাজনি করিত সবাই। এখন কোথায় ধন, নামে মাত্র মহাজন, মহাজ্ঞন মহাজ্ঞন নাই॥ वावना शिदश्रक (कैंटह, यात्रा नव चाटह (वैटह ব্যবসায়ী কেছ আর নর। এক দশা সৰাকার, यूटचं त्रव शृंशकांत्र, কোনৰূপে দিনপাত হয়॥ छनिलाम यथा छुथा, जकरलति धक कथा, कांद्रो मत्न किছू नारे सूच। यटक विश्वनिश्न, कांद्रांग गक्न जन् वाडांनिद्र विशंखा विश्व ।

## বড়দিন।

## শোক জরঙ্গিণী ছন্দ।

বিশ্বজ্ঞয়ী ব্রেটিলের, অধীনেতে রোহে। লিখিতেছি বডদিন, বড দীন হোয়ে॥ व्यवद्वत्र वक्षिन, वक्षिन नया। এই দিন ছোট দিন, দীন তাতিশর॥ কিছু মাত্র নাহি আব, স্বথের ব্যাপার। চারিদিগে কেবল, উঠেছে হাহাকার॥ এ সুখের আকর "বিলাড" যারে বলে। সে বিলাভ ভাসিতেছে, নয়নের জলে॥ শোকে ভাপে, সবাই, কাতর নিরম্ভর। দুখানলে পুড়িডেছে, স্বারি অস্তর॥ স্থির হোয়ে কেহ ভার, ধৈর্য্য নাছি ধরে। পড়িয়াছে কান্নাহাটি, প্রতি ঘরে ঘরে। मुल छान रहा यथा, खब नारे उथा। অধিক কি কৰ আর, এদেশের কথা ? কেমনে ভারত ভূমে, স্থথে যাঁয় রাখা ? মুলেতে আঘাত হোলে, কোথা থাকে শাখা ? कल निधि कालहीन, इहेल यथन। কিৰপেতে থাকে ভবে, নদীৱ জীবন ? मिन मिन, मीनज**ेर, १८७८**ছ প্রবল। লোকের মনেতে জুলে, শের্ছকের অনল। निदानमा निटम कर्डि, विश्व अधिकांत्र। जुरलाक भूलकशीन, करत छुतांहात ॥ বিপদ, আপদ, আদি, অনুচর নিয়া। মানসের সিংহাসনে, বসিল জাসিয়া 🎚 " আনন্দ ,, না পার আর, বসিহার স্থল। कांट्यरे (म. এटक्यांट्र, इरेन विज्ञ ॥

দৈব-হেতু অকালেতে, কত পরিবার। একেবারে হোয়ে গেল, সমুলে সংহার॥ কত পতি সতীশোকে, ভেজিল জীবন। কত সতী পতিশোকে, করিছে রোদন॥ কত পিভা পুল্রশোকে, ধরণী লুটায়। কত পুল্র পিতৃ-শোকে, করে হায় হায়॥ কত ভাতা ভাতৃ-শোকে, দহিছে অন্তরে। কভ বন্ধ বন্ধ-শোকে, করাঘাত করে। কাতি জ্ঞাতি বান্ধবাদি, বিয়োগের দায়। অনেকেই জুর জুর, মর মর প্রায়॥ সকলেরি এক দশা, ভেদাভেদ নাই। সমান যাতনা ভোগ, করিছে সবাই॥ कारता मूर्य नाहि जात, हामा थम थम। যার পানে ফিরে চাই, ভারি চোথে জল। কালের কৃটিল ধর্মে, কেবল অহিত। হাসির হয়েছে ফাঁসি, মুখের সহিত। वन, वृष्टि होता ट्यार्स, विभएनत कारन। আপনিই মারি চড, আপনার গালে॥ रेथर्ग्य, तांथ, त्रवि मंगी, नां इय छेपत्र। দিবানিশি হেরি শুধু, জন্ধকারময়॥ হাত নাহি সরে আর, লিখিতে বসিয়া। নয়নের জলে যায়, অকর ভাসিয়া॥ निर्शाह-निष्मां स्वादन, खर् किছू मह ! সভাবত এ বছর, কুবছর হয়॥ এমেরিকা, ক্রান্স, রুস, যত যত দেশ। थुक्केरिनद्र ज्ञव (मर्ट्स, विश्रम विरूप ॥ (मथादन विद्रमाहि नांहे, कि**क दे**नवाधीन। बाका श्रका गांता गांच. (काटन वनहींना। तांकात मक्राल रहा क्षेत्रांत मक्रम । ब्रांटकात विशास महत्, बांडांनि मक्न ॥

কাঙালি বাঙালি যত, রাজপদানত। প্রভুতক্ত অহবক্ত, চির-অনুগত। বড় বড় প্রভুদের, অধীন হইয়া। পশ্চিমেতে ছিল যারা, পরিবার নিয়া। তার মধ্যে অনেকেরি, সংবাদ না পাই। কি হইল, কোথা গেল, অম্বেয়ন নাই॥ নিগুঢ় বুজান্ত তার, পাব কার কাছে? কেমনে নিশ্চয় হবে, সরেছে কি আছে ! বিদ্রোহিরা অধিকল্ড, বাঙ্গালির ছেনি। রাগভরে অত্যাচার, করিয়'ছে বেশী॥ করিল যে সব কর্মা, হইখা নিদয়। म जकन कथा कि हु, मुधिवांत्र नय ॥ (वॅटा थिटक कन माळ, नार्ट इडे स्थी। পৃথিবী দোফাকু হোলে, ভিতরেতে ঢুকি॥ कि कब्रिन होता नांडे, देमदनत चहिता। তাই হোলো যাহা ছিল, ঈশ্বরের মনে॥ যদিও আমরা হই, হিঁতুর সম্ভান। বড়দিনে স্থাথি তবু, খুষ্টান সমান॥ সাহেবেরা করিভেন, আমোদ যেরূপ। ষামরাও করিতাম, তার অনুরূপ॥ দেবদারু পাতা দিয়া, সাজাতেম দার! কিনিয়া গাঁদার ফুল, গাঁথিতাম হার॥ বাড়ী আর বাগানেতে, ধুম ধাম নানা। ৰুচিমত কতৰূপ, কৰিতাম খানা॥ এবার সে হার আর, নাহি গাঁথে কেউ। অঞ্ধার ধার হোয়ে, বুকে খেলে চেউ। क किनिटर कना छात्र. क कदन कमना। কমলার কোপে পোডে, সবে খায় কলা॥ াকে করিবে উপভোগ, উপবনে গিয়া ? ভবন ছ।ভিয়া আদ্য, রবে শেষ নিয়া॥

কোন্ মুখে হাসিব, সখের খানা খেরে। কহিব স্থথের কথা, কার মুখ চেম্বে ? সম তুখি ছুই দল, শাদা আর কালো। কারো মনে নাহি জ্বলে, আনন্দের জালো ॥ বছরের পরে আঞ্চ, বড়দিন ভাই। ভারি মথ কাঁলো, কাঁলো, যার পানে চাই॥ গির্জা-ঘরে গিয়া দেখ, যত খেত দল। বাহিরেতে জলময়, ভিতরে অনল। कारिक्षणि कार्य कार्य, जारह वर्षे कांक। যে দেখে দেখুক জাঁক. ভামি দেখি ফাক॥ কোখায় রয়েছ প্রভু, কুপার আধার : এই কি হে ছিল নাথ, মনেতে ভোমার ? ভূমি হও সর্বর্গত, কি কহিব আর ! এই कि. विচার, नाथ, এই कि विচার ? যা হবার ইইয়াছে, উপায় 🏍 ভার। এখন যে বিধি হয়, কর প্রভীকার॥ ভোমা বিনা প্রতুলের, পথ আর নাই ৷ দোহাই দোহাই নাথ, ভোমারি দোহাই॥ খন খন, রাছা কালো, সভ্য আছু মত। কালের বিচিত্র গতি, হও অব্যাত। ঈশ্ববে স্মর্ণ করি, প্রেমে থেছে রভ। जारमान प्रायान कत्र, श्रुवकात गउ॥ বভদিনে ভঞ্জ তাঁরে, যে হয় বিপদ। त्रत्वा त्रत्वा कात्र, त्रत्वा विभागा ঈশবের নাম অন্তে, কেটে যাবে দায়। जगदत हालां छ जानां, जागदतत आध्या এই শীতে হোয়ে বাবে, শত্ৰু সৰ ক্ষ্য। কি ভয়, কি ভয়, ববে, কি ভয় কি ভয় ঃ ষেত সেনা আছ ভাই, যে খানেতে মত। বড়দিনে, মেরিপুল্র, পদে-ছও নত ।

সাংসে বিক্রম করি, অস্ত্র সব ধর। কুজন বিপক্ষ দলে, কচু কাটা কর॥ বিশ্বজয়ী গোরাগন, দেশ ব্যক্ত আছে। কার সাধ্য মাথা ভোলে, ভোমাদের কাছে?

## গীত।

রাগিণী ললিত। তাল আড়া। সাজ সাজ সাজ যত, খেত সেনাদল। डांक डांक डांक डिती. तिर्य त्रवष्टम ॥ তৃলে দিয়ে জয়খাজ, চালো রথ অখ গঞ্জ. মজ মজ, ভব্দ ভন্ত, প্রভূপদতল। ১। পর পর বস্ত্র পর, ধর ধর অস্ত্র ধর, কর কর দম্ভ কর, হর শত্রু-বল।২। থোর ভাষ ভাষ ভাষ, इष्टेम्टन नाम नाम, সাহসেতে শাস শাস, হাস ধল থল।৩ ' কৰে কৰি পানপাত্ৰ, নিয়ে ভ্ৰাণ পান মাত্ৰ, হবে সব মহাপাত্র, গাত্র ঢল ঢল।। ও। खानी तीर्य थरत थरन, ममरत न किटन भरत, क्तिर्व हर्ना छात्र थता हिलेमल ॥ ६। জোর জার শোর শার, মেরে কর চুরমার, হোমে সর ছারখার, যাকু রসাতল॥ ৬॥ যত সব তুরাচার, করিতেছে অত্যাচার, সমূচিত দেহ ভার, হাতে হাতে ফল।৭॥ পশ্চিমে यञ्चल यज्, অমর্কল করে কত. (म मक्न (क्लि क्ल खराखा मक्न | b ঘোরঘটা ছুর্তি কটা, স্থচারু সাজের ছটা, जि**णिन निका**त्र छहे।, यक्तादि क्षत्रम ॥ २ । যখন ছুড়িবে গুলি, পুড়িবে বিপক্তলি, উড়িবে যাথার খলি, আকাশ মগুলা 🛚 ১০।

ভোমাদের নাহি ভয়, তালুকুল সর্ব্যয়, ব্রিটিনের স্বয় জয়, মুখে বল বল ॥ ১১

## বড়দিন। ( দ্বিতীয়। )

शोरष्टेत जनम पिन, वड़ पिन नाम। বহু স্থথে পরিপূর্ণ, কলিকাতা ধান॥ কেরানী, দেয়ান আদি, বড় বড় মেট্। সাহেদের মরে মরে, পাঠাভেছে ভেট্।। (छार्कि कथन) श्रापि, मिছति वानाम। ভাল দেখে কিনে लग्न, দিয়ে ভাল দাম॥ এই পর্বের গোরা সর্বের, স্থার্থী অভিশয়। नाञ्चानित विभिन्नार्थ, लिथि मगूपर ॥ '' (कथिनक , प्रम मत, (প्रिमानतम प्रांटन। শিশু ঈশু গড়ে দেয়, মেরিমার কোলে॥ বিশ্ব মাঝে ঢারুৰূপ, দুশ্য মনোলোভা। যশোদার কোলে যথা, গোপালের শোভা अक्षरग्रा (शांका १७६, त्राक वरे भिरंष। केचारतत शुक्त (बाटन, श्रीत्रह्य प्रदम् ॥ ও রাড্ও রাড্রাড্, লেখে বাইবেলে। ইশু কি ভোমার শিশু, উর্বের ছেলে? এ বড গোপন ভাব, আপন হারায়ে। वलन करतरह वीक, चलन प्रथारय ? निक्ति वीरकात कला, में ख यमि हर। দোষের ভ নয় ভবে, ঘোষের ভনয়। গোকুলে গোপাল খ্ন, ননি, সর, ক্ষীর। খান কি মেরির হুত, মাখ্য, পনীর॥ দি-গী-কৃষ, রিশি-কৃষ, এ দেশ ও দেশ। उज्यात कांचा जाटह, विटमब विटमब ॥

বিলাভের ব্রহ্ম যদি, মেরিমার মাতু ! এ দেশের ব্রহ্ম তবে, যশোদার যাত।। খুলিয়া পুরাণ গীড়া, ভাবে ঢোলে ঢোলে। কৰ ভার সৰ গুন, অবভার বোলে॥ কুমারীর গর্ভে শিশু, হোরে অবতার। করিলেন পৃথিবীর, পাতকী উদ্ধার॥ বিভুৰতেপ খ্যাত হন, নানাৰূপ ছলে। ভুলালেন রোম দেশ, কুহকের বলে। ধর্মের বিস্তার করি, দেন উপদেশ। ভূতৰূপী ভগবান, দুঘু আরু মেব 🏻 শিষ্যাণ সঙ্গে সদা, যুগি জোলা জেলে। সবে বলে এই প্রভু, ঈশরের ছেলে॥ नाम काति कतिरमक, छला मह धाँहै। শিষ্টবৈশে দেশে দেশে, ফেরেন গোঁসাই॥ পাপী পরিত্রাণ ছেতু, করুণানিধান। জুশের ক্রুশের ঘায়ে, তেজিলেন প্রাণ ! তদবধি শিষ্যদের, ভক্তির প্রভাব। প্ৰভূপেম প্ৰাপ্ত হোয়ে, কডৰূপ ভাব। সেৰাপ খৃষ্টানগাণ, ভাবে চল চল! গোরাপ্রেমে মক্ত যথা, নেড়ানেড়ি দল॥ প্রভুর শোণিত মাংস, কাম্পনিক করি। আহারে আহ্লাদ পান, যত মিসনরি॥ **टिविन मोक्सारा मव. ভাবে शह शह।** মাংস বোলে কটি খান, রক্ত বোলে মদ। ভূবন করেছ বন্ধ, কুহকের ভোরে। হায় রে " কুমারীপুক্ত ,, বলিহারি ভোরে॥ যে প্রকার খৃষ্টানের, পূর্বর প্রকরণ। কেথলিক চচ্চে গিয়া, দেখে এলো মন। দেখিলে তাদের ভাব, রাগে মন রোকে। धनावाम मिटिंड इस, बक्रवाजी लाटिक॥

ওল্ড এক টেষ্টমেন্ট, গোল্ড ভায় বাঁধা। কোল্ড করে মাজুষেরে, লাগাইয়া গাঁধা॥ রিফারম প্রটেষ্টান্ট, বিশপের দল। বড়দিন পেয়ে মুখে, হাস্য খল খল।। মিলিটরি সিবিল, ৰণিক ভাদি যত। চূটি পেয়ে ছুটাচূটী, স্বাক্ষালন কত॥ জমকে পোষাক করি, গাড়ী আরোহনে। চচ্চে যান হৰপেনী, শ্ৰীমতীর সনে॥ বিশপের অগ্রভাগে, ঘাড় হেঁট করি। ক্ষণ মাত্র অবস্থান, টেপ্টমেন্ট ধরি॥ সেখানেতে জাঁখাজাঁখি, তাকাতাকি ঘটে ঠাকাঝাঁকি নাছি হয়, ফাকাফাকি বটে॥ বাঁকাবাঁকি জাঁথি দুষ্টে, মাখামাখি নয়। পথে এসে পাকাপাকি, চাকাচাকি হয়॥ **ठ**र्फ বৌলে खधु नव, পুनाधांम गथा। অবিফেট্রে রভি, কাম, বিরাজিত তথা॥ ও বিষয়ে কেছ নাহি, থাকে উপবাসী। সাক্ষী তার, ক্লেত্র আর, বুন্দাবন, কানী॥ ভজনা হইলে পর, উঠে দেন ছুট। সহিস বোলাও বগী, ভ্যাম ভাম ভট ॥ আলয়েতে আগমন, মনের খুসিতে। অঙ্গুলির অগ্রভাগ, চুষিতে চুষিতে॥ অনম-সম্পদ-**মথ**, লুবিতে লুবিতে। প্রেমানাপে জীমতীরে, তৃষিতে তৃষিতে ॥ পরস্পর নিমন্ত্রণ, কতরূপ খানা। টেবিলের উপরেতে কারিগুরি নানা॥ বেষ্টিত সাহেব সব, বিবিৰূপ জালে। আনক্ষের আলাপন, আহারের কালে॥ শক্তি मह ভক্তিভাবে, খেয়ে गाংস गদ। হাতে হাতে স্বৰ্গ লাভ, প্ৰাপ্ত ব্ৰহ্মপদ॥

'রসে মন্ত ছেড়ে ভন্ত, প্রেমতন্ত্র লাভে। হোরে প্রীভ, মৃত্য গীভ, বিপরীত ভাবে। রণবেশি মিলিউরি, যত সব গোরা। মাটে, ঘাটে, হাটে, বাটে, মারিভেছে হোর। ॥ ঁ হুকুম জাহির করে, দাঁজিয়া দাঁড়িয়া। বিবির লিবির জাঁক, শিবির গাড়িয়া॥ চোট্ পাট্ জোট্পাট্, আয়োজন কোরে, শ্রীমতীর শ্রীমুখেতে আগে দেন ধারে॥ বড় বড় সাহেবেরা, এইৰূপ ভোগে। পেয়েছেৰ বড় হুখ, বড়দিন যোগে ॥ ইচ্ছা করে ধন্না পাড়ি, রান্নাঘরে ঢুকে। কুক্ছোরে মুখ্খানি, লুক্করি স্থে।। কাজ নাই বুড়ী মেম, বেছে বেছে মিস্। করি ডিম্, আলু ভোরে, ধোরে দেই ডিস্॥ বিধাতা যদ্যপি করে, গাড়ির সহিস্। আগো ভাগে ছটে যাই, পহিস্পহিস্। সাজিয়া কউচ্ম্যান, উপরে উচিয়া। ঘোড়া জুড়ে উড়ে যাই, জুড়ি হাঁকাইয়া॥ নাৰিতে উচিতে যদি, ঘেঁস লাগে গায়। ভবে আর এ সংসারে আমায় কে পায় 2 গাউনের সাপ্র যার, টাউনের মাজে। ভার কাছে কার আর, জারিজুরি সাজে॥ কিনিবার কালে কড, হাসি খুসি কথা। বিবিজ্ঞান লয়ে যান, নিজে যান ভগা।। দন্তা জোড়া দন্তে রেখে, শন্তা হয় বাতে। কোরে দর, সমাদর, হাত দিয়া হাতে॥ আলুস্পিন্ত্ৰ, আদি, ডিক্ৰুস,, মেণ্ডিস্ ডিকোষ্টা, ডিরোজা, জোনা, ডিনোজা গ্রিস চ্ছেন্ত, নেন্তু, কেন্ডু, আদি, টেন্ড্গণ যত। वाँदिक बाँदिक, महा औदिक, हटन मंखः मंख।

পোরে ডেুস্, হন ফুেস্, দেখা যায় বেজে। বাঁকাভাবে কথা কন, কালামুখ নেডে॥ পুঁইখাড়া চিঙ্জির, কোরে ভুষ্টিনাশ। ম্যাম্সঙ্গে, নানা রঙ্গে, গরিমা প্রকাশ।। চুণাগলি অধিবাস, খোলার আলয়। তাহাতেই কভৰাপ, আড়ম্ব হয়॥ ছাড়েন্ বাঙালি দেখি, বিলাতের বুলি। निक्र यां अ. किमामान्, स्मिव ्व अवि ॥ জুভা-গোড়ে প্রাণ যায়, করে হেই ঢেই। ৰূপি বিনা ৰূপিভাব, কডামাত্ৰ নেই॥ বড়দিনে বাবু দেজে, কভৰূপ খেই। জাহাঞ হইতে যেন, নামিলেন্এই। ভেঁডলে-বাগদি বভ, ফিরিঞ্জির ঝাঁক। বাঁচিনেকো দেখিয়া, তাদের ফাতো জাঁক॥ আনাক্যাষ্ট কন্বর্ট, গৃহভ্যাগী যারা। কত মুখ যাচিতেছে, নাচিতেছে ভারা॥ নীলু, বিলু, কালু, লালু, দলু, হুলু, হিরু। গন্ধ, খনু, হনু, তন্ম, হারু, আর ছিরু॥ এদিকে তুঃখের দায়, মনে ঝোলে ফাঁসি। বাহিরে প্রকাশ করে, চড়ুকীর হাসি॥ ছেঁড়া পঢ়া কামেজ, ভাহার নাই হাড়া। ভাই পোরে বাবু হন, খালি কোরে মাডা॥ ভাঙা এক টেবিলেতে, ডিস্ সাজাইয়া। দ্রত-ভাবে খানা খান্, বাহ্ন বাজাইয়া॥ মনে মনে খেদ বড়, কালা হয় রেতে। প্রমান্ন পিটাপুলি, নাহি পান খেতে॥ य जनन बांडालित, हेश्लिज क्यांजन्। वक्षित्म छैं। हात्मत्र, मारहिब धर्मा,॥ পরুস্পর নিমন্ত্রণে, স্কুখের সঞ্চার। ইচ্চাধীন বাগানেতে, আহার বিহার॥

বাবুগণ কাবু নন, নাহি যায় ফ্যালা। চুপি চুপি, বহুৰূপি, লুকাচুরি খ্যালা॥ দিশি সহ বিলাতির, যোগাযোগ নানা। কত শত আঘোজন, ইয়ারের খানা 🖟 ফ্লেস্ফিস্ভরা ডিস্, মধ্যে ভাতে ভাত। সেপাত হুপাত নয়, নিপাতের পাত॥ অখিল ভরিয়া স্থাথে, করে জলসেবা। যেতে যেতে, মেতে উঠে, খেতে পারে কেনা ডবল "ডবলিউ,, যোগে, রদের ব্যাপার। খানার ব্যাপারে শেষ, খানার ব্যাপার। একাকারে একাকার, কিছু নছে কমি l কারো 'ডোরা' কারো 'চেন্ডা' বাছা আর বমি উরি মধ্যে **ছঃখিত**র, রঞ্চি সর ভেয়ে। ভত্তহত, মন্ত যত, বড়দিন পেয়ে॥ ভেড়া হোয়ে ভুড়ি মারে, উপ্পা নীত গেয়ে। গোচে গাচে বাব হয়, পচা শাল চেয়ে॥ কোনোরপে পিত্তি রক্ষা, এ টো কাঁটা খেয়ে ভাজ হন ধেনো গাঙে, বেনোজলে নেয়ে॥ "এ, বি,, পড়া, ডবি ছেলে, প্রতি ঘরে ঘরে। সাক্রায়েছে গাঁদা গাদা, ডেক্লের উপরে। পড়েনিকো উচ্চ পাঠ, অপ্পে মারে তুড়ি। তাকায় ওদিগে বটে, পাতায় থিচুড়ি॥ শাসনের ভয়ে নাহি, যায় উপবনে। পায়েদে আয়েদ রাখি, তৃষ্ট হয় মনে॥ ধনের অভাবে যেই, বড় দীন হয়। ৰড দিন পেয়ে আৰু, বড দীন নয়॥ সাহেবের হুড়াহুড়ি, জাহ্নবীর জলে। করিভেছে "বেটিরেস., সেলর সকলে॥ হায় রে হুখের দিন, শোভা কব কার ? ইংরাজটোলায় গেলে, নয়ন জুড়ায়॥

প্রতি গেটে গাঁদা হার, কারিগুরি ভাতে। বিরচিত ছটা চারু, দেবদারু পাতে ॥ হোটেল মন্দিরে চুকে, দেখিয়া বাহার! ইচ্চা হয়, হিঁত্নয়ানি, রাখিব না আর॥ ক্ষেতে আর কাজ নাই, ঈশু গুন গাই। খানা সহ নানা স্থাখে, বিৰি যদি পাই ॥ চারিদিকে দেখ মন ! অতি বেজে বেজে। ভোতে মোতে থাকি আয়ু, হিঁচুয়ানি ছেড়ে। ছেডোনা ছেডোনা আর, বিপরীত বানী! থাকে। থাকে৷ থাকে৷ বাপু, রাখে৷ হিঁ চুয়ানি এবার কি বড়দিন, বড়দিন আছে : আমোদের কাব্য পাঠ, করি কার কাছে ? কালভেদে কত ভেদ, খেদ করি ভাই। পুর্ববকার লেখা ছেপে সকলে দেখাই॥ পরিহাস ছলে ইথে, কাব্য আছে যত। সে কেবল ৰাজমাত্ৰ, নহে মনোগভ।। অভএব কেছ ভার, ধরিবেনা দোষ। ক্বিরে ক্রিয়া কুপা, হও আশুভোষ।

#### ----

ইংরাজী ১৮৫৮ সালের নববর্ষ।

কোথায় রয়েছ নাথ করুণানিধান!
করুন করুণ হোয়ে, বিহিত বিধান ॥
বিলিতি সাতাম সাল, হোলেন বিদায়।
ভাটামের অভিষেক, কালের সভায়॥
কি কব ডুঃখের কথা, এ যে, কাল কাল।
ভামাদের ভাগাদোষে, সাল হোলো শাল

নকল কালের কাল, তুমি মহাকাল।
তোমার নিকটে নাই, এ কাল সে কাল॥
সকল কালের পতি, তুমি কালপাল।
প্রকাশিরা নিজ মেহ, দেহ শুভকাল॥
তোমার পুণাই আজ, শুভ নব দিন।
চবন স্মরন করি, হোয়ে অতি দীন॥
দীন হীন প্রজা যত, তোমার অধীন।
দিন দিন, দীননার ! শুভদিন দিন॥
আরির শরীর দিয়া, হরির নিবাসে।
রাথ পদে, রাখ পদে, পদানত দাসে॥
আপদ বিপদ যত, করিয়া সংহার।
করন ভারতভূমে, শান্তির সঞ্চার॥

ভারতের প্রকাষত, যে আছু যেথানে।
সকলেই রত হও, বিভুগুন বানে॥
বাদ বাদ ভাব ভরে, চোথে ফেলো জল।
স্থারের কাছে চাও, রাজ্যের মঙ্গল॥
ভোমাদের ভবে সেই, দীনদগ্নিয়।
অবশাই হইবেন, সদয় হাদয়।
একেবারে ঘুচে যাবে, সমুদর ভয়।
হথে বল জয় জায়, ব্রিটিসের জয়॥

রাজ্যের পতির কাছে, নিবেশন এই।
সকল রাজার রাজা, উপরেতে যেই॥
এই বেলা নত হোয়ে,'ডাকুন তাঁহায়।
তাহে আর রহিবে না, কোনরূপ দায়॥
রাজভাতি, রাজজাতি, যত বুধগন।
করন মনের সহ, উশ্বর শারন॥

কটাক্ষে করিলে কৃপা, সেই কৃপাময়। তুরাচার শক্রে যত, সবে হবে ক্ষয়।

#### তত্ত্ব।

#### शमा।

কলেবর কুটা রেতে, ইন্দ্রিয় জক্ষর।
ধরিয়া প্রবল বল, আছে নিরস্তর ।
পরমার্থ পুরুষার্থ, করিছে ছরণ।
একবার কেহ নাহি, করে দরশন ॥
কেন্দ্র্রীন অন্তান হোয়ে, আছে সব জীব।
কথনো করে না মনে, আপনার শিব।
নিল্ল ঘরে চুরি ভার, শাসন না হয়।
হরিতে পরের ধন, ব্যাকুল হাদয়॥

নিজ-জ্ঞান আছে যার, মান্ত্র সে হয়।
জ্ঞানহীন যত জীব, পশু সমুদর ॥
প্রাতে করে মল, মুক্ত, সবে পরিহার।
দিবা দ্বিপ্রহরে করে, সবাই আহার॥
নিশিতে মদনকেলি, পরে নিক্রাযোগ।
পশুতেও কোরে থাকে, এইরূপ ভোগ॥
নর যদি রিপুল্যী, জ্ঞানেতে না হবে।
পশুর সহিত তার, প্রভেদ কি তবে ?

আপনার দেহ আরু, আপনার দারা।
আনায়াসে রক্ষা করে, পান্ত, পাক্ষী যারা॥
সে বড় বিব্য নহে, কঠিন তো নম।
স্বভাবের ধর্মো তাহা, সহজেই হয়॥
ক্রিয়াপাশে বন্ধ সব, যে দিকেতে চাই।
পরতত্ত্পরায়ণ, দেখিতে না পাই॥

জ্ঞানিরে মান্ন্য নোধে, ন্যক্ষার করি। মাথায় মুকুড়া যার, সেই করী করী।।

ভাকছেড়ে মন্ত্র পড়ে, হোম করে কত।
নানারপ বেশ ধরে, দান্তিকের মত॥
কভু চুর্গা, কভু শিক, কভু বলে হরি।
করে ধন আহরণ, প্রভারণা করি॥
বাক্সিন্ধা, মন্ত্রসিন্ধা, ছলেতে জ্ঞানার।
কাগী, বগী, ভস্ম করে, কথার কথার॥
ভাপনারে বড় গোলে, মরে অভিমানে।
অথচ সে ভাপনারে, কভু নাহি জানে 🌡

সদাই আসক্ত মন, সংসারের হুখে।
শোক আর ভাপ পেয়ে, দগ্ধ হয় দুখে॥
সংসারের যন্ত ধর্মা, সকলি সে ধরে।
কিছু নাহি বাকি রাখে, সকলি সে করে॥
অথচ লোকের কাছে, ভার ৰূপ হয়।
আমি হই ব্রহ্মজ্ঞানী, এইক্রপ কয়॥
অন মাঝে কেহ নাই, জ্বজ্ঞান তেমন।
কর্মা আর ব্রহ্ম তার,উভয় পভন॥

ক্রতিদোদে স্মৃতিহীন, বাক্য নাহি ধরে।
দর্শনে ধরেছে দোষ, দর্শনে কি করে?
পরস্পর জন্ধ হোয়ে, পজ্যাছে কুপে।
উঠিবার শক্তি আরু, নাহি কোনকপে॥
একেতো অধীর অন্ধ, তাহাতে বধির।
কি করিলে কি হইবে, নাহি পায় স্থির॥
করিয়া পরমপথে, কন্টক প্রদান।
শক্ত নিয়া করে শুধু, অর্থের সন্ধান॥

বন্ধ করি ধাকাবাহ, কাব্য অলকারে।
প্রাণাদি, শান্ত শস্ত্র, রাথে ধারে ধারে দি
পরস্পার মত্ত সবে, বিচার-সমরে।
কিসে জয়লাভ হয়, এই আশা করে॥
বচনের স্ত্র তুলে, ব্যাকুল চিস্তায়।
পরমু ভাবের ভাবে, অভাব ঘটায়॥
কিচুমাত্র নাহি লয়, ভিতরের সার।
শাস্ত্রের সদ্ভাব ভেঙে, একে করে আরে॥

বোঝা বোঝা পুঁথি পড়ে মর্মা নাহি লয়।
মিছে পোড়ে কি ইইবে, নাহি ফলোদ্য়?
বুথা পরিশ্রম করে হরে আয়ুধন। :
অবোধের পাঠ আরু, অন্দের দর্গণ।
বুজিমানে শাস্ত্র পড়ে, তত্ত্ব লয় ভার।
অবোধে কি পাবে ভত্ত্ব, তত্ত্ব কোখা ভার?
শক্ষবোধে শুধু হুল, বিদ্যার প্রকাশ।
সংসারের মোহ ভায়, নাহি হয় নাশ।

কোন নর কোটি বর্ষ, বেঁচে যদি রয়।
তথাপিও শাস্ত্র পোড়ে, শেষ নাহি হয়॥
কত গুণ সন্তাবনা, হয় একাধারে।
শাস্ত্ররূপ সিন্ধুপারে, কে যাইতে পারে?
কর কর যত পার, শাস্ত্রের জালাপ।
কিল্ড ভায়, মন,্থেন, না দেখে প্রলাপা।
দেখিবে প্রত্যক্ষ যাহা, মেনে লবে ভাই।
বচন গ্রহণে কোন, প্রয়োজন নাই॥

আয়ুহর বিশ্বকর, শাস্ত সমুদয়। সহুদয় শাস্ত্র পোড়ে, জ্ঞান কার ছয় টু শাস্ত্র পাঠে নাহি হয়, মাজিন্য মোচন।
কখনই শাস্ত্র নয়, মোক্ষের কারণ॥
বিদ্যা কিছু অস্তরের, আধার না হরে।
মুক্তি আর জ্ঞানপথে, বিড়ম্বনা করে॥
শাস্ত্র পোড়ে বিদ্যা শিখে ঘোচে না বন্ধন।
মুক্তির কারণ শুধু, একমাত্র মন॥

বেছে কেছে সার লও, শাস্তালাপ করি।
হংস যথা ক্ষীর খায়, নীর পরিহরি ॥
অয়ত ভোজন করি, তৃপ্তিলাভ যার।
জাহারের প্রয়োজন, কিছু নাহি তার ॥
সহজেতে সমুদর, দৃষ্টি যেই করে।
বৃদ্ধ হোলে সে কখন "চসমা, না ধরে ॥
হেঁটে না হোঁচোট খায়, চলে যেই তেজে।
সে কি কভু যাটি ধরে, মধ্যীবৃড়ি সেজে?

প্রেম আর ভক্তি হয়, সর্বব মূলাধার।
ভগবানে ভক্তি কর, মনে মেনে সার॥
ভক্তিভরে প্রভু পদে, যে সঁ পেছে মন।
সে কি আর করে কভু, শাস্ত আলাপন।
বিচার, বিতর্ক তার, মনে নাহি লয়।
কোনমতে বাহ্য তার, গ্রাহ্য আর নয়॥
শাস্ত্র ছেড়ে জ্ঞানী করে, জ্ঞানের গ্রহণ।
পল কেলে ধানা লয়, কুষক যেমন॥

#### বল ।

জ্ঞানহীন মূর্থ যেই, মৌন বল ভার। ভক্ষরের বল শুধু, মিথ্যা-ব্যবহার॥ ভূপতি ভাহার বল, অবল যে জন। বালকের বল হয়, কেবল রোদন॥

অন্ত আর যুদ্ধ হয়, ক্ষত্রিয়ের বল। ভিক্ষুকের ভিক্ষাবল, দেহের সম্বল। ব্যাপার ভাহার বল, বৈশ্য যেই জন। শৃদ্রের কেবল বল, ব্রাহ্মণ-সেবন।। বিদাা-বলে ধরে বল, পণ্ডিত সকল। বল বল, বণিকের, বাণি**জাই বল**॥ হিংস্রকের হিংসা বল, অন্য কিছু নয়। নিন্দাই তাহার বল, নিন্দুক যে হয়॥ কেশ আর বেশ হয়, বেশ্যাদের বল। वक्षना ভাদের वन, याता श्य थल। युव की नांत्रीत वन, योवन-तकन। বাচালের বল শুধু, মুখের বচন।। गीन, भना नमुद्धित कल रुत्र वल। তক্তদের ফল ওম্ব ফুল আর **ফল।**। শশী আর তপনের, বল হয় কর। দেবভার বল শুধু, দাপ আর বর॥ গৃহত্তের ধর্মবল, স্তাবকের স্তব। শুচির অঋণ বল, ধনির বিভব॥ যিনি হন ব্রহ্মচারী, ব্রহ্ম-বল ভার। যতিদের বল হয়, সদা সদাচার॥ शुन जांत्र क्षेका जांत्र, शुनित्मत वल। ঋনির কুটিল কথা, ছুতো আর ছল॥ পুণাবল ভারা ধরে, পুণাবান যত। পাপ হয় তার বল, পাপে যেই রত ॥ সভ্য বল বল ভার, সৎ যেই হয়। অসত্যই ৰল তার, সং যেই নয়॥ অমুগামী অনুচর, যে হইবে ভাই। পান্থগত্য বিনা ভার, অন্য বল নাই ॥ স্থকর্মশালীর বল, ধীরতা সাহস। মানির কেবল বল, মান আর যশ !!

সন্নাসির মাস বল, যোগীদের যোগ। ভতে।র ভূপতি-সেবা, ভোগীদের ভোগ॥ সতী-বল পতিসেবা, প্রজা-বল ভূপ। িশিষ্য-বল গুরুসেবা, ভেক-বল কুপ।। বিবেক ভাহার বল, শাস্ত যেই জন। সঞ্চয় তাহার বল, অপ্প যার ধন॥ শান্তি-বল বিপ্রের, ত্রান্ধের উপাসনা। সাধকের বল হয়, কেবল সাধনা॥ রাজার, প্রতাপ বল, বলের প্রধান। যাহার অভাবে যায়, রাজ্য যার মান॥ সেই রাজা শাস্তি-বলে, বলী যদি হয় ভার কাছে কোন বল, বলবান নয়॥ শক্তি-বল শাক্তের, ধৈবের শিবনাম। বৈষ্ণবের বল গুধু, হরে হরে রাম। ভক্তিবল ভক্তের, অন্যথা নাহি তার। ভক্তাধীন ভগবান, ভক্তের সহায়॥ ঈশবে যে সঁপিয়াছে, দেহ, প্রাণ, মন। कड वन शद्र (मरे, मारि निक्रभन।

# খল ও নিম্মুকের স্বভাব। পদ্য।

মছৎ যে হয় তার, সাধুব্যবহার। উপকার বিনা নাহি, জানে অপকার॥ দেখহ কুঠার করে, চন্দন ছেদন। চন্দন স্থবাস ডারে, করে বিভরণ॥

কাক কারো করে নাই, সম্পদ হরণ। কোকিল করেনি কারে, ধন বিতরণ॥ কাকের কঠোর রব, বিষ লাগে কার্ণে। কোকিল অখিলপ্রিয়, স্বয়ধুর গানে॥

কেমন কোমল কায়, শোভা মনোহর।
কোনজপে নাহি সয়, তপনের কর॥
রবি-ছবি মুদিড, উদিত নিশাকর।
তখন বাহির হয়, পাখী নিশাচর॥
লক্ষীপ্রিয় পক্ষী সেই, পেঁচা নাম ধরে
রব শুনে সব লোক, দুর ছাই করে॥

অহির শরীর থাকে, মহীর ভিতর।
বিমল নিনোদ বপু, দেখিতে স্থান্দর॥
চন্দনের তরুতলে, হইয়া বাহির।
পেটভরে খায় শুধু, মলয় সমীর॥
বাস্থকীর বংশধর, নাম তার ফনি।
মাথার উপরে শোভে, মনোহর মনি॥
কিন্তু করে যার দেহে, অধর অর্পন।
তথনি পাঠায় তারে, শমন সদন॥
তুলনায় সেইলপ, অবিকল খল।
মধুমাথা মুখখানি, পেটভরা ছল॥
সাধু সাধু বোধ হয়, আকারে প্রকারে।
একেবারে সারে তারে, পেয়ে বনে যারে

গুণমন্ম হইলেই, মান সব চাঁই। গুণহীনে সমাদর, কোন খানে নাই। শারী জার শুক পাখী, অনেকেই রাণুখে। যত্ন কোরে কে কোথায়, কাক পুষে থাকে?

অধ্যে রতন পেলে, কি হইবে ফল ? উপদেশে কথন কি, সাধু ছয় খল ? ভালি, মদ্দ, দোঘ, গুণ, আয়ারেতে ধরে।
ভুজন্ধ অমৃত খেয়ে, গরল উগরে॥
লবণ জলধি-জল, করিয়া ভক্ষণ।
ভালধর করিতেছে, ক্থা বরিষণ॥
স্থানে স্থাশ গায়, কুষ্শ ঢাকিয়া।
কুষ্ণনে কুর্ব করে, স্বর নাশিয়া॥

শঠের শভাব এই, স্বভাব তরল।
প্রকাশে সরল ভাব, ভিতরে গরল ।
কাঁকুড় বাহিরে যথা, দৃশ্য অপরপ।
ভিতরে বিভিন্ন ভাব, নহে একরপ॥
বাহিরে মধুর হাসি, পেটভরা ছল।
বাহিরে স্থদর যথা, মাথালের ফল॥

যে জন সভাবে করে, পর পরীবাদ। সেজন জাপনি করে, জাপন প্রয়াদ॥ কেহ না বিশাস করে, যত কথা কয়। নিছে দেয় নীচৰাপে, নিজ পরিচয়॥ মুখফুটে, মুখ নাহি পায় কোনখানে। নিন্দুক বলিয়া তারে, সকলেই ফানে॥ নিন্দুকের নিন্দা কথা, শুনি সব চাঁই। আমি বলি ভার চেয়ে, হিভকারী নাই॥ সংসারে সবাই ফেরে, মাতৃগুল গ্রেয়ে। निन्दुरक्तां উপकांती, जननीत क्रया। সম্ভানে করিয়া **কোলে**, ধরি তার গলা। अन्ती रमाठन करत्र, वाशिद्रत्त यहा।। নিন্দুকের কি লিখিব, প্রতিষ্ঠা প্রচুর। ভিভরের মলা যত, সব করে দুর॥ পাপ, তাপ, যত আছে, বলে লয় কেড়ে। রসনারে ঝাঁটা কোরে, সব দেয় ঝেড়ে॥

প্রিয়গণ প্রিয় হও, মন করি বর্ণ। যে ভোমারে নিন্দা করে, গাও ভার ইশ। নন হোতে দূর করি, দ্বেষ আর মদে। নমস্কার কর সবে, নিন্দুকের পদে॥

#### উপদেশ।

ভ্রমে মুধ্র সমূদয়, জগতের লোক। কোনজ্ঞ নাহি পায়, জ্ঞানের আলোক ॥ এইরূপ দেখি সব, হত উপদেশ। বৃথায়ু বিবাদ করি, আয়ু করে শেব॥ অর্থেষণ করে ভাই, তর্ক বাড়ে যাতে। হাতে আছে নহারত্ন, যত্ন নাই ভাতে॥ থাকিতে বিমল হ্বা, না ধরে জানা । कर्ने कथा कालकृत, विवशान करत है মায়ার ছায়ার খেলা, ভূতের সংসার। অভিভূত হই দেখে, ভূতের ব্যাপার॥ পেয়েছ উত্তম দেহ, ষেং কর যায়। ভেবে দেখ কতৰূপ, বস্তু আছে ভায়ু 🛭 ভাবভরা এই ভব, ভাবের ভবন। আছে চমু, স্থির হোরে, কর দরশন॥ স্থিরবাপে স্থান্টি প্রতি, দৃষ্টি আছে যার I সে কেন জগতে করে, বিফল বিচার ? পেয়েছ রসনা চারু, পান কর রস। ভূমি যার, স্থান্থ ভার, গান কর যান। মনের ভাত্র গুরু, চুখের কারণ। আছে কৰ্ণ শুন ভার, জ্ঞানের ৰচন। জ্ঞানে থেই গুরু নয়, গুরুভাব যার। জ্ঞানীগণে করে ভার, উকার সংহার॥